।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

।। श्री रमणेशो जयति ।।

श्री कल्लोल जी

एकादशम्

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)

-: मूल :-

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

-: टीकाकार :-

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)

लैया वासी

श्री महामहोत्सव संवत् २०५८

एकादशम् कल्लोलजी

कल्लोलजी एकादशमो

अनुक्रमणिका

श्री गोकुलेशो विजयते

श्री रमणेशो विजयते

कल्लोल जी एकादशम

प्रथम तरंगः ॥१॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ प्रथम तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **नत्वा श्री गोकुलाधीश ततप्रिय रमणेश्वर**

तत्कृपादामिकल्लोल एकादशः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं शुद्ध पुष्ट रसात्मक मूल प्रभु श्री गोकुलाधीशजी के दिन चरित्र उत्थापन सूं लेके शयन पर्यंत लीला को एकादशमे कल्लोल में वर्णन कियो है ॥ सो संस्कृत में महागुप्त रस रूप है ॥ श्री गोकुलाधीश प्रभु के अनुराग अग्निरूप श्री महदवर जी श्री रमणलालजी महाराज ने अपने कृपापात्र अनन्य समाज को यह महा रस रहस्य को आनन्द अनुभव करायवे लिये महा महोदार अपनी करुणा सों याको अनुवाद भाषा व्याख्यान करवे की आज्ञा मोकूं करी है सो आपके ही कृपा प्रमेय बल सूं याको भाषा अनुवाद प्रगट करूं हूं ॥ तामें प्रथम श्री कल्याण भट्टजी स्वाभाविक महामंगलमय चरित्र को वर्णन करत सदा मंगलमय यह आदि श्लोक कहें हैं के

अथ श्री गोकुलपती स्तासहितस वल्लभसविभाव्य महोत्कंठ स्वंद रायातुमीश्वरः ॥१॥

उत्थापन के अवसर में श्री राज के दर्शन अर्थ अत्यन्त विकल होय रही वा सुन्दरीन की बड़ी उत्कंठा उदासीनता विचार कर ईश्वरेश्वर श्री गोकुलपती कृपा के सागर वल्लभजी प्राणनाथजी अपने दर्शन दान देवे अर्थ जागे हैं नयन को हू उघाड़े हैं ॥ सुन्दरवरजी सुन्दर श्री हस्त कमल सूं विलास पूर्वक श्री मुख के ऊपर विराजमान चादर आदि को दूर करें हैं ॥ या अवसर में भक्तन

में दोय कि तीन श्रेष्ठ भाग्यवान जन श्री राज के घुर्णित होय रहे जामें लाल नयन के वा समय के आलस्य सूं जो शोभायमान हैं ॥ के झंभायी सूं जो प्रकाशमान हैं ऐसे श्रीमुख कमल को निरखे हैं ॥ भाग्यवान खवास जी हू निरखे है ॥३॥ तब निमर्याद सुन्दर भुजदण्डन की शोभा वारे श्री प्राणनाथजी दोनों श्री हस्तकमल द्वारा नयन कमलन सूं आलस कूं वेग ही दूर करें हैं ॥ उच्छलित प्रेम समुद्र के समूहवारे वे भक्तजन या प्राणनाथ के आगे दंडवत प्रणाम करें हैं ॥ श्री प्राणनाथजी अधरामृत के प्रवाहन सूं सींचन किये अत्यन्त मधुर चर्वित तांबूल को तृष्टि में डारें हैं ॥ तब सदा श्री राज के श्रीमुख कमल सूं गिरे रस सागर के पान स्वभाव वारे भक्तजन तो सगरे ही आदरपूर्वक वाकूं लेकर बांट के लेवे हैं ॥ अपने कूं कृतार्थ मानें हैं ॥ श्री प्राणवल्लभजी पास स्थित जलपान के पात्र सूं विलास पूर्वक जल पान करें हैं ॥९॥ वीड़ी को आरोगत प्राणनाथजी प्रायः वा शय्या पर ही क्षणमात्र विराजमान रहें हैं ॥ जेष्ठ अषाढ़ होय तो तिबारी में अत्यन्त गरम पवन धूप ताप के आने को विचार करत के पुस्तक के बांचन में हू क्लेश की भावना करत परम सुकुमार प्राणप्रिय जी श्री गिरधारीजी के उत्थापन पर्यन्त तो वा अपनी बैठकजी में ही भीतर ही विराजमान होय हैं ॥१२॥ ऐसे वा शैय्या पर ही बैठ या ताप कों निवर्त करें हैं ॥ खवास जी के कोई और सेवक बड़े द्वार की सांकल खोले है ॥ के जल घर की सांकल हू खोले है कि तिबारी के टेरा कों हू वेग सरकावे है ॥ तब मृगनयनी भक्तगण हू सगरे भीतर प्रवेश करके श्री राज के वैसे मनोहर मुख कमल को टकटकी लगायकें अत्यन्त पान करें हैं ॥१५॥ तामें खवास जी पहले ही आछी रीति सूं बिछायत कर समार राखें हैं ॥ तामें तिबारी में भूमि पर सुन्दर चटाई बिछाई है वाके ऊपर जाजम को आसन बिछायो है वा पर रत्न जटित कंबल है वा पर परदेश सूं आयो रोम वारो सुन्दर लाल मखमल को रचना कियो सुन्दर आसन है के गादी है जो कोमल रुई सों भरी है ॥ के देशांतर सूं मंगाये कोमल पंखन सूं भरी है ॥ पीछे जापर वैसो मखमल को तकिया श्वेत वस्त्र लपेटना सूं लपेट्यो बिराजे है ॥ ऐसी गादी हू सुन्दर कोमल श्वेत वस्त्रन सूं ढांपी है ॥ यदि गरमी के दिनों में तातो पवन चलतो होय तो वा पर सुन्दर कोमल मनोहर तृणन सूं रचना करी देशांतर सूं आयी शीतल पाटी बिछावें हैं ॥ ऐसे वा आसन पर

भगवान प्राणनाथ जी विराजमान होय हैं ॥ तामें पहेले भीतर सूं बाहिर तिबारी में पधारके रत्न कंबल पर बिराजमान होय हैं ॥ यहां उज्ज्वल वस्त्र धर्यो रहे हैं ॥ वासूं भक्तजन आपके चरण कमल पोंछें हैं ॥ पाछे परमेश्वर श्री गोकुलाधीशजी वा गादी आसन पर विराजमान होय हैं ॥२३॥ ऐसे तिबारी में बिराजमान प्राणप्रिय को भक्तजन निरखें है ॥ कबहू एकांत घर में पधार रहे वा प्रिय कूं निरखें हैं ॥ सबन कूं प्रिय के दर्शन की अत्यन्त उत्कंठा है तासूं मिले भक्तजन संकोच को दूर करके मंद मुसकान सूं शोभायमान के उच्छलित प्रेम रस प्रवाह सूं भरी जामें दृष्टि है, ऐसे श्रीमुख को निरखें हैं ॥ तामें कितने तो प्रभुन के अत्यन्त ही समीप हैं ॥ कितने तो प्रभुन के पास हैं और दूर हैं और तो अत्यन्त दूर हैं ॥ और कितने तो प्रभुन के मंदिर में बैठे हैं ॥ और कितने तो आंगन में और अटारी में और तिबारी में और जलघर में और तो अटारी के ऊपर ही प्रेमपूर्वक बैठे हैं ॥ कितने तो जैसे श्रीराज के सुन्दर मुख कमल के पान को बिना यत्न सुख होय वैसे ही ठाड़े ही रहे कितनेन को भीड़भाड़ सों श्रीमुख को दर्शन पान रुक गयो है ॥ तोहू आपके मनोहर वचनामृत समुद्रन को ही तृषा समूह सूं पान करत ही बैठ रहे हैं ॥ विनके तात्पर्य भाव को स्वाद लेवें हैं ॥३०॥ प्यास भर्यो पूर्ण चंद्रवदनीन को समूह हू यथायोग्य वहां वहां ठाड़ो होयके कोई ऐक बैठके हू आपके श्री मुखारबिंद में दृष्टिन को बहुत प्रकार सूं चलावत ही आपके दर्शन के वियोग यों बैठ ताप को निवर्त करें हैं ॥ रस चतुरता के सागर श्री प्राणनाथजी अपने परमानंद के समूह सागरन में क्षण क्षण में बिन बृज सुन्दरीन रो निमग्न करत सब प्रकार सूं स्वयं हू परमानन्द के समूह सागरन में अत्यन्त निमग्न होय है ॥ प्राणनाथजी विनको वा वा गुप्त प्रकार सूं कटाक्ष चलावत वा सुन्दरीन के समाज को भली भांति सूं जिवावें हैं ॥ के मंद हास्य रूप अमृत के समुद्रन सूं सिंचन करें हैं के शोभायमान है के बारंबार प्रफुल्लित करें हैं ॥३५॥ श्री राज के चित्त में अनुकूल चलवे वारो प्रिय पुत्र श्री गोपालजी के श्री विट्ठलरायजी हू वा वा पुस्तक को लायके ईश्वरेश्वर पितृचरण श्री राज सों पढवे लिये इहां आयके बैठ जाय हैं ॥॥ तथा कबहू तो भैया रघुनाथजी को पुत्र सुजान जो प्रभुन में भक्तिभाव भर्यो जयदेव है सोहू इहां आयके बैठे है ॥ वैसे और हू कितने बालक इहां वा जगतगुरू श्री प्राणनाथजी के आगे नीचे बिछे छोटे माणिक

जटित कंबल के ऊपर बिछी चटाई पर प्रेम नम्रता सुन्दर रीति सूं आय बैठे हैं ॥ तामें पुरुषोत्तम के मुकटमणि श्री महाराजाधिराज मधुर विलास समूह के सागर श्री प्राणनाथजी खवासजी ने आगे धरी वस्तु को निरख रहे हैं ॥ के बीड़ी को आरोग रहे हैं ॥४१॥ या बीड़ी के रस समूह सूं अत्यन्त लाल होय रहे अधर सूं उच्छलित होय रहें के सागर सूं बड़े दीर्घ किरण रूप समुद्रन सूं सगरे जगत को अत्यन्त सरल कर रहे हैं ॥ वा मृगलोचना कों तो विशेष सूं हू सरस कर रहे हैं ॥ अहो अर्बन अमृत कूं वर्षा करि रहे के उज्ज्वल दर्पण राज को हू जाने विजय कर लियो है, के जो सुन्दर प्रफुल्लित है के उछल रही किरण समूहन सूं जो शोभायमान है ऐसे अत्यन्त मनोहर कपोल मंडलन सूं (१) तथा रस सूं प्रकाशवारो कोऊ कुमकुम के तिलक कूं जो धारण कर रह्यो है वे तिलक के भीतर स्वभाव सूं जो श्याम रेखा है सो सिंगार रस सार सागर की सूक्ष्म लहरी रूप है या श्याम रेखा ने दान करी परम शोभा को कंठ नमायके जो धारण कर रह्यो है ॥ ऐसो विशाल भाल (२) अत्यन्त चमक रहे श्री कंठ के पीछे बिराज रहे जुरा सूं (३) अत्यन्त ही मुग्ध अलकान सूं (४) हीरा माणिक जड़े कुंडल युगल की किरणन सूं (५) तथा श्री मुख चंद्रमा की चांदनी में हू निरन्तर उच्छलित होय रही सुन्दर श्याम मूछन सूं प्रगट होय रहे गाढ़ अंधकार की शोभा सूं ॥६॥ उछल रहे तेज के धाम रूप के बल सूं मन कूं हर रहे दीर्घ श्वांस लेवे ऐसे नाशावंश सूं ॥७॥ के सदा श्री कंठ के संगम रूप जल सूं भरी श्रेष्ठ कांच की कलसी जैसे निर्मल अनेक प्रकार की तुलसी माला कूं धारण कर रहे हैं ॥ पंच जन्य शंख जैसे शोभायमान ऐसे श्रीकंठ सूं ॥८॥ के उच्छलित रस के सागर रूप अत्यन्त मनोहर गुंजा माला सूं के उच्छलित हर्ष वारी सुन्दर सुवर्ण माला सूं के नीले लाल मणि समूह जामें प्रकाश वारे हैं ऐसे स्त्रीन के मन रूप हरिण को बांधवे वारे मनोहर पास रूप मुक्ताहार सूं के बड़े मोल वारी शोभायमान सोना की सांकल सूं के अत्यन्त निर्मल के शोभायमान रत्न जटित सोना की चौकी सूं सुन्दर चमकनी मणिवारे मनोहर सोना के पान सूं के सूक्ष्म मोती के चन्द्रहार सूं के कस्तूरी की माला सूं स्वच्छ कपूर की माला सूं इन सब हारन सूं उच्छलित शोभा वारे रस के सागर विलास पुष्टि वक्षस्थल सूं ॥९॥ उज्ज्वल उदर सूं ॥१०॥ माधुरी समूह कूं वर्षा कर रही है धोती

के आधे छिपे मनोहर नाभी कमल सूं ।।११।। डरी हरिणी जैसे बड़े नैन वारी सुन्दरीन के मन को बल सूं हर रही के सगरी दिशान में प्रसर रही विशाल भुजदंड युगल की शोभा सूं ।।१२।। के उच्छलित रस सागर समूह वारे लाल मनोहर श्री हस्तकमल युगल सूं ।।१३।। के निर्मल मणिन सूं ।।१४।। जटित उच्छलित किरण समूह वारी मनोहर मुद्रिकान को पहेर रही कल्पवृक्ष के नव नव पल्लव को शोभा को विजय करवे वारी के परम शोभा समूह सूं मजीठे रंगन सूं मानो रंगी ऐसी अंगुलीन सूं ।।१५।। के कुमकुम चन्दन सूं प्रगट किये द्वादश तिलकन सूं ।।१६।। के श्री गोपीचन्दन सूं करी श्री भाव की बाहु हृदय आदि अंगन में शोभायमान पद्म गदा शंख चक्र के श्री भगवत ऐसी मुद्रान सूं ।।१७।। के चंद्रमुखी गणन के चित्त रूप हरिणिन के बंधन लिये पास रूप निरन्तर निर्मल अत्यन्त उज्ज्वल मनोहर जनेऊ सूं ।।१८।। के वचन रूप अमृत के समुद्रन को वर्खा कर रहे हैं श्री मुख रूप क्षीर सागर के चमक रहे सुन्दर सोना की रेखा वारे मध्य में श्रृंगार रस सूं मानो रंगे श्याम रूप ऐसे दंत रत्न सूं ।।१९।। के उज्ज्वल धोती उपरनासूं ।।२०।। कि धोती हू केशर रंग सूं रंगी होय है कि केसर के टपका वारी होय है के चौबा के बूंदन वारी होय है केशर के रंग सूं रंगीन दोनों अंचल वारी होय है ऐसी पहेरी धोती सूं ।।२१।। कि केशर कि वाके टपके वारो चोवाले बिन्दु वारो कि केशरी कोर वारो मस्तक में बांध्यो के जाको आगे के पल्लव बारंबार उछल रह्यो है ऐसे अथवा पहेर्यो ऐसो जो उपरना सूं ।।२२।। ऐसे प्रथम कहे भूषण के वस्त्रन सूं जे श्री महाप्रभुजी सर्वोपर ही विराजमान शोभायमान होय रहे हैं पद्म आसन बांधके बिराज रहे हैं ।। कबहू लाल चरण कमल की तली को प्रगट कर रहे हैं के अपार अगाध महा श्रृंगार रस रूप अमृत सागर के मध्य में वाके उच्छलित दीर्घ आनंद मई कलोलन सूं विहार कर रहे हैं तथा जा श्री महाप्रभुजी की चरण कमल सम्बन्धी रज की शोभा के किणका पर हू सोना को पर्वत कि चिन्तामणि समूह के कल्प वृक्ष कि कामधेनु समूह के माणिक को पर्वत हू अपने को बारंबार वार डारवे की इच्छा करें हैं परन्तु ये सौभाग्य मिले नहीं है ।। ऐसे महा सुन्दर सर्वोपर महाप्रभुजी बिराज रहे हैं ।। श्री गोपालजी आदि बालकन को पढाय रहे हैं ।। श्रीमद् भागवत कि वाके ऊपर श्री आपके पितामह चरण श्री वल्लभाचार्यजी ने प्रगट करी श्री सुबोधिनीजी, के आपके पितृचरण श्री

गोस्वामीजी ने प्रगट करी सुबोधिनीजी के भाव जतायवे वारी मनोहर टिप्पणीजी को पढ़ावें हैं ॥ कबहू रास लीला कों कि पंचाध्यायी के भ्रमरगीत के गोपीगीत के वेणुगीत के व्रतचर्या को अध्याय हू पढ़ावें हैं ॥ श्री वल्लभाचार्यजी ने प्रगट किये महा कठिन अर्थ वारे वा वा सिद्धांत ग्रंथन को पढ़ावें हैं के देवे हैं ॥ कबहू तो अपने पितृचरण श्री गोस्वामीजी ने प्रगट किये रहस्य रूप ग्रंथन कूं पढ़ावें हैं ॥ तामें हू उच्छलित प्रेम भरे श्री प्राणनाथजी या बालकन की बुद्धि को के अपनी कृपा को विचार के योग्य पात्रन में रसमय ग्रंथन को के अनुपम भाव को दान करें हैं के विनमें स्थिर हू कर देवे हैं ॥६०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधु सायाविधि विनोद मये एकादश कल्लोले भाषानुवादे प्रथम तरंगः ॥१॥

तरंग द्वितीय ॥२॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब द्वितीय तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अत्र समये स्व भक्ताः केचीन मुख पंकजाग्दलत**
सुखमां मरद सिंधु मृविवंतीने त्रास्य चंद्रैस्यै ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, के या समय में या प्राणनाथजी को, कितनेक भक्त या प्रभु के श्रीमुख कमल सूं गिर रहे परम शोभा पराग सागरन को अपने नेत्र रूप मुख चन्द्रमान सूं पान कर रहे हैं ॥१॥ और कितने भक्त तो या प्रियवर ने विस्तार करी कथा को सुनें हैं ॥ और कितने तो वाके अर्थ को मन में धरें हैं ॥ और कितने तो वाके भाव को मन में धरें हैं ॥ कितने तो याके भाव सागर में डूबे हैं ॥ कितने तो या प्रिय के श्रीमुख चन्द्रमा की केवल चांदनी रूप मई समुद्रन में ही निमग्न होय हैं ॥ और कितने तो भ्रुवों के विलासों में डूबे हैं ॥ और कितने तो करोड़न कामदेव के गर्व को कंपायमान करवे वारे कपोलन की सुन्दरता सागरन में मग्न होय हैं ॥ वैसे और कितने तो या प्रियवर के हर्ष रूप कि हर्ष के भार सूं प्रफुल्लित होय रहे सुवर्ण की शोभा को लूटवे वारे श्री अंगन में ही निमग्न होय रहे हैं ॥ वैसे और तो नयन की चंचलता में मग्न होय रहे हैं ॥ कितने तो अधर पल्लव की शोभा में मग्न होय रहे हैं ॥ कितने तो वचनामृत सिन्धु में, और कितने

तो श्री कंठ की कंधादि के विलासन में, और कितने तो अनुपम कुंडलन के तांडव सम्बन्धी सौंदर्य समूहों में निमग्न होय हैं ।। और कितने तो मधुर कुमकुम तिलक सूं उछल रहे हैं शोभा समूहन में कि और तो सुन्दर जुरा के माधुरी प्रवाह में, कितने तो श्रीहस्त कमल सूं उछल रहे सुन्दरता के करोड़न समुद्रन में के और कितने तो या प्रिय के महा मनोहर सगरे स्वरूप में मग्न होय रहे हैं ।। वैसे और कितने तो प्रभुन में कृपा समुद्रन में कितने तो गूढ़ भावन में कितने तो रस समुद्रन में, कितने तो प्रभुन के कृपा समुद्रन में, कितने तो गूढ़ भावन में, कितने तो रस के समुद्रन में, कितने उदारता में, कितने चातुरी में, कितने मंद हास्य की माधुरी में, कितने तो धोती उपरना की सुन्दरता में, वैसे और तो और और वस्त्र भूषणादि में हू निमग्न होय रहे हैं ।। तासूं विनके भेद तो बहुत ही हैं ।। करोड़न अरबन सूं हू विशेष हैं ।। बिन सबन के निरूपण करने में को समर्थ होय शके है ।। अपितु कोई हू नहीं होय सके है ।।११।। कोऊ दिन में तो यह श्री महाप्रभुजी बालक को नहीं पढ़ावे हैं किन्तु स्थूल लक्ष बड़ेन सूं हू बड़े कृपासागर श्री प्राणनाथजी अपने सेवकन में कोऊ अनिर्वचनीय आनन्द समूह को दान करवे की इच्छा करत विलास वारे सुन्दर प्रफुल्लित होकर श्रीमुख कमल वारे होवत प्रभुजी दोष रहित गुणन सूं जटित अलंकार सूं मिले श्रेष्ठ रस के समूह वारे कोऊ श्लोक पढ़ें हैं ।।१२।। या श्लोक सूं यह श्री प्राणनाथजी अपने श्री अंग के संयोग भाव को अधिक प्रगट करें हैं ।। कबहू वियोग नाम वारे रस समूह को प्रगट करें हैं ।। के नायका के रूप ही प्रगट करें हैं के चातुरी सूं अपने सघन परमानन्द समूह को प्रगट करें हैं ।। के वा सुन्दरीन को के कबहू बिनकी दूतिकान की अनेक प्रकार की विज्ञापना को प्रगट करें हैं ।। के मधुर गुण वारी सुन्दरी स्वभाव शोभा की सागर, सखीन की विज्ञप्ती को प्रगट करें हैं ।। कि बड़ी विपदान के आने पर विनय के दृढ़ प्रेम के वा रूप को वर्णन करें हैं ।। अपने भक्तन में के अपने में अत्यन्त उच्छलित प्रेम प्रवाह वारी चन्द्रवदनी सुन्दरीन में उज्ज्वल अमृत समुद्र समूह को विजय करवे वारे सघन श्रेष्ठ अनिरवचनीय जा रस को दान करें हैं ।। बाकूं बड़ी बुद्धिवारे कूं कौन सुजान संक्षेप सूं ये कथ देवे में समर्थ होय सके है ।। अपितु कोऊ नहीं है ।। तथा विन सुन्दरीन को, कोऊ ऐसो सबन के ऊपर शोभायमान अपने परिवार के संग ही रसन को

चक्रवर्ती रस उछले है, जो सतकार कियो लगी, के मान मनावनो के कथ कलाप कोप करनो आदि सगरे बांछित अर्थ समूह सूं स्वाद भरी मूर्ति हैं के जो अत्यन्त सुन्दर अर्बन विलासन सूं सराहना योग्य है जो वा सुन्दरीन के नयन, के चित्त, के अधर पल्लव, के मुखारविन्द, के हृदय के कुच, के नाभि, के जंघन, के दोनों चरण, के कान, के जिह्वा, के अंगन में आकृष्ट कर जाय है जो बड़ो ही बल है, के जाने वा सुन्दरी को वश कर राख्यौ है जो सगरे ही तापन को निर्वान करें हैं ॥ जो वा सुन्दरीन के रोम रोम में हू भीतर हू बाहिर हू प्रसर जाय है ॥ जाको रूप वाणी के मार्ग सूं अतीत है ॥ के जासूं वाणी वर्णन हू नहीं कर सके है ॥ ऐसो प्रबल रस बिनमें उछले है ॥ कबहू श्री महाप्रभुजी वा श्लोक सों नहीं पढ़े है के अमृत रस सूं मनोहर श्री प्राणनाथजी उच्छलित अनुराग वारे होयके भक्तवरन के संग वा वा कथा को हू करे हैं ॥१८॥ तब वा प्रिय को जो वैसो वदनकमल है कि वा कमल समूह को विनय करवे वारे जे नयन हैं, के मुक्ताफलन को विजय करवे वारी जे वे मंद मुसकान है अमृत की धारा रूप जे कटाक्ष हैं कि ॥१९॥ यह काम के धनुष सम्बन्धी अहंकार प्रवाह को सुख आपवे वारे विलास भरे जे भ्रू युगल हैं के अंगुली पल्लवों के जे विलास समूह हैं के श्री हस्तकमल की जो सचेष्ट हैं ॥२०॥ कि तब सगरे श्री अंग में विहार कर रही जो शोभा, माहें की गंभीरता सूं तुच्छ करे हैं समुद्र समूह जाने, ऐसो जो श्रीमुख सो हर्ष है, के आकाश को परस कर रहे जे वे कृपा के तरंग हैं, के चतुरन के हू चित्त को आकर्षण करवे वारो जो वा वा प्रकारन सूं छिप्यो जो चंचल भाव हैं, के मनोहर जे हाव है कि भाव है सगरे ही उच्छलित प्रेम वारे वा मृगलोचना जनों के समूह में कोऊ उज्ज्वल अनिरवचनीय रस समुद्र समूह को अधिक वर्षा करें हैं ॥ जामें वैसे वैसे बारंबार निमर्याद शोभा वारे वाकूं सब प्रकार आस्वाद ले लेके स्थिर होय रही है ॥ वा सुन्दरीन की वाणी कूं नहीं पसरें हैं ॥ विनकी वाणी कूं वरणन नहीं कर शके है ॥ और कौन वर्णन कर सकेगो ॥३९॥ वे भक्तवर कूं कृपासागर या प्रभु के श्रीमुख कमल सूं प्रगट होय रहे निर्दोष सगरे माधुरी के समुद्रन को कानन को पसार के पान करें हैं ॥ रोम हर्ष सूं अंग अंग उनके भर जाय हैं स्तंभ कि कंपादि सात्विक भाव हू इनमें प्रकट होय जाय है ॥ हर्ष के अश्रु सम्बन्धी माधुरी सूं इनके नयन कमल शोभायमान होय

रहे हैं ।। अपने जन्म को हू धन्य भावना करें हैं ।। और कितने तो या प्रभु के श्रीमुख चन्द्रमा कूं हू निरख रहे हैं ।। कितनी चन्द्रवदनी सुन्दरी तो या श्रीराज के वा वा वचनामृत को अत्यन्त पान करत हैं ।। रोम हर्ष सूं प्रफुल्लित अंग वारी होयके इहां ऐसी अवस्था कूं प्राप्त होय जाय हैं के जाकूं वाणी हू वरणन नहीं कर सके है ।। वैसी और कितनी चन्द्रवदनी तो उच्छल्लित प्रेम पूर्वक या प्रिय के वचनामृत को पान करके उत्कंठित चित्त वारी होयके कटाक्ष रूप तीक्ष्ण वाणनसूं या प्रिय के धैर्य रूप हरिणी सों वेग ही निरन्तर वेध करें हैं ।। तथा या प्रिय में अनेक प्रकार वारी होय रही दृष्टि सूं के प्रफुल्लित कपोलन सूं, के निर्दोष विलास प्रवाहन सूं, के सुन्दर मोतीन को बरसाय रहे मंद मुसकान सूं, के दंतन की कांति विशेष सूं शोभायमान, अधर फरकने की माधुरी सूं हजारन भ्रमर, कि कलोलन सूं मनोहर कि अनेक प्रकार के शोभायमान जामें भाव रूप भये हैं के अपने लक्षण वारी अनेक लक्ष्मी जाको शोभायमान कर रही हैं ।। ऐसे कोऊ अनिर्वचनीय निमर्याद रस सागर कों वेग ही प्रगट करके वामें या प्राणनाथ को निमग्न करावें हैं ।। के विहार करावें हैं, के स्नान करावें हैं ।। गूढ़ नचावें हैं, के अपने अत्यन्त सन्मुख ही करें हैं ।।३२।। उत्कंठा भरी मृगनयनीन कूं प्रियवर के वे मनोहर हास्य कि कौतुकी की गंभीर मनोहर जो नकल टेक प्रकट होय है, विनको कोऊ नहीं जान सके है ।।३२।। और ब्रजसुन्दरीन में चतुरसिन्धु प्रिय के जे विलास चरित्र स्पष्ट होय हैं विनको वे चतुर चन्द्रवदना हू जानवे में समर्थ नहीं होय सके है ।।३४।। तब वा हरिण लोचना सुन्दरीन को, कि वा मनोहर प्रिय को श्रृंगार रस सागर के अमृतन सों सगरे हू अंग अंग भीतर बाहिर गीले होय जाय हैं ।। विनमें रंच मात्र हू खाली नहीं रहें हैं ।। वा प्राणनाथजी ने अपने अंगन सूं, के वचनन सूं, के निरखन सूं, कि मंद हास्यन सूं, कि अतुल विलासन सूं, कि भावना सूं वा श्रृंगार रस सार सागर अमृतन को बरसाय के गीले किये हू वा सुन्दरीन के अंगन में कोऊ अनिर्वचनीय ऐसो ताप अत्यन्त बढ़े है ।। जाके अत्यन्त बढ़वे में बड़े सुजान भक्तन को हू ऐसो बहुत प्रकार सूं संशय होय है के बड़े उत्कंठा भरे चित्तवार होयके प्राणनाथजी हू पधारके वा मृगनयनी सुन्दरीन के या अंगन सूं आलिंगन करके हू वा अंगन में बढ़ रहे या ताप कूं निवर्त करवे कूं समर्थ होय सके ।। कि नहीं होय सके ।।३८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धो मायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे द्वितीय स्तरंगः ॥२॥

तृतीय तरंगः ॥३॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब तृतीय तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **ग्रीस्मे वहत्युदम समोरसेलं सुधोत्थिती सौ गृहमध्य एव रीत्यो कृपाहीत बहुस्थितो नः प्रिय समागत्य बह्व समास्तेः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि ग्रीष्म ऋतु या अषाढ़ में अत्यन्त गरम पवन (लूह) चलें हैं तब श्री प्राणनाथजी पोढ़के उठके घर के भीतर ही प्रथम कहे प्रकार सूं चिर पर्यन्त विराजमान होय हैं ॥ पाछे इहां सूं उठके तिबारी में बिराजे हैं ॥१॥ वा तिबारी में सुन्दर शीतल पाटी वारे आसन पर बहुत थोड़ो काल विराजमान होयके श्री गिरधारीजी के उत्थापन होयवे पर श्री महाप्रभुजी स्वयं वेग ही स्नान करें हैं ॥२॥ यदि वैसो गरम पवन की धूम बहुत जवर ही होय है तब तो नित्य ही पोढ़के उठे श्री महाप्रभुजी या तिबारी में ही सुन्दर बिछे अपने आसन को विलास पूर्वक हमारे प्रियवर जी अलंकृत करें हैं ॥ इहां जलपान बीड़ा को प्रगट करें हैं ॥ वरास टुक के संग वीरी हू आरोगे हैं ॥ या अवसर में थोड़े भक्तवर आपके निकट बिराजे हैं ॥९॥ पाछे अपने अपने घरन सूं आय आयके सगरे भक्त ही आपके श्रीमुख कमल को निरखे है ॥ या प्रभुन के आगे प्रणाम करके कितने बैठ जायें हैं, कितने आदर सूं ठाड़े ही रहें हैं, कितने तिबारी में, के बड़े मन्दिर में, के आंगन में, के जलघर में, के अटारी के ऊपर हू ठहर रहे भक्तवर या प्रणप्रिय के मुख चन्द्रमा को दृष्टि सूं पान करें हैं ॥६॥ तब या प्राणनाथजी के श्रीमुख पूर्ण चन्द्र सूं उछल रहे उज्ज्वल अमृत सागर के पान में ही परायण तत्पर जे जोवन वारी सुन्दरी हैं वे तो अपने घरन को के बंधु सम्बन्धीन को अपने देहन को हू स्मरण नहीं करें हैं ॥७॥ तबहू या हरिण लोचना वारी सुन्दरी जनन को वा प्राणनाथ के आलिंगन करवे लिये जो तन में उदय होय रह्यो कोऊ अनिरवचनीय ताप है ॥ वा ताप कूं उदारवर श्री प्राणनाथजी विलासवारी दृष्टिरूप अमृत के समुद्र समूहन सूं वा जोवन वारी सुन्दरीन को बारंबार वा

वा अंगन में सिंचन करत सुन्दरता के श्रेष्ठ स्वभाव श्रेष्ठ गुण चातुरी आंद्र सूं विनके हृदय में प्रवेश करत वा ताप कूं दूर ही कर देवें हैं ॥९॥ वे सुन्दरी करोड़न काम को सुन्दरता को विजय करवे वारे वा प्रिय को निरखे है ॥ के उत्कंठा वारो करावे है, के संताप वारो करावे है, के अपने वा वा विलासन सूं वा प्रिय को निरन्तर वश कर लेवे है ॥ के विह्वल हू करें हैं, के शोभायमान करें हैं, के उज्ज्वल करें हैं, के संकेत जनावे है, के रमण करावे है, के प्रार्थना हू करें हैं, के वैसे रस कृशांगी कोमल अंग वारी प्रियागण वा प्रिय को हृदय में वैसे वैसे हर्ष सूं नचावे हू है ॥११॥ वैसे वा बड़े समाज में कितनेक उच्छलित प्रेम के बड़े समुद्र वारे बड़े बड़े भक्तजन प्रभुन सूं कछूक संशय की वार्ता पूछे हू हैं ॥ कृपा समुद्रन के परार्द्ध रूप समुद्र रूप की मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द वारे प्रिय श्री महाप्रभुजी विलासपूर्वक ऊंची अमृत की धारा सूं मधुर थोड़ीक वाणीन सूं विनके वा संशय को वेग ही दूर कर देवे हैं ॥१३॥ कितने भक्त के मृगलोचना सुन्दरीजन हू हृदय में और और संशय कूं धरके इहां बैठे हैं विनके हू वा वा हृदय के संशय को अब या वाणीन सूं हू निवर्त कर देवे है ॥१४॥ तथा कितनेक भक्तजन तो पहेले जो अर्थ पूछ्यो हतो वाको उत्तर हू प्राणनाथजी ने दियो हू हतो तो हू आपके वचनामृत समुद्र के पान की इच्छा करत फिर हू कोऊ प्रकार सूं या महाप्रभुन सूं पूछे है ॥१५॥ तब विलासपूर्वक प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द वारे होयके उच्छलित उत्साह सूं मनोहर के आलस्य के लक्षणन रहित सदा सावधान कृपा समुद्र कमलनयन श्री प्राणनाथजी पहेलें हू जे वर्षा नहीं किये हैं ऐसे तरल तरंगन सूं आकाश कूं हू परस कर रहे ऐसे रस सागरन के बड़े संख्यात समुद्रन की वर्षा करत विनको उत्तर दान देवें हैं ॥१७॥ वा जो पुरुषोत्तमोत्तम भक्त प्रभु में के दृढ़ प्रेम को विशेष निरूपण होय है ॥ के वैसी अनन्यता को हू निरूपण होय है ॥ के श्रेष्ठ स्वामी कृति की श्रेष्ठ सेवक की कृति को निरूपण होय है ॥ के श्रवण आदि में भक्ति को हू निरूपण होय है ॥ वैसे प्रभु के स्वरूप को निरूपण होय है ॥ तथा भक्तन के दृढ़ व्रत को के वैसे पूर्ण ईश्वर को निरूपण होय है ॥ वैसे अनेक प्रकार के महा रसन को विनके चक्रवर्ती राजा श्रृंगार रस को वर्णन होय है ॥ के श्रृंगार रस रूप वा दुग्ध सागर के मथन सूं प्रगट भये कोऊ निर्दोष सुधासिन्धु रूप पुष्टि मारग सम्बन्धी भक्त के अद्भुत

विहार को वर्णन होय है ।। पुष्टि पुष्टि मारग में विहार करवे वारे भक्तन को चरित्र वर्णन होय है ।। के प्रवाही के मर्यादामार्गी भक्तन को वर्णन होय है ।। के रससागर श्री गोवर्द्धनधारीजी को हू वर्णन होय है वैसे सो भगवान को, के रास को, के वा श्री गोपीजनन को, के दृढ सिद्धांत सार को हू वर्णन होय है ।। वैसे वा वा स्मृतीन को कि कर्मन को, कि वेद पूर्व कांड, कि सांख्य, कि वेद उत्तर ज्ञान कांड, कि गीता रामायणादि को हू वर्णन होय है ।। लौकिक राजान को वर्णन होय है ।। वा रामचन्द्र राजा को, के वैसे वाके दान समूह को वर्णन होय है ।। गढ़ा गढ़ की स्वामिनी अत्यन्त प्रिया वा दुर्गावती राणी को वर्णन होय है ।। के वैसे और हू गणना सूं रहित वा वाको रस समुद्र को वर्षा करवे वारो वर्णन होय है ।।२४।। या प्रकार तो कहां लों कहें ।। तासूं यह रहे अब प्रसंग चलत कहें हैं के शीत ऋतु के आरम्भ में श्री प्राणनाथजी रुईदार नीमा पहेरे जैसे जैसे शीत बढ़े है वैसै वैसे श्रीराज सू शीत निवारण करवे वारे नीमा डगला फरगुल आतम सुख पट्टु पामरी आदि पहेरे हैं ।।२५।। वा अपने घर में बिराजे हैं ।। श्री गिरधारीजी के श्री गोवर्द्धन पर विराजमान श्री गोवर्द्धननाथजी जब रुईदार वागा अंगीकार करें हैं तब रुईदार नीमा भाणेज जमाई के भट श्रेष्ठ ब्राह्मण को पहेराय के भीतरिया, जलघरिया, मुखिया आदि सब सेवकन को दान करके पहेरायके पाछे दोनों पुत्रन कूं पहेराय के पीछे हमारे प्यारे श्री महाप्रभुजी स्वयं पहेरे हैं ।। थोड़े शीत में नीमा पहेरे हैं ।। शीत के बढ़वे पर बड़े मोल वारो रुई सों भर्यो श्रेष्ठ बड़ो वागा पहेरे हैं के रंग रंग के अनेक आवें हैं ।। बहुत शीत में दोय दोय नीमा हू रुईदार पहेरे हैं ।। वासूं अधिक होय तो कमलनयन श्री प्रियजी सब लोगन में फरगुल नाम सूं प्रसिद्ध आतम सुख हू पहेरे हैं ।।२९।। श्रीराज के आगे अंगारन सूं भरी धूम्र रहित हंसती हू हसंती विराजमान होय है ।। वर्षा वारे उष्ण काल में तो श्री प्राणनाथजी बड़े मोल वारे धोती उपरना को पहेरे हैं ।।३०।। तिवारी में जगत प्रभु श्रीराजजी उत्तर में श्रीमुख करके दक्षिण में पीठ करके पश्चिम में वायों भाग के पूर्व में दक्षिण भाग होयके आनन्द सूं विराजमान होंय हैं ।। श्री राज के वायें भाग में उदार सुन्दर पीढ़ा पर धर्यो सोना को कि रूपा को जलपान पात्र झारीजी विराजमान रहें हैं ।। सोना की रूपा की मनोहर कपूरदानी हू वामें धरी रहें हैं वैसे चूनादानी रहे हैं ।। मनोहर शोभावारी

फूलमाला हू वहां धरी रहे हैं ।। ऋतु अनुसार केवड़ा के पत्ता हू रहें हैं ।। वैसे चंपा के फूल समूह रहें हैं ।।३३।। सुदर्शन नाम को फूल तथा कमलन के फूल हू बहुत इहां रहें हैं ।। तथा केवड़ा के पत्र समूह हू इहां रहें हैं ।। यह प्राणनाथजी के सिंहासन पर के वा बड़े तकिया पर रहे हैं ।। फूल माला हू वा सिंहासन के तकिया पर विराज रहे हैं ।। प्रणप्रभुजी कबहू वा फूलमाला कूं श्री हस्त सूं उठायके धर राखे है ।। कबहू कमल फूल को श्री हस्त सूं लेके बारंबार भ्रमावे हैं ।। वासूं मर्दन करके पहेले रूप के निवर्त होने पर उच्छलित शोभावारे श्री प्रभुजी कौतुक सूं वाकूं छोड़ देवे हैं ।। या प्रकार विलास वारे श्री महाप्रभुजी सूं सुदर्शन के फूल सूं के केवड़ा सूं के चंपा के फूल सूं मधुर लीला को करें हैं ।। चंपा के फूलन को जुरा में धरे हैं ।। वाको एक पत्ता को लेकर कबहू थार सूं ही चिरपर्यंत खेलें हैं ।।३७।। कृपालु हमारे प्यारे श्रीप्राणनाथजी या पत्ता को अपने कपोल पर, के चिबुक पर, के मस्तक पर, के नासिका पर, के कान पर, के हृदय पर, के नेत्र पर, के नाभि पर, के उदर पर हू फिर फिर धरे हैं ।। जाको भाव जान्यो नहीं जाय ऐसे रस सागर श्री महाप्रभुजी याको विशेष सूं मर्दन करें हैं ।। याको सर्वांग सुखदान करें हैं याके द्वारा बहाना सूं कोई भाग्यवान कों अपने सर्वांग सुख को अत्यंत दान करें हैं ।।३९।। जब कोई निमर्याद रस सागर रूप हरिणलोचना के भाव को प्रियवरजी सराहना करें हैं ।। तब वा पत्र संग ऐसो विहार करें हैं ।। कौन को पद सुखदान कर रहे हैं ऐसो निर्धार करवे में कौन समर्थ होय सके है ।।४०।। कबहु तो यह विलासी प्रभुजी केवड़ा के पत्र सूं ऐसे विहार करके वाको चीरके कोट जैसे रचना करें हैं ।। रस सागर श्रीजी याकी सांकल बनावें हैं सो खिलोना बनावें हैं ।। वाके आगे दो भागन को रेशम के सूक्ष्म डोरा बांधे हैं फिर यासूं स्वयं खेलें हैं, वाकूं हू खिलावें हैं ।। श्री महाप्रभुजी वाकूं बारंबार नीचे धरे हैं ।। फिर श्रीहस्त सूं उठाय लेवे हैं ।। कबहू तो सेवक जन आयके प्रेम सूं सुगंधित पके मनोहर दोय तीन कचरी के फलन सूं लायके आपके श्रीहस्त में देवे है ।। श्री प्राणनाथजी वामें विनके प्रसन्न होवत विनके बहुत खेल करें हैं ।।४४।। उच्छल्लित अनुराग वारे सुन्दरवरजी आदर सूं विनकी सुगंधी को लेवें हैं ।। विनको बारंबारक मर्दन करके स्थील कर देवें हैं ।। विनको नीचे हू धर देवे हैं ।। भक्त के संग गोष्टि करत हू अत्यन्त मनोहर

प्रगट किये बड़े बड़े रस सागर में निमग्न होवत हू विनको भूले नहीं है ॥ फिर फिर उनको उठाय लेवे है ॥ विनको निरखे हैं के जगतपति प्रभुजी अपने वा वा संगन में धरे हैं ॥ याके तात्पर्य को तो वे कितने भक्त जानें हैं ॥ जिन पर राज ने कृपादृष्टि करी है और कौन जान सके यह भाव है ॥४७॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धो सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे तृतीय स्तरंगः ॥३॥

एकादश कल्लोले

तरंग चतुर्थ ॥४॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब चतुर्थ तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अत्रे व दृष्टे गनीषेयि भृत्य वीभुत्य स्तींबुल नानीय पुरोस्थधत्ते प्राकुचवींत दक्षिण प्रार्श्वरवर्ते पतकहंस्थो परीत मुर्खन ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्‌टजी कहै है कि या समय में श्री अंगसेवक जो खवास जी है सो बीरा लायके राजके आगे धरें हैं ॥ तब ईश्वरेश्वर प्राणप्रभुजी के दक्षिण ओर बिराज रही तष्टी में बिराजमान प्रसादी बीरी को कोई भाग्यवान भक्त आयके उछल रहे प्रेम आदर सूं उठाय लेवे है ॥ अत्यंत उत्साह भरे अपने प्यारे मिलापी भक्त के प्रती हु कछुक देवे है ॥ यह भक्त तो प्रेमपूर्वक वाकु लेवे है ॥ हर्ष बढ़ जाय है अपने जनन को अत्यंत धन्य माने है ॥ करोड़न पद्मन चिन्ता भयेन सूं के परार्द्धन अमृत सूं यहां हू अधिक ही जाने है ॥ कितने तो वा प्रसादी वीरी को वाही समय ले लेवे है ॥ कितने तो घर में ले जाय के याकूं सुकाय के बड़भागी भक्तजन प्रातः समय में ही श्री राज के चरण कमल संबंधी क्षीर सागर सूं प्राप्त भयी मधुर कोई सुधा के संग ही के श्री चरणामृत के संग ही रंच रंच नित्य ही लेवे है ॥५॥ कितनेक भक्तजन परदेश में जाय है तो उदार भाव भरे या प्रसादी बीरी को हू संग ले जाय है ॥ वहां अपने प्यारे भक्तन के पास पठावे है ॥ वे भक्त हू वा वा गुणन सूं करोडन निधी सुंई याकूं विशेष जानके उछलीत हर्षसूं लेवे है ॥ प्रातः समय नित्य ही लेवे है ॥ या उपकार सूं विन कू बड़ो ही माने है ॥

कबहू श्री महाप्रभुजी अपने श्रीमुख संबंधी बीरी को तष्टी में डार के पास रहे सुंदर जलपात्र को उठाय के वा करवा के आधे छेद को अंगुष्ट सूं ढांप के सूक्ष्म धारा बनाय के यासूं जलपान करें हैं ।।९।। गुण जानवे वारेन में श्री प्राणनाथजी तृप्ती पर्यंत पान करके या जल की शीतलता को बारंबार सहरावे हैं आज्ञा हू करें हैं ।। श्री यमुनाजी को जल स्वाद है शीतल है, पुष्टिकारक है ।। भूमी मंडल में के बहुत कहा कहे, तीनों लोकन में याके समान जल नहीं है ऐसे आप आज्ञा करे हैं ।। तामें आपके निकट वासी हू प्रिय, सगरे ही भक्तजन हू प्रशंसा करें हैं ।।११।। **तब श्री प्राणनाथ जी प्रसन्न प्रफुल्लित श्रीमुख कमल सूं आज्ञा करें हैं ।। श्री यमुनाजी के महात्म्य को बारंबार अत्यंत प्रगट करें हैं अपने पितामह चरण श्री वल्लाभाचार्य जी ने जो श्री यमुनाष्टक प्रगट कियो है वाको ऐक श्लोक को व्याख्यान करें हैं ।। वा वा पुराण में स्थित हूं वा श्री यमुनाजी के महात्म्य को प्रमाण करें हैं मान देवे है** ।।१३।। यह प्राणप्रिया जी या प्रकार सूं जलपान लीला करें हैं ।। वा जलपान पात्र को फिर लेवे लिये दोनों हाथन कूं सजाय के ठेहरे सावधान चित्तवारे वा चतुर खवास जी के हाथों में मनोहर वा पात्र को देवे है ।। तब खवास जी वा जलपान पात्र के नाल के आगे वारे भाग को सदा गीले रहेवे वारे वाकूं पट वस्त्र सूं ढांपके वाके मनोहर पीढा पर धरें हैं ।। पाछे यह खवासजी आपके श्री हस्तकमल में ढाक के पत्रा सूं ढाके वीड़ा हू देवे है ।। प्राणनाथजी यासूं वा पत्रा कूं निकार के वा वीरी को प्रथम कहे प्रकार सूं विलास पूर्वक ही श्रीमुख कमल में धारण करें हैं ।। वाके वा ढाक के पत्ता को श्रीहस्त कमल में लेके वासूं वैसे वैसे रमण करें हैं, के खेले हैं ।। वे कबहू तो वा पत्ता को अपने वाये ओर नीचे धरके राखें हैं ।।१८।। तब खवासजी कपूरदानी को उघाड़ के आपके आगे धरें हैं ।।२०।। प्राणप्रियजी वामें सों बरास को मनोहर टूक लेके वाको टूक टूक करके मर्दन करके हू कर सूं श्रीमुख में पधरावें हैं ।। कबहू तो चूना पात्री पीढे में रहे हैं ।। श्रीहस्त कूं वाकूं लेके वासूं चूना लेकर वाकी गोली बनाय श्रीमुख में पधरावें हैं ।। कबहू चूना लेवे में अपनी अंगुली में चूना लगे है कि वीडी कों रंच रंग लगे है कि बोलवे में श्री मुखारविन्द सूं कोई किणका बाहिर लगे है ।। भक्तन में वाछल्य कों करत के विनके समूह को यह शिक्षा करत, कृपासिन्धु प्रभुजी पीतल के करवा में स्थित जल

सूं वाकूं पखारें हैं ॥ या समय में विलास भरे श्री प्रियवरजी क्रम सूं खवासजी ने नयनामृत सूं अर्पण किये बहुत बीड़ा हू हर्ष सूं आरोगे हैं ॥२३॥ कितने सेवक भक्तजन तो या समय में के कोऊ और समय में प्रसादी करायके पहेरवे लिये या तुलसी काष्ट की माला को लेके प्रभुन को समर्पण करें हैं ॥२४॥ प्राणप्रियजी श्रीहस्तकमल सूं वा तुलसी माला कूं लेके कबहू श्रीकंठ में पेहेरि के धरके कबहू मस्तक को परस करके ही वा भक्तन को फिर देवे हैं ॥ तब भक्तजन तो नम्रता सूं आयके विनकूं लेवे हैं ॥ प्रसादी भई तासूं विनको प्रणाम करें हैं ॥ कंठ में भक्त सदा धरें हैं ॥२६॥ श्री कल्याणभट्टजी यामें एक प्रसंग कहें हैं **के श्रीनाथजी के मंदिर के पास वारे जलघर की गली में यह श्री प्राणनाथजी संध्योपासन विधि को स्वयं आदर कर रहे हैं, कोई एक भक्त सेवक बहुत तुलसी मणि माला को हाथ में धरके आयो या महाप्रभुन के निकट ठहर रहे मोकूं धीरे धीरे वाने कह्यो के यह तुलसी माला प्राणनाथजी को प्रसादी करायके मोकूं देओ ॥ तब वे माला वाके हाथ सूं मैंने प्रभुन को पहेरवायके आपकी प्रसादी करायवे लिये ले लीनी ॥ प्राणनाथजी को विनय करी के प्रभो कृपासिन्धो यह प्रसादी कर दीजिये ॥ तब यह प्रभुजी तो संध्या के संबंध सों मौन ग्रही रहे हैं ॥ तामें श्री आपने ''हूं'' ऐसे कह्यो ॥ मैंने तो विचार्यो के संध्या करके महाप्रभुजी इनको पहेरके प्रसादी कर देंगे, ऐसो विचार कर रह्यो हूं इतने में वो भक्त आयके वेग वेग मेरे सूं मांग के, मेरे को देवो, तब मैंने कह्यो के अरे भले भक्त ऐसी उतावल काहे कूं करें हैं ॥ श्रीराज संध्या कर चुकेंगे आपकूं पहेराय के अब ही प्रसादी करायके तोकूं देवुंगो, तो लों तू एक क्षण तो रहे ॥ तब वानें हमसे कह्यो ''भट्टजी यह माला तो तब ही प्रसादी होय गई हैं जब श्री प्राणनाथजी ने इहां अंगीकार के सूचना वारो ''हूं'' ऐसो कह्यो है ॥ तासूं यह मोकूं देवो, मैं ले जावूं हूं ॥'' ऐसे कहेके मेरे हाथ सूं खेंच के सो ले गयो ॥३६॥ मोकूं तो बड़ो आश्चर्य होय रह्यो ॥ तब अवसर पायके प्रभु को यह वृत्तांत सुनायो के ''प्रभु यह कैसे है'' ॥ तब श्री प्राणप्रभुजी मंद मुसकान सूं शोभायमान श्रीमुख सों मोकूं आज्ञा करी के, ''भट्टजी मेरे कृपापात्र सेवकन कों यह स्वाभाविक है, अचल कोई भाव है यामें तुम रंच हू आश्चर्य मत मानो ॥'' या प्रकार सूं** कहे हैं ॥ श्री प्राणप्रभुजी ने अपनो जो अनिर्वचनीय अलौकिक स्वाद ऐश्वर्य

प्रगट कियो है यासूं मेरो संदेह रूप भ्रम निवर्त होय गयो ।। और मैंने यह निश्चय ही कर लियो कि यह हमारे महाप्रभुजी अपने रंचमात्र संबंध सूं हू अपने सेवकन के सगरे ही कार्यन को वेग ही सिद्ध कर देवें हैं ।। आपको यह स्वरूप ही ऐसो है ।। यह प्रसंग ऐसो है यह यहां रहे भक्तजन अब कानरूप हाथन सूं प्रभुन के और चरित्र अमृत को पान करिये ।।४२।। निरन्तर भक्त सूं अत्यन्त बढ़ रहे प्रेम सूं कितनेक भक्तजन कबहू तुलसी काष्ट की माला लायके श्री प्राणनाथजी को अर्पण करें हैं ।। कृपासागर श्री महाप्रभुजी सदा प्रसन्न होवत ही तुलसी मालान को श्रीकंठ में धारण करें हैं ।। तामें रूपण नाम को जो क्षत्रीय है सो प्रभुन के स्वरूप में अत्यन्त आशक्त चित्त है सो बहुत गुणी हतो परन्तु बहेरो हो धीरे के वचन को सुनतो नहीं हतो ।। सूधो श्रेष्ठ वैष्णव हतो ।। खेरावाद के पास खीरी लाहोरपुर है तामें बहुत जन विमुख ही रहेते ।। वा गाम को सदा निवासी हो अकेलो ही हतो ।। और वैष्णवन के संग संगत हती नहीं ।।४६।। परन्तु महाप्रभुजीन को सो बड़ो ही कृपापात्र हतो ।। कपट तो रंच हू जामें नहीं है ।। प्राणनाथजी की कृपा सूं ढीठ ही होय गयो हतो ।। श्रीराज के संग बहुत ही वा वा वार्ता को करे सगरे जन याकूं अनुमोदन करें के भलो भलो कहे सूं हू प्रभुन को प्रसन्न ही करतो ।।४७।। एक दिन प्रभुन के श्रीकंठ में स्थित तुलसी माला को सो मांगतो भयो है ।। कृपा समुद्र श्री प्राणनाथजी वाकूं माला वेग ही प्रसन्नता सूं देते भये हैं ।। तब उदार स्वभाव वारो सो रूपण क्षत्रीय हू उछलित भक्ति सूं प्रभुन को प्रणाम करके वा माला को उच्छलित रोम हर्ष वारे कंठ में पहेरतो भयो है ।। मन में प्रसन्नता सूं नाचतो भयो है ।।४९।। ता पाछे याही क्षण में कोई श्रेष्ठ भक्त आयके जगतपती महाप्रभुजी को भक्ति सूं प्रणाम करके आपको तुलसी की दोय मालान कों अर्पण करत भयो है ।। श्री प्राणप्रभुजी मंद मुसकान सों शोभायमान वारे श्रीमुख सूं प्रसन्नता सों वा माला कूं अंगीकार करत भये हैं ।। अपने कृपापात्र जनन में अमृत के समुद्र को वर्षा करत यों आज्ञा करत भये हैं के श्रेष्ठ पात्र प्रवर के प्रति दान को श्रेष्ठ फल बिना यत्न सद्य ही अनुभव में आवे है ।। अथ जो सुन्दर वस्तु तुलसी माला जो दीनी हैं सो वेग ही दुगुनी ही मोकूं मिली हैं ।।५२।। तासूं श्रेष्ठ पात्र को अवश्य ही श्रेष्ठ वस्तु दान करनी ।। प्राणनाथजी को यह सुन्दर वचन है ।। वा भक्त के सुन्दर

पात्र भाव को कहत श्रेष्ठ भक्तन में बड़े भाग्य को प्रगट करत भये हैं ।। के भक्त, के भक्तगणन, में भजन के उज्ज्वल महात्म्य को हू प्रगट करत भयो है तासूं सबन कूं अत्यन्त बड़े या महाप्रभुन के भक्तन को वाणी सूं, कि कर्मन सूं, कि तन सूं हू प्रेम सूं, बड़े आदर सूं पूजन करनो प्रसन्न करनो यह अवश्यक है ।। यह सिद्धांत है जासूं वा भक्तन के अत्यन्त सेवा करने में विनके प्रसन्न होयवे में यह प्रभुजी अत्यन्त प्रसन्न होय जाय हैं ।। ऐसे बड़े प्रभु जब प्रसन्न होंय तो ऐसो कोन श्रेष्ठ फल है जो वेग सिद्ध न होय जाय ।। अपितु सब फल सिद्ध होय जाय हैं ।। यह ऊपर को प्रसंग सूचना कियो है ।। अब चलतो प्रसंग कहूं हूं ।। अब गुण सागर प्रभुन को जो चित्र चरित्र रूप अमृत है वाकूं पान करिये ।।५७।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चतुर्थ तरंगः ।।४।।

तरंग ।।५।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अब पंचम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **गुंजा सहज केषी समेत्थस्मै प्रेम्णा समम्युच्छलता**

नितातं समर्पर्थ लेख करावुजेन स्वीकृता हंतद धाती कंठे ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि कितनेक भक्त निरन्तर रहे प्रेम सूं आयके गुंजा माला अर्पण करें हैं ।। गुण समूह के सागर यह श्री प्राणनाथजी अत्यन्त प्रसन्न होयके वाकूं श्रीहस्त सूं अंगीकार करके कंठ में धारण करें हैं ।।१।। फिर वाकूं उतार के उच्छलित विलास पूर्वक कोई हृदय में स्थित भाव सूं यह प्रभुजी श्री हस्त में धरें हैं ।। फिर वाकूं अंगुली पल्लव में धरके प्रिय चिरपर्यंत वाकूं भ्रमावत वा वा प्रकारन सूं अपने जनन को के अपनी कृपापात्र वा पूर्ण चन्द्रमा को विजय करवे वारे श्रीमुख सुन्दरन को हू कृतार्थ करें हैं ।।३।। फिर सुन्दर चमक रहे श्रीमुख चन्द्र वारे महा रस सागर महाप्रभुजी फिर वा माला कूं लेके वासूं या सुन्दरीन के मानो नामन को जपत कि विनके अगणित गुणन की गणना को विचार करत फिर कबहू विचार में न आयवे वारे कोऊ भाव सूं वा गुंजा माला को विनके चित्त को

ही मुठी में धर राखें हैं ।। जासूं वे विनको चित्त हू अपने मंद हास्य सूं शोभायमान श्रीमुख तथा श्री श्रृंगार रस सागर सूं मानो रंगे हैं ।। तासूं श्वेत लाल श्याम होय रहे हैं ।। विनको मुठी में धर राखे हैं ।।५।। फिर हृदय पर इच्छानुसार राखके श्रीहस्त में लेकर वाकूं अत्यन्त भ्रमावे हैं ।। कबहू वा माला को सुमेरु डोरा को श्रीहस्त में लेके लटकायके राखें हैं ।।६।। कबहू कंठ में धरके वासूं फिर उतारके श्रीहस्त में धर राखें हैं ।। ऐसे श्री महाप्रभुजी और हू अनेक प्रकारन सूं अत्यन्त भावन सूं या गुंजा माला सूं चिरपर्यंत खेल करत हरिणी लोचना सुन्दरीन के चपल कटाक्ष को हू निरन्तर खिलावें हैं ।। कबहू ऐसे उच्छलित विलास समूहन सूं शोभायमान श्री अंग वारे कमलनयन श्री प्राणनाथजी कबहू श्री अंग में धारण कियो जो रुईदार मनोहर नीमा है वाके शोभायमान वाये भाग के सुन्दर रेशमी बंध सो श्रीहस्त कमल के अंगुष्ट तथा अंगुली पल्लव सूं लेके कान के पास ले जायके उच्छलित होय रहे अनंत प्रकारन सूं मनोहर मधुरता सुन्दर नाद वारो के अमृत के सार सूं अधिक मीठे प्रकाशमान अनेक प्रकार वारो जैसे होय वैसे वा बंध कूं जतावें हैं ।। तबहू या बंध सूं बारम्बार बहुत प्रकार सूं खेल करत मंद मुसकान करत गोकुल भूमि के इन्द्र श्री प्राणप्रभुजी अनन्त रूप विलास समुद्र वारे श्रीमुख चन्द्रमा सूं के दोनों भ्रु सूं के निरन्तर प्रफुल्लित होय रहे दोनों नयन सूं श्री हस्त कमल के विलास सूं विराजमान वा अंग गण सूं के वचन समुद्र के पार की जाकूं वचन समुद्र वर्णन नहीं कर सकें हैं ऐसे उच्छलित होय रहे विराजमान मनोहर सौन्दर्य सार सूं मृग लोचना सुन्दरीन के चपल कटाक्षन को हू खिलावें हैं ।।१३।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के अंग अयि मित्र रस सागर प्राणनाथजी को सो ऐसो मनोहर स्वरूप को महद भक्तन के अत्यन्त लोभ भरे हृदय में ही अपनी मुठी में दृढ़ ग्रहण कर ठहेरे हैं ।। मुठी में हृदयों ने ले राख्यो है ।। विनके चरणन में गिरके दीनता नम्रता चाटुकार पूर्वक हाथ बांधके मेरे वचन याचना हू करें हैं ।। फिर वेहू लोभी हृदय हू रंच मेरे वचन को नहीं देवे है ऐसे अपने मन को उदार को कहेकर श्री भट्टजी फिर चलते प्रसंग को वर्णन करें हैं ।। के अहो श्री प्राणनाथजी के उदार मनोहर मधुर गुण रूप डोरान सूं खेंच के जे वश किये हैं ऐसे पांच के छै वर्ष के बालक कूं प्राणनाथजी के निकट आवे है वे ही या प्रभु को वेग प्रणाम करके श्री आपके

आसन पास ही बैठ जाय है ।। इनको श्री प्राणनाथजी अत्यन्त ही खिलावे है ।। के संग मनोहर वार्ता कूं करें हैं ।। विनकी इच्छानुसार अनेक प्रकार के अनेक सुन्दर खिलौना हू देवे है ।। विनको वैसे वैसे अत्यन्त प्रसन्न करें हैं ।। विनकी इच्छानुसार विनसूं पूछके उच्छलित प्रेम सूं अनेक प्रकार के भक्ष्य प्रसाद पकवान कूं देवे है ।। विनके संग वैसे वैसे खेले है ।। इनके पीछे गुप्त रीति सूं श्रीहस्त में धारण करके इनकी रेशमी मनोहर सोना की कोंधनी को दोनों अंगुलीन सूं ऐसो चटकावे है जैसे वे आश्चर्यचकित होय जाय हैं ।। के वा कोंधनी को अचानक टूट गई है ।। ऐसे ही जानें हैं ।। तब श्री प्राणनाथजी के मुखारविन्द को उदय होय रही मंद मुसकान शोभायमान करें हैं ।।२१।। बालक तो पीछे हाथ करके मुख को फेरके निश्चय करें हैं के यह टूटी नहीं है तासूं आश्चर्यित होयके प्रसन्न होयके अत्यन्त हंसे है ।।२२।। तथा वा प्रिय के हंस रहे श्रीमुख चन्द्रमा सूं प्रसर रही अमृत की अखंड निर्दोष पुष्ट दीर्घ धारा को नयन कमल रूप अंजुलीन सूं पान करें हैं ।।२३।। अहो श्री प्राणनाथजी के ऐसे महा कौतुक सूं शोभायमान अत्यन्त अगाध अपार लीलारूप समुद्र में जिनको मनरूप क्षीर सागर में फिर गिर्यो हू नहीं है तब श्री प्राणनाथजी वा बालकन के प्रति फूलन की माला, कि तुलसी की माला, कि गुंजा माला हू देवें हैं ।।२५।। वैसे और हू जो जो वस्तु विनको चाहिये सो हू कृपा सागर दिवावें हैं ।। कबहू कितने वे बालक दश वर्ष के कि बारह वर्ष के हू आवें हैं जे गुरु सूं व्याकरण पढ़ें हैं ।। के श्रुति कि काव्यशास्त्र पढ़ें हैं ।। वे सगरे अपने गुरु के संग आवें हैं ।। प्रभुन को प्रणाम करके आयके और आसन पर बैठें हैं ।। विनको गुरु यहां और आसन में सुख सों बैठें हैं ।। तब श्री प्राणनाथजी अक्षर अक्षर में चंचल तरंगन सूं आकाश को प्रसर रहे मनोहर अमृत के समुद्रन की वर्षा करत ही विनसों विनके गुरुन सों सो सो पूछें हैं ।। यामें विनको गुरु नम्र होयके हाथन को बांधके प्रणाम करके जगतों के गुरु प्रभुन को आछी रीति सूं पढ़ाये बालकन की परीक्षा लेवे लिये विज्ञापना करें हैं ।। बालकन को वा वा पढ़ने में प्रवर्त करें हैं ।। के बालक हू कृपासिन्धु या प्राणप्रभु के आगे धैर्य धरके सावधान होयके बड़े यत्न सूं पढ़ें हैं ।। तामें आपकी जे स्वरा है सो बड़ी गंभीर मनोहर है के माधुरी के प्रवाहन सूं अमृत को विजय करें हैं ।। के मनोहर कोमल है विलक्षण है ।। लक्षण रहित नहीं

है ।। ऐसी स्वरा सूं पढ़े है जामें हू दोनों भ्रु सूं के दोनों नयन सूं चमकन के अत्यन्त मनोहर श्री मुखारविन्द सूं वैसे मनोहर अपने स्वरूप सूं के विलास वारे श्री हस्तकमल सूं वैसी मनोहर वाणीन सूं महाप्रभुजी स्वरावर्ण मात्रा आदि सगरे ही सिद्धांत को प्रगट करें हैं ।। अमृत को वरसाय रही कोई चातुरी सूं वाकूं आछी रीति को स्थिर ही करें हैं ।। तामें कोई वेद में स्वरा ठीक नहीं उचारें हैं के अक्षर की मात्रा चूके है तामें उदार बुद्धि वारे श्री प्राणनाथजी धैर्य देकर विनको समझावें हैं ।। के कबहू स्वयं सो सो पढ़त हू समझावें हैं ।। फिर विनके गुरु सूं महाप्रभुजी पूछें हैं के यामें तुम्हारो हू कैसो संमत है मेरे आगे तुम कहो ।। वामें सो गुरु यदि यथार्थ पढ़े है तो श्री महाप्रभुजी निर्दोष वा गुरु पर प्रसन्न होय हैं यदि सो गुरु हू अशुद्ध पढ़े है तब तो श्री महाप्रभुजी बालकन को कहें हैं के यामें तुमारो दोष रंच हू नहीं है ।।दोष है तो तुमारे या गुरु को है ।। ऐसे आज्ञा करके सबन के अधिपति प्रभुजी वा पर क्रोध हू करें हैं ।। के वा बालकन को निरन्तर समाधान करें हैं ।। दया के समुद्र हमारे श्री प्रभुजी वाको समाधान हू करें हैं के यहां ऐसो पाठ है सो हू सुनके गुणसागर श्री महाप्रभुजी में अत्यन्त ही प्रसन्न होय हैं ।। अपनो ही बड़ो दोष मानें हैं ।। प्रभुन को बहुत वार प्रणाम हू करें हैं ।। तब उदार श्री महाप्रभुजी विनके प्रति बहुत महा प्रसाद पकवान देवें हैं ।। बीड़ा कूं देवें हैं ।। विनमें जो ब्रह्मचारी बालक होंय तो वाकूं श्री महाप्रभुजी वीड़ा नहीं देवें हैं ।। केवल महाप्रसाद ही देवें हैं ।। तब वे या श्री प्राणनाथजी को प्रणाम करकेअत्यन्त प्रसन्न होयके अपने अपने घर में जाय हैं ।।४१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे पंचम तरंगः ।।५।।

तरंग ।।६।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अब षष्टम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **मृगशीशु काचनचारु मुर्ती महाप्रभो सधांते राजते स्तम**
संप्रिय नाणो गुण सिंधुरस्थ सदाप्रियो वर्तत सर्वथैषः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं **के कोई हरिणी मनोहर रूप**

वारी बाल ही हती सो महाप्रभुजी के मंदिर में विराजमान हती ।। यह गुणसागर श्री प्रियजी वा पर सदैव ही सब रीति सूं ही प्रसन्न रहते ।।१।। कोई समय प्रभुन के पोढ़वे पर आपके पास धीरे-धीरे आयके छिपके सैया के पास कहूं सोय जाती, वहां साधु जैसे रहेती ।।२।। श्री प्राणप्रियजी प्रेम समूह सूं हर्ष पूर्वक वाकी पीठ पर बारंबार श्रीहस्त फेरत ही याके मुख को आगे धरके ही याके पास ही विराजमान होते ।।३।। सो हरिणी उदय होय रहे मनोहर भाव विशेष के परवश होयके या प्रणनाथजी केसुन्दर कि कल्पवृक्ष के पल्लव सूं हू लाल सुगंधित वा श्री हस्त कमल के रसना पल्लव सूं चाट्ती ही रहे ।।४।। जब प्रियजी मनोहर बड़े तकियावारे सुन्दर आसन क गादी पर विराजमान होते तब नित्य ही धीरे धीरे आपके पास आयके उहां बैठ ही जाती ।।५।। पूर्ण चन्द्र समूहन की सुन्दरता को विजय करवे वारी शोभा वारे श्रीराजके मनोहर श्रीमुखकमल को टकटकी लगायके वैसे वैसे बारंबार निहारत रहेती ।।६।। वा प्राणप्रिय के ह्रदय सूं के मनोहर मनोहर श्रीमुख कमल सूं निकस रहे अधिक प्रवाह वारे अलौकिक प्रसर रही वा सुगंधी को दोनों नासा रूप हाथन सूं पान करती रहे हैं ।।७।। के प्रिय के सगरे अंगन की उदार रूप वारी माधुरी के, सुन्दर चमक रहे नाच रहे अधिक मनोहर हास्य को, वैसे मनोहर प्रफुल्लित नयन जिह्वा सों अत्यन्त पान करती रहे हैं ।।८।। या प्रिय के चरण तली सूं उछल रहे अधिक मनोहर मंजी के रंग सूं अत्यन्त लाल होय रहे जे या प्रिय के चरण कमल संबंधी नख चन्द्रमा सूं निकस रहे जे श्रेष्ठ चांदनी के निमर्याद प्रवाह समूह विनसों अपने को शीतल करती रहे हैं के रंग वारो करती रहे हैं के अपने ताप को निवर्त करती रहे हैं ।। अत्यन्त उच्छलित प्रेम सूं गिर रहे सुधा समुद्र के हजारन कीरत प्रवाह, जिनसूं ऐसे आपके श्रेष्ठ चरण कमल की तली को चाट्ती रहे ।।१०।। तथा अत्यन्त उच्छलित प्रेम सूं के कांति के समूहन सूं नाच रही, ऐसी वा प्राणनाथजी की पीठ कों हू चाट्ती रहे हैं ।। प्राणप्रियजी वा हरिणी के मनोहर विलास वारे दोनों नयन को तथा विशेष सूं शुद्ध चित्त को, कि उदार भाव को, तथा वैसी शरणागती को, कि सूधो स्वभाव, विचारके अपनी अत्यन्त प्यारी चन्द्रमा को हू विजय करवे वारे, श्रीमुख वारी सुन्दरीन को स्मरण करत, कि विनके वैसे मनोहर भाव के किणका को धारण कर रही या हरिणी में हू अत्यन्त

प्रसन्न होवत ही रस सागर प्रियवरजी बारंबार वैसे चाट रही हू या हरिणी कूं कबहू निवारण नहीं कर रहे हैं ॥ किन्तु मंद मुसकान सों सुन्दर श्रीमुख वारे यह प्रभुजी याके भाव को अत्यन्त ही सदा सराहना करत, भाव सों याके किये वा वा प्रकार सों अधिक ही हर्ष को प्राप्त होय रहे हैं ॥१४॥ कोऊ उच्छलित भाव समूह सूं चाटवे की इच्छा वारी या हरिणी को जानके जगतपति रस सागर श्री महाप्रभुजी स्वयं ही वा वा अंग को वाके प्रति देते हू रहें हैं ॥१५॥ जब यह प्राणप्रियजी अपने अधर सूं उच्छलित भई सुधा सूं दुर्लभ महा स्वाद के चक्रवर्ती पद में स्वयं अभिषेक किये कि महा स्वाद राज बनाये चर्वित तांबूल को पड़घी के तष्टि में पधरावें हैं ॥ तब ही यह हरिणी प्रफुल्लित रोमावली वारी होयके वहां जायके अद्‌भुत ही वा तांबूल को ले लेवे है लेके कमलनयन प्रभु के निकट ही, राज के श्रीमुख पूर्ण चन्द्रमा सूं गिर रहे अमृत के समुद्र के परार्ध प्रवाहन को अत्यन्त पान करत ही बैठो रहे हैं ॥१९॥ ऐसी हरिणी के संग जो प्रभुन ने स्वयं यह लीला करी है याकूं

''धन्यास्तु मूढ मतयोपि हरिण्य एताः''

या वेणुगीत के श्लोक में स्वयं व्याख्यान करत अपने सेवक कि भक्तन के आगे चातुरी सूं बहाने सूं कृष्ण लीला सूचना करी है ॥ अहो सो ऐसी वा हरिणी को कि ऐसे वा प्रिय को कि ऐसी आपकी लीला को, कि वा रस में निमग्न भक्तन को, कि राज के स्वरूप निष्ठा वारी वा मृगनयनी को स्तुति करवे में ऐसो कौन है, जो निश्चय सूं करोड़न मुख वारो हू होय, बुद्धि वाकूं अपार सहायता कूं प्राप्त भई होय सो हू ब्रह्मा के परार्द्धन सूं ही विशेष समूहन सूं हू निरन्तर यत्न करत हू समर्थ होय सकेगो ॥ किन्तु कबहू हू नहीं होय सकेगो ॥ ये श्री कल्याणभट्टजी हरिणी को प्रसंग सुनायके अब मेना को प्रसंग सुनावें हैं ॥ मेना नाम सूं प्रसिद्ध कोई बड़भागिन सारिका हती सो कोऊ राज के भक्त ने कबहू लायके श्री आपके चरणन के आगे भेट करी ॥ सो श्री गोकुल नायक हरि प्रभु के वा वा नाम को लेवत ही आपके घर में ही ''राधा-कृष्ण'' ''राधा-कृष्ण'' सो यह बारंबार बोलती ॥ पींजरा में, के हरी, सो श्री प्राणप्रिय को निरख के सदा जय ऐसी बारंबार कहेती ॥ वैसे प्राणप्रिय

को, कि आपके सेवक भक्तन के प्रसन्न करवे वारे और और कूं कूं मधुर आलापन को कहेती ।। तामें विशेष जानवे वारे श्री प्रिय के स्वरूप में आशक्त कृपा समुद्र भक्तवर ने, या मेना को, ''श्री गोकुलेश श्री गोकुलेश'' ऐसो बोलवो सिखायो ।। फिर तो सब और नाम को छांड़के केवल ''श्री गोकुलेश श्री गोकुलेश'' ऐसे ही कहती ।।२५।। कबहू कोऊ भक्त ने श्रेष्ठ पींजरा में स्थित या मैंना को प्रिय के आगे राखी होय ।। तब तो यह बहुत हर्ष को प्राप्त होयके प्रिय के श्रीमुख चन्द्रमा को निरखत ही नाचने लगती है ।।२६।। या पर अत्यन्त प्रसन्न होयके भगवान श्री गोकुलेश प्रभुजी शोभायमान अपने श्रीमुख सूं प्रभु नाम को सुनावत भये हैं ।। तब तो यह मैंना स्पष्ट ही आपके आगे वैसे नाम को कहेती, अपने पंखन को बहुत रीति सूं चंचल करत ही श्रीमुख चन्द्रमा को निरखत ही बहुत रीति सों नृत्य करती भई है ।। तब निकट वासी आपके कृपापात्र श्रेष्ठ वैष्णवन ने प्रभुन के आगे विनय करी ''के कृपासिंधो राज श्री गोकुलाधीश प्रभो, आपने याकों हू भगवद नाम उपदेश देकर अब और भागवत बनायो है'' ।। वैष्णव श्रेष्ठ बनायो है ।। यह सुनके वेग ही श्री प्राणनाथजी मंद हास्य सूं सुन्दर श्रीमुख वारे होयके प्रसन्न होयके विनको कहत भये हैं -- ''यह मेना जा दिन सूं इहां आई है, वाई दिन में ही वेग ही वैष्णव श्रेष्ठ होय गई है, अब नहीं भयी है'' ।।३०।। तब श्री राज के भक्त पींजरा में ठेहरी या मैंना को आदर पूर्वक यहां सूं ले जायके मनोहर स्थान में राखते भये हैं ।। अपने हृदय में भाग्यन को बहुत प्रकारसूं सराहना करत हैं ।। ऐसे कृपा समुद्र जगतपति या प्राणनाथजी में उच्छलित भाव वारी होयके कितनेक दिनन के गुजरत ही पंच भौतिक शरीर को याने छोड़ दियो ।। रस रूप प्राणनाथजी द्वारा अपने मनोहर मनोरथ के पूर्ण करवे में समर्थ जाकूं अलौकिक कहें हैं ऐसे लीला योग्य रस सों भरे स्वरूप को प्राप्त होय गई है ।।३३।। कृपा दया समुद्र कमल नयन श्री प्राणनाथजी याके पहेले शरीर को अपने कृपापात्र सेवक द्वारा श्री यमुनाजी में पहुँचाय के श्री यमुना जल में प्रवाह करवाय देते भये हैं ।।३४।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे षष्ट तरंगः ।।६।।

तरंग ।।७।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अब सप्तम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **यार्स्वप स्वंये खल तिष्ठति जात्वल्योपधी नस्य**

मुखांतीकेया विप्राब्तो दाचंगुले विस्तृतली सुपद ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि श्री प्राणनाथजी के, बड़ो तकिया पीछे है ।। छोटे तकिया वाये भाग में है ऐसे गादी पर विराजमान हैं वामें श्रीराज के वायें भाग जो शोभायमान छोटे तकिया को मुख केन्द्र पास दोय अंगुल विस्तार वारो रेशम के सूत्रन सूं बुनी नेवरा वारी मनोहर कोमल एक ऐसी पट्टी रहे हैं ।। कमल को विजय करवे वारो जाको मुख है ऐसे प्राणप्रिय, प्रियजी कोई अनिर्वचनीय भाव सूं पट्टी, निवार को श्री हस्त कमल में धरें हैं ।।२।। कबहू तो याकूं लेके श्रीहस्त कमल की चारों अंगुली में लपेट्के धरें हैं ।। कबहू तो याको आधे लपेट के फिर रस सागर प्रियजी याके संग भाव पूर्वक रमे है ।।३।। कबहू तो याकूं लेके श्रीहस्त कमल की चारों अंगुलीन में लपेटके धरें हैं ।। कबहू तो या निवार को तकिया के मुख के पास छिपायके राखत ही फिर याकूं खेंचके लटकायके याको लंबा करके अनेक प्रकार सूं चंचल करें हैं के झुलावें हैं ।। कबहू तो याकूं अपनी नासिका पर भ्रमावें हैं ।। फिर कपोलन पर लगावें हैं ।। उच्छलित कौतुक को प्रेरणा किये प्रियवरजी भाल पर हू बहुत वार ही राखें हैं ।। कृपापात्र भक्तवरन के संग वैसे वैसे वार्ता करत हू लीला रसिक प्रियजी या निवार पट्टी को छांड़े नहीं हैं ।।६।। श्रीहस्त में याके संग लीला करते ही रहें हैं ।। ऐसे विलास स्वभाव वारे प्रभुजी यहां से उठें नहीं हैं तो लों खेल ही करें हैं ।। कबहू तो कौतुकी हमारे प्यारे ऐसे श्रीहस्त में धारण किये शोभायमान उपरना के अंचल सूं हू विहार करें हैं ।।७।। अहो श्री प्राणप्रियजी या प्रकार की क्रीड़ान सूं चंचल होय रहे अपने चमकने अंगन सूं के आनंद समूह रूप अपने विलास सूं के भ्रू पल्लव युगन के तरंगन सूं पूर्ण चन्द्र समूह को विजय करवे वारे श्रीमुख वारी सगरी सुन्दरी जनन को चित्त, जो वैसे वैसे जा कौतुक को, के जा भाव को, कि जा साहस को, कि कोऊ विह्वलता को, कि आग्रह

को, कि जा अवस्था को, कि जा हठ को, कि जा हर्ष को, कि जो अत्यन्त प्रफुल्लता को धारण करें हैं, कि विनके भ्रूयुगल में, कि नयन कमल में, कि कपोलन में, कि अधरन, ओष्ठन में, के कुचन में, के भुजान में, के नितंब बिंबन में, के हृदय घोंटू, जंघनादि में, वैसे और और हू अंगन में, के प्रफुल्लता को, कि जा ताप समूह को, कि जा श्रेष्ठ अत्यन्त ऊंचे उछल रहे चंचलता को धारण करें हैं, वाकूं कछुक तो सो प्रिय हू जानें हैं ॥ सगरे वा भाव रस को, वे सुन्दरीजन, कि विनके चित्त ही जानें हैं ॥ और कोऊ हू नहीं जान सके है यह भाव है ॥११॥ और प्रसंग कहे हैं "के श्रेष्ठ बुद्धि वारो विनोदा नाम क्षत्री हतो ॥ कबहू सो आयके बहुत प्रकार सूं वा वा विनोद हास्य चित्त के हरवे वारे नकल टोक हू करत, के अनेक प्रकार की देश देश की भाषा, रीति, चेष्ट्य कूं बारंबार करत प्रभुन को वैसे वैसे प्रसन्न करत हतो ॥ वैसे अबहू प्रसन्न करें हैं ॥१३॥ कबहू लोक जो ब्रह्मचारी ऐसे प्रसिद्ध सुदामा नाम ब्राह्मण हू आपसूं हांसी ही करतो वासूं प्रभुजी अत्यन्त हांसी करें हैं ॥ तामें वैसे कोई एक सुनारी वामनी ऐसे प्रसिद्ध ठिंगनी स्त्री हती ॥ सो श्रीमुख दर्शन अर्थ नित्य आवे उदार स्वभाव वारे श्री प्राणनाथजी वाकूं देखके मंद हास्य सूं भरे श्रीमुख सूं आज्ञा करत भये "यह तिहारी स्त्री है, तोकूं देखवे कूं इहां उत्साह भरी आयी है ॥" तब यह ब्रह्मचारी हू उठके याके पास जायके अपने हाथ सूं वाके हाथ कूं पकड़के मंद मंद हसत ही वाकूं पास लेकर प्रभुन के आगे यों कहे हे के "**हमारे प्रभो हमारे जोड़ आपने ऐसो यह बनायो है कि जासूं कोई हू पुरुषार्थ सिद्ध नहीं होय है**" ॥ यह सुनके प्राणनाथजी मंद मुसकान सो सुन्दर श्रीमुख वारे होयके उच्छलित विलास पूर्वक यों आज्ञा कहें के "**दोनों तुम नपुंसक हते यह चिरकाल पर्यंत विधाता ने, अथवा मैंने तुम दोनों को यह योग्य ही जोड़ा बनायो है ॥ तुम दोनों या समे योग्य हो ॥ ऐसे तुमारे में ऐसो कौन अर्थ है जो सिद्ध न होय** ॥१९॥ यह सुनके यह सुदामा ब्रह्म्चारी जी बड़े क्रोध कूं प्रगट करत कहें हैं "**के मेरे प्रभो यह आप मेरे को नपुंसक कहो ॥ प्राणप्रभो मेरे में तो पुरुषार्थ अत्यन्त है जो मैं पुरुषार्थ युक्त हू यह निश्चय जानूं हूं** ॥" तब प्राणनाथजी आज्ञा करें हैं कि अब तुम कहो हो सो ठीक है, **यदि यह वामनी अपने मुख सों तुमारे पुरुषार्थ को कहे तब तो हम बात निश्चय मानेंगे ॥ तासूं जो या वामनी को**

पूछें हैं ।। यदि यह तेरे जो पुरुषार्थ कहे तब तो सत्य होय ।।२२।। तब तो यह वामनी अत्यन्त लज्जा समूह को दिखावत ही वस्त्र के अंचल सूं अपने मुख को छिपावत ही दौड़वे के लिये उद्यम करें हैं ।। यह ब्रह्मचारीजी हू वाके अंचल जो दृढ़ पकड़के वाकूं बहुत प्रकार सूं खेंचत ही रस सागर पुरुषोत्तम प्रभुन के आगे कहेवायवे के लिये बल सूं राखें हैं ।।२४।। तब श्री प्राणनाथजी अत्यन्त हँसें हैं ।। वे मृगनयनी वे सगरे भक्तजन हू उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक वा प्रिय के हास्य रस मधुर सागर को प्रफुल्लित नयन, के प्रफुल्लित हृदय रूप मुख सों पान करें हैं ।। या प्रकार वा ब्रह्मचारी सूं कि वा वामनी सुनारी सूं स्पष्ट ही उच्छलित कौतुहल समुद्र समूहन सूं प्रेरणा किये भये ही नकल हास्य टेक विनोद को करत ही लोकातीत अगाध महास्वाद रस सागर जो अपने जनन को विहार कराय, स्वयं हू नित्य विहार करें हैं ।।२७।। सो सुदामा ब्रह्मचारी हू प्रभुन की वैसी कृपा सूं दान किये ढीठता सूं निर्भय होयके या प्रिय के आगे स्पष्ट हास्य नर्मन को अत्यन्त करत ही या प्रियवर के रहस्य को हू सभा में छिपायके देववाणी सूं कहत ही या प्रभु को चिरपर्यन्त ही प्रसन्न करे है ।। कबहू कबहू तो अत्यन्त छिपी बात या प्रभु सों कहे है ''के कृपासिन्धो, हमारे प्रभो, वा दिनन को आप स्मरण करो हो के जा दिनन में यह जो आपके संग की जायके श्री यमुनाजी में आप न्हायके धोती उपरना छोड़के आते ।। मैं विनके उठायवे कूं वहां ठहेरतो आप तो श्री यमुनाजी के अत्यन्त मनोहर सुन्दर शीतल निर्जन तट पर, वाके अनेक प्रकार के वृक्षन की सघन छाया में जो कोई क्षण कोई कारण सूं विराजमान होते सो कृपासिन्धो सो स्मरण करो हो'' ।। ऐसे कहत तासूं कछु रहस्य आपको सूचना करत आप कूं प्रसन्न करें हैं ।। तामें स्वयं लाज सूं दृष्टि को नमातो जाय है ।। **''सो धूर्त'' यों कहत हमारे प्रयत्नों अब वैसे का कारण सूं आय हो वे यह बारंबार हंसत मुख सों कहेतो ।। मंद हास्य सूं शोभायमान मुखारविन्द वारे प्रभुन को प्रसन्न करत हैं ।। तब या ब्रह्मचारी के ऐसे वृत्तांत के मर्म जानवे वारे वे सुन्दर भक्त, के वे मृगनयना सुन्दरी हू, वा प्रियवर पुरुषोत्तम श्री गोकुल प्रभु के स्वरूप में, जा सुन्दरता के विलास के प्रकारन को स्पष्ट अनुभव करते भये हैं ।। वैसे वा प्रकारन को वेग ही जानें हैं ।।''** श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि वा भक्त, के भक्त सुन्दरीन के वैसे चरणकमल संबंधी रज की किणका,

के माधुरी संबंधी चरण कमल को सेवा करवे वारो, के विनके कृपा कटाक्ष के रूप, अमृत समुद्र समूह सूं शुद्ध अंतःकरण वारो है ।। यह रंच एक प्रकार सुनावत यह भेट करूं हूं के विनको हों प्रणाम करूं हूं कि वा प्रिय के स्वरूप संबंधी सुन्दरता मधुरता के विलास प्रकारन पर के वा भक्त सुन्दरी पर हू अपने को वार डारूं हूं ।।३६।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे सप्तम तरंगः ।।७।।

तरंग ।।८।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अब अष्टम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथ चतुरविहारर्या ज्यस्य भ्रातपुत्रो**
विविध विष्णुपदानां चारु गामे कृतो च
अतीनीपूर्ण मनीषांनुरूप संधीन पाजगती
जयती दासो गोकुलाधीश्वरस्य ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के चतुरबिहारी नाम जो प्रभुन को भक्त है अनेक प्रकार के विष्णुपद के मनोहर गान में कि मनोहर बनायवे में जो अत्यन्त चतुर बुद्धि वारो है ।। वा चतुर बिहारीजी के भैया को जो पुत्र है सो वाकूं समान है ।। बड़ो बुद्धिमान है ।। श्री गोकुलेश प्रभुन को जो दास है सो सर्वात्म भाव सूं विराजमान है ।।१।। अद्भुत अमृत सूं हू मधुर जाको आलाप है कि प्रिय के चरणकमल संबंधी उछल रह्यो जो रस है वाके आस्वाद लेवे लिये जो भ्रमर रूप है ।। के वा प्रिय के सदा निर्दोष गुणगान में आशक्त जाको चित्त है के निर्मल विनय भर्यो जिनको स्वभाव है कपट सूं जो रहित है ऐसो श्री राज को कृपापात्र श्री वृन्दावनदास है ।।२।। सो गुण को निधान वृन्दावनदास जी हू कबहू ईश्वरेश्वर प्राणनाथजी के चरणकमल के निकट भक्ति सूं आवे है ।। आयके बहुत वार दंड्वत प्रणाम कर रहे वाकूं दया के सागर हू दया सूं अपने निकट ही बैठावें हैं ।।३।। सो वृन्दावनदास तो निष्पाप है शुद्ध है ।। अपने जनम को हृदय सूं सराहना करत ही उछल रहे अतुल भाव वारो है ।। राज के पासो पास बैठवे में अत्यन्त डरपे है ।।

वहां अपनी योग्यता नहीं जाने है ॥ नम्रता के समुद्र यामें उछल रहे हैं ऐसो सो वृन्दावनदास श्रीराज की आज्ञा के गौरव सूं आपके पास बैठ जाय है ॥४॥ उच्छलित अनुपम दया के सागर प्रियवर मुगटमणी प्राणप्रियजी मंद हास्य सूं प्रफुल्लित मुखारविन्द होयके वार्ता करें हैं ॥ सो शुद्ध चित्त वारो वृन्दावनदास प्रियतम के सुख देवे वारे जे चतुर बिहारीदास ने श्री हरी के जे अत्यन्त रुचिर वह कीर्तन किये हैं ॥ विनकूं कोमल स्वरा सूं गान करत वा प्रभु की इहां सेवा करें हैं ॥ तब रस सूं आर्द्र चित्त वारे यह प्राणनाथजी स्वयं गान करत यामें स्वरा के भेदन को दिखायके वा वृन्दावनदास को सिखावे है ॥ अमृत के समुद्रन को वरखा करत आज्ञा हू करें हैं ॥६॥ कि तुमारे ताऊ ने तब यामें यह अत्यन्त मनोहर स्वर बांध्यो हतो यामें, ऐसो स्वर मेरे आगे वाने गान कियो हतो यह तो वाकी छाया को लेकर गान करें हैं ॥ ऐसे उछलित प्रेम वारे कृपा रस के सागर ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी वा चतुर बिहारी को स्मरण करके वाकी अपने में अनुकूलता और वामें अपनी कृपा हू या वृन्दावनदास कूं कहें हैं ॥८॥ "तब तिहारो ताऊ श्रीमद् गोकुल में आवतो सो तिहारो ताऊ और मैं अपर सब काम कूं छोड़के सगरी रात्रि भर ही बैठ रहेते ॥९॥ सो अपने बनाये सुन्दर अर्थ वारे नवीन नवीन सुन्दर अत्यन्त मधुर विष्णु पदन को मेरे आगे निरन्तर गान करत ही रहेतो ॥१०॥ सो वैसो महा आनन्द स्वरूप मनोहर कोऊ अत्यन्त ही मनभावनो समय मेरे मन में अब ही निरन्तर प्रकाशमान होय रह्यो है ॥११॥ वा समय वाकी सुन्दर बात को हां कहूं कबहू हों कहूं गोस्वामी चरण गोवर्द्धन पर्वत हते वहां देशपती अकबर को नौकर यह चतुर बिहारी, सीकरी में वाके पास हतो ॥ सब प्रकार सूं सदा सों याकूं पास राखतो, तब यह चतुरबिहारी जी विष्णुपद दोय नवीन रसमय बनायके वा सीकरी में ठहरे वासूं ऊपत वेग ही चलके रातोंरात ही पहेले मेरे पास आयके वे दोनों पद मधुर स्वरा सूं गायके चिरपर्यन्त मोकूं सुनाये वैसे वा चतुर बिहारी पर हों अत्यन्त प्रसन्न भयो क्यों यह दोनों विष्णुपद श्री तातचरण श्री गोस्वामीजी को सुनाये हैं ॥ मैंने वासूं यह पूछ्यो ॥ प्रेमपूर्वक तब वा सुजानने मेरे आगे विज्ञापना करी "के पहले तो आपके ही अंगीकार कराये हैं, पीछे औरन को कबहू सुनावुंगो" ॥१८॥ भगवान भक्तवत्सल रससागर श्री महाप्रभुजी इतनो कहेकर चतुरबिहारी पर अपनी प्रसन्नता को सूचना करत

मंद हास्य करत आपने आज्ञा करी के वासूं मैंने फिर पूछ्यो के तुम जा बड़े क्रोधी के सेवक हो वा चक्रवर्ती की आज्ञा लेके यहां सीकरी गाम सूं आयो है ? के आज्ञा लिये बिना आयो है ?॥२१॥ तब मेरे प्रति वानें कह्यो, ''बिना आज्ञा लिये स्वयं ही यहां आयो हूं ॥'' ऐसे कहेकर मंद मुसकान सो शोभित मुख होवत प्रिय दयानिधि प्रभुजी ने वृन्दावनदास को कह्यो, कि तब सो तेरो ताऊ वेग ही सीकरी में गयो ॥ श्री गुसांईजी के सुनायवे लिये हू विलम्ब करतो भयो है ॥ यह अत्यन्त मनोहर सुन्दर मुख भव्य सुहावनी मूर्ति हतो, सदैव बड़े मोल वारे वस्त्र पहेरतो अत्यंत ही गुणी हतो ॥ प्रायः ऐसो सुन्दर कोई मनुष्य नहीं होय ॥ ऐसे गान में बड़ो चतुर, विष्णुपद बनायवे में बड़ो ही पंड्ति हतो ॥ सभामें योग्य सुन्दर मीठी वाणी वारो चतुर कि सुन्दर वेष, कि प्रियदर्शन हतो ॥ ऐसो तिहारो सो ताऊ चतुरबिहारी जब तेरो पिता को विवाह करवे लिये अपने देश में जायवे कूं आंसू वरसावत मेरे आगे प्रार्थना करत भयो है कि कहेतो भयो है; कि ''प्रभो मेरो वहां सूं फिरके आवनो नहीं होयगो'' तब मैंने कह्यो के ''तुम काहे को ऐसो कहो हो ?'' फिर वाने मेरे को कह्यो कि ''महाराज प्रिय सो देश वैसो है कि जामें हम जीते जी रह सकेंगे ॥ प्रभो हमारो जीवनो हू वहां नहीं होयगो ॥३०॥ फिर मैंने कह्यो कि ''मित्र तुम ऐसे मती कहो ॥ फिर वाने कह्यो ''प्रभु यह ऐसे ही है ॥'' सो वैसे ही भयो, कि फिर यहां नहीं आयो ॥ या महात्मा को देह वहां ही छूट गयो'' ॥३२॥ यह प्रसंग प्रिय ईश्वरन के मुकटमणि श्री महाप्रभुजी ने केवल वृन्दावनदास कूं नहीं कह्यो किन्तु और भक्तन के प्रति तथा मेरे प्रति हू समय समय में कह्यो है ॥ तथा और हू वाकी कृपा को प्रभुजी कहत भये हैं ॥ या सुन्दर गायक सुन्दर मीठी वाणी वारे चतुर, चतुरबिहारी भक्त पर प्रभुन की कृपा प्रसिद्ध है ॥ श्री वृन्दावनदास पर तो याके संबंध सूं प्रभुजी प्रसन्न होयके तथा अपने प्रमेय बल सूं प्रसन्न होय हैं ॥ याके सुन्दर गुण समूह सूं कि शुद्ध मन सूं, कि माधुरी सूं, कि नम्रता सूं हू या पर प्रसन्न होय हैं ॥३६॥ कबहू रात्रि में होम घर में श्री प्राणनाथजी तेल शय्या को अलंकृत कर रहे हैं ॥ बलादि नाम तेल सूं आपको तेलाभ्यंग होय रह्यो है ॥ भाग्यवान सेवकजन तो प्रभुजी की अनेक सेवा कर रहे हैं ॥ प्रायः सगरे हू भक्तजन प्रेम सूं रोम हर्षपूर्वक श्रीराज के श्रीमुख की माधुरीको नेत्र रूप अंजुलीन सूं पान कर रहे

हैं ।। श्री महाप्रभुजी के कृपापात्र श्री महद भक्त श्री गोकुलभाईजी आदि हू राज के निकट ही अत्यन्त शोभायमान होय रहे हैं ।। चन्द्रवदनी भक्त सुन्दरी हू तिबारी में चारों ओर ठहेर के आपके श्रीमुख पूर्ण चन्द्रमा की सुन्दर चांदनी के सागर समूहन को पान कर रही हैं ।। श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के मैं हू तेल शय्या के पास ही ठहर रह्यो हूं तब यह वृन्दावनदास आयके प्रभुन के निकट ठहर्यो है ।। नम्रता को समुद्र यामें उछल रह्यो है के प्रेम के कल्लोलन सूं कांप रह्यो है ।। कान्हरा राग को स्वरा सहारा लेकर अपने अभिप्राय कूं जनावत एक पद गान करत भयो है ।। **कि श्री वल्लभ गुण सागर को रस स्मरण करके राज को मैं का प्रकार सूं प्रसन्न करूं, जासूं मेरे गान में तानताल आदि को ज्ञान संभारतो रंच हू नहीं है ।। गान करवे वारेन के जे प्रकार जितने हैं वे हू मेरे सूं बड़े यत्न सूं वितने किये नहीं जाय हैं तासूं परम सुजान मुकटमणि प्रभो भलो के बुरो यह वृन्दावनदास है ।। याकूं सेवकन में ही लिखिये ।। हे श्री वल्लभ या प्रकार के अर्थ वारो ताल तान सूं याने पद गान कियो कि ''हों तुम्हें कौन भांति रिझावूं हों, श्री वल्लभ सब गुणनिधि हीन सुरस सहभार गाऊं तारतान ।।१।। जे ते गायन को प्रकार ते मोपै परत न समान भलो बुरो वृन्दावन अपने में गिनिये ।। श्री वल्लभ जाननमणि जान'' ।।२।। यह शरणागत की पीड़ा हरवे वारे भगवान प्रभुजी यह सुनके वाके आशय कूं जानके याकूं उछलित कृपा कलोलन के समूह वारी प्रफुल्लित दृष्टि सूं कृतार्थन के चक्रवर्ती राज ने अभिषेक करत मंद मुसकान सूं शोभायमान श्रीमुख वारे श्री प्राणप्रियजी आज्ञा करत भये हैं कि** ''या तुमको, यासूं कृपा जानेंगे तुमारे साथ तो हमारो और ही सम्बन्ध है ।।'' ऐसे कहकर अपनी अत्यन्त बड़ी कृपा को दिखावत भये हैं ।। तब यह वृन्दावनदास हू गदगद कंठ होयके उच्छलित रोम हर्ष समूह वारो के उच्छलित प्रेम सूं शोभायमान कंप समूह वारो होयके बहुत वार दंड्वत प्रणाम करत भयो है ।। तब यामें महाप्रभुन के ऐसे प्रसन्न होयवे में सगरे भक्त और सगरी मृगनयनी हू या पर अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ।। ऐसो यह बड़भागी निरन्तर कोमल मन वारो है, निष्कपट है, शुद्ध भाव है, के सदा प्रफुल्लित श्रीमुख कमल रहे हैं, के प्राणप्रिय के केवल स्वरूप में पूर्ण निष्ठा वारो है ।। **अन्य संबंध की गंध सूं रहित है ।।** अब हू वा श्रीराज के गुणन को आपके निकट गान करत **ही अपनो किये**

के वा चतुरबिहारीजी ने किये के वैसे और और हू भाग्यवानों ने किये पद कीर्तन सूं वा प्रभु को प्रसन्न करत कि आपके भक्तन को हू अत्यन्त प्रसन्न करत प्रभुन की सेवा कर रह्यो है ॥५६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे अष्टम तरंगः ॥८॥

तरंग ॥९॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब नवम तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **ततव्दुभवतां तेषामपी सदा प्रभुः**

प्रसन्न पूर्णेन्दु सुस्मेराधर पल्लवः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि प्रसन्न मुख पूर्णचन्द्रमा वारे कि मंद हास्य सूं प्रफुल्लित अधर पल्लव वारे रससागर श्री महाप्रभुजी वा वा गुणी जनन के गुणन की बड़ी बड़ाई के रस सों रंगे मन वारे होवत ही सदैव वा वा गुणी जनन की वा वा वार्ता को कहें हैं ॥ इनमें हू तानसेन में, के गोपाल नायक में, कि वकसु नायक में, हरिश्चन्द्र नाम में, के हीरामणी में धोंधी ऐसे प्रसिद्ध में, कि याके पिता रामदास में, के चांदरखांन सूर्जखान में हू पुरुषोत्तम मुगटमणि कृपासिन्धु प्रभुजी प्रसन्न होय हैं ॥ इनके पद कि ध्रुव पदन को हू बारंबार स्मरण करत के इनकी सुन्दर कंठ की स्वरा तान आदि के बंध ताल ही के सुन्दरता को बारंबार स्मरण करत कृपासिंधो प्रसन्न होय हैं ॥ गोविन्दस्वामीजी, कुंभनदास कि जो सगुणदास हू हैं कि जो चतुरभुजदास हैं वैसे वैसे और हू जे अपने घर में सेवा करवे वारे गान में चतुर गुणीजन हैं जे नम्रता प्रेम भक्ति सूं आर्द्र भीजे रहे हैं विन पर यह प्रिय जी अत्यन्त प्रसन्न होय हैं ॥ इनके किये पदन को श्री प्राणप्रियजी आदर उत्कंठा पूर्वक ही सुनें हैं ॥ कबहू कोऊ समय में भगवान श्री महाप्रभुजी अपने श्रीमुख कमल को, मंद हास्य सूं शोभायमान करत आज्ञा करत भये हैं कि **''या समय में साढे दोय कवीश्वर हैं ॥ वामें एक सूरदासजी हैं दूसरो परमानन्द है आधो नरसीह मेहता है ॥ यह तीनों ही श्रीकृष्ण की लीला वर्णन में पूर्ण**

तत्पर हैं ।। इनके गुणन को बहुत प्रकार सूं हर्ष पूर्वक ही गुणनिधि भगवान श्री प्रियजी समय समय ही प्रगट करत भये हैं ।। इन पर जो पुरुषोत्तमन के मुगटमणि प्रभुजी प्रसन्न भये हैं ।। इनकी कृतार्थता यासूं ही बुद्धिमान जन विचार लेवेंगे'' ।।१२।। अब श्री कल्याणभट्टजी परदेशी जे वैष्णव साथ दर्शन कूं आवें हैं वे दोय प्रकार के हैं ।। एक निर्धन समाज है ।। एक धनी समाज है ।। वामें निर्धन समाज को प्रसंग प्रथम कहें हैं ।। के प्रायः वा समय में के वैसे और और हू समय में अपने अत्यन्त दूर देश सूं वैसे वैसे आयके कितने वैष्णव श्री प्राणनाथजी को दर्शन करें हैं ।। वामें स्त्री, पुरुष, पुत्र, बहू, बेटी, मित्र सम्बन्धीन के संग आवें हैं ।। वे हू कितने निर्बल भक्त हैं ।। कितने सहाय रहित हैं के बृद्ध हैं, के आंधरे हैं, कितने बहेरे हैं, के हाथन सूं हीन कुंणी हैं, कि पगले हैं, ऐसे अनेक प्रकार के और और हू अनेक हैं ।।१५।। ''तामें साधन सम्पती सूं हरि भगवान कबहू प्रसन्न नहीं होय हैं किन्तु भक्तन में ही एक दीनता है प्रभुन के प्रसन्नता को कारण है ।। तासूं ही स्वयं प्रभुजी विज्ञापना में कहें हैं के ''राधेश मुख्य स्वामिनीजी के प्यारे प्रभो जो दीनता आपकी कृपा को कारण है सो तो मेरे में रंच हू नहीं सो कृपा आप करिये ।। जासूं वा दीनता को हों प्राप्त होऊं'' ।।१७।। भक्तन की शिक्षा के अर्थ इत्यादि वचनन सूं जाकी बहुत प्रकार सूं सराहना करी है ऐसी दीनता को जे धारण करे हैं, अहो सर्व समर्थ हू भगवान कृपासिन्धु श्री महाप्रभुजी ने हू वा दीनता के पोषण करवे सूं जिनकी ऐसी दशा निर्वहन ही करी है ।।१८।। तथा विषय भोगन को भोग रहे मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट करवे वारो 'श्री' मद है तासूं और कारण नहीं है ।। 'श्री' मद कि विद्या मद, कि धन मद, कि बड़े कुल को जन्म मद होय है सो रजोगुण रूप है ।। वामें 'स्त्री', 'धूर्त' के मदिरा पान इत्यादि व्यसन होय है जाको निन्दा करें हैं ।। ऐसे ऐसे श्रीमद सूं जे रहित हैं ।।२०।। तथा श्रीमद सूं जे अंध होय है सो दुष्टजन है ।। वाको परम अंजन औषध काजर है सो दारिद्र है निर्धनता है ।। जासूं दरिद्र पुरुष सबन को अपने समान देखत है ।।२१।। जासूं दरिद्रीजन अभिमान सूं रहित होय जाय है के या जगत में सगरे मदन सूं रहित होय जाय है ।। **अचानक कष्ट को** प्राप्त होय है सोई वाको परम तप है ।।२२।। दरिद्री **जो होय है सो नित्य** ही क्षुधा सूं कृश देह होय जाय है ।। तासूं नित्य **अन्न की इच्छा वारो रहे**

हैं ।। वाके इन्द्रीय सब सूक जाय हैं ।। तासूं हिंसा करनो हू निवृत्त होय जाय है ।।२३।। दरिद्र पुरुष को ही समदर्शी साधु मिले हैं ।। वा श्रेष्ठ पुरुषन के संग सूं वा तृष्णा को सो नष्ट करें हैं ।। पीछे वेग सूं शुद्ध होय है ।।२४।। इत्यादि वचन समूह जाकी सब प्रकार सूं स्तुति करें हैं ऐसे मनोहर बड़े गुण रूप दरिद्र सूं जे मिले है ।।२६।। ऐसे वे निर्धन दरिद्री भक्तजन अपने अपने दूर देश सूं आयके, या प्रियवर के अत्यन्त सुन्दर श्री मुखारविन्द को निरखे है ।। प्रेम सूं प्रभुन के चरणकमल में दंड्वत प्रणाम करें हैं ।।२७।। यह परमेश्वर श्री कृपासिन्धु श्री महाप्रभुजी हू विनके ऊपर अत्यन्त प्रसन्न होय हैं ।। तथा डेरा तम्बू निवास घर पात्रादि देवे सूं भोजन के लिये बुलायवे सूं कि महाप्रसाद देवे सूं कि कुशलादिक पूछवे सूं, कि विनकी भेट आदि को बड़े आदर पूर्वक लेवे सूं, कि वैसे और हू मनोहर अनेक प्रकारन सूं विनको बहुत प्रकार सूं समाधान हू करें हैं ।। इन निष्कंचन दीन भक्तों में अपने सुन्दर बंधु भाव को हू प्रगट करें हैं ।। वे दीन भक्त हू प्रिय को दीनबंधु रूप परम गुण को अमृत सूं हू मधुर के सुवर्ण को पर्वत सूं हू बड़ो भारी के चिन्तामणि समूह सूं हू अत्यन्त प्रकाश वारो कल्पवृक्ष, सूं हू मनोहर फलदायक कि कामना पूर्ण करवे में कामधेनु के समूह कूं हू विजय करवे वारो ही अपने सुन्दर अनुभव रूप मुख से ही पान करत कि ऐसो बड़ो जानत अत्यन्त नांचें हैं ।। ऐसे प्रभुन के दीन दरिद्री निःसाधन धन्य भक्त के आयवे को जो प्रकार है प्रभुन के प्रसन्न करवे वारो है ।। वा प्रभुन के हू वाके गुण समूह सराहना किये हैं ।। जो वा प्रभु की दया को वेग ही बढ़ायवे वारो है ।। वा विनके आयवे के प्रकार को हौं संक्षेप सूं सूचना करूं हूं ।।३४।। तथा श्री राज के भक्त बड़े प्रतिष्ठित हैं, के बड़े गृहस्थी के धनादि सूं हू बहुत परिवार सूं कि स्वजन सूं मिले हैं ।। कि राज तुल्य हैं कि राज संबंधी हैं विनके आयवे के मनोहर प्रकार को संक्षेप सूं आगे कहूंगो ।।३६।। **अब निर्धन दीन गरीबन के आयवे को प्रकार कहें हैं ।। के प्रथम कहे जे दीन निर्धन सेवक हैं वे पांच के सात के दस रुपैया होंयगे विनको ही गांठ बांधके चलें हैं ।।३७।। ऋण के शोधन में, फिरके देवे में समर्थ नहीं हैं तासूं सब प्रकार सूं बढि रहे भय सूं ऋण लेवे नहीं हैं ।। वैसे भय सूं के फिर देवे कि न देवे या विचार सूं कोऊ देवे हू नहीं है ।। और श्री प्राणनाथजी के श्रीमुख कमल संबंधी रस सागरन के**

पान प्यास अत्यन्त ही बढ़ रही है तासूं श्री गोकुल में जायवे लिये अत्यन्त ही प्रेरणा किये भये ही अपने घरमें ठहर शके नहीं हैं ॥ तासूं स्त्री पुत्र बहू बेटीन को संग लेकर अपने अपने देश के गाम सूं चलें हैं ॥४०॥ थोड़ो सो घी नारियल में लेके के छोटी कुप्पी में लेके चलें हैं ॥ तुअर की दार, मटर कंगनी, के श्यामा ककी चीना कोद्रय इन्द्रजव के चिरवा तेल, कि मसूर की दार, खलीनिवार राजगरा जैदुल, जुवार बाजरी, मकाई आदि हीन अन्न विनको चून कछुक लेके चलें हैं ॥ बांस के पात्र टीपारा में बालक को सुवाय के वाकूं क्रम सूं कोऊ समे कोऊ के कोई समे कोऊ ऐसे उठायके चलें हैं ॥ अपने समान और हू भक्त संग लेवे हैं ॥ विखम के आड़े दुःखदायक मार्ग में हु विनकी रक्षा कृपासिन्धु केवल प्राणप्रभुजी ही करें हैं ॥ शीतकाल होय तो ताती धूप को प्रगट कर प्रभु रक्षा करें हैं ॥ गरमी में शीतल पवनको प्रगट कर रक्षा करें हैं ॥ मेघन की छाया होय जाय है ॥ वरषा ऋतु में वरषा नहीं होय है ॥ ऐसे जा रीति सूं वे सुखी रहें वैसे महाप्रभुजी विनकी रक्षा करें हैं ॥ बहुत दिनन को मार्ग होय तो थोड़ो काल सूं वाकूं उल्लंघन करावें हैं ॥ कृपासिन्धु ईश्वरेश्वर के भक्तन को सो समय हू अनेक अनेक गुणन को प्रगट इनकी भेट करत सुखी करें हैं ॥४८॥ जा गुणन सूं इनके साथ में आये और जन हू मार्ग में सुख सूं चलें हैं ॥ कोई प्रकार सूं दुःख नहीं होय है, ऐसे यह भक्त चलें हैं ॥४९॥ प्राणनाथजी हू इनको अपनी लीला फिर फिर स्मरण करायके इनको अत्यन्त प्रसन्न करें हैं ॥ तासूं यह भक्तजन या प्राणप्रिय के गुणन को गान करत कि कीर्तन करत, कि सुनत, कि फूली रोमावली पूर्वक वा वा वार्ता को करत सर्व मंगल करवे वारे श्रीराज के चरण कमल को स्मरण करत रह्यो ॥५१॥ के सिद्ध करवे कूं वा वा वैसे वैसे लकड़ीन को स्वयं चुन चुन के कंवल में संग्रह करत हर्ष सों मिले वे भक्तजन गोबर के, उपला समूह हू संग्रह करत वन के शाक फल हू संग्रह करें हैं ॥ के जामें सुन्दर मनोहर जल होय के मनोहर छाया होय ऐसे सुन्दर निर्मल स्थल को देखके वहां डेरा करें हैं ॥ वेगा रसोई करें हैं ॥ कोई दिन अंगाखरी कि तुच्छ अन्न मिलायके खीचरी करें हैं ॥ के कोई दिन शाक ही करें हैं, के फल ही श्री गोकुल भूषण प्रभु को समर्प के वाके प्रसाद को लेवें हैं ॥ प्रभु में आशक्त चित्त वारे वे फिर कछुक चलें हैं ॥ श्री प्राणप्रिय के **गुणगान**

करते जाय हैं कि वार्त्ता ही वाकी करते जाय हैं, कि प्रभु को, के चरण कमलन को स्मरण करते जाय हैं ॥ या प्रकार भजनानंद रूप समुद्र में निमग्न होय रहें हैं ॥ इनको रंच हू दुःख हू प्रवेश करवे में समर्थ नहीं होय शके है ॥ या प्रकार के निर्धन भक्त सूं जे कछुक सम्पन्न हैं के कछुक संपदा वारे हैं वे तो कोई प्रकार सूं दोय तीन ओरन सूं मिलके एक छोटो सो घोड़ा मोल ले लेवें हैं या घोड़ा पर अपने तथा औरन के भार को धरके कि बालकन को, कि अपनी स्त्री को चढ़ायके, कि स्वयं हू क्रम सूं चढ़ चढ़के चलें हैं ॥ ऐसे कितने तो गाड़ी ले लेवें हैं, कि बैल ले लेवें हैं ॥ वामें क्रम सूं बालकन को बैठायके, कि स्त्रीन को बैठायके, भार धरके, स्वयं हू क्रम सूं चढ़त के उतरत श्रीराज के गुणन के गान करत ही चलें हैं ॥ श्रीमद गोकुल को प्राप्त होयके खर्बन पद्मन पूर्ण चन्द्रमा को विजय करवे वारे श्री प्राणनाथजी के मनोहर श्रीमुख को निरखें हैं ॥ श्री प्रिय के चरण कमल को प्रणाम करके अपने को कृतार्थ ही मानें हैं ॥ यामें श्री प्राणप्रियजी विनसूं जब अमृत के समुद्र रूप कुशल प्रश्न पूछें हैं वासूं ही इनके सगरे ही श्रम अत्यन्त निवृत्त होय जाय हैं ॥ "मार्ग में तुमको क्लेश तो नहीं भयो है कि मार्ग में तुम सब सुख सों आये हो, कि घर को छांड़के आय रहे तुमको कितने दिन लगे हैं ॥६५॥ या प्रकार के श्री प्राणनाथजी के वचनामृत को कान सूं पान कर रहे हैं ॥ वा भक्तन को जो अपार अत्यन्त गंभीर सब प्रकार सूं आनन्द समुद्र बढ़े हैं ॥ वे तो विनके ही गोचर हैं के वे ही जानें हैं ॥ मनोहर रोमावली के गदगद कंठ के आनन्द के आंसू समूह सदा विनको अत्यन्त अलंकृत करें हैं ॥ तब "कृपासिंधु प्रभो महाराज श्री प्राणनाथ की कृपा सूं हम सब प्रकार सूं सुखी हू आये हैं ॥ महाराज की कृपा सूं भलीभांत रक्षा किये के कृपा रूप कवच पहरे हमकों दुःख रूप वाण परस करवे में हू कबहू समर्थ नहीं होय सके है ॥ प्रभो हम तो निष्किंचन हैं हीन हैं, गुणन सूं अत्यन्त रहित हैं निःसाधन हैं, मूढ़ हैं, दोष वारे हैं, तुच्छ हैं, ऐसे हम सरीखे सबन के सदा सब ठौर सब रीति सूं गति आधार आश्रय. तो निरहेतु कृपासिंधु ईश्वरेश्वर श्रीराज ही हैं ॥ हमारो और कौन है ?" इत्यादि प्रकार की विज्ञापना इनके मुखन सों प्रगट होयके या दीनबन्धु जगतप्रिय प्रभु को अत्यन्त ही करुणा रस भर्यो ही कर देवे हैं ॥ इनकी जे स्त्रीजन हैं वे तो चिरकाल सूं जाके दर्शन की

चाहना ही ऐसे वा प्रियतम को प्राप्त होयके ही अमृत के सागर में अत्यन्त ही निमग्न होय जाय है ।। रस सागरन के समूहन को वर्षा कर रही या प्रिय की स्नेह भरी दृष्टिन सूं तो अपने सगरे विरह को के दूषन को धोयके अपने को कृतार्थ मानें ही यह निर्धन भक्तजन भेट हू कछुक वस्त्र के कछुक धन, कि केवल नारियल भेट करें हैं ।। कृपा सागर पुरुषोत्तम मुकुटमणी श्री महाप्रभुजी हू अत्यन्त प्रसन्न चित्त सूं वाकूं अंगीकार करें हैं ।। आपकी आज्ञा सूं वे भक्तजन वा महाप्रभुजी के घर में जायके आपके महाप्रसाद को भोजन करके आपके दिवाये डेरान में सुख सों निवास करत श्रीराज के लीला रूप अपार अत्यन्त गंभीर समुद्रन को अवगाहन करके लीला समुद्रन में विहार करत गोप्यद की अत्यन्त तुच्छ होय गये संसार सागर को भली भांति सूं तरके सुखपूर्वक रहें हैं ।।७८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धु सायाविधि विनोदमये एकादश कल्लोले भाषानुवादे नवम तरंगः ।।९।।

तरंग ।।१०।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अब दशम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथ तदास्ता अधिकारीयर्ध कदाचिद्त्नोत्य चीनम्य चेशं**

तव्रमय युक्त कराब्जयुग्मो विज्ञापयत्नेनमुदार बुधीः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के यह प्रसंग इहां रहे ।। अब श्री हस्ताक्षर पत्र लिखवे आदि को प्रसंग कहें हैं कि अधिकारी जी कबहू आयके प्रभुन के आगे प्रणाम करके उदार बुद्धिवारो सो नम्रता सूं दोनों हाथ बांधके देशांतर में रहेवे वारो अखंडित भाव वारो जो श्रेष्ठ भक्त है वा पर कृपा को सूचना करत श्री हस्ताक्षर पत्र लिखवे लिये विनय करें हैं ।। तब श्री प्राणनाथजी उभय हास्य सूं अत्यन्त शोभायमान श्रीमुख होयके वा विनय को मानें हैं ।।२।। तब अनेक प्रकार के रंग वारे सुन्दर बड़े मोल वारे चमकने बहुत पत्र सेवक वा समय वेग ही आपके पास ले आवे है ।। विनमें जो भाग्य वारे होय हैं वाकूं शोभायमान श्रीहस्त सूं आदर करें हैं, उठावें हैं, के प्रथम शिर के स्थान के ऊपर कृपासिन्धु ईश्वरेश्वर जी वा भक्त के मंगल की चाहना

करत ''श्री हरी'' ऐसे लेख सूं अलंकृत करें हैं ।। यह लिखके प्रसन्न श्री मुखारविन्द की शोभा वारे श्री महाप्रभुजी वाके नीचे ''स्वस्ति'' ऐसे लेखकर ''श्री वल्लभानाम्'' ऐसे लिखके फिर उछलित अनुराग वारे हमारे प्राणप्रियजी सप्तमी विभक्ति सूं मिले अपने भक्त के नाम को श्री भाग्यराशादि ऐसे लिखे हैं ।। फिर आगे शुभाशीष ऐसे शब्द को प्रभुवर जी लिखे हैं के स्वसित सदा सुख ही होय के श्री वल्लभजी अमुक भाग्यराश भक्तन में शुभ आशीर्वाद ऐसे लिखके फिर शमीह भावात्मकमा शास्म है ऐसे कीर्ति समूह सूं मनोहर प्रभुजी इहां सुख मंगल को हम इच्छा करें हैं ।। फिर कमलनयन अपरंच यह है ऐसे लिखे है ।। फिर 'सदा' ऐसो शब्द लिखके उच्छलित शोभावारे प्रभुजी 'सर्वात्मनी' यह लिखे है ।। फिर ''श्रीकृष्ण उदाररायजी स्मर्तव्य'' यह लिखे है कि सब समय में सर्वात्म भाव सूं श्रीकृष्ण मनोहर मूल रूप रसात्मक प्रभु को अवश्य स्मरण करनो'' यह लिखे है ।। फिर प्रायः 'किम् अधिकम्' ऐसे श्री प्रभुजी लिखे हैं के यासूं विशेष कहा है के कहा लिखे ।। कबहू तो याके ठिकाने सुन्दरवरजी ''श्री गोकुलाधीश स्मर्तव्य'' लिखे हैं के श्री गोकुलाधीश गोकुल के प्रभु को अवश्य स्मरण करनो अथवा कबहू तो श्री कृष्ण शरणं ममः इति सर्वात्मना भाव सुन्दरवर भक्तवश रसात्म प्रभु मेरो शरण है आश्रय है आश्रय के रक्षक के यह सर्वात्म भाव सूं भावना करनी ऐसे लिखे है ।। कबहू तो श्री गोवर्धनेश्वर संस्मर्तव्यः यह लिखे है के श्रीमद् गोवर्धन के नाथ को भलीभांति सूं स्मरण करनो ।। कबहू तो भगवान सदा स्मर्तव्य भगवान सर्वगुण ऐश्वर्य वारे प्रभु को सर्व भाव सूं सब कार्यन में आश्रय हरी है यह भावना करनी ऐसे प्रभुजी लिखे हैं ।। कबहू ''कापी चितां नता न कार्या'' चिन्ता कोई भांति की हू नहीं करनी यह आप लिखे हैं ।। श्रीमद् गोकुल वल्लभ प्रभुजी कोई एक भक्तन में कृपा समूह सूं कबहू कोऊ कार्य हू आज्ञा करें हैं ।। श्री गोकुल के प्राणप्यारे भगवान प्रायः प्रेमित ऐसे लिखे हैं ।। कृपा सों प्रसादः ऐसे लिखके सग्राह्यः ऐसे प्राणनाथजी लिखे हैं ।। प्रसाद पठायो है सो लेनो ऐसे लिखे हैं ।।१४।। श्री गोकुल भूमि के महेन्द्र श्री प्राणनाथजी जो जो लिखे हैं वाके भाव कूं आपके कृपापात्र भक्तन के बिना और कोऊ श्रेष्ठ बुद्धिवारे हू वा वामें विचार करवे में समर्थ नहीं होय सकें हैं ।। ऐसे पत्र को लिखके वाके पीछे कोय श्री श्री ऐसे लिखके उच्छलित

अतुल विलासन के सागर श्री प्राणनाथजी सो लिख्योपत्र अधिकारी को देवें हैं ।। सो श्री अधिकारीजी हू ईश्वरेश्वर प्रियवर श्री महाप्रभुजी की वा भक्त में कृपा समूह के तारतम्य को विचार के भाव रस सूं भरे के वा भक्त के भाव को हू विचारके याके पास पत्र लिखें हैं ।। वा प्राणनाथजी के श्री विग्रह संबंधी कुशल महा आनन्द उछव भाव रस सूं भरे वृत्तांत हू लिखे हैं ।। तथा वा भक्त को परितोष को भक्ति प्रेम समाधान के सिद्ध करवे वारे वृत्तांत हू मधुर लिखे के वा वा कार्य की आज्ञा सूं वाकूं अलंकृत करें हैं ।। मनोहर सार अर्थ सूं भरे वा वा पत्र को लिखके वासूं प्रभुन के कृपापात्रन को लपेटके वा देश जो जायवे वारे श्रेष्ठ सेवक के हाथ जो समर्पण करे हैं ।।२०।। तथा प्रसाद सूं भरी थैली हू देवें हैं ।। के तुलसी माला देवें हैं ।। के सुन्दर पाट के सोना मोती मणीगणन सूं मिले प्रसादी पवित्रा हू देवें हैं, के अनेक प्रकार सों प्रसादी वस्त्र जामा नाम उपरना आदि देवें हैं के ऐसे और वस्त्र हू उच्छलित वारो हर्ष अधिकारी जी भक्तन के लिये याके हाथ में देवें हैं ।। सो पर ले जायवे वारो भक्त हू ब्रह्मा के महादेवादि को हू दुर्ल्लभ है प्रभुन की आज्ञा को लेकर वा पत्र को सिर में धरके उच्छलित हर्ष वारो सो प्राणनाथजी को प्रणाम करके उच्छलित होय रहे आदर सूं आर्द्र होयके आपके कृपादृष्टि सूं आलिंगन कियो आंसू कूं वरसावत के उत्कंठा वारो होयके आपके भक्तन को प्रणाम करके आनन्दपूर्वक विनसूं अनुमोदन कियो ही सो फिरके बारंबार प्रभुन के श्रीमुख चन्द्रमा को निरखत यहां सूं प्रस्थान करें हैं ।।१५।। मार्ग वारे सगरे भक्तजन याकूं बहुत भावन सूं निरखें हैं ।। पुरुषोत्तम प्रभु के पत्र पहुंचायवे की आज्ञा याकूं मिली है तासूं अपने कूं कृतार्थ ही जाने है ।। मार्ग में वहां वहां ठहेरे भक्तजन पत्र के दर्शन सूं उच्छलित हर्ष वारे होयके उच्छलित रोमावली सूं भरे नम्रतापूर्वक वाकूं प्रणाम करें हैं ।। प्रकाशमान चन्द्रमा जैसे याको मुख है, मध्यान समय के परार्धन सूर्यन को विजय करवे वारे उछल रहे अत्यन्त दीपन वारे तेज विनय सूं नम्र होयके वाकी सेवा कर रहे हैं ।। ऐसे याकूं आगे आयके सगरे गाम के, कि पुर के, लोक प्रणाम करें हैं ।। के भक्ति सूं दान मान कर्यो, कि पूजा हू करें हैं ।। आनन्द समुद्र में निमग्न होयके वे लोक बड़े आदर सूं दूर पर्यन्त याके संग चले, के प्राण, के धन, के अपने सर्वस्व, के याके ऊपर वार डारें हैं ।। **आदर सूं याकूं घर में ले**

जाय है ।। याके चरणन में प्रणाम करके गिरके अपने घरन में निवास करावें हैं, कि प्रेम सूं वे चरण पखार के वा जल को प्रेम सूं उछलके मुख में धरें हैं, कि मस्तक में धरें हैं ।। अपने घर में चारों ओर सिंचन करें हैं ।। कि अपने स्त्री पुत्र को हूं पान करावें हैं ।। श्रेष्ठ आसन पर बैठावें हैं के सुन्दर श्रेष्ठ पलंग पर पौढावें हैं ।। के कोमल नवीन पंखा लेके हाथ सूं के पुत्रन सूं पंखा करावें हैं ।। के दोनों चरणन को दवावें हैं ।। के यासूं प्राणनाथ के वा वा वृत्तांत कूं पूछें हैं ।। अत्यन्त सुगंधित तेल सूं अभ्यंग करायके सुहाते ताते जलन सूं मनोहर स्नान करावें हैं ।। के भक्ति सूं नवीन अमूल्य मनोहर सुन्दर वस्त्र पहेरावें हैं ।। उच्छलित हर्ष वारे भक्तजन प्रेम सूं कोमल मनोहर सुगंधी वारे दिव्य पकवान, के सुन्दर दूध, दही, घृत, मिसरी सूं सिद्ध अनेक प्रकार के भोजन हू लिवावें हैं ।।३२।। स्त्री पुत्र मित्र सगे संबंधीन के संग ही प्रफुल्लित नयन कमलन सूं आनंद के अश्रु धारा समूहन की वर्षा करत ही प्रफुल्लित सुन्दर मुख पूर्णचन्द्र से वे भक्तजन दरिद्रजन निधा को जैसे निरखे वैसे टकटकी लगायके याकूं निरखत ही इच्छानुसार बड़े आदर सूं वरास मिली बीड़ी कि एलायची लवंगादि मुखवास को अर्पण करके गुण के जानवे वारे वे भक्तजन बहुत प्रकार सूं वैसे वैसे सेवा करत याकी वा वा इच्छा को विचार करत बड़े आदर सूं सो सो करत वाके देह की, के मन की, के वचन के अनुकूल चले है ।। अहो वा स्वयं भक्तन के घर को शोभायमान करके जा दिन में विनको कृतार्थ करें हैं सो दिन क्षण रूप होयके हू बड़ो होय जाय है यह बड़ो आश्चर्य है ।। वे भक्तजन याके चरण चांपी करे हैं ।। रात्रि भर यह पत्रदूत सुख सों पोढ़े के प्राणनाथजी की वा वा कथा सूं मार्ग के श्रम सूं हू निवर्त करके प्रातः समय सोई यहां सूं चले हैं ।। ऐसे चल रहे श्री गोकुलाधीश के लेख पत्र ले जायवे वारे भक्त को ये मार्ग में भक्तजन विनय सूं नम रहे अपने सगरे अंगन सूं याकी चांदनी को लेकर वाकी सेवा करे हैं ।। वा समय पवन हू सगरे वन जो माथे ओर ओर भ्रमण करके वा वा फूल समूहन सूं सुगंधी सर्वस्व को ले लेके या भक्त के घ्राण की सेवा करें हैं ।। सुगंधित पवन सुगंधी भेट करें हैं ।। के अहो पत्र दान सूं कोई भाग्यवान भक्त को कृतार्थ करवे लिये जाय रहे या भक्त कूं जायवे योग्य ऐसो देश कूं भलो याके आलिंगन की इच्छा करत ही याके आगे स्वयं

ही आवे है ॥ या भाग्यवानों के आयवे सूं आगे मिल रहे जनन सूं वन हू, अचानक गाम बन जाय है, पुर बन जाय है, कि पुर देश बन जाय है ॥३५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो सायाविधि विश्राम विनोद मये एकादश कल्लोले भाषानुवादे दशम स्तरंगः ॥१०॥

तरंग ॥११॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब अग्यारमू तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **सदा सतं देशमुपैती लेखहारी विभो यत्रवसत्य मुख्यभक्तः**
सयस्मै व्रजी धाय सदाकृद्भ मरा पत्रमसौ गुणोश्वैः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि जब सो प्रभुन के लेख पत्र को ले जायवे वारो भक्त वा देश को प्राप्त होय है जामें या प्रभुन को भक्त रहे हैं जाके लिये सो पत्र गुणसागर या प्रभुजी ने पठायो है ॥१॥ तब ऐसे पत्र आगमन के वृत्तांत को सुनके वा देश जो स्थित जे प्रभु के भक्त हैं वे सगरे ही वा पत्र के दर्शन की इच्छा करत हैं ॥ पत्र लायवे वारे भाग्यवान भक्त के दर्शन की इच्छा करत के प्रिय चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी के सगरे वृत्तांत को के वा पत्र सूं के वा भक्त के मुखारविन्द सूं सुनवे की इच्छा करत, कि वा लेख को, कि वाके लायवे वारे भक्त को हू विनके गुणन सूं आर्द्र होयके भक्ति सूं प्रणाम करवे की इच्छा करत ही आगे आवें हैं ॥३॥ तथा जाके पास पत्रजी पधार रहे हैं यह सुजान भक्त हू वैसे पत्रजी के पधारवे को वृत्तांत पहेले ही सुने है ॥ तामें जो प्रभुन की कृपा ब्रह्मादिक को हू दुर्ल्लभ है ॥ सो कृपा मेरे पर ही वेग भयो है ॥ यह जानके मन मो अत्यन्त उछल रहे आनन्द समूहन के समुद्र समूहन सूं चौदह लोकन में नहीं समावे है ॥ कि वैसे श्रेष्ठ वैकुंठन में हू नहीं समावे है ॥ स्त्री पुत्र, मित्र, सगे संबंधी, दास, सेवकन सहित सुन्दर गान बाजा नृत्य बंदीजन की स्तुतीन के संग ही जय जय करत शब्द के सहित कि वेदन के हू शब्दन के संग ही प्रफुल्लित रोमावली के आनन्द के आंसून सूं अत्यन्त प्रकाश वारो होवत ही तथा श्री गोकुल मंगल प्राणप्रिय अगणित समूह को आनंद समूह सूं गान कर रहे हैं ॥ जे प्रफुल्लित रोमावली वारे उच्छलित अनुराग वारे श्रेष्ठ वैष्णव हैं विनके

संग ही, कि अधिक हर्ष रस अनुराग आदर सूं रंगी के प्राणनाथ के अर्थ बढ़ रही उत्कंता सूं शोभायमान ऐसी मृगनयनी स्त्रीन के संग ही दश कोश के बारह कोश के यासूं विशेष कोश आगे आवें हैं ॥८॥ फिर वा प्राणनाथ के वा सेवक को के वाके सिर पर विराजमान पत्र को निरखें हैं ॥ वा समय सूं विशेष सूं चमक रहे नवीन नीलमणि कमल की समज को विजय करवे वारे वा प्रिय के नयन कमल युगल को हू निरख के, कि उज्ज्वल मंद हास्य संबंधी विलासन के प्रकाश को निरख के, कि प्रवाल नवीन पल्लव कि मूगा को विजय करवे वारे, कि दंत कांति सूं मिले वा अधर के सुन्दरता सुगंधी विलास शोभान के मधुर वैसी माधुरी को निरख के, कि स्पष्ट विलास वारे और हू अंगन को निरख के वैसी अपार शोभा भरे लीला समूह को, कि दिन संबंधी नित्यकृती को, कि उच्छलित शोभा भरे रात्रि संबंधी अर्वन विलासन को, कि वाणी जाकूं वर्णन नहीं कर सके ऐसे महोत्सव संबंधी उछल रही माधुरी सूं भरे स्वरूप संबंधी सौन्दर्य को हू निरख के उछलित रोमावली सूं मनोहर होवत ही अखंड संपूर्ण भक्ति भर्यो सो भक्त साष्टांग प्रणाम करें हैं ॥१४॥ तब वा लेख पत्र को लायवे वारे वा भाग्यवान को प्रफुल्लित नीलकमल जैसे नयन वारे मुख को भक्त के उच्छलित आनंद सूं हर्ष के आंसून की वर्षा पूर्वक निरखत ही अर्वन अमृत की चिन्तामणी, कि कामधेनु, कि अर्बन स्वराज्य, कि चक्रवर्ती राज्यन के देवे वारे सूं हू अत्यन्त अधिक उपकारी ही बारंबार जानत उच्छलित अनुराग समूह वारो होयके वाको गाढ ही आलिंगन करें हैं ॥१६॥ वा समय में या भक्त की उच्छलित होय रही जो चांदनी जैसे उज्ज्वल, कि अत्यन्त शीतल हर्ष, कि कोऊ अनिर्वचनीय दशा है, कि अवस्था है तासूं कविता करवे वारे पंड्तिन के वाणी तरंग हू परस करवे में समर्थ नहीं होय सकें हैं ॥ ऐसी वा मनोहर आनन्द की अवस्था को केवल श्री गोकुल के पूर्ण चन्द्रमा श्री प्राणप्रिय के मुख के दर्शन को जो मनोहर समय है सोही जय कर सके है ॥ कि सो तो विशेष आनंदमय होय है ॥ और कोऊ हू वाको विजय नहीं कर सके है ॥ यासूं विशेष नहीं होय है यह भाव है ॥१७॥ तब वे सगरे भक्त, कि सौभाग्यवान हू याके आगे अंजली को बांधके प्रणाम करके मौन पूर्वक क्षणेक ठहरके वा लेखहार भक्त को श्रेष्ठ आसन पर बैठायके वे सब नीचे बैठें हैं ॥ तब सगरे भक्तन के संग बहुत मानपूर्क टकटकी लगाय

के ऊपर निरख रहे वा भाग्यवान भक्त की सजी अंजली में सिर सों वा पत्रजी को उतारके प्रेमपूर्वक सो पधराये हैं ॥ तब स्तंभ जड़ता कंप आंसू, कि विवर्णता, कि पसीना, कि रोमहर्ष समूह सूं मनोहर स्वरूप वारो सो भाग्यवान प्रफुल्लित वदन चंद्र, कि अधिक हर्षवारो होवत दोनों हाथन में वा पत्रजी को लेके उच्छलित रोम हर्ष वारे होयवे कूं कमर कस रहे मस्तक पर चिरपर्यन्त वा पत्र राज को धरें हैं ॥ वाभें गाढ आलिंगन करायके कपोलन पर धारण, कि वा पत्रजी सूं वहां अमृत समुद्रन की वर्षा करावे है ॥ वा भाग्यवान भक्त के दोनों नयन दूर सूं ही वा पत्रजी को शोभारूप, अमृत के समुद्र समूहन को पान कर रहे हैं ॥ तब दो हाथ, के वा नयन को वा पत्र सूं आलिंगन करायो है ॥ ऐसे वा हाथन के उपकार रूप समुद्र को तरवे लिये यह नयन हू समर्थ नहीं होय सकें हैं ॥ अहो वा पत्रजी कूं भीतर बाहिर सूं हू आलिंगन करवे कूं उछल रह्यो जो वाको हृदय है सो वाके आलिंगन को पायके चिरपर्यन्त छांड़े नहीं हैं सो योग्य है ॥ परन्तु स्वयं दान किये वा पत्र को वे दोनों हाथ कूं छोड़वे नहीं देवें हैं ॥ तथा वा पत्रजी के लेख संबंधी के पान सूं वाके नयन विराम नही करें हैं ॥ सो भक्त हू चारों ओर सूं नाना प्रकार के तरंग समुहन को प्रगट कर रहे वा पत्र की माधुरी को नयन को पान करायवे सूं विराम नहीं करें हैं ॥ ता पाछे अधिकारी जी के पत्र को न्यारो करके वा पत्र को प्रेम विशेष सूं सबन के संग टक टकी लगाय के बहुतबार निरख के फिर बहुत ही प्रणाम करें हैं ॥ फिर उछलित अनुराग वारो सो भाग्यवान भक्त वा पत्र के अक्षरन पर के पदन पर के सुधी मनोहर पंक्तिन पर हू हृदय सूं अपने को के अपने सगरे हू सर्वस्व को हू वार डारें हैं ॥ **वा पत्र के कोण के सिर पर जो प्रभु जी ने तीन अंक लिखे हैं वासु जो सूचना करी है के शरीर वाणी के मन यह तीनों सूं तमो गुणी, रजो गुणी के सत्य गुणी हू जे मेरे भक्त हैं वा अपने भक्तन के भूत, भविष्य के वर्तमान, यह तीनों हू कालों में अत्यन्त हितकारी मैं हूँ** ॥ तथा वा तीन अंक "२" के दीर्घ लंबे पुच्छ सूं जो सूचना कियो है, कि वा तीनों गुणन को उल्लंघन करके निर्गुण जे मेरे भक्त है विनका तीनों कालों में हितकारी मैं हूं ॥ यह विचारके यह भक्त तीनों लोकों में समावे नहीं है ॥२९॥ तथा वा पत्र के शरीर पर जो "श्री हरी" यह पद लिख्यो है तासूं श्री लक्ष्मी, शोभा को सदा संबंध, के

वाको देनो, के भक्त के दुःखन को हरन प्रभु ने यह जतायो है ।। यह चित्त में धरके सो श्रेष्ठ भक्त जा अखंड संपूर्ण सुख को प्राप्त होयके वाकूं आपकी कृपा बिना कोन जाने है ।। यामें ऊपर पहेले प्रभुन ने लिखे अपने 'श्री हरी' या नाम में यह भक्तवर स्तंभ, हर्ष, अश्रु, कंप, रोम, हर्ष सूं मिले बहुत मान सूं पूर्ण जा भाव कूं पूर्ण प्राप्त होय है ।। तब वे सगरे सो भाव तो गोकुल मंगल प्रभु की दया के बिना, साधन सूं कबहू नहीं प्राप्त होय है ।।३२।। प्राणनाथ जी को नाम वांचवे में ब्रह्मादिकन को हू नहीं प्राप्त होयवे वारे जा मंगल को निरंतर देवे है ।। याके वंचवायके वारे हू सो उदार नाम वा मंगल को देवे हैं ।। तथा वाके गुणन के सुनवे वारे में हूं वा मंगल को निरंतर देवे है ।।३३।। ता पाछे प्राणनाथ जी ने कृपा समुह सूं लिखे स्वस्ती या पद को पढ़कर सो भक्तवर जाको स्वरूप वर्णन में नहीं आवे है के सर्वोत्कृष्ट भाव के केवल अनुभव सूं ही जानवे योग्य ऐसे कोई अनिर्वचनीय स्वस्ती कल्याण मंगल को प्राप्त होय है ।।३४।। याके पीछे आ ''म्'' अंतवारो ऊपर बिराजमान प्रभुन को ''श्री वल्लभानाम् (वल्लभानां) या नाम को वांच के सो अपने को श्री वल्लभ प्रभु को संबंधी अपनायो जन यह जानके यह भक्त अत्यंत दीर्घ हर्षन के सागर में नाचे है ।।३५।। प्रियवर जी प्राणनाथ जी वा भक्त को नाम अपने हृदय में धरके सप्तमी विभक्ती सूं मिले वा पत्र की योग्यता सूं भरे वा भक्त के नाम को अपने नाम के पास ही धर्यो है सो श्री राज के पास विराजमान अपने नाम को सो भक्तवर देखके अंग अंग में प्रफुल्लित रोमावली वारो होयके आनंद के आंसून को वरसावत प्रभुन के निकट ही बैठ अपने को निश्चय करें हैं ।। ता पाछे श्री महाप्रभुजी के हस्तरूप दुग्ध सागर सूं प्रगट भये, कि लिखे 'सुभासीस' या शब्द को सो भक्तवर दोनों नयनों सूं उज्वल अमृत को पान करके इन्द्र को तृणरूप हू नहीं माने है तब लोक कि स्वाद हू, सुन्दर बड़े कुल के, अलौकिक हू सगरे, बड़े स्वाद, सुन्दर कुल, या भक्तराज सेवा करवे लिये वेग ही आवे है ।।३८।। तथा प्रथम कहे सगरे लौकिक अलौकिक फूलन के मस्तक पर के चरण कमल धरें हैं के जो सब फलन के ऊपर है ।। के जो प्रेम रस को स्वरूप है अलौकिक अपने मधुर अनेक प्रकार के विलासन सूं जाके अंग शोभायमान है जो श्री गोकुलाधीश प्रभु के गोचर है के या प्रभु में जीव की आशक्ति करायवेवारी ऐसी भक्ति को हू प्रभुन की कृपा सूं

चिरकाल सों उत्कंठा वारे हृदय सूं हर्ष के आंसू रूप सुन्दर सूक्ष्म मोतिन के हार पूर्वक हर्ष सों ही आलिंगन करें हैं ॥ के ऐसी भक्ति को प्राप्त होय जाय है ॥४०॥ ता पाछे ''समीह'' यह शब्द लिखे है ॥ तासूं प्राणप्रिय जी यह जतावे है के उछलित प्रेम समूहवारे भक्त कूं प्राणप्रिय के अर्थ कोऊ सूं न निवर्त होयवे वारी चिंता रहे हैं वा चिंता को निवर्त करवे लिये यहां प्रभु जी लिखे ''इहां सुख मंगल है'' ऐसे अर्थवारे शब्द उछल रहे चिंता कूं निकार रहे अत्यंत उज्वल अमृत समुद्र के समुहन सो भक्त ऐसी अत्यंत मनोहर शांति को प्राप्त होय जाय है ॥ जासूं प्राणप्रिय के स्वरूप रस की अभिलाषा वारो सो भक्त और सब प्रिय कूं नींब रूप जैसे लीमडा जैसे कड्वो ही जाने है ॥ ता पाछे ''भावात्मत्क माशा स्महे'' आपके सुख मंगल को हम चाहना करें हैं ॥ यह भक्त को बडाई देवे को प्रभु ने जो यह ऐसो अर्थवारो शब्द लिख्यो है ॥ तासूं सो भक्तवर अपनी वेसी सगरी इच्छा को पूर्ण करवे की मेरे प्रभु की इच्छा है यह जानके सब प्रकार सूं अपने मन में नाचे है ॥ ता पाछे प्रभु जी ''अपरंच और हू है'' या अर्थवारो कृपा समूह सूं लिख्यो जो मनोहर यह शब्द है सो और हू जे अत्यंत दुर्ल्लभ मनोहर मधुर मनोरथांत वे वे फल हे ॥ वा सबन के पूर्ण करवे कूं स्पष्ट कह रह्यो है ॥ रत्न को पर्वत रूप है यासूं एक समान प्रगट भये जे अलौकिक अमूल्य आनंदमय सुन्दर रत्न है विनसूं सगरे हू अंगन में भीतर बाहिर ऐ शोभायमान होय है ॥ के जासूं या भक्त को अपने बुद्धिवारे हू लोक पहेचानवे में समर्थ नहीं होय शके है ॥४७॥ ता पाछे श्री प्राणप्रभु जी 'सदा' यह शब्द लिखके 'सर्वात्मना' यह शब्द लिखे है ॥ पीछे 'श्री गोकुलाधीश स्मर्तव्य' यह शब्द लिखे हैं ॥ सदा सर्वात्मना समय में श्री गोकुलाधीश प्रभुन को स्मरण अवश्य करनो ॥ यह अर्थवारो जो लिख्यो है तासू यह भक्तजन यह विचार के प्रभुन ने मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी है ॥ अपने स्मरण करवे को उद्यम और बड़ो भावदान कियो है ॥ यह विचार करत रोम हर्ष पूर्वक प्रभुन को प्राप्त करायवे की वाकी दीनता को, के अद्‌भुत शोभावारे हर्ष को प्राप्त होय है ॥ यों हू सो भक्त जाने है के हो सदा सर्वत्म भाव सूं या प्रभु को स्मरण नहीं करू हूं तासूं ही या रस सागर प्रभु जी की प्राप्ती में मेरे को बिलंब होय है ॥ तासूं और कारण नहीं है ॥ ता पाछे प्रभुन ने ''कापी चिन्ता न कार्या'' चिंता कोई भांती की हू न

करनी यह अर्थ वारो पद पंक्ति लिखे है सो अरणि है अग्नि के प्रगट करवे वारो काष्ट है तासूं प्रगट भयो जो विश्वास रूप अग्नि है सो या भक्त की सगरी ही चिंतान को जलाय देवे है ॥ ता पाछे प्रभुजी ने अधिकम इनसों प्रगट भयो जो विश्वास रूप अग्नि है सो या भक्त की सगरी ही चिंतान को जलाय देवे है ॥ ता पाछे प्रभुजी ने "किमधिकम" इन सो अधिक कहा है या अर्थवारो जो शब्द लिख्यो है वाको देखके सो गुणसागर भक्तवर यह विचारें हैं, कि प्राणप्रभुजी ने मेरे को जो मैं सब प्रकार सूं महा दुर्ल्लभ निर्दोष फल दियो है या शब्द सूं प्रभु जी यह स्पष्ट कहै है के यासूं अधिक और कछु नहीं है ॥ या रीति सूं सो भक्त अपने पर महाप्रभुजी जाग रही बड़ी कृपा को विचार करत परमानंद को ही सूं विनके आगे प्रणाम करें हैं ॥ ता पाछे सो भक्त वा पत्र के पीछे ऐक देश में अत्यंत प्रफुल्लित नयन रूप नीलकमलन सूं मनोहर अनुपम शोभावारे ऊंचे दोय श्रीपद को निरखे है ॥ सो दोनों श्रीपद यह जतावे है के मेरे प्रभुन की अपने जन पर भृत्य बुद्धी है ॥ के वाको अपनो भृत्य सेवक जाने है ॥ तथा प्राणनाथ जी यासूं यह जतावे है के अपनो जो श्रेष्ठ दास होय सो दूर हू होय के श्री आपसूं पीछे हू स्थित होय वाके प्रति अधिक कृपा सों या लोक की, परलोक की श्री को के लक्ष्मी, शोभा को हू वारंबार दान करू हूँ ॥ के बुद्धि को हू दान करूँ हू ॥ यह जानके सो भक्त अत्यंत ही प्रसन्न होय है ॥५५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो सायाविधि विश्राम विनोद मये एकादश कल्लोले भाषानुवादे एकादश स्तरंगः ॥११॥

तरंग ॥१२॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब बारहमू तरंग लिख्यते ॥

श्लोक — **अथो पुनः प्राणपतेः सवार्ता तां तां वि पृच्छत्यमु पादरेणु**
श्रृणां तस्मादनुमोदते च रांमांचित स्वीधती वेपतेचः ॥१॥

याको अर्थ — श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के ता पाछे सौभाग्यवान भक्त या लेखहारी भक्त सूं आदर सों प्राणनाथजी की वा वा वार्ता को पूछें हैं, वासूं सुनें हैं ॥ अनुमोदन कूं करें हैं ॥ तामें प्रफुल्लित रोमावली वारो होय है,

कि पसीना को प्राप्त होय है, कि कंप को प्राप्त होय है ।।१।।, कि जड़ होय जाय है,, कि गद्‌गद कंठ होय जाय है ।। उच्छलित अनुराग वारो सो विवर्ण होय जाय है ।। ऐसे सात्विक भाव को प्राप्त होय है ।। याके संग जे श्रेष्ठ भक्त आये हैं, के वे वे पूर्ण भाव वारी मृगलोचनी जे आई हैं वे हू वासूं वा वा वार्ता कूं स्वयं पूछें हैं. के वैसे और भक्त द्वारा पूछें हैं ।। ता पाछे सो पत्र पोहौंचायवे वारो भक्त प्रसाद की थैली, के तुलसी माला, के पवित्रा, प्रसादिक प्रभुन के दिये जे वस्त्र हैं सो हू देवे है ।। सो भाग्यवान भक्त जैसे सभी अंजली में भक्ति सूं लेवें हैं ।। या वैष्णव में यथायोग्य सो बांटे है ।। कछु कछु बाकी हू यत्न सूं बचाय राखे है ।। तब सगरे हू भक्त निःसंशय अपने को कृतार्थ ही जानें हैं ।। बड़े हर्ष को प्राप्त होय जाय हैं ।। हृदय में नाचें ही प्रिय के गुणन को सराहना करें हैं ।। ता पाछे सो भक्त उच्छलित हर्ष सों अधिकारी जी के पत्र को लेकर अक्षर अक्षर में हर्ष पूर्वक बांचके शुद्ध भाव वारो सो भक्त वा पत्र को वा अधिकारी जी को प्रणाम करें हैं ।।६।। वाकी वा आज्ञा को जानके नम्र मस्तक में धरें हैं ।। स्वयं तथा अपने सगे संबंधीन सूं के वा भक्तन सूं मिलके वा वा आज्ञा को करवे लिये सावधान होय जाय है ।।७।। ता पाछे उल्लास समूह सूं आनन्द के उछलन सूं भक्तन सूं कियो अमृत के हजार समुद्र के गर्व को विजय करवे वारो के वासूं हू महामधुरता, ताल स्वरा तान पूर्वक मधुर स्वरा को गान हू प्रगट होय है, बढे है ।। वामें चतुर जोवन वारी सुन्दरी नाचें हैं, हींच लेवें हैं ।। चतुर गंधर्व जन गान करें हैं ।। प्रसन्न होयके वीणा हू नाद प्रगट करें हैं ।। वेणु के समूह मनोहर कुंजन करें हैं ।।९।। बाजा हू वैसे वैसे बजे है के फूलन की सुगंधी को हरके आयो के सुगंधी भर्यो पवन हू चले है, भक्तजन, मृगलोचना सुन्दरी जन, प्रिय चक्रवर्ती महाप्यारे श्री राज के वा वा वृत्तांत को जानके स्तंभ जड़ता कंप रोम हर्ष के स्वरा के भंग के हर्ष के आंसू आदि सात्विक भावन को प्राप्त होय हैं ।। तब कितनी सुन्दरी तो पधारे श्री प्राणनाथजी को स्पष्ट ही निरखें हैं ।। अत्यन्त प्रसन्न होय रहे प्राणप्रिय के श्रेष्ठ भक्तन ने प्रगट कियो जो बड़े गर्व वारो अत्यन्त पुष्ट रूप कोलाहल है सो बढ़त ही आकाश को लेहन करै है ।। आकाश ऊपर जाय है ।।१२।। तब अत्यन्त प्रसन्न होय रहे वे भक्तजन आपस में कुमकुम के रस सूं सिंचन करें हैं, परस्पर आलिंगें हैं ।। के गावें हैं, के हंसें हैं, स्तुति

करें हैं, के निरन्तर सराहना करें हैं ॥१३॥ प्राणप्रिय के श्रेष्ठ भक्तन ने के चन्द्रमुखी सुन्दरीन ने चारों ओर अलंकृत करी जो भूमि है सो करोड़न वैकुंठ के गर्व सागर पान में अगस्त रूप निरन्तर होय है ॥ के विनके अभिमान को पान कर जाय हैं ॥१४॥ ता पाछे वे भाग्यवान सगरे भक्तजन वा पत्र ले आने वारे भक्त को नम्रता सूं मध्य में बैठाय के यहां घर सूं लाये महाप्रसाद को वाकूं लिवावें हैं ॥ स्वयं हू लेवें हैं ॥१५॥ ता पाछे वरास सों मिले बीरा मुखवास को वाके प्रति देके, तथा भक्ति भरे वा भक्तन को हू देके, हर्ष सों स्वयं हू वा मुखवास वीरी को लेवें हैं ॥१६॥ कितनेक क्षण यहां निवास करके फिर करुणा सागर, के वा पत्र लायवे वारे भक्त को आगे करके सगरे भक्त सगे स्वजन सूं मिल्यो सो भक्त यहां सूं प्रस्थान करें हैं ॥ उच्छलित शोभावारो सो भक्तवर वा पत्र लायवे वारे को हाथी पर के रथ पर, के श्रेष्ठ घोड़ा पर प्रेम सूं चढ़ायके आगे करके स्वयं हू वा सगरे भक्तन के संग सवारी पर सवार होयके मंगल गान, वाजा, गाजा, हींच, नाच सहित ही चलें हैं ॥१८॥ वहां द्वार में, जाके सुन्दर तोरणमाल बांधी है जहां सगरे लोक शोभायमान हैं, कि गान बाजा, नृत्य, हर्ष के जयनाद जहां होय रहे हैं ऐसे घर को प्राप्त होयके वैष्णव समूह के संग कीर्तन, दान, मान, विनोद, हास्य, टोंक के धूप, फूल मालान सूं मिले उदार लीला वारे महोत्सव करे हैं । फिर वामें प्रवेश करके प्रभुन के श्री मंदिर में मनोहर सिंहासन पर वा पत्र जी को पधराय के सगरे भक्तन के संग वाके आगे प्रणाम करें हैं ॥ ता पाछे यहां वा पत्रजी के आगे यहां सुन्दर बहुत प्रकार को भोग आवे है ॥ के स्वच्छ मिसरी को सुन्दर पणो समर्पे है ॥ वैसे निर्दोष मनोहर मिसरी के टूंक के वरास मिली बीरी बहुत वार समर्पके सो प्रिय को प्रेम समूह सो ताल वीणा, मृदंग, आनक, नगारा समूह के वेणु के नाद के मंगल सूं मिले श्रृंगार सार रूप रस समुद्र के समूहन को विस्तार करें हैं ॥ जामें प्राणप्रभुजी भीतर छिपके विहार करें हैं ॥२३॥ वहां कोई अनिरवचनीय मनोहर सुन्दर स्पष्ट बढ़ रही शोभा वारो प्रेम समुद्र उछले है ॥ अनेक प्रकार के आवर्त (भवर) समूहन सों विराजमान हैं ॥ वा वा निर्दोष तरंगन सूं जो आकाश को परस करें हैं वहां रस भरी वे मृगलोचना कि सगरे वे भक्त रस सूं आर्द्र होयके प्राणप्रिय के स्वरूप को, के श्री राज के कोऊ उज्ज्वल अलौकिक संबंध को भली भांति सों निरखत

ही सबन को दूर करके कोऊ अनिर्वचनीय आनन्द को प्राप्त होय हैं ॥२६॥ ऐसे प्रभुन के पत्र में, के प्रभु में, के वाके लायवे वारे में, ऐसे स्त्री पुरुषन के बड़े उत्साह हर्ष को परस्पर बढ़तो देखके श्री कल्याणभट्टजी कछुक मन को हर्ष उद्‌गार प्रगट करत कहें हैं "के अहो श्रुती वेद जा काम को ऊंची स्वरा सों निन्दा करें हैं, हौं वा काम को बारंबार नमस्कार करूं हूं जासूं जो काम भक्ति वारे स्त्री पुरुषन को परस्पर सघन मिलाय देवे है ॥ कि परस्पर अधिक प्रेम को हू प्राप्त कर देवे है ॥ जासूं वे स्त्री पुरुष वेग ही एक चित्त होयके बढ़ रहे हर्ष सो महाप्रभुजी श्री गोकुलेशवरजी की अधिक सेवा करें हैं" ॥२७॥ ऐसे उदार कहेकर अब चलतो प्रसंग कहें हैं -- के उच्छलित भाव के प्रवाह वारे वे भक्त सगरे वहां प्राणन के आधार कृपानिधान सुन्दरता के सागर श्री रुक्मणीजी के गर्भ रूप श्री रस सागर के चन्द्रमा निर्दोष मंगल मूर्त्ति मेरे प्रभुजी श्री गोकुलाधीशजी के आगे सुन्दर वा वा गुणवारी के मनोहर, अमूल्य, उत्कृष्ट, अखंड, उज्ज्वल बहुत वस्तुन को भेट धरें हैं ॥२९॥ सो भक्त श्रेष्ठ प्रतिदिन वा पत्र रूप प्रिय को निरखत ही साक्षात् प्रभुन को जैसे होय वैसे अनेक प्रकारन सूं वाकी सेवा करें हैं ॥३०॥ वे भक्त सगरे ही मृगलोचना हू सगरी ही आकाश को जाके तरंग परस करें हैं ॥ **ऐसे रससागर सूं प्रेरणा करे भये ही नम्रता सहित वा भक्त के वा मन्दिर में आयके विराजमान वा पत्र रूप प्रिय को निरखें हैं ॥३१॥ सो पत्रराज हू विनके मनोरथन को पूर्ण करें हैं ॥ यहां इनके घरन में के वा प्राणप्रिय के वा निजधाम श्रीमद् गोकुल में कृपा समुद्र समूहन सों सगरे विघ्न निवर्त करके प्राणनाथजी को हू वेग ही संगम कराय देवें हैं** ॥३२॥ अब श्री कल्याणभट्टजी प्राणनाथजी के निकट जे विज्ञापना पत्र अनेक आवें हैं विनको प्रसंग कहें हैं के अब या श्री गोकुल में मृगलोचना तथा भक्ति भरे वा भक्तन के मनोहर निर्दोष विज्ञापना पत्र अनेक प्रकार की भेटन के संग वा वाको नाम तथा भाव हर्ष सुन्दर विनय के वा वा विशेष वस्तुन के संग मुख्य अधिकारीजी के पास आवे है सो अधिकारीजी हू कितनेक दिन सूं पीछे समय पायके विज्ञापना करके ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी को हू सुनावे है ॥ श्री महाप्रभुजी हू बड़े हर्ष सूं सुनें हैं ॥ कबहू सदा निर्दोष प्रभुजी स्वयं हू वाकूं वांचें हैं ॥ प्रिय श्री प्राणनाथजी के कितनेक भक्त श्री राज ने दान योग्यता के भार सूं शोभायमान हू हैं ॥ तोहू चौदह लोकन के

नाथन के नाथ श्री प्राणप्रिय महाप्रभुजी के पास साक्षात पत्र लिखवे के लिये अत्यन्त संकोच करत लेख पत्र नहीं लिखे हैं ।। किन्तु मुख्य अधिकारीजी के पास ही नम्रता सूं बड़े आदर सूं लिखे हैं ।। सो अधिकारीजी हू अनन्त गुणन सूं निरन्तर भर्यो है ।। कृपा को समुद्र है या लेख को वांचके अत्यन्त प्रसन्न होयके औरन को दुर्ल्लभ मनोहर वा अपने सौन्दर्य समूह सूं अवसर पायके, अधिक दीनता नम्रता प्रेम सूं अत्यंत रंगीन वा भक्त के, भक्त सुन्दरीन की विज्ञापना सूं शोभायमान या पत्र को निवेदन करें हैं ।।३९।। प्रसर रह्यो है हर्ष प्रवाह जामें ऐसे प्राणनाथजी हू स्वयं हू याकूं निरख के प्रफुल्लित सुन्दर नयन कमल युगल होयके वा भक्त में अत्यन्त ही प्रसन्न होय है, के कृपारस प्रेम समूह सूं सुन्दर के उछल्लित हर्ष वारे अंगन सूं वा अंगन के वैसे उछले सौन्दर्य प्रवाह सूं वा पत्र लेखन में के विनके पठायवे वारे भक्तन में अमृत की वर्षा करें हैं ।।४१।। श्री कल्याणभट्टजी त्रीकम भाई के विज्ञापना पत्र को प्रसंग कहें हैं ।। के गुण समूह को सागर सो मुख्य भक्त जो श्री त्रीकमभाईजी है, जाको पुत्र श्री मोहनदासजी है, जो सगरे भूमि मंडल में अत्यन्त शोभायमान श्री मोहन भाई नाम सूं प्रसिद्ध है, तथा जा त्रीकम भाई को भैया कृपाल भगवत स्वरूप में निष्ठा वारो के दीनन को बंधु, के मधुर सगरे अंगन वारो प्यारो, श्री गोकुल भाईजी नाम है जाको, भक्ति मार्ग अवलंवन रूप है ।।४३।। ऐसो सो त्रीकम भाईजी कोऊ समय में सूरत नाम पुर सूं बड़ी दीनता सूं श्री प्राणप्रिय के श्रेष्ठ अधिकारी श्री रतन जी नाम के पास मनोहर विज्ञापना पत्र लिखावत भयो है ।। सो अधिकारीजी श्री रतनजी हू दीनता सूं भरे वा मनोहर पत्र को कछुक वांचत ही अत्यन्त गद्‌गद कंठ होय गयो ।। वांचवे में असमर्थ ही होय गयो ।। ता पाछे फिर बड़े यत्न सूं वाकों वांचके याके तात्पर्य को हू चिरपर्यन्त विचारके वा पत्र को हाथ में लेकर वा स्थान सूं प्राणनाथ के निकट ही आय गयो है ।।४६।। श्री प्राणनाथजी त्रिलोकी के आभरण स्वरूप अपने स्वरूप सूं जलघरा कूं शोभायमान करें हैं ।। सायंकाल, कि संध्या विधि को आदर देकर विराजमान हैं ।। वहां आपके अधिकारीजी प्राणनाथजी के आगे प्रणाम करत भयो है ।। नम्रता सूं प्रकाश वारे अंगन वारो होयके विज्ञापना कूं करत भयो है "के प्राणप्रभो, आपकी कृपा के ही मनोरथ वारे वा त्रीकम भाईजी में प्रेम आदर उत्कंठा सूं मनोहर उछल रही दीनता प्रवाह

वारी विज्ञापना में यह लिख्यो है ।। सो बड़ो भाग्यवान हू त्रीकमभाईजी बहुत प्रकार सूं दीनता कि उत्कंठा विशेष पूर्वक मेरे कों विज्ञापना करें हैं कि तुम श्री प्राणनाथजी के आगे वैसे वेगा विज्ञापना करो के जैसे हों अंतराय कि विघ्न वाधा के समूहन को दूर करके वेग ही श्रीमद् गोकुल में आयके श्री राज के चरण कमलन के दर्शन करवे में वेग समर्थ होय सकूं'' ।।५०।। या अधिकारीजी के मुखचन्द्रमा सूं प्रगट भई उज्ज्वल सुन्दर विज्ञापना रूप अमृत को कान अंजली सूं पान करके अत्यंत पुष्ट होय रहे के सुन्दर मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द वारे श्री प्राणनाथजी आज्ञा करत भये हैं ।। ''के अरे तुम वाके प्रति इतनो स्पष्ट अर्थ ही लिख देवो कि यहां आयवे में यह तुमारो ही विलंब है ।। न, कि हमारी कछुक हू शिथिलता है ।।'' यह सुनके सो यह अधिकारीजी हू वा भक्तवर श्री त्रीकम भाईजी के प्रति वा प्रकार की आज्ञा को वैसे ही लिखतो भयो है ।। वा लेख पत्र को आयो देखके वा अर्थ को हू जानके सो सुजान वेग ही जा अवस्था को प्राप्त भयो है ।। वा अवस्था को वैसो वैसो ही प्राप्त भयो है ।। वैसे या गंभीरता के सागर में और कौन श्रेष्ठ भक्त रूप पक्षी के चोंच को प्रवेश, या भक्त की के याके श्री प्रभुजी की कृपा के बिना होय सके है ।। ता पाछे यह श्री त्रीकम भाईजी श्री महाप्रभु की कृपा सूं करोड़न बड़े अंतराय समुद्रन को तरके वेग ही बिना यत्न के श्री प्रभुन के निजधाम श्रीमद् गोकुल को प्राप्त भयो है तथा श्री प्राणनाथ जी के प्रेम, अत्यन्त प्रसन्नता, के कृपादृष्टि, के मंदहास्य, के माधुरी को, के आनंद लीला रसगान, के मान, के सुन्दर सुखन को पात्र हू होय जातो भयो है ।।५७।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे द्वादश तरंगः ।।१२।।

॥ तरंग -- १३ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब तेरहमू तरंग लिख्यते ॥

श्लोक --**एवं बहुनाम अधिकारी मुख्ये विज्ञप्ती पत्राणी बहु निशश्वत आयांत्परं सोपि सति क्षणे तान्यु पत्पतस्यांती कमउछलमृत् ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि या प्रकार सूं अनेक भक्तन ने अनेक ही विज्ञापना पत्र मुख्य अधिकारीजी के पास निरंतर आवें हैं ॥ सो हू वेग अवसर पायके उच्छलित हर्ष सूं वा प्रियवर के निकट आयके विनको पढ़ें हैं, कि विनको अर्थ आशय प्रकट करें हैं ॥ तासूं विनके ऊपर श्री महाप्रभुजी प्रसन्न होय । कितने भक्त तो उच्छलित प्रेम विवश होयके फिर प्राणनाथ के निकट ठहेर रहे जे अपने स्वजन हैं विनके पास ही पत्र लिखें हैं ॥ उच्छलित प्रेम वारे वे हू प्राणप्रियजी कों निवेदन करें हैं ॥ श्री प्राणप्रियजी हू वा भक्तन के निवेदन किये वा अर्थ के श्रेष्ठ उत्तर रस समूह सूं शोभायमान पत्र को वा भक्त के प्रति स्वयं लिखे हैं के विनके प्यारे स्वजन सूं लिखवावें हैं ॥ कितने भक्त प्राणनाथ ने दान करी योग्यता सूं आर्द्र हैं, भरे हैं तासूं साक्षात् हू प्राणनाथजी के प्रति रहस्य विज्ञापना वारे पत्र को सुन्दर लिखवे के लिये अत्यन्त गुप्त रीति सूं ही पठावें हैं ॥ सो और पत्र लपेटके उज्ज्वल मनोहर वस्त्र में बांधके पठायो सो पत्र इहां आवे है, और कोऊ हू वाकूं खोले नहीं है ॥ श्री प्राणनाथजी ही वाकूं श्रीहस्त सूं खोलके एकांत में पढ़ें हैं ॥ श्री मुखारविन्द प्रफुल्लित होय जाय है ॥ पद पद में के बात बात में रोम हर्ष वारे होय हैं ॥ अत्यन्त ही प्रसन्न होयके ॥६॥ श्री प्राणनाथजी में पत्र लिखे हैं, कछुक वैसे हौं अब वर्णन करूं हूं ॥७॥ यह भक्तजन अत्यन्त चमकनो, मनोहर, सुन्दर लाल रंग वारो, कि सुन्दर पीरो, कि सुफेद रंग वारो, कि विचित्र रंग वारो, बड़े मोल वारो कागज लेके पत्र को लिखे है ॥८॥ वा पत्र के ऊपर मस्तक पर श्री प्राणनाथजी को **नाम सुखंत प्रथमाविधि विभिक्ति के प्रथम वचनातिक ही श्री वल्लभ ऐसे अनेक विशेषणन के सहित ही बड़े भाव वारे भक्तजन पहेले लिखें हैं** ॥ पीछे ''जयती'' लिखें हैं ॥९॥ **श्री वल्लभो जयति** ऐसे प्रभुन के नाम सूं पीछे, कि पहले उछलित उज्ज्वल हर्ष वारे वे

भक्तवर सात ''**श्री**'' पद लिखें हैं, के प्राणनाथ के मंगल समूह के चाहना वारे कितने भक्तवर एकोत्तर सो (१०१) श्रीपद लिखें हैं ॥१०॥ याके नीचे स्वसीत पद लिखके जो जो वा पत्र में लिखे हैं सो यहां कछुक हौं कहूं हूं ॥ श्री महाप्रभुजी के कृपापात्रजन इतने सूं ही, और सब विचार कर ही लेवेंगे ॥११॥ श्रीमद् गोकुलरत्न श्री गोकुल भूषण, श्री महाप्रभुजी के श्रीमन् शोभा वारे चरण रज किणका के आगे पराध्र्धन प्रणाम पूर्वक हम सब भक्तन की यह विज्ञापा है ऐसे संक्षेप सूं पत्र को प्रकार है ॥ तामें पहेले श्रीमद् गोकुल को रत्न रूप प्रभुन के विशेषण आवे है के जे करोड़न महामंगल के निधान हैं, खान हैं, के जे सदैव सर्वोपर विराजमान हैं, कि अनंत करोड़ ब्रह्माण्ड समूहन को नियम में राखवे में अत्यन्त समर्थ तो जाके अस्पर्श अक्षर के अशांशक कलालेश हू हैं, के जे सर्व मंगलों के कर्ता स्वरूप हैं, के जाके श्रीहस्तचरण, श्रीमुख उदरादि सगरे श्रीअंग आनंद मात्र हैं के जे सर्वांग सुन्दर हैं के जिनकी कृपा कटाक्ष के लेश को हू सब जन अभिलाषा करें हैं ॥ के जे अनेक प्रकार के मनोहर अत्यन्त मधुर के निर्दोष गुण समूहन सूं शोभायमान हैं, कि जे छे **आत्ति-जायते-वर्द्धते विपरिणमते क्षीयते नरमति** भाव विकारन सूं रहित सगरे स्वरूप हैं, कि जिनकी सदैव सर्व प्रकार के भक्त समूहन के सगरे मनोरथ के पूरण करवे में अत्यन्त दृढ़ कमर कसी रहे हैं ॥ कि जे करोड़न परार्द्धन प्राणन सूं हू अत्यन्त अधिक प्यारे हैं ॥ के जे अर्बन खर्बन पूर्ण चन्द्रमान सूं हू अत्यन्त अधिक आनन्द देवे वारे हैं ॥ कि जे हजारन लाखन चन्द्रन सूं हू अधिक शीतल करवे वारे हैं, कि जे लाखन, करोड़न समुद्रन सूं अधिक गंभीरता सूं शोभायमान हैं कि जे करोड़न पद्मन प्रचण्ड सूर्य सूं अधिक तेज समूह सूं विराजमान हैं, कि जे प्रकाश वारे अनेक प्रकार के बड़े तरंग समूहन सूं मिले उछल रहे मनोहर बड़े आवर्त भमर समूह सूं शोभायमान जे निर्मल रस सर्वस्व के यंत्र सूं निकरे सर्वोपर धारण किये चरण कमल वारे जैसे महारस सागर हैं विनके हू जे महासागर हैं जिनकी आज्ञा को सगरे राजा महाराजा हू सिर सूं पूजन करें हैं, मानें हैं, कि जिनके प्रताप के आगे सीमापति राजा महाराजा प्रेमपूर्वक नम्र होयके नमते रहें हैं ॥ तामें प्रगट ही सगरे परम सूं परम मूल पुरुषोत्तम के जे लक्षण हैं विनको लक्ष्य है, कि सगरे वो लक्षण आप में स्पष्ट हैं, कि तासूं अपने जन समाज के मनको जाने प्रसन्न कियो

है तथा निरन्तर विस्तार वारी होय रही सबन सूं बड़ी हजारन आश्चर्य भरी उज्ज्वल शुद्ध है के सगरे अवतार के अवतारी समूह हू अपनी मणीजटित मुकट के, कि मकर पत्र भग मकराकार कुंडलन की कोटि सूं जाके चरणकमल सूं बांधी पराग समूह को चुम्बन करें हैं ॥ तथा मध्यान काल के प्रचंड सूर्यन की करोड़न किरणों जैसे सब प्रकार सूं जाके अंधकार को निवारण करें हैं ॥ के जे सगरे जगत के सगरे ही उपद्रव को शांत करें हैं, के जिनके चरण कमल संबंधी रज संबंधी समूह को सगरे चक्रवर्ती महाराज अपने ओर शिर समूहन पर मुकुट रूप करें हैं, कि जिनको नाम लियो हू सुन्दर मंगल है ॥ अत्यन्त सुन्दर है, के जिनको प्रबल प्रताप समूह सगरे दिशान के गजराजन के कुंभ स्थल में सिन्दूर प्रवाह रूप होय रह्यो है, के जिनके चरण कमल को महाराजाधिराज चक्रवर्तीन को समूह अनेक शिरों के फूलों, के मुकुट संबंधी मानो ही मंजुरी के मकरंद समूहों सूं स्नान कराय रहे हैं, के सगरे लोकों सूं प्रशंसा किये जे प्रकाशित श्रेष्ठ यशरूप रत्न समूह है विनसूं विराजमान के शोभायमान अपने जीवन के कुशल रूप जे समुद्र हैं विनके जे पूर्ण चन्द्रमा हैं के सदा उछल्लित करवे वारे हैं, के अनेक प्रकार के अपने श्री मुखारविन्द सूं उछल रहे मकरंद समूह ही जिनको जीवन है ऐसे निजजन के हृदय रूप महासुन्दर कमलन के प्रफुल्लित करवे लिये जे सूर्य रूप हैं, के जा श्री प्राणनाथ के निर्मल चरण कमल संबंधी नख समूहन को प्रणाम कर रहे जे लाखन अर्बन राज्याभिषेक वारे महाराजाधिराज हैं विनको परार्द्ध लाख करोड़न मस्तक मुगट संबंधी मणी, कि कांति रूप मंजुरी सूं आपके नख समूह पीरे लाल होय रहे हैं ॥ के जिनके गुण समूह क्षीरसागर के महा तरंगन सूं हू निर्मल है के अहो श्री राज जो निरविधीन सुन्दर रंग वारे सोना, मुक्ता, हीरा, माणिकादि मणि रजत की उपधातु के पटवस्त्र जामा नीमा, पाग, उपरनादि वस्त्र पात्र आदि टेरा हाथी, घोड़ा, भक्ष्य भोज्यादि जो अनेक वस्तु दान करें हैं तासूं जा अपने कल्पवृक्ष को हू तृण जैसे कर दियो है ॥ के जिनके समान हू और कोऊ हू नहीं है, के जिनके श्रेष्ठ मार्ग के पक्षपात सूं प्रचार किये अनेक श्रेष्ठ शास्त्रार्थ रूप साथ सूं सगरे विद्यावान कों प्रसन्न कर दियो है, के जिनने निरन्तर विस्तार किये बड़े-बड़े मनपूर्वक मान सो दानन सों के निष्कपट प्रेम व्यवहार के परपंरा सूं सुत्दत्समाज को हू प्रसन्न राख्यो है ॥ के वे सगरे भू-

मंडल में प्रसिद्ध अत्यन्त शुद्ध सर्वोपर विराजमान तेज भयो जो अपनो बड़ो वल्लभ वंश है वाके जे विशेष भूषण रूप हैं, कि विनय प्रेम, गौरव, चातुरी, माधुरी समूह सूं पालना करी महाराजाधिराज लीला जिनने, के सगरे भू-मंडल के चक्रवर्तीन सूं गान कियो जो अपनो अतुल बड़ो महायश है तासूं जाने सगरे वेद, के वेदशास्त्र वेत्ता हू अपने अनुचर दास ही बनाय लिये हैं, के जे मलय सूं हिमालय पर्यंत विराजमान जे जन समूह है विनने भलीभांति सूं जाको गान कियो है ऐसी सुन्दर सुन्दरता, के कीर्ति समूह सूं जे भरे हैं, के जे चारों ओर समुद्र के तट पर्यंत वारी सगरी भूमि के कांति पति हैं ।। के जे महा महा रसिकवरन के चक्रवर्ती हैं, के जे परम चतुर चक्र समूह के जे चक्रवर्ती हैं, के जे भक्तजनन के सर्वस्व स्वरूप हैं, के सगरी रस कलान में चतुर हैं, के जे श्रृंगार रस सार महासार के महा समुद्र समूह रूप क्षीर सागर सूं प्रगटे निर्मल अमृत रूप दही के महासागर के मथन सूं प्रगटे नवीन माखन के निरन्तर भोग सूं सुन्दर चिकने पुष्ट सगरे बाहिर भीतर हू पुष्ट हैं, के जिनके सगरे अंगन सूं अत्यंत दृढ़ निर्हेतुक प्रेम है, हजारन महा प्रवाह उछल रहे हैं, के रोम रोम में उछल रहे हैं अपार अगाध अलौकिक निरउपाधि हजारन परार्द्धन कलोल जामें, के क्षण क्षण में शोभायमान होय रहे हैं, के कोऊ सूं न तरवे योग्य गंभीर लाखन अर्बन के भमर जामें ऐसे पलपल में विशेष होय रहे लाखन अर्बन महा रस के जे सागर हैं, के बड़े सूं बड़े उदार सुन्दर चरित्र समूह सूं चित्रित किये हैं ।। अपने सेवकन के चित्त रूप रमण भवन जिनने, के अर्बन पद्मन परार्द्धन पुरुषोत्तमन सूं हू अधिक सौभाग्यवारी है चरण कमल संबंधी पराग की लेश कूं जिनकी पल पल में चाहना किये परम हर्ष समूह, के परम मंगल समूह के परम यश समूह, के परम प्रताप समूह, के परम प्रेम समूह, के परम रस सागर समूह, के परम वात्सल्य समूह, के परम रमणेश्वर्यन समूह, के परम माधुरी, के परंपरा है विन संबंध सूं भरे जे भक्त हैं वे जीवन औषध रूप है ।। विनके हू जे जीवन रूप जल रूप प्राण रूप हैं, के तथा जाको अंगीकार लेश हू सुवर्ण को महा पर्वत रूप है वाकूं अनेक अपराध के परार्द्धन दुर्ज्जनों के हू वे वचन, कि करोड़न लाखन महाप्रलय काल को हू झंझा पवन कूं नहीं कंपा सके है जिन कारण क्षण क्षण में बढ रहे हजारन शाखा वारे अपनी प्रसन्नता रूप कल्पवृक्ष की सघन छाया में अपने

सगरे दास जनन को विश्राम वारो करें हैं ।। के जे अपने कटाक्ष के संबंध सूं चिन्तामणी समूह दान सूं बल सूं ही याचक समूहन के कबहू न निवर्त होयवे वारे हू दरिद्र समुद्रन को नाश कर रहे हैं के जे शिशिर ऋतु में गिर रहे हैं ओला, हिम समूह सूं हू विशेष शीतलता के सिद्ध करवे में अत्यन्त प्रगल्भ समर्थ वैसे वैसे अपने बचपन की माधुरी सूं सगरे सेवकन के सगरे संताप रूप अग्नि समूह कूं शांत करें हैं के जे अनेक प्रकार के भक्तन को परमानंद समूह की दान अर्थ ही अपनी इच्छानुसार परदेश पधारवे की लीला रस की माधुरी सूं सगरी भू-मंडल को पवित्र करें हैं, कि जे अपनी प्रेम रस भक्ति मार्ग की शिक्षान में परम चतुर अपनी इच्छानुसार अनेक लीला चरित्रन सूं अनेक दैवी जीवन को कृतार्थ करें हैं ।। के जिनको प्रागट्य अद्भुत रूप है, के जे महामधुर लीला रूप हजारन अमृत समुद्रन के निरन्तर पान सूं अपने जन समाज को आनन्दित कर रहे हैं ।।४५।। के जे बड़ी महिमा वारे पूजनीय श्रीमान शुभ मंगल रूप नाम वारे श्रीमत भगवान श्री विठ्ठलनाथजी के हृदय के अत्यन्त शीतल करवे वारे चन्दन रूप है, कि जे स्वजनन के आर्ती समूह, के निवारण करवे में आलस रहित सावधान हैं, कि जे भक्तन के पक्ष रक्षा अर्थ सदा कमर कस रहे हैं, कि जे भक्तन की संकल्पन की सिद्ध करवे लिये कल्पवृक्ष हैं, कि जे निर उपाधिक कृपा के निधान हैं जिनकी कर्म लीला यश धैर्य गंभीरता कि स्थिरता कि प्रताप, कि कृपा जोबन सुंदरता, कि मधुरतादि गुणन को गान हूँ परम मंगलरूप है ।। कि जे मो सरीखे अत्यंत दीन जनों के उद्धार करवे वारें हैं, कि जे सज्जनों के शरण है आश्रय है, कि जिनके लोचन अनेक प्रकार, कि कृपा के प्रेम रसके भार सूं निरंतर आर्द्र हैं ।। के कमल समूह को विजय करवे वारे हैं ।। कि जे स्वजनन के सगरे शोकन को निवर्त करवे वारे हैं, कि जे निरूपाधि ही सब जनन के बंधु हैं, कि जे कृपा के सिंधु हैं ।। कि जिनके अत्यंत मधुर ही अनेक प्रकार के विहार है, कि जिनके अत्यंत सुन्दर सूक्ष्म मोतीन के हार है, कि जे चरण कमल के नख की शोभा, के लेश सूं हूं कांति समुहन को विजय करें हैं ।। कि जिनको सुन्दर विचार हू सगरे विश्व के हित के लिये ही हैं ।। कि जे मंगल स्वरूप है, कि जे श्रीमद् गोकुल के भूमिपति है, कि जिनको श्रीमुख करोड़ान चंद्रमान को विजय करें हैं, कि जे भक्तन के परम सुखरूप है, कि जे अपने

नाम मात्र सूं हू सगरे जगत के रोगों को शांत करें हैं ।। कि जे कृपा सूं भरें हैं ।। कि जे सगरे भक्तो, के याचकों कूं पालन करें हैं, कि जे त्रिभुवन रूप, घर के देहली दीपक है ।। चारों ओर प्रकाश करे, कि जे अत्यंत शोभाभरी व्रजसुंदरीन के श्री मुख चंद्रमा के चकोर है, कि जे विनको चित्त के चोर है, कि जे अनेक प्रकार के हर्ष के सागर हैं, कि जे अत्यंत ताप के शीतल करवे लिये हिमालय रूप है ।। कि जे अपार महिमा को भवन है, कि जे मों सरीखे अत्यंत दुष्ट पर हू निमर्याद कृपा के सागर है, कि नवल है सुन्दर है, कि जे चंदन सूं चर्चित मनोहर स्वरूप वारें हैं, कि जे अनेक प्रकार की तुलसी मणि मालान सूं शोभायमान हैं, कि जाको श्रीमद् गोकुल की रस सुंदरी नयन कमलो के हजारन विलासन सूं पूजा करें हैं, कि जे सकल सुजनों के सुखकारी है, कि जे अनेक प्रकार की सुगंधी माला को धारी, कि भक्तन के संताप को हारी है ।। जिनको नामरूप अमृत की पंपा नदी है, कि जिनकी सगरे विश्व के कृतार्थ करवे लिये कृपा प्रसर रही है । कि निकट वासी सुंदरी समुहन के प्रतिबंधन सूं जिनके कपोल चुंबित होय रहे हैं ।। कि जे श्रीमद् गोकुल में विराजमान अनेक प्रकार की रस सुंदरीन के घरन में चंचल है, कि कृपा समुह सों जिनोने सच्चिदानंद रूप अपनो मनुष्य स्वरूप प्रगट कियो है, कि तुलसीमाला के समुह सूं जिनको हृदय स्थल शोभायमान है, कि सत्य जिनकी वाणी है, कि सत्य जिनको संकल्प है, पुण्य श्लोकन के जे शिरोमणि है, कि केवल भक्तिसों ही जे प्राप्त होय है, कि सुंदर माणिक जटित जिनके कुंड्ल है, कि घुंघरारे चमकने मनोहर जिनके केश है, कि जे निर्दोष हैं, कि ब्रज के आनंद करवे कूं जिनको प्रागट्य है ।। कि श्रीमद् गोकुल की सुंदरी समुह जिनके सदा गुण समूहन को गान करें हैं ।। विचित्र लीला करवे में जो पंडीत है, कि परमानन्द भरे जनन के संग प्रेम आलाप सूं जे आनंदित रहे हैं, कि श्री गोवर्द्धन गमन महारस लीला के प्रगट करवे सूं जे अपनी स्त्री पुरुष सगरे समाज को प्रसन्न करें हैं, कि श्री गोवर्धन सूं फिर आगमन लीला महारस समूह के प्रकाश सूं श्रीमद् गोकुलवासी मनोहर हरिणी लोचनां आदि महाभक्त समूहन को जो कृतार्थ करें हैं, कि कबहु कबहु जे श्री यमुना जल तरण विहाररूप महाहर्ष रूप लीला करें हैं वामें जल बिहारादि रूप अमृत के समुद्र समूहन सखी समाज को सींचन करें हैं ।। वामें गुरूजन की भय

की आश्चर्यपूर्वक वा वा रस चंद्रवदनी तथा जा भक्तजन ने के सब मनोरथ जे पूर्ण करें हैं, कि वा वा उछव महाउछव के दिनन में वेसे वेसे वा वा महाभक्त राजन के मनोरथ समूह के अनुकूल होय है ।। वा वा भक्त ने अर्पण किये केसर रस रंगे जामा पाग सुंदर उपरना धोती की कमर पटकां आदि अनेक वस्त्रन को, कि अनेक भुषणन को जे वा वा मनोहर श्री अंगन कूं अलंकृत करें हैं ।। कि अंगीकार करें हैं के कबहु अनिर्वचनीय भाग्यवारी कोऊ रसपूर्ण चंद्रमुखी सुंदरीजनन की विशेष विनती प्रार्थना अनुसार वाने निवेदन किये रत्न जटित कुंड्ल कि कंठाभरण, मुक्ताहार मनोहर गुंजा माला के कड़ा मुद्रिका, बाजुबंध आदि भूषणन को श्री अंगन सूं अंगीकार करके विशेष सूं जे शोभायमान है के वा वा भक्त के, भक्त सुंदरीन के मनरूप मछली के खेंचवे में जाके कटाक्ष तरंग कुड़ी की लीला सूं शोभायमान है के सुंदर परिपक्व मनोहर भाग्यभरे महामंगल नाम वारे कोऊ समय महाराज में सुंदर मधुर ताल तान भरे गान लीला के प्रकाश सूं जे भक्त रस सुंदरी के कानरूप दोनान में अमृत के हजारन समुद्र को वर्षा, के पर धराय रहे हैं, के जिनके श्रीमुख सरस कमल संबंधी मधुर रस के प्रवाहन के केवल श्रीमद् गोकुल की सुंदरी जन ही नयन कमल रूप रस भौरान सूं ही स्वाद लेवे है, के भक्त के भक्त सुंदरी जनन के रचना किये मनोहर टोक हास्य वचन रूप अमृत के पान सूं जिनके श्रीमुख पूर्ण चंद्रमा सदा प्रसन्न रहे हैं ।। कि जे सुंदर मधुर नराकार पर किया है, कि जिनके श्रवण कीर्तन स्मरण हूं अत्यंत पुण्यरूप है, कि जे सबन, कि सगरी आशान को पूरण करवे वारें हैं, कि जे निज जन के चिंतामणिरूप है के जे अपने आपको हू अत्यंत विस्मय करायवे वारे, के क्षण में बढ़ रहे चमकने अपने सौंदर्य सूं सगरे जनन के मन को बिना यत्न के हरके नहीं फिर दे रहे हैं ।। कि जे सब लोकवृंद को छांड के शरण आये जनन के सब दुःखन को निवारण करवे वारें हैं, कि जे परके ओरन के गुणमात्र को ग्रहण करवे वारें हैं ।। कि जे ओरन के दोषन कूं अपेक्षा ही करें हैं ।। कि जिनके प्रयोजन भक्तन के अर्थ ही है, कि जे स्वभाव सूं सुन्दर है, कि जिनकी सगरी लीला सामग्री सर्वोत्कृष्ट है, कि जे मनोरथ सिद्ध करवे कूं कल्पवृक्ष है, कि जे क्षण क्षण में सुख दायक हे के जिनको दर्शन योग्य मनोहर अत्यंत मधुर कुमकुम चंदन को तिलक है जे प्रेम भरे के नम्र जीवन को सुखदायक

है, कि जे कर्तुं अकर्तु के अन्यथा कर्तुं में समर्थ है ।। ऐसे जे श्रीमद् गोकुल के महामाणिक है ऐसे अनेक अनुपम अनंत विशेषण वारे श्री गोकुल भूषण प्रभु के जे श्रीमान शोभाभरे जे निराश्रयों के आश्रय रूप चरण कमल के रजके किणका है जे परम सुंदर है, कि सगरे गुण समूहन सूं जे शोभायमान है, कि जे सगरे भक्तन के मनरूप महामत्त हाथीन के बंधन स्तंभ है ।। जे परम परमानंद समूहरूप है के जे प्रणाम कर रहे महा उदारन के चिर संबंधी मुगटमणि, कि किरणरूप मनोहर मंजरीन सूं रंगीन होयवे सूं विना यत्न के अभयदान कूं दे रहे हैं ।। कि जे निसाधनो के तो परम फल रूप है, कि जे निरंतर अपने अंगीकृत जनन के हृदय रूप सरस कमलों में बिराजमान है, कि जे निजजनों के अपने लिये जो फलरूप भाव है वा भाव के ही आधीनता कूं जो सिद्ध कर रहे हैं ।। कि जे भक्तजनन के जीवन धन भूषणरूप है, कि जे रस जोबन भरी सुंदर समूह के तो पटवारा रूप है, अपने अंग-अंग में लगायवे लिये सुगंधी चूर्ण है ऐसी जे अशरण अनाथो के शरण रक्षक आधार आपके चरणरज के किणका है विनके आगे पराद्धन दंडवत प्रणाम पूर्वक ऐसे हम सबन की यह विज्ञापना है, कि जिनको राजश्री ने अपनी इच्छा सूं ही अंगीकार कियो है, कि जे सगरे साधन सूं रहित है, कि जे सगरे श्रेष्ठ कर्मन सूं रहित है, कि जे सगरे गुणन सूं रहित है, कि जे श्री राज के हीं चरण कमल संबंधी पराग के किणका सूं ही पालना योग्य है, कि जे विनके दासन के परमाणु दास है ऐसे जे **नारायण जी, त्रिकमदास, केशवदास, वेणीदास, सुंदरदास, मोहनदास, हरीदास, दामोदरदास, गोकुलदास, त्रीकमदास, श्यामदास छोकरा, जमुनादास, माधवदास, विट्ठलदास, मथुरा भट के कल्याण भट है वैसे और हू जे विनके दासानुदास है विन सबन की यह विज्ञापना है के प्राण प्रभो पराद्धन प्राणनसूं हू अधिक प्यारे महाराजाधिराजन के चक्रवर्ती आपकी बड़ी ही कृपा सूं पहेले बहुतवार श्रीराजके निकट बैठके हमने श्रीराज को श्रीमुख चंद्रमा नयनरूप अंजलीन सूं भर भर पान कियो है श्रीराज के मुख चंद्रमा को न देख रहे हम अबतो आंधरेन की दुर्दशा सो अत्यंत हीन दुर्दशा को भोग रहे हैं ।। जासूं वे आंधरे तो अपने वा प्यारे के बिना वा जैसे और कोऊ नहीं देखे है हमतो आपके बिना और सगरे जगत को आदर सहित सदा देख रहे हैं ।। यद्यपि श्री महाप्रभु शिरोमणि**

श्री राजा तो स्वभाविक कृपाहित करवे में अहित निवारण करवे में सदैव ही अत्यंत दृढ़ कमर कसके विराजमान रहे हैं ॥ तासूं यह हमारी दुर्दशा को दूर करेंगे ही, तो हूं यह हमारी अत्यंत प्रबल ही मूर्खता हमसूं या रीति सूं विज्ञापना करावे है ॥ कि हम सबन, कि सबको निगरने वारी के नाश करवे वारी, यह दुर्दशा अवश्य ही वेग ही निवारण करवे योग्य है ॥ तथा श्री महाप्रभो आपने अपने चरण कमल को धारण करवे सूं सब सुगंधि चक्रवर्ती भाव को प्राप्त करी, कि महासुगंध भरी करी तासूं परार्धन बैकुंठन को हू तृण जैसे कर रही परम भाग्यवती अत्यंत प्रकाशवती या श्रीमद गोकुलकी भूमि में अपने निकट्वर्ती भक्तन के पीछे ही सेवक रूप सूं हमकूं राखो यह हमारी विज्ञापना है ॥ यद्यपि श्री महाराजाधिराज तो परमेश्वरन के हू मुगटमणि है तासूं जीव मात्रन के होते हू अपराध समूह को नही मानो हों के विनके मूलरूप दोषन को हू नहीं देख्यो हो ॥ के न होते हू गुण समूहन को बड़े आदर सूं हीं अपने हृदय में ही धरो हो ॥ तासू स्वतः ही अत्यंत तुच्छ दासरूप हू हम सबन में प्रसन्न होयके हम सबन के वांछित मनोरथन को वेग ही सिध करेंगे ही तोहूं जे वा स्वभाव ही ऐसो है जो विज्ञापना करवे की ध्रुष्टता सूं नहीं डरें हैं ऐसे विज्ञापना करवो रूप अपराध को ऐसे आपके आगे करी है, करें हैं ॥ जो हम इहां ऐसे बड़े दुःखी होय रहे हैं ऐसे हम सबन को अपने निकट ही लेके अपने श्रीमुख कमल संबंधि निर्मल मादक मधुर माधुरी को आप पान करावे तासूं हम कूं आप कृतार्थ ही करे यह विज्ञापना है ॥ हे महाप्रभो यद्यपि अनेक प्रकार की विषय वासना सूं जटित, कि बांध्यो हमारो अंतःकरण तो क्षणमात्र हू श्री राजके श्री चरण कमलो के सन्मुख होयवे में समर्थ नहीं होय सके है तथापि अपने प्रबल बल सूं या विषय वासना को काटके अपने चरण कमलों के निकट ही वा चरण कमलो की माधुरी के भार सूं हम कूं अत्यंत ही बांध के राखिये यह हू विज्ञापना है ॥ याके बीच में श्री कल्याण भट्ट जी अपनी विनय हू लिखे है ॥ यह प्रतीत होय है ॥ कछुक और हू है, कि श्री गोकुल प्राणनाथ प्रभो जय जय जय आप सदा सर्वोत्कर्ष सूं विराजो, हे प्रभो श्री आपके चरण कमलों के आगे सब अवतार, कि अवतारी हू प्रणाम करें हैं वामें विनके प्रकाशवारे मस्तक के मुकुट संबंधी रत्नन की प्रभा सूं श्री राजके चरण कमल लाल होय रहे हैं ॥ विनसूं निकस रहे माधुरी के

जे सागर है विनकी बड़ी बड़ी लहरीन सूं अपने नयनन के दृष्टिन के ताप समूह कों निवर्त करत ही विनके मनके हू मनोरथन को पूरण करत ही विनके हस्त कमलन को हू अपने श्री अंग संबंधी भली-भाँति सूं सेवा रूप आनंद समूहन सूं वेग ही अत्यंत पूर्ण करिये ॥ कि हाथन सूं अपने श्री अंग की सेवा हू कराइये ॥ तथा कछुक और हू है ॥ कि हे श्री गोकुलेश, हे विभो कृपानिधे, हे महारस सिंधो प्रताप सूं विजय किये है सूर्य की कांति समूह जाने, ऐसे महाप्रताप वारे महाप्रभो, हे दीनबंधो, हे ईश्वरेश्वर, तथा प्रसिद्ध होय रहे अपनी कीर्ति के प्रवाहन सूं सगरे लोकन में स्थित सब दैवी जनन को आपने पावन कियों है, तासूं सब लोक, लोकपाल, राज की स्तुती करें हैं तथा ऐसी मनोहर निरंतर लीला करो हो, तासूं सगरे अपने भक्त समूह को कृतार्थ कर रहे हो ॥ तामें मैं राज को सेवक हू, आपको हू, ऐसे मोकूं पालना करिये, तथा हे श्रेष्ठ गुण समूहवारे महाप्रभो, संसार सागर में मैं डूब रहयो हू ॥ यासूं मोकूं वेग ही उद्धार करिये ॥ तथा और हू कछु है ॥ कि महाप्रभो मेरो कियो भलो, कि बुरो ऐसो नहीं है जो आपसूं छिप्यो होय ॥ हे कृपानिधे, हे हरे, जड़बुद्धि मैं आपके आगे धृष्टता सूं भर्यो का निवेदन करू सो आप श्री अपने स्वरूप को, कि अपने रसात्म भाव को, कि अपने स्वभाव को, कि गुणन को, कि चरित्र को विचार के अयि व्रजराज, अहो शुभ प्रभो मेरो भलो करिये ॥ सगरे जन मेरे को आपको दास कहे हैं तथा और हू है, कि श्री राज मनोहर है, कि रसात्मक के बांके भ्रुवारी सुंदरीन के नयन के उत्सवरूप है, कि गुणन सूं सुंदर शोभायमान रस सागर है, कि श्री मुख की शोभासूं हजारन पूर्ण चंद्रमान को विजय करवे वारे हो की श्री अंग की कांति सूं करोड्न कोम को आपने कंपायमान कर राख्यो है ॥ कि वचनामृत सिंधु के उछलित तरंग समूहन सूं अपने जनन को कृतार्थ कर रहे हो ॥ श्री गोकुलेश्वर राजाधिराज प्रभो लौकिक आरति ताप भरे, को, जोर सो बांध रहे, कि पीड़ा दे रहे हैं ॥ ऐसे अपने जन मेरे को हू कृपा समूह सूं अत्यं आर्द्र होय रही दृष्टि सो पावन करिये ॥ नयनन के सन्मुख करीये यह मेरो निवेदन है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे त्रयोदस तरंगः ॥१३॥

॥ तरंग -- १४ ॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब चौदहमू तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **एवं भक्तवराः केचिदीश्वराय लिखीति यत्**

तदू त्कास्यंदक थने पद्यतपरमेशितुः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, कि श्रेष्ठ भक्त कितनेक श्री महाप्रभुजी के पास जो लिखे है सो कहे कर यांके ही कहवे में कृपासागर या श्री गोकुलाधीश प्रभु की इच्छा सूं वृत्तांत भयो है **सो यद्यदि प्रगट करवे योग्य नही है तोहू वा इच्छा की प्रबल प्रेरणा सूं संक्षेप सूं कछुक कहूं हूं, ''कि हे विज्ञाः, कि अयि सुजान विद्वान जनो अमृत सूं हू मीठे या वृत्तांत को पान करिये ॥''** सो तामे श्रीमत्सू इहां पर्वत तो पीछे वा भाग्यवानो के हम सब साधनन सूं रहित है ॥ कि इहां सू लेकर हम सगरे गुणन सूं शून्य है ॥ या पर्यंत दीनता के वचनो के लिखवे में मोकूं चीर पर्यंत विचार भयो की अचानक भय हू भयो कि हों तो प्रभुन के दासन में परमाणुदास हू यह जे श्री नारायण जी आदि है यह तो श्री महाप्रभुन के सदा निकटवासी है ॥ श्रेष्ठ भक्त है विनमें दोष को प्रगट करवे वारो विनके वचनो को हू मैं कैसे कहू ॥ दीनभाव सूं अत्यंत शोभायमान यह स्वयं कहे तो भले कहे हू ऐसे मैं बहुत विचार कर रह्यो हतो, कि डरपतो हतो, कि मौन ही गहे के रहयो हतो, तब मेरे चित्त से भक्तन के कल्पवृक्ष प्रियवरजी प्रगट होयके आज्ञा करत हैं ''कि अरे तो काहे को चिरपर्यंत ऐसो विचार करें हैं ॥ त्या भक्तन में साधन हीनतादि जो है, सो तो दोष नहीं है ॥ किंतु सो तो बड़ो दुर्ल्लभ बड़ो ही श्रेष्ठ गुण है ॥ जासूं केवल मेरे स्वरूप में ही जो निपृश है सो प्रिय मेरे को प्राप्त करावे है ॥ कि साधनादि, कि जो सिद्धि है सो तो मेरी प्राप्ति के विरोध है, कि प्राप्ति में बाधा करें हैं ॥ जासूं वे साधन मेरो स्वरूप नहीं है किंतु वे तो अन्य है, न्यारें हैं ॥ तासूं वा साधन को आश्रय तो अन्याश्रय रूप है ॥ यासूं ही सो साधन बल तो मेरे प्राप्ति में बाधक है ॥११॥ सब प्रकार कर अन्याश्रय सूं रहित जो जन है सो ही मेरे को प्राप्त होय है ॥ तासूं साधनादि

शोभित होयगो यह तो बड़ो ही गुण है ॥ मर्यादामार्ग वारे याकूं दोष कहे तो भले कहे -- "भट्ट जी" -- पुष्टिमार्ग में तो मेरे प्राप्ति में बाधा करवे वारे साधनादि तो सब प्रकार सूं दोषरूप ही माने है ॥१८॥ यासूं ही नारायण जी आदि जो भक्त श्रेष्ट है वे सगरे ही सदा साधनादि के आश्रयवारे भक्तन कूं अत्यंत छोड़ के ही मेरे स्वरूप में ही एक निष्ठावारे अत्यंत दुर्लभ मेरे प्यारे श्रेष्ठ भक्त की शरण जाय है ॥ वारंवार विनको संग करें हैं ॥ कि विनको वंदना करें हैं ॥ कि विनको ही बहुत माने है ॥ मेरे समान ही वाकी अत्यंत सेवा करें हैं ॥ विनको मेरी प्रीति सूं ही मेरे सूं हू विशेष वर्णन करें हैं ॥ तिन रात्री बहुत स्मरण हू करें हैं ॥" या प्रकार सूं मेरे चित्त में प्रगट होय के ऐसे कहे रहे परम प्यारे जगत्पती महाप्रभु जी को दोनों हाथ बांध के प्रणाम करके हों विज्ञापना करत भयो हू ॥ "कि हे प्रीयवर श्री महाप्रभो साधन हीनता आदि यदि दोष नहीं है किंतु गुण ही है तो जे नारायणजी आदि श्रेष्ठ भक्त हैं, के आपके आगे वा गुणन को काहे को विज्ञापना करें हैं ॥ जासूं अत्यंत प्यारे प्रभु श्री आपके आगे बड़े भक्तन कूं अपने गुणन को कहनो तो योग्य नहीं है ॥ प्रसिद्धि तो ऐसी ही है, कि वे तो श्री आपके आगे अपने दोषन को ही कहे हैं ॥" यह सुनके मेरो चित्त में स्पष्ट दर्शन देवत मेरे प्रति यों स्पष्ट ही मेघ गंभीर वाणि सूं सो श्री महाप्रभुजी आज्ञा करत भये है "कि भट्ट जी यह श्रेष्ठ भक्त तो अपने साधन हीनता आदि गुणन को गुणरूप नहीं जाने है ॥ गुणरूप जानते तो मेरे आगे कहते हू नहीं ॥ दोषरूप ही जाने है तासूं ही वे कहे हैं ॥२३॥ मेरी कृपा को फल यही है ॥ अत्यंत प्रसिद्ध है ॥ तथा मेने हू समय समय में वहां वहां स्पष्ट ही कहयो है ॥ कि जासूं यह मेरी कृपा को परीपाक, कि फल हू अपने प्रिय पात्र भक्तन सूं अपने बड़े हू गुणन को दोषरूप सूं ही जतावे है ॥ और जनन के दोषन को गुणरूप सूं ही जतावें हैं ॥ यासूं ही ऐसे जे जन, अपने गुणन को दोषरूप सूं जाने है, वे जन वेग सूं ही मेरे को प्राप्त होय हैं ॥ अन्य जन तो बड़ो हू होय वे मेरे कूं प्राप्त नहीं होय हैं तथा और हू हैं ॥ कि वा गुणन के विशेष ज्ञानवारे वा भक्तन सू ही श्रवण करवे कूं अत्यंत उत्साह वारो होयके हौं ही बलात्कार ही विनसूं हो कहेवावु हूं ॥ वे भक्त तो विनकूं सदा छिपावें हैं ॥ तासूं विनकूं और जन जान नहीं सके है ॥ कि विनसूं सुनवे की इच्छा हू मैं नहीं करू

हूं ।। तथा वे हू कहयो जाने हू नहीं है ।।२९।। प्रसर रहे वा गुणन सूं सगरे जगत को हौं अत्यंत कृतार्थ करायवे लिये बलात्कार विनसूं मैं ही कहवावु हूं ।। विनकूं वे स्वयं नहीं जाने है ।। वैसे भक्तन के संग हों बिहार करू हूं ।। विनको अत्यंत रमण करावू हूं ।। जैसे श्री नंदनंदन प्रभु रासलीला में बड़ो उत्साहवारो होय के वेणु बजायवे के विलासन सूं ब्रज सुंदरीन को खेंचके ''स्वागतवो महाभागो'' बड़भागिन आपको भलो आवनो भयो ।। ऐसे दसम स्कंध में प्रसिद्ध वा वा सुख वचनन को कहत ही वा गोपिन के मुख सूं ही अपने में प्रेम भरे गुणन को सुनवे की इच्छा करत प्रसर रहे विनके वा गुणन सूं जगत को कृतार्थ करवे लिये वा प्रेम के जानवेवारी या गोपीजनन सूं ही बल सूं ''मैवविभो'' कहेती ''प्रभो, ऐसे कठोर वचन कहेवे में आप योग्य नहीं हो ।। इत्यादि वचन आप ही कहेवावत भये है ।। या प्रिय के प्रेम भाव को छिपायवे में सावधान वा गोपीजनन तो वे वचन स्वतः नहीं कहै है ।। उप एसे वा गोपिन के व्याकुलता को सुनकर योगीश्वरन के हू ईश्वर सो नंदनंदन हसकर दया सू आत्माराम हू होते ही वा गोपीन को रमण करावत भये है ।। यह अमृत को हू विजय करवे वारे या श्री महाप्रभुजी के वचन को सुनके वा श्री महाप्रभु को प्रणाम करके भय सूं रहित होयके तब उत्साह सहित होयके सकल साधनन सूं हम रहित है -- इत्यादि सगरे गुणन सूं हम रहित है -- इत्यादि प्रकार सूं प्रथम कहे विनके वचनन को मैंने कहयो है ।। श्री कल्याण भट्टजी कहे हैं, ''कि यह प्रसंग इतनो ही इहां रहे हैं ।। हे सदियः श्रेष्ठ बुद्धिवारे, कि हे भक्त महात्माः भक्तन में अत्यंत महद भक्ताः अब चलते प्रसंग को ही परम भक्ति सो सुनिये'' ।।३९।। श्री प्राणनाथ जी के अत्यंत भक्तिवारे राजा, कि राजसी जन, कि महाराजा, कि सेनापती फौजदार, कि चक्रवर्ती महारथी प्रतिष्ठित और हू बड़े पुरुषन की सुंदर भक्तिभरे बहु, कि पुत्रन की बहु, कि बेटी, कि धन्य वे वे बहिन वैसे और उछल्लित प्रेम रस सूं भरी भलि-भलि जे स्त्री हैं जे स्वरूप संबंध के अनुभव सूं कृतार्थ हैं ।। परंतु दूर देश में पड़ी हैं ।। कि बड़े यत्न सूं हू त्याग न करवे योग्य गुरूजन के संकोच सूं वा घर सूं निकस के गुण सागर वा प्राणनाथके संगम संयोग को पायवे में समर्थ नही होय सके हैं ।। कि चिरकाल प्रियके वियोग की ज्वाला समूह सूं जर रही हैं ।। कि वा प्रिय के श्रीमुख कमल के रस प्रवाह पान करवे कूं प्यासे चंचल

लोचन भ्रमर युगलवारी हैं ॥४३॥ ऐसे वे विरह भरी भाग्यवती एकांत में मनोहर पत्रन में प्राणनाथ के निमित्त सो जैसे लिखे हैं सो कछुक हों वर्णन करूँ हूं ॥ श्री महाप्रभुजी के कृपापात्र इतने सूं ही और सब विचार कर लेवेंगे ॥४४॥ अब पत्र को अनुवाद लिखे है ॥ वामें पत्र को संक्षेप आशय यों है ॥ ''कि स्वस्ति अमित श्री शालिषु परम प्रियतम वरेष स्वस्ति मंगल प्रभु, अमित श्री शोभासूं शोभायमान परम प्रियतम वर श्री गोकुल प्रभुन में श्री आपके निकट वासिनी दासीन में प्रवेश, कि इच्छावारी कोई दासी के इहां सू अपरमित दंडवत प्रणाम होय ॥ तामें प्रियवर के विशेषण लिखे है ॥ कि प्राणप्रभु जी कैसे है ॥ कि जे सगरी रस सुंदरीन के दुःखरूप वृक्षन के काटवेवारें हैं ॥ कि जे विनके सगरे अंगन के भूषण है ॥ कि जे सर्व प्रकार सूं निर्दोष है, कि जिनके सगरे ही श्रेष्ठ गुण समूह है ॥ कि जिनकी रस भरी कृपादृष्टि अत्यंत दुर्ल्लभ है, कि जिनको श्री मुख अर्वन पूर्ण चंद्रमान को विजय करवे वारो है ॥ कि जे लीला सूं विलासिन सुंदरीन के महासुखरूप है, कि जे सबन सूं श्रेष्ठ है, कि जे परम अत्यंत प्यारें हैं, कि जे अपनी सुंदरता सूं करोडन काम के अभिमान को हू मिटायवे वारे हैं ॥ कि जे सगरे श्रृंगाररूप परमानंद समूहरूप है, कि जे अपने सुख निवास सूं श्री गोकुल की भूमि को शोभायमान कर रहे हैं ॥ कि जे श्री वचनो की माधुरी सूं अमृत को हू विजय करें हैं ॥ कि जे अपने अनेक प्रकार के वैभवन के विशेष समूहन सूं राज राजन को हू निकृष्ट हीन कर रहे हैं ॥ कि जे नयनन की रस लीला सूं नवीन कुवलय दल समूह को हू तिरस्कार करें हैं ॥ कि जे मूललीला संबंधवारी सुंदरीन के हठमान को हू हरवे वारें हैं ॥ कि जे चमकन मनोहर सूक्ष्म मोतिन के हारन वारें हैं ॥ कि अहो श्री प्राणनाथजी को श्री मुख कमल तो मंद मुसकान सूं प्रफुल्लित रहे हैं ॥ कि श्री आपन में टेक हास्य परायण रहो हो, कि संकेत मंदिर को कबहू अलंकृत करो हो, कि अपने में प्रेमवारी चंद्रवदनी सुंदरीन के आकर्षण के उपयोग अनेक रस व्यापारन में चतुर सावधान रहो हो की विनके मनोरथन को पुरण करो हो, कि विनके वा संतापन को निवर्त करो हो की वा वा श्रृंगार रस लीला के हजारन समुद्रन को प्रगट करो हो, कि हजारन सुंदरीन के मानकूं दूर करवेवारे जाके कटाक्ष क्लेश हू हैं ॥ कि परम सुंदरता के तो रत्नाकर सागर हो वैसे और और हू वा वा प्रकारन सूं श्रीमद् गोकुल

में जे श्रीराज सदा विराजमान हैं ।। कि तथा चंद्रवदना सुंदरीजन जाने है, कि हमारे लिये सदा संकेत मंदिर में हमारे लिये ठाड़े है ।। कि हमारे नेपूरन के आवाज सुनवे लिये सावधान कानो वारें हैं ।। कि हमारे द्वार पर आपके नयन लग रहे हैं ।। कि हमारे ही दर्शन के आनंद समूह सूं प्रफुल्लित नयन कमल वारे होय रहे हैं ।। कि चिर पर्यंत वांछित अपने कुच कूं मन में आलिंगन की संभावना सूं हू आनंद समुद्र में निमग्न होयवे सूं प्रफुल्लित होय रही रोमावली सूं भरें हैं, कि रमण विशेष, कि विशेषता सूं हमकूं कृतार्थ कर रहे हैं, कि ऐसे और हू वा वा प्रकारन सूं वहां की चंद्रमुखी सुंदरीजन जाको रस अनुभव कर रही है ।। कि तथा व्रज सुंदरीन के हृदयों में विचार के अनेक ही दुःख रहे हैं, कि हा हा बड़ो दुःख है अत्यंत प्यारे को दर्शन न भयो, कि हा हा देख्यो तो सही परंतु चिरपर्यंत देख्यो नहीं है ।। कि अहो हा हा प्राणनाथ ने हमकू तो आनंद प्रेम पूर्वक नहीं देख्यो है ।। कि हा हा कमल दल जैसे विशाल लोचनवारे प्यारे ने हमकूं फिरके, कि मुरक के तो देख्यो नहीं है ।। कि हा हा चंद्रमुख प्यारो हमारे लिये हंसे नहीं है ।। कि हा हा कमल नयन प्यारे ने हमारी ओर उत्कंठा सूं कटाक्ष नहीं किये है, कि हा हा कमल नयन वारो ऐकांत में मिल्यो हू है हमने आलिंगन हू नहीं कर लियो, कि हा हा रसिकराज मिल्यो तो सही परंतु वाकूं नखन सूं मैंने प्रसन्न कियो, कि उतावलो ही हा हा हमारे समाधान किये विना ही निकस गयो, कि हा हा अभिलाषा सूं तो और नागरी को ही नागर ने देख्यो है ।। कि हा हा और नायिका ने देख लियो है ।। कि और ने ही आलिंगन कर लियो है, कि और नायिका सूं याने संकेत कर लियो है ।। कि हा हा मेरी शत्रु रूप और हरिण लोचना के चरण संबंधी महावर सूं याको मस्तक भर्यो है ।। हा हा मेरी शत्रुरूप जोबनवती सुंदरीन के कुचकू मन पर बिराज रहे सूक्ष्म मोती के हार हते ।। गाढ आलिंगन में याके हृदय पर विना डोरा के वा मोती हारके चिह्न प्रगट होयके मेरे मनको हरें हैं ।। कि दुखित करें हैं इत्यादि प्रकार सूं ब्रज सूंदरीन के हृदय में हजारन लाखन शिखरवारे जे दुःख के पर्वत होय है विनके जो काटवे वारें हैं, कि अत्यंत गूढ हू वा सुंदरीन के अभिप्राय मनोरथन को जे जाने है, कि जे श्रेष्ट सगरे यश के समूह वारें हैं ऐसे परम प्रीयतमवर श्री प्राणनाथ जी के आगे श्री राज के सदा निकट

वास करवे वारी रस दासिन में प्रवेश करवे की इच्छावारी कोई या दासी के अपरमित दंडवत प्रणाम होय ॥ और यह विज्ञापना है, कि हमारे परार्द्धन प्राणन सूं ही केवल श्रीराज के सदा चाहनावारी को कुशल है ॥ कछुक और हू है ॥ भाग्यवानो के चक्रवर्ती श्री राजाधिराज की जो श्री मुख्य प्रियाजी हैं जाकों श्री राजने अपनी सगरी परम प्यारीन के समाज की मुकुटमणि रूप सों अंगीकार कियो है वाको जो मनोरथ है सो तो आप को अवश्य ही सिद्ध करनो पड़े है ॥ कि वाको आप कबहू निरादर नहीं करो हो तासूं आपकी वा श्री मुख्य प्रियाजी के मनोरथ के अनुकूल और प्रिया समाज के जैसे मनोरथ होय है वैसे वाके अयोग्य हू मैं हूं तोहू मेरो मनोरथ विशेष हू सो प्रगट होय रहयो है सो हू आप ही पूरण करोगे ही ॥ कछुक और विज्ञापना हू है, कि मेरी अयोग्यता की भावना सूं मेरी आशारूप वेल तो वहां वहां टूट हू जाय है ॥ परंतु सबन के सब सुख करवे वारे कि सबन के सब दुःख दूर करवे वारे श्री राजाधिराज के जे गुण है वे तो वा मेरी आशावेल को जोरसूं ही फिर लगाय देवे है ॥ कि आपका कोमल स्वभाव तो वाकूं अत्यंत ही बढ़ाय देवे है ॥ कि आपके स्वभाव की माधुरी समूह तो दोहद जैसे मनोरथ साधक वस्तु जैसे बिना समय में हू फलवारो करवे लिये कमर कस लेवे है ॥ यासूं हू विशेष विज्ञापना, कि इच्छावारी मैं होवू हूं परंतु यह निमर्याद उछल रही लाज ही मेरे दोनों हाथन कूं पकड़के रोक रही है ॥ सो तो चतुर समूहन के शिरोमणि श्री राजाधिराज स्वयं ही समझ के, विचार के सबन को सब सुखदायक कि निरूपम उपमा रहित कि सबन सूं बड़े अत्यंत दक्षिण अपने स्वभाव के अनुसार ही सब भली-भाँति सूं सिद्ध करोगे ही ॥ इति श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं ॥ कि वे भाग्यवती राजसी सुंदरी जन या प्रकार सूं एकांत में लिखके वा पत्र कूं अपनी सखी को एकांत में दिखायके पूछे है, कि "यामें जो कमती के बढ़ती होय सो जो योग्य होय अपनी बुद्धि सूं आछी रीतिसूं विचार के तुम ही कहो ॥४५॥ तब सो सखी हू वेग ही विचार के "हाँ ठीक है" ऐसे यथार्थ कहे कर वा विनके पत्र को वा वा सजाय के कि पत्र को वा वा वस्त्रादि सूं लपेट के विनके प्रति देवे है ॥ स्वयं हू उछलित प्रेमवारी सो सखी या प्राणनाथ के पास वैसो पत्र लिखे है ॥ जो या भाग्यवती सुंदरीन की वैसी दशान के प्रेम, कि वियोग, कि इच्छा की आशय के सूचन करवे

वारे वाक्य समूहन सूं शोभायमान है ॥ कि या प्रिय के योग्य है, कि सुंदर है, कि स्नेह समूह को उद्दीपन करवे वारो है ॥ यद्यपि यह सखी को पत्र लेख अनेक प्रकार को होय है ॥ तथापि हों तो विनमें कछुक ही कहूं हूं ॥ इतने सूं ही श्री महाप्रभुजी के कृपापात्र जन स्वयं ही सगरो प्रकार विचार के ही जानेंगे ॥४८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चतुर्दश तरंगः ॥१४॥

॥ तरंग -- १५ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अब पन्द्रहमो तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **स्वस्ती श्री सहस्त्रस्यहातिरेक भाव्यमानं**
श्री चरण सरस सरसी रूहोच्छलित ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी श्री महाप्रभुन के प्रति राजसी राणी पत्र लिखे हैं ॥ सो कहे कर अब वाकी सखी जो पत्र लिखे है सो कहे हैं ॥ वामें संक्षेप पत्र यह है, कि 'स्वस्ती' सदा मंगल शुभ सुख होय ॥ श्री वल्लभवर प्रभुन में कोई एक दासी, की करोडन लाखन प्रणाम पूर्वक यह विज्ञापना है ॥ तामें श्री वल्लभवर कैसे है ॥ कि हजारन पुष्ट लक्ष्मी हू विशेष चाहना सूं जाके श्री चरण कमल उच्छलित सुंदर मकरंद सागर के प्रवाह समूह संबंधी सुंदरता, कि मधुरता, कि सुगंधी, कि ऐश्वर्य, कि चमत्कार, कि शीतलता, कि कोमलता, कि चाकचिक्य, कि उत्कर्ष उत्साह, कि प्रभाव जोबन की कृपा, कि चतुरता विशेष को भावना करें हैं, कि श्रीमद् गोकुल की रस सूं मत्तवारी सुंदरी जनहू जाके ऊपर परार्द्धन प्राण न्योंछावर कर रही है ॥ ऐसो जाको नवीन मनोहर अत्यंत सुन्दर नित्य जोबन है, कि श्रेष्ठ सुंदर रंगवारी सुंदरी समूह के हृदयों के जे चंद्ररूप है, कि वा सुंदरीन के आरति हरण करवे लिये जे आलकस रहित है, कि विविध रस लीलान सूं जे सुंदरीन के समाज को आनंदित करें हैं ॥ कि वा सुंदरिन के जे हृदय के भूषण है, कि जे सदा निर्दोष है ॥ कि सुंदर मधुर रस रसस्वरा ताल तान पूर्वक गान रूप अमृत के पान करायवे सूं अत्यंत पुष्ट करी जे श्री ब्रजसुंदरी समूह है वे जाके श्री

कपोल बिंब संबंधी अत्यंत प्रफुल्लता, कि कौतहल समूहन को भावना करें हैं ॥ हृदय में ध्यान करें हैं ॥ कि श्री गोकुल की विलासनी जन के हृदय संबंधी संतापों के शांत करवे में अत्यंत समर्थ की सकल शोक के दूर करवे वारे जाके नयन कमलो के विलास है ॥ कि जे नवीन जोवनवारी सुंदरी समूह के श्रीमुख चंद्र के चकोर है ॥ कि विनके मन के जे चोर हैं ॥ कि जाके श्री हस्त चरण मुख उदरादि सगरे हू श्री अंग श्रृंगार रस के सार परमानंद सिंधु समूह मात्र है ॥ कि केसर रस सूं रंगित सुंदर धोती उपरना के पहिरवे सूं प्रसन्न करी जे नवीन नायिकाज्न हैं वे टक-टकी लगायके जाके सुंदर श्री अंग की परम परम शोभा के हजारन समुद्रन को पान कर रही है ॥ कि तथा हजारन अर्बन लाखन करोड्न अत्यंत चंचल लोचनवारी सुंदरीजन जाके चारो ओर घिर रही है ॥ कि विनने किये हर्ष गान रूप अमृत सूं जाको श्रवण कान और मन प्रसन्न होय रहे हैं ॥ कि पवन, गरुड़ कि मनके वेग को हू जाने विजय कियो है ऐसे अत्यंत सुन्दर शुभ लक्षण वारे मनोहर घोड़ाराज पर जे असवार होय रहे हैं ॥ तामें चंचल होय रहे माणिक जटित कुंड्लों की कांति समूह सूं जो सब दिशान को चित्र विचित्र कर रहे, कि श्री वदन रूप भौरी की दृष्टि रूप चकोरी जाके पीछे जटित होय रही है ॥ कि अपरमित हजारन रस हस्तिनी सूं मिले मत्त महागजराज सूं हू विलक्षण भाव सूं जे शोभायमान है ॥ कि परार्द्धन डरे हरिण के बालक जैसे नयनवारी के जे केश समूह है ॥ विनसूं उच्छल रही श्री यमुनाजी के प्रवाह सूं, कि वा सुंदरीन के विविध भूषणन की कांति समुह सूं विनके 'भ्रू' तरंगन की उन्नत सूं, कि विनके दंत किरण मंडल के चमत्कार सूं, कि विनके मंद हास्य की चांदनी के चमत्कार सूं, कि विनके मुक्ताहारन सूं उछल रहे निर्मल गंगा प्रवाह की परंपरा सूं ॥३५॥ कि विनके कंकण संबंधी मणि, कि नेपुर समूह के झनकार के कोलाहल सूं इन सबन सूं उछल रहयो है ॥ अनेक प्रकार को मधुर भाव जामें, कि श्रीयुत शोभा भरे निज मंदिर सूं श्री यमुनाजी में स्नान लीला करवे लिये पधार रहे ऐसे अपने स्वरूप सूं सगरे भाग्यवारी जोवन वती सुंदरी मनके मनोरथ समूहन को जो पूरण कर रहे हैं ॥ कि मानभरी सुंदरीन के मान, सर्वस्व, को लूटवे वारे जाके नयन है, कि स्वरूपानुभव के आनंद समुद्र में निमग्न होय रही रस सुंदरी समूह जाके मधुर गुण समूहन को गान कर रही

है ॥ कि अनेक प्रकार के संकेत घरन के जे भूषण है, कि नव किशोरी सुंदरीन के वा वा संताप के निवर्त करवे में सावधान हैं कि सगरी रमण संग्राम संबंधी कला में जे कुशल हैं, कि बाहिर, कि भीतर हू सरस सिद्ध करवे में जे पंडित है, कि साक्षात काम के हू जे काम है, कि सुरत सुख के जें नाथ है ॥ कि ब्रज सुंदरी जन के जे जीवन है ॥ कि श्रृंगार सार समुह लीला के विचित्रता में जे परम चतुर है ॥ कि रसके भार सूं स्वयं हू जे विलास पूर्वक पंखा करवे सूं रमण संग्राम में थकित जोबनवारी सुंदरीन के समूह को दूर करि रहे वा सुंदरीन ने अर्पण किये फूलमाला कि चंदन लेप की धोती उपरनादि वस्त्रन सूं जे विराजमान है ॥ कि रमण युद्ध पीछे जो संभ्रम है, कि उतावल है तामें उलट पलट पहेरे, जो प्रियाजी की साड़ी चादरादि है तासूं प्रगट होय रही शोभा विशेष सूं जे वा प्रियाजी के सखी समूह के नयन कुमोदिनी के हृदय कमल को आनंदित करें हैं कि विनके नयन कुमोदिनी के प्रफुल्लित करवे कूं चंद्रमा रूप है, कि वा सुंदरीन की लीलान में जिनको हृदय बड़ो लोभी है ॥ कि जाके रूप की माधुरी श्री ब्रजसुंदरीन के ही नयनन सूं ही स्वाद योग्य है ॥ कि वा सुंदरीन ने प्रगट किये जे नर्म टेक वचन रचना है वासूं प्रगटे आनंद सूं जे उछलित रोमावली सूं ही शोभायमान है ॥ कि वा जोवनभरीन के वस्त्रन के अंचलों के खेंचवे संबंधी लीला सूं प्रगट होय रहयो जो सुखको समय है तासूं ही निरादर किये है ॥ और बड़ेन सूं हू बड़े ऐश्वर्य संबंधी आनंद के समूह जाने, कि जो और आनंद को माने हू नहीं है ॥ वा सुंदरीन के नयनरूप सरस कमलन में जो भौंरारूप है ॥ कि निरंतर या सुंदरीन के ऐसे विशाल समूह में जाको मन आवेश भर्यो ही रहे हैं, कि जे वा सुंदरीन के मंडलों के मंडल है ॥ कि भूषण है, कि विनके नयनरूप नील कमलों के जो महोत्सव स्वरूप है, कि श्रीमद् गोकल की रस ललना जनो के जो महा कल्पवृक्ष स्वरूप है ॥ कि वा सगरी सुंदरीन के सगरे मनोरथन को जे पूरण करवे वारें हैं ॥ कि वा सुंदरीन के नयनरूप कमलन की पंक्ति जाको क्षण क्षण में पूजा करें हैं ॥ कि अपने विरह रूप दावाग्नी में गिर रहे वा सुंदरीन के समाज के जे रक्षक है, कि अपने कूं हू विस्मय करायवे वारे सौंदर्य के जे निधान है ॥ कि श्रीमद् गोकुल की कामनी समूह जाके सगरे मनोहर गुणन को गान करें हैं तासूं जे अत्यंत

शोभायमान होय रहे हैं ।। सगरी वा सुंदरीन के मन और नयनों के आनंद देखवे वारे अंग समूहन सूं जे मनोहर है, कि विशुद्ध श्रृंगार रस सार के आवेश सूं बद्ध रहे वैसे रमण महारस के कौतुहल आश्चर्य भार सूं उल्लंघन करी है ।। लोकवेद की मर्यादा जाने, कि ब्रजसुंदरीन के क्लेशन को नाश करवे वारें हैं गुण सागर हू जाके, कि केवल विनके ही हित में विचार में जे रहे हैं, कि सगरी ब्रज की नितंबनी सुंदरी जाकू प्रेम सूं निरखे है ।। कि सकल सुंदरीन के सकल संकटों के जो निवारण करवे वारें हैं, कि मधुरता समूह रूप बड़ी तरवार सूं जाने अमृत समुद्र को आलाप हू विजय कर लियो है, कि जे क्षण क्षण में नवीन है, कि जे क्षण क्षण में अत्यंत सुखदायक है ।। कि जे श्रीमद् गोकुल के कलानाथ है वासूं वश किये है माननी जनों के मन जाने, कि रस संबंधी मद की आलस सूं भरे जे नयन है वासूं जे शोभायमान है, कि निरंतर नवीन रमण रसदान के उत्साह सूं भर्यो जो सगरी रात्री भर जागरण तासूं घूर्णमान है नयनकमल जिनके, कि वाके देखवे की चातुरी सूं लूट लियो है नवीन नायिका जनको धैर्य सर्वस्व जाने कि त्रिलोकी की सुंदर जोवन वारी सुंदरीन के जो मोहन करवे वारो है, कि वाको है श्रीकंठ और भाव जाकूं, कि कटाक्षन की चेष्टा के सौभाग्य सूं चंचल कियो है चित्त जाने, कि साक्षात रमण कला को जो कलापमूर्ति है, कि समूहरूप है, कि परिहास रस के जो महासागर है, कि फूल चुनवे की लीलारूप अमृत सागर के पान करायवे सूं आनंदित करी है, कि याके मध्य में अंगीकार करी है बड़े भाग्यवारी सुंदर मंगल नामवारी सगरी नागरीजन जाने, कि अनेक प्रकार के मधुर मनोहर लीलावारीन को जो रसको परोसनो है तासूं अत्यंत पुष्ट करी है श्री गोवर्द्धन गमन में सहचरी समाज जाने, कि अनेक प्रकार के सुंदर श्रृंगार लीला में जो तांड्व है, कि पुरुष नृत्य है वामें जो पंडित है, कि रसनागरी जनो के जो महानिधि रूप है, कि चंचल लोचना जनके मनके जे चिंतामणि है, कि मदभरी सुंदरी के जे प्राण भूषण है, कि वांके अलकावारी सुंदरी के जे सुंदर शीशफूल है ।। कि रस सीमंतिनि सुंदरी के जे मोती की मांग, कि सुंदरीन के जे सौंदर्य के श्रृंगार है, कि नवीन नायिका के जे नयनों के काजर है, कि हरिण लोचना सुंदरी के जे हृदय के हार है, कि पूर्ण चंद्रवदनी के मस्तक के मणि जटित तिलक है, कि कमल मुखी के जे कानों के कुंडल है, कि

रसरमणी के जे शिर के माणिक है, कि रामा, कि मनोहर सुंदरी के जे कपोलन के पत्रलता है, कि विलासिनि के जे नासामोती है ।। वरवर्णीनी सुंदर रंगवारी के जे अधर पल्लव के बीड़ी रंग है ।। की रस महिला के जे रसना, कि शिखरन है, कि वाम लोचना, कि मनोहर नयना सुंदरी के जे दंतपंक्ति के रंग है, कि रस पोषिता के जे चिबुक के जो चमत्कार है, कि लीला ललना के जे लोचन तारा है, कि प्रतिपदर्शनी, कि प्रतिप को उलटो दिखायवे वारी जो सुंदरी है, कि याको मेरे में तो प्रेम नहीं है ।। मोसूं तो वैर है ऐसे प्रिय की प्रीति को छिपायवे वारी अथवा कटाक्षन सु देखववेवारी सुंदरी के तो भुजलता के जे बाजुबंद है, कि वरवरा रोहा के, कि श्रेष्ठ सुंदर नितंबवारी सुंदरी के तो कर कमल के कंकण है, कि अंगना, कि कोमल मनोहर अंगनवारी सुंदरी के जो अंगुलिन के जे मणि जटित मुद्रिका है ।। कि सुंदरी नायिका के जे सगरे अंगन के भूषण है ।। कि ऐसे प्रथम कहे सगरे विशेषण वारे ही वल्लभ वर अत्यंत प्यारे श्री गोकुल वल्लभ प्रभुन के आगे ऐसे विराज के श्रीमुख चंद्रमा के विलास लेश की सुंदर चांदनी सागर संबंधी हजारन अर्बन तरंगन, कि एक बींदु के ऊपर हजारन वार अपने सर्वस्व को न्योछावर करवे वारी, कि वा श्री चरणारविंद की परागन में रसों प्रकार सूं, कि हजार प्रकार सूं अपने शिर को अपने सगरे अंगन को निमग्न कराय रही, कि वा परागरंग सूं रंग रही ऐसी श्री राज की कोई एक दासी, कि करोडन लाखन प्रणाम पूर्वक यह विज्ञापना है ।। कि परार्द्धन प्राणन सूं हू अधिक प्यारे श्री राजके ही वा कुशल सूं ही श्री राजके ही कुशल की चाहनावारी या दासी में कुशल है ।। कछुक और है, कि महाप्रभो मेरी जो सखी है जाकूं श्री राजाधिराज आपने कहू कबहु कोई कारण सूं कोई प्रकार सूं, कि सगरे अमृत के चक्रवर्ती के सिर सम्बन्धी मुकुटन की मणी माला संबंधी मनोहर मंजरी रूप किरण समूह सों पिंजर की पीरे लाल रंगवारे किये है श्री चरण कमल के नख जाके, ऐसे महा मधुर कोई रस कृपा सूं भरे कटाक्ष के लेश विशेष सूं एकवार कछुक अंगीकार करी दासीन में गिनी है ।। कि अपनी दासीरूप बनाई है ।। कि जो सदैव ही वा आपके कृपा कटाक्ष की ही चाहनावारी है ।। कि जो अत्यंत ही दूर देश में पड़ी है ।। कि जो श्रीराज के चिरकाल के विरह समूह सूं पीड़ित है ।। कि प्रतिक्षण उछल रही वा वा आशा वेल जाल सूं जाको जीवन

दृढ़ बांध्यो है ।। कि जाकूं बहुत प्रकार के विलाप प्रपंच दृढ़ आलिंगन कर राख्यो है ।। कि जो घर रूप वंदीखाना में डारी है, कि अत्यंत लोभी गृहस्थ धर्म, कि अनुकूल रहवो रूप हत्यारो जाकूं वारंबार अंग अंग में वेध कर रही है ।। निर्मल अपनी कुल मर्यादा जाकूं, सांकल होयके बांध रही है, कि बिना कारण के वैरी कामदेव जाको अपार दुःख सागर में वारंवार डुबाय रहयो है, कि निर्दय चंद्रमा की किरण हू प्रलय काल की अग्निरूप होय के जाकूं जराय रहे हैं ।। कि स्वजन समाजरूप वज्र के पिंजरा में जो बांध राखी है, कि सहायक रूप पंख नही है तासूं जो उड़ नहीं सके है, कि अहो चंदन वन की सुगंधी के सर्वस्व को जो चोर है, कि वा वा तालाव के बिंदु समूहन के संबंध सूं जो शीतल जड़ होय रहयो है ।। पीछा जटित होय रहे भौरा समूहन के संबंध सूं जो कारो होय रहयो है ।। ऐसो जो नवतर दक्षिण पवन है या पवन ने जाको धैर्यरूप धन विखेर दियो है ।। अहो क्षण हू अपने शतकल्परूप होवने को अनुभव करावत जाकूं अत्यंत ही दुःखी कर रहयो है ।। कि अहो याकू विना ही कारण क्षुधा, कि तृषादि आनंद कि निद्रा ने त्याग कर दियो है यह जानके मानो कृपा सूं ही मूर्छा, कि चिंता कि विस्मृति कि पीड़ा यह सहेली होय के जाकूं सावधानता सूं राख रहीं है, कि जो श्रीमुख के दर्शन मात्र की ही तृष्णावारी है ।। कि जाकी श्री राजके रस कटाक्ष संबंधी अमृत के ही पान की आशा ही जाग रही है ।। कि जाके कानों की वृत्ति वासना श्री राजके वचन रचनारूप अमृत के समुद्र मात्र में ही मर्ज्जन करवे की इच्छा करें हैं ।। जाको मन तो श्री राजके श्री स्वरूप सूं उछल रहे उज्जवल प्रसरवे वारे स्वाभाविक दुर्ल्लभ सुगंधी समूह के प्रवाह में परार्द्धन भ्रमरी रूप होयवे की इच्छा करें हैं ।। कि अहो पल पल में जिनको श्रीराज अपने अनुपम प्रेम प्रसन्नता रस हर्ष संगम सुंदर आलाप कि सुंदर देखनो, रूप महोत्सव के हजारन अमृत समुद्रन सो शीतल करी होये ऐसी जे श्री राज के श्री अंग सेवा रस में सदा सावधान, वे वे भाग्यवती दासी है, विनमें होयवे को जाको मन है ।। कि कोयल समूह के पंचमस्वरा है वे तो जाके प्राणन में ही प्रहार करें हैं ।। कि दुर्ज्जनों के वचनरूप जे हजारन वज्र की सुयी है -- सोई विना आलस के जाके कानों में छेद करें हैं ।। अहो श्री राजके श्री मुखारविंद के दर्शन में चिरकाल सूं जो बाधा है तासूं जो दशमी दशा

को ही स्पर्श कर रही है ॥ कि जो श्री मुख दर्शन की भूखी है ॥ कि जो श्री वचनामृत की ही एक प्याली है ॥ कि अहो जो मेरी सखी लाजसूं, कि दुर्ज्जन समूह के मनसूं, कि असमर्था सूं अपने वा वा दुःख को लिखवे लिये, कि संदेशा देवे लिये हू समर्थ नहीं है ॥ अहो जाके शिर में, कि वेणी में, कि भाल में, कि नयनो में, कि नासा में, कि कपोलन में, कि कानों में, कि अधर में, कि चिबुक में, कि कंठ में, कि कंधान में, कि भुजलतान में, कि हस्त कमलन में, कि हृदय में, कि कुच कली में, कि उदर में, कि नाभी में, कि नितंबन में, कि उरु, जंघादि में कि चरण कमलन में, कि विनके नखन में, कि वा वा और और हू अंगन में जे जे मनोरथ उछले है वे सिद्ध होवे नहीं है ॥ तासूं वे मनोरथ हू अनेक प्रकार सूं जाकूं पीड़ा दे रहे हैं ॥ कि अहो ननिकस रहे प्राण हू अपने में छेद करत जाको काट रहे हैं, कि सब प्रकार सूं टूक-टूक न होय रहे मर्म जाकूं मर्म्मन में वेध कर रहे हैं, ठहर रहयो जीवन हू जाके जीवन को गहे रहयो है ॥ कि प्राप्त होय रहे सुख हू जाके सुख को नाश कर रहे हैं ॥ कि भस्म कर रहयो संताप हू, जाकूं अत्यंत तपाय रहयो है, कि संज्ञा हू जान पहिचान हू जाके मूर्छा, कि विश्राम सुख को हरके, अत्यंत ही जाको मूर्छित कर रही है, कि अहो चंद्रमा है सो श्री प्रिय चक्रवर्ती राज के श्री मुख को स्मरण करायके कि कमल है सो श्री राजके नयनन को कि दर्पण है सो राज के कपोलन को कुरुविंद समूह कि माणिक के टूक कि कांच के टूक है सो दंतन को, कि चांदनी है सो मंद मुसकान को, कि मलय पवन है सो राजके श्वास को, कि कोयल के स्वरा है सो राजके वचन आलाप को, कि दंड है सो भुजान को, कि कपाट है सो श्री राज के वक्ष स्थल को, कि सरोवर है सो श्री राजकी नाभी को, कि वे वे और और हू प्रिय चक्रवर्ती श्रीराज के वा वा मनोहर सुंदर अंगन को स्मरण करायके वे सगरे ही जा मेरी सखी को उत्कंठा वारो करायके दुःख सागर में निमग्न कराय रहे हैं ॥ कि जो मेरी सखी कृशतासो प्रतिपदा के चंद्रमा को, कि पीरे पने सूं मृणालिका, कि कमल कंद को, कि शून्यता सो आकाश को हू, कि मौन सूं मूक को हू कि निश्चेष्टता सूं पर्वत कों हू कि मूर्च्छा सूं भरे को हू विजय कर रही है ऐसी मेरी वा कोई सखी के विज्ञापना पत्र सों वाके दंडवत प्रणामन को जानके अत्यंत लाजभरी वा मेरी सखी की

ओर और विज्ञापना तो श्री राज स्वयं ही विचार के जानेगे ही ।। यद्यपि प्रिय चक्रवर्ती श्री राजतो बहु नायक है ।। कि सब रसके भोक्ता है तामें मेरे, कि वा मेरी सखी के स्मरण करवे को अवसर स्वतः श्री राजको कब होय ।। तथापि तो हू मैं, कि मेरी सखी के शरण आधार केवल श्री आप ही है ।। और श्री राजको अंगीकार हू अत्यंत दृढ़ हैं और स्वभाव हू अत्यंत मधुर और कोमल है सो यह गुण ही अनोसर में हू वल सूं ही वा हमकू स्मरण करावेगे ।। सुरत करावेगे ही यह आशा है ।। सो आशा ही ऐसी धृष्टता में प्रवर्त करावे है ।। कि याको आश्रय और नहीं है ।। याको अवश्य ही स्मरण करनो, कि स्मरण करके अपने प्रमेय बल सू ही वा श्रीमद् गोकुल में अपने निकट ही एकांत में वाकूं मंगाय के वाको अपनो मंद मुसकान करतो श्री मुखारविंद दर्शन करायके वाको सिर पर सगरे भय को निवारण करवे वारे, कि सगरे संतापन को हू दूर करवे वारे की सगरी कामना को देने वारे परम शीतल शोभायमान ऐसे अपने श्री हस्त कमल को विलास पूर्वक घर के हृदय में हू धारण किये वा श्री हस्त कमल सूं ही वा हृदय के और कोई उपाय सूं हू दूर न होयवे वारे ताप रूप अग्नि को शांत करके वचनामृतो के प्रवाहन सूं वाके दोनों कान और हृदय को हू शीतल करके अपने दोनों औष्टन सूं वाके अधर को शोभायमान करके श्रृंगार रस स्वरूप अपने स्वरूप सूं वाकू बाहिर कि भीतर अपने उछल रहे आनंद रस सार के अर्बन समूह समुद्रन सो भर ही दीजिये ।। अहो अब तो यह बिचारी प्रियतम के चिर वियोग सूं बढ़ रहे अनेक प्रक्रार के दुःखन सूं पकड़ लीनी है -- श्वास लेवे कूं हू अवकाश नहीं पावे है ।। या प्रिया के लिये तो चंद्रमा हू प्रचंड सूर्य है, कि चंदन हू अग्नि है, कि सुख हू दुःख है, कि विनको शब्द हू दुर्ज्जन के वचन है ।। कोकिल के पंचम स्वरा हू काल के धनुष के टंकार है ।। कि मलय को पवन हू अग्नि की ज्वाला है ।। कि जीवित है सो मृत्यु है ।। आभरण है सो भार है, कि हार है सो धिक्कार है ।। फूलमाला है सो नाग है ।। चांदनी है सो काली रात्रि है ।। खाना है सो नाग को डसनो है ।। कि उपाय है सो उपद्रव है, कि उपकार है सो अपकार है, कि क्षण है सो कल्परूप है तासूं फिर विज्ञापना करू हूँ ।। कि सब रीति सूं और आश्रयन सूं रहित ही यह है ।। याकूं अपने अगाध विरह दुःख सागर सूं वेग ही निकारिये जासूं ब्रज के

जीवनरूप श्री आपको यह पश्चाताप करायवेवारी न होय ॥ श्री राज मैं अबला हू मेरो इतनो बल है जो हाथन को बांध के याकू सुरत फिर-फिर करावु हूं यामें कछु और हू है, कि यामें मैंने, कि औरहू बहुत सखी जनोने याके ताप शांत करवे लिये बहुत ही उपाय किये है परंतु वे सगरे ही उलटे भये है ॥ यासूं हे श्रीमद् गोकुल रत्न महाप्रभो वाको चिरकाल सूं श्रीराज को वियोग भयो है सो पित्तरोग होय गयो है ॥ तासूं प्रगट होय रहे संताप समूह सूं भर, या प्रिया के स्तन रूप नयन, राज के, विना और को जो देखे नहीं है ॥ तासूं यामें बड़े वैद्यों ने यह आज निर्धार कियो है, कि याको औषध लेप है सो श्री राजके दोनों श्री हस्त कमल वा स्तनरूप नयनन पर लेपरूप सूं होय तो वे नयन निरोग ही हो जायगे ॥ संताप सगरो ही मिट जायगो यह भाव है ॥ कछुक और हू है ॥ कि श्री राजाधिराज श्री महाप्रभु जी प्रियतम जी राज सर्वज्ञ है ॥ कि रसिक शिरोमणि है ॥ श्री आप सब कर सके है ॥ ऐसो कछु नहीं है जो आप न कर सके ॥ सो चतुर वर श्री राज वेग ही अपने प्रेम के अनुरूप ही योग्य ही करोगे, यह मेरी विज्ञापना को संक्षेप सार है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे पंचदस तरंगः ॥१५॥

॥ तरंग -- १६ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ सोलह तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **एवं विलिख्याथ सखी स्वकीय पत्रेत्र तासां विनिवेश्य**
पत्रं अविष्टितं तश्च विवेष्य साधु सत्पावस्त्रादिषु च प्रवेश्य ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि सखी या प्रकार सूं लिखके या अपने पत्र में लपेटे वा अपनी स्वामिनी के पत्र को धरके आछि रीति सूं लपेट के श्रेष्ट रेशमी वस्त्रादि में राख के बांध के वेग चलके अपने हितकारी यथार्थ वक्ता दूत के हाथ सूं प्राण प्रिया के निकट विराज रहे अपने चतुर हितकारी मित्र के पास पठावे है ॥ एक और पत्र हू वा अपने हितकारी मित्र के लिये लिखके मनोहर विज्ञापना समूह सूं, कि शोभायमान प्रेम नमस्कार

सूं मिले, कि उछल रही नम्रता सूं पुकार रहे कि दीनता की वयार समूह, कि सख्य, कि दास्य भाव सूं मिले वा पत्र को हू मित्र के पास पठावे है ॥३॥ सो दूत हू वेग ही महाप्रभुन के पास जायवे को वा श्री महाप्रभुजी के श्री मुखारविंद सूं उदय होय रहे अत्यंत मनोहर अत्यंत उज्वल अमृत समूह को दोनों नयनों से पान करके ताप समूह के दूर होयवे सूं बाहिर और भीतर अत्यंत शीतलता को प्राप्त होयके, श्री राज के चरण कमल युगल को प्रणाम करके, बढ़ रही भक्ति सो राज की आज्ञा को पायके बैठ जाय है ॥ प्रसन्न श्री मुखारविंद वारे प्रभु प्राणनाथजी कृपा अमृत की आर्द्रता सूं शोभायमान अंगनवारी दृष्टि सूं याकूं भली भाँति सूं आस्वासन देकर यासूं पूछे है, कि कौन ने तुम कूं पठायो है ॥ का स्थान सू तू इहां आयो है ॥ यह सुनके मनोहर नम्र जाकी मूर्ती है, कि उदार जाको चित्त है, ऐसो सो दूत भक्त तो हाथन को बांध के जिनने पठायो हतो विनको गाम, कि नाम हू योग्य प्रकार सूं या प्रभुन को कहें हैं ॥ तब उछल रहे हैं करुणा रस उत्कंठा प्रेम आदर के करोड़न हजारन समुद्र जामें ऐसे श्री प्राणनाथजी विनके कुशलादि तथा और हू वा वा समाचार को अनेक रीति सूं वासू पूछे हैं ॥ तब द्रूत भक्त हू वा स्वामिनीन की प्रणति प्रणाम कि विनकी सखीन के प्रणामों की, कछुक विनके वृत्तांत को हू सुनाय के श्री राजके वियोग सूं विनकी कृशता, कि श्री राज के शोभा भरे श्री मुखारविंद के देखवे की उछलित इच्छा, कि वैसी व्याकुलता समूह की, निद्रा को न आवनो, कि प्राणनाथरूप मेघ के समागम में स्वांति के जल अर्थ चातक की जैसे अवस्था होय है ॥ वैसी अवस्था, कि आनंद को अभाव, कि अत्यंत उदासी कि वा वा मनोरथ लिये सो सो चिंता, कि आवने में असमर्थता, कि अपने लोकन को कबहू दूर न होयवे वारो संकोच, कि लाज यह सबन को हू सो गंभीर भाव भर्यो भक्त वैसे सूचना करे है, कि जैसे श्री प्राणनाथजी हू विनके अर्थ उछलित अनुराग वारे होयके गद्‌गद् वचन होय जाय है, कि आंसू हू अत्यंत झरने लग जाय है ॥ ऐसी कोई अनिर्वचनीय दशा कूं प्राप्त होंय हैं ॥ जो दशा सर्वज्ञता वारेन के चित्त सूं हू अत्यंत दूर है तब सो भक्त हू ऐसे विचारें हैं, कि महाप्रभुजी विनमें का करेगे, कि विनके प्रति का देवेगे यह तो दीर्घ विचार वारो ही कोई जान सके है ॥ ऐसे श्री प्राणनाथजी के वैसे गंभीररूप सागर में अत्यंत निमग्न होय

रहे या भक्त कूं यह प्राणनाथ जी पूछे हैं ।। कि ''अयि चारूमने, कि तुम अछे सुजान हो ।। वाके लिये उदास होय रहे हमारे हृदय को तुम वाके पत्र को देकर अत्यंत प्रसन्न करोगे का ।।'' तब यह दूत भक्त प्राणनाथजी के आगे विज्ञापना करें हैं, कि वाको लेख पत्र तो मेरे हाथ में है ।। परंतु श्री आपके देवे लिये नहीं लायो हू किंतु श्री आपके या भक्तवर के लिये लायो हूँ यह कहे कर श्रीराज के पास विराज रहे वा भक्त को लेख दिखावे हू है ।। तब श्री प्राणनाथजी वाके वचनन सूं अपने हृदय में यह विचारें हैं, कि या भक्त के प्रति जो वाने पत्र पठायो है याके भीतर हमारे लिये हू वाने पत्र पठायो हा होयगो ।। ता पाछे प्रसन्न श्री मुखारविंद सूं शोभायमान कृपासागर श्री प्राणनाथ जी वा श्रेष्ठ भक्त को आज्ञा करत भये है ।। कि यासूं अपनो पत्र तुम लेवो ।। यह सुनके तब सो भक्त हू उठके आदर सूं कंठ लगाय के वा पत्र कूं लेवे है ।। श्री महाप्रभुजी तो वा भक्त दूत को उछलित प्रेम सूं प्रसाद लेवे कूं आज्ञा करें हैं ।। प्रसाद इहां ही लेनो तब सो लेख लायवे वारो भक्त दूत श्री महाप्रभु प्राणनाथ के आगे प्रणाम करके वा श्रेष्ठ भक्त के संग वाके घर में जाय है ।। यह श्रेष्ठ भक्त हू याकूं घर में ही तेलाभ्यंग करायके वेगा न्हवावे है ।। धोये नवीन धोती उपरना पहिराय के वा प्राणनाथजी के मंदिर में भोजन लेवे कूं पठावे है ।। ता पाछे वा स्वामिनी कि वाकी सखी ने जो अपने लिये लिख्यो है, कि प्रिय चक्रवर्ती प्राणप्रिय ऐसे जो लिख्यो है सो सो प्रसन्न होवत ही वांचे है ।। या पत्र के वांचत में जैसे जैसे विनको प्राणप्रिय में भाव प्रगट होय है वैसे वैसे सो श्रेष्ट भक्त वा स्वामिनी को, कि या पत्र को, कि वा सखी को हू प्रणाम करें हैं ।। कि उछल रही भक्ति विशेष सों शोभायमान श्रेष्ठ भक्त अपने को विनकी कृपा सो कृतार्थ माने है ।। तथा वा स्वामिनी को, कि वाकी सखी के अत्यंत मनोहर या पत्र को प्रिय चक्रवर्ती प्राणप्रिय को निवेदन करके करोडन अर्बन अमृत को विजय करवे, वारे या मधुरवर प्राणप्रिय के संवाद को पात्र वेग होवुगो ।। या प्रकार उत्कंठा समूह जामें, ऐसो सो श्रेष्ठ भक्त वारंवार हर्ष के समुद्र समूहन में निमग्न होवत ही रात्रि के प्रथम प्रहर के गुजरवे पर भक्त समूहन के घर सूं निवृत्त होयवे पर ।।१५।। एकांत में नम्रता पूर्वक जायके परात्पर महाप्रभु प्राण-नाथ को प्रणाम करें हैं ।। कि या प्राणनाथ के प्रफुल्लित श्री हस्त कमल में दोनों विज्ञापना

पत्रन को अर्प्पण करें हैं ।। शैय्या पर पोढ़ रहे सो ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथजी वेग ही कछुक उठके अपने पास दीपक मंगवाय के प्रसन्न होवत ही आदर सूं वा दोनों पत्रन को वांचे हैं ।। पद पद में ही उछलित परार्द्धन कल्लोलवारे प्रेम रस के लाखन समुद्रन में निमग्न होवत ही उदय होय रहे रोम हर्ष कंप, कि पसीना आंसू, कि गद्‌गद् स्वरा, कि विवर्ण भाव पूर्वक वा पत्रन को वांचके मनसूं दोनों भुजान सो वा प्रियान को पास लायके वैसे गाढ़ आलिंगन करें हैं, कि जैसे वा सगरी प्रियान के वियोग के सगरे ताप शांत होय जाय है ।। कि वे रोम हर्ष को प्राप्त होय जाय है ।। तब आज्ञा हू करें हैं ''इनके लिये दोनों उत्तर पत्र काल लिखके देउगो ।। सो आजतो विश्राम करवे कूं अपने घर में जावो'' यह सुनके वे दोनों हू भक्त व्रजपति श्री राजको प्रणाम करके घर में जाय के प्रभुन के गुणगान करके गुणसागर प्राणनाथ जी की श्रेष्ठ अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारी वा वा कथा को कछुक काल करके अमुल्य शय्या पर दोनों शयन करें हैं ।। वे दोनों हू स्वप्न में देखे है ।। प्राणनाथ जी की शय्या पर यह सुंदरी विराज रही है ।। वा प्राणनाथ ने प्रगट किये रस सागर में वे निमग्न होय रही है ।। कि वा सुंदरीन ने प्रगट किये रस सागर में श्री प्राणनाथजी हू निमग्न होय रहे है ।। अपने कू यह भक्त स्त्रीरूप सूं ही विनके निकट ही निर्भय होयके ही ठहर रहयो, कि हजारन शाखावारे अनेक प्रकार के पुष्प, कि फलन सूं शोभायमान, कि अद्‌भुत रस के कल्पवृक्ष को नयनरूप अंजलीन सूं पान कर रहयो, कि तृप्ती रहित, कि विनके चरण कमल संबंधी रजकी किणका पर हू अपने को, कि अपने सर्वस्व को हू न्योछावर करत कि मनोहर पंखा कूं हाथ में धर रहे ऐसे बा ठहरे अपने कूं वे देखे है ।।३४।। कृपा सागर श्री प्राणनाथ जी तो वैसे वा शय्या पर पोढ़ के विरह सो दुःखी होय रही वा सुंदरीन को, कि विनके अनेक प्रकार के गुणन को, कि लोकवेद सो अतीत विनके प्रेम के, कि पहले अत्यंत अनुभव किये विनके सौन्दर्य को कि थोड़े से शब्दन सूं सूचना किये विनके विज्ञापना समूह को, कि विनकी असमर्थता, कि दूर रहनो, कि लाज, कि कोमल भाव, कि औरन की अधीनता, कि बढ़ रही उत्कंठा समूह को विचार करत ही इहां बड़ी रात्रि हती तो हू सगरी रात्रि भर रंचहू नींद नहीं करें हैं ।। वा अपने गाम में चंद्रवदनी सुंदरी तो रात्रि समय में बड़े मोलवारी सुंदर शय्या पर ठहरी है ।। श्रेष्ठ

कमल नयन वा प्राणप्रिय ने मानो पठाई जो नींद है सो विनकूं अत्यंत आलिगन करें हैं ॥३८॥ यह सब स्वप्न में ऐसे देखे है ॥ कि अपने श्री मंदिर के अपने वा लेख लायवेवारे भक्त दूत को आदर देकर अपने विराजवे सूं अपने आसन कों शोभायमान कर रहे हैं ॥ दिन ऐक प्रहर वाकी है ॥ सगरे भक्त आपके चारों ओर विराज रहे हैं ॥ करोडन काम को हू विजय करें हैं ॥ धोती उपरना सुंदर शोभायमान है, कि अष्टमी के चन्द्रमा कूं विजय करवे वारे भाल पर चंदन कुमकुम के तिलक को धरें हैं ॥ कि बीड़ी सूं श्री राज को मुख शोभायमान है ॥ श्री मुख चंद्रमा की चांदनी सूं दिन को हू चांदनी वारो वनाय रहे हैं ॥ कि दर्प्पण जैसे सुन्दर मनोहर श्रीराज के कपोल दोनों है, कि दोनों अधर आपके सुंदर ऊंचे है, कि उर है उज्जवल लाल सुंदर अमृत समूह को वर्षा करि रहे मंद हास्यरूप फूलवारे अधर पल्लव सूं मृगनयनी सुंदरीन की वा अधरामृत पान लिये तृश्ना को बढ़ाय रहे हैं ॥ कि श्री विग्रहरूप पर्वत सूं प्रसर रहे मनोहर सुंदरता रूप झंकारी झरना समूह सूं प्रायः सगरे हू लोक को सिंचन करके कृतार्थता अधिकार में धारण कर रहे हैं ॥ तथा श्री चरण कमलों की रज सूं निरंतर उदय होय रहे जा निरंतर मधुर माधुरी के प्रवाहन सूं, कि उछल रहे तेजस्वी तेजो सूं, कि आनंद के समूहन सूं, कि अमितन सूं, कि अमूल्य चिंतामणि के अनंत समूहन सूं, कि सगरे जगत को भरके बहुत प्रकार सूं कृतार्थ कर रहे हैं ॥ कि पवित्र कर रहे हैं ॥ कि शोभायमान कर रहे हैं ॥ कि अत्यंत आर्द्र कर रहे हैं ॥ उंचे अति स्वादु भाव को प्राप्त कर रहे हैं ॥ तथा श्री अंगरूप मेघ की सुंदरता कांति समूह हर्ष समूह की तेज की अत्यंत वर्षा सूं चंद्रवदनी सुंदरीन के दृष्टिरूप पथिक समूहन के आने जाने को वेग ही रोक रहे हैं ॥ कि निकटवासी सेवक भक्त मोरपंख के पंखा को लेकर जिनकी सेवा कर रहयो है ॥ कि मनोहर भाग्य सूं शोभायमान भालवारो गुण सागर कोई भक्त तो जाके पीछे ठाड़ो होयके मांखी के निवारण करवे उज्वल वस्त्र को लेके माखीन के परस कूं वेग निवारण कर रह्यो है ॥ कि प्रकाशवारें हैं ॥ श्रेष्ठ गुण समूह जिनके उदार जाकी लीला है ऐसे सो श्री गोकुलेशजी विराजमान है ऐसे श्री प्राणप्रिय को दर्शन करें हैं ॥ वा मंदिर में कछु दूर बैठ रही अपने कूं देखे है ॥ तामें कृपा सागर श्री राज पूछे हैं, कि "अहो प्रिये तुम कब आये हो" ॥ यह सुनके प्राप्त हर्ष सूं यह

विनय करें हैं, कि ''प्रभो मैं तो कृपासिंधु श्री राजके सदा समीप ही रहु हूं ।। परंतु श्री राजतो सबन के सुखदान में निरंतर कमर कस रहे हो, कि बहु नायक हो ।। कि सगरे भक्ति भरे पुरुषन के समूह, कि तथा चंचल लोचना सुंदरीन के समूह हू राज को चारों ओर घेरे रहे हैं ।। मैं तो सहायक रहित हू मेरो को श्रीराज कैसे इहां देखे, कि मैं हू श्रीराज के लोचनो के सनमुख कैसे होवु के गुण सिंधो अबतो मेरे भाग्य उछले है, कि श्रीराज की कृपा समूह ही भयी है तासूं अमृत के समुद्रन को वरसाय रही श्री राज की दृष्टि ने ही कोई प्रकार सूं जोर सूं मोकूं देख्यो है ।। प्रभो तासूं मेरो जे चिंता ताप दुःख सागर के गिर रहे जे हजारन उछलित कल्लोल हते वे सब निवृत होय गये है ।। श्री राज ने योग्यता हू दान करी है तासूं अब मेरे उछल रहे मनोरथन को पूरण करत ही मेरे नयनों में उज्ज्वल कपूर की शलाका रूप होवे की मेरे नयनों को शीतल करे'' ।। ऐसे संकोच, कि मंद हास्य सूं सुंदर मुखारविंद पूर्वक कहे रही है ।। श्री प्राणनाथजी हू कृपासूं निरख रहे हैं ।। तामें रात्रि होय गयी है ।। श्री प्राणनाथ जी बड़ी सुख सेज्या पर सुखसूं पोढे है ।। सगरे निकटवर्ती लोकन को श्रीराज ने विदा कियो है ।। एकांत होय गयो है ।। तामें यह सुंदरी हू शय्या के पास थंम के सहारे में बैठ रही है, ऐसे अपने को हू देखे है तामें परम प्यारे प्रीयवरजी आयके ....

(यहाँ से कुछ दस लाईन हमने छपाने योग्य नहीं समजी इसलिये हमें माफ करना ।)

ता पाछे उदय भई रस पीड़ा सूं अचानक यह प्रियाजी जाग पड़े है ।। तब यह सगरो तो मिथ्या ही है -- स्वप्न है ऐसे जानके वे सुंदर अंग वारी सुंदरी अग्नि में डूबी जैसे होय वैसे क्लेश को प्राप्त होय है ।। कि मूर्छित होय है फिर जागे है ।। अत्यंत क्लेश पावे है ।। निद्रा को फिर बुलावे है ।। फिर फिर निद्रा की चाहना करें हैं ।। डरी हरिणी जैसे चंचल नेत्र कमलवारी वे फिर नींद को नहीं प्राप्त होय है ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं वा चंद्रमुखी स्वामिनी जी के कृपापात्र मिलापी सुहृदों ने श्रीमद् गोकुलवासी स्नेही भक्तन के पास यह वृत्तांत लिख्यो है -- यह चरित्र वृत्तांत गोकुलवासी मेरे सखा मिलापी भाग्यवानो ने मेरे को जतायो है ।।६२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे षोड्श तरंगः ॥१६॥

॥ तरंग -- १७ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ सत्तरहमो तरंग लिख्यते ॥१७॥

श्लोक -- **एवं गतायां निशि जागरेण प्रियः कृतावश्यक सर्व कृत्य**
भुत्काय दाभूशायनएयद ईव विश्राम लीला प्रणिनीष तेसः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी आज्ञा करें हैं, कि या रीतिसूं सगरी रात्रि तो जागत ही गुजरी ॥ प्रातः समय उठके प्राणप्रियजी आवश्यक सगरे कार्यन को करके भोजन हू करके और दिन जैसे जब श्री राजने विश्राम लीला करी है ॥१॥ तब सो भक्त श्रेष्ठ सगरे भक्तन को घर में गयो देखके भीतर आयके प्रसन्न होयके विज्ञापना करें हैं ॥२॥ प्राणप्रिय श्री राजने हम दोनों कू आज्ञा करी ही, कि दोनों पत्र लिखके कल देवुगो -- सो कृपा के सागर श्री प्राण प्रियजी का समय में दोनों पत्र लिखके हमारो कार्य सिद्ध करोगे ॥३॥ श्री प्राणनाथजी मंद मुसकान सो या समय को चांदनीवारो सिद्ध करत याकूं आज्ञा करें हैं, कि "सो लेखहारी कब जायगो" ॥ यह सुनके सो श्रेष्ठ भक्त कहे हैं, कि जब श्री राज दोनों पत्र लिखके, देके जायवे की आज्ञा करेंगे तब जायगो ॥ यह सुनके पुरुषोत्तम वर श्री प्रभुजी कहै हे, कि कछुक विश्राम करके वे दोनों अपने पत्र लिखके तुमको देउगो ॥ विनको तुम मनोहर लपेट के वस्त्र में बांध के वाके प्रति देनो ॥ देके वाको वेग ही एकांत में मेरे पास हू ले आनो एसे आज्ञा करके श्री महाप्रभुजी उदार विश्राम लीला को करें हैं ॥ सो श्रेष्ठ भक्त तो अपने घर में जाय है ॥ प्रसन्न होयके वा भक्त सुंदरीन के प्रति पत्र लिखे है ॥ श्री प्राणप्रियजी तो विश्राम करके उठे है ॥ अपने स्वरूप सूं अपने सिंहासन को शोभायमान करके आय रहे करोड्न भक्त समूहन के नयन कमलों में अपने स्वरूप सूं अमृतन को वर्षा करत ही श्री अंग सेवक खवास जी सो अपनी मनोहर लेख पेटी को मंगवाय के सोना की रेखा सो सुंदर चीपवारे अत्यंत लाल पत्र को लेकर उछलित अनुराग वारे यह प्राणनाथजी उदार वा सुंदर स्वामिनीन में, कि विनकी सहेली

में अनेक प्रकार को लेख लिखे है ।। वामें कछुक कहू हू ।।१०।।

स्वस्ती -- श्री वल्लभानां परम प्रिया स्वाशिषः -- स्वस्ती पद मंगल सुख वाचक है तासूं अपने भक्तन के मंगल सुख की अभिलाषा प्रभुन कूं सदा रहे हैं ।। यह जतावत वैसे सिद्ध करत यह पहले लिखे है ।। श्री वल्लभ जी की परम प्रियागण में आशीर्वाद होय ।। इहा सुख है ।। तुम सबन के सुख को हम वांछा करें हैं ।। अपरंच और यह है, कि सदा सर्वात्मभाव सूं श्री गोकुलेश प्रभुन को भजन अवश्य करनो ।। तुमारो पत्र हमकू मिल्यो है ।। वाको जान के बड़ो संतोष भयो है ।। समाचार हू जाने है ।। अब परम प्रिया आपने वा वा चिंता सो अपनो मन खिन्न नहीं करनो श्री गोकुलपति ही अबसू सब समय में सब रीत सो शुभ ही भलो ही करेंगे ।। बाहिर भीतर बढ़ रहयो अपनो भाव सब प्रकार सूं छिपाय के ही राखनो ।। अपने समाचार तो नित्य लिखके पठावते ही रहनो ।। हम सदैव विनकी वाट निहारें हैं ।। परिणाम सब भलो ही होयगो ।। यासूं चिंता कोई हू भांति की नहीं करोगे ।। तुम सब जानो हो अधिक कहा लिखे ।। महाप्रसाद पठायो है सो लेनो ।। प्रसादी वस्त्र माला पवित्रा हू पठाये है सो लेने ।। श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, कि या रीतिसूं प्रिय श्री महाप्रभु जी नायिकान के पत्र में लिखे है सो कहयो है ।। वाकी सखी के पास जो लिखे है सो कहु हू ।।११।। स्वस्ती सदा शुभ मंगल सुख होय ।। श्री वल्लभ जी की अपनी दासी में आशीष होय ।। इहां सुख है ।। तुम सबन के सुख की आशा करें हैं ।। अपरंच और यह है, कि सदैव सर्वात्म भाव सूं श्री गोकुल प्रभुन की भावना स्मरण अवश्य करानो ।। किंच अब तुमारो पत्र हमकूं मिल्यो है ।। वाकूं देखके बड़ो संतोष भयो है ।। समाचार जाने है ।। विशेष सूं तुमारी वा प्रिया के समाचार हू जाने है ।। अब परम प्यारी वा प्रिया के अर्थ तुम कोई हू भांति की चिंता नहीं करोगे ।। श्री गोकुल प्रभु ने सगरो ही भलो भली भाँति सूं ही विचार्यो है ।। सो वेग ही होयगो ।। हमारे लिये हू कोई हू भांति की चिंता नहीं करोगे ।। भाव के गुप्त राखवे आदि सब बात में सदा सावधान रहनो ।। परिणाम भलो ही होयगो ।। समाचार हू वहाँ के सगरे हू लिखके सदा पठावते ही रहनो ।। हम सदा विनकी वाट निहारें हैं ।। अलम् इतनो ही बहुत है ।। हमारो पत्र वहां सावधानी सूं सुनावनो ।। हमारो वहां आनो नहीं बने है ।। तुम सब ही

इहां आयके हमको प्रसन्न करोगे ।। परम प्रभु यामें अवश्य सहायक होयगे ।। तुम सुजान हो ।। मार्ग में वा वा स्थलो में सावधान रहोगे ।। इति किंमधिकं ।। यहां लिख्यो है अधिक का लिखे ।। महा प्रसाद पठायो है सो लेनो ।। प्रसादि वस्त्र माला पवित्रा हू पठाये है सो लेने ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि वा सखी के पत्र में जो लिखे है सो कछुक कहयो है ।। रस सागर श्री प्राणनाथजी या प्रकार सूं दोनों लेखन को लिखके वा श्रेष्ठ भक्त को अपने पास बुलाय के याके कान में संदेश देके प्रेम समूह सूं दोनों पत्र देवे हैं ।।१२।। सो श्रेष्ठ भक्त हू नम्रता विशेष पूर्वक दोनों हाथन सूं पत्रन को लेके मस्तक में धरें हैं ।। फिर प्रभुन को प्रणाम करके अपने घर में वेग जायके पहले लिखके राखे अपने पत्र में राखके लपेट के -- श्रेष्ठ रेशमी वस्त्रादि में बाँध के वा लेख पहुंचायवे वारे भक्त दूत को प्राणनाथजी के निकट एकांत में ले जायके प्रभुन के आगे दंडवत प्रणाम कराय के श्री प्राणनाथ जी, कि आज्ञा सूं वो दोनों पत्र वा लेख हारी भक्त के मस्तक में बाँधे है ।। तब ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथ जी कृपा विशेष सूं अपनो उपरना वाकूं देके अपने परम शोभायमान श्री हस्त कमल सूं वाके मस्तक में बाँध के बाके कान में उछलित अनुराग सूं वा प्रिया के समाधान अर्थ सो सो मनोहर वचन कछु कहे हैं ।। फिर उछल्लित शोभावारे श्री प्राणनाथजी अपने श्री मुखारविंद के अमृत सार सूं सिंचन किये अत्यंत दुर्ल्लभ बड़ो स्वादु चर्वित तांबुल को वाके हाथ में विलास पूर्वक धारण करें हैं ।।१८।। तुम वहां जायके विकल स्वामिनी को यह प्रसादि बीरी सावधानी सूं दीजो ।। ऐसे मंद मुसकान सो प्रसन्न श्री मुखारबिंद सो धीरे धीरे यह आज्ञा करें हैं ।। फिर श्री महाप्रभुजी सुंदर स्वादु, कि सुगंधी समूहन सो मनोहर महाप्रसाद पकवान देवे है ।। श्री कंठ, कि प्रसादी माला मनोहर, कि वस्त्र मनोहर पवित्रा हू वाके हाथ में देके प्रसन्न श्री मुखारविंद श्री महाप्रभु जी आज्ञा करें हैं, कि यह जायके वा भाग्यवती को देनो ।। मार्ग में हू सावधान रहनो ।। कि वेग ही जानो ।। यह भाग्यभर्यो भक्त दूत हू उछलित आनंद के आंसू पूर्वक प्रियवर के श्री चरण कमलन कूं परस करत ही मस्तक सूं प्रणाम करें हैं ।। आपकी आज्ञा को मस्तक में धरके श्री प्राणनाथ के श्री मुखारविंद को वारंवार फिर-फिर के निहारत ही इहां सूं चली है ।। श्रेष्ठ वुद्धिवारो सो श्रेष्ठ भक्त तो नदीन में श्रेष्ठ श्री यमुनाजी के पार पर्यंत वाके

संग पहुंचायवे कूं जाय है ॥२३॥ इहां सूं वा लेखहारी भक्त दूत के आगे चलने पर यह **श्रेष्ठ भक्त** तो पीछे फिरके नाव पर चढ़के वा भक्त दूत की श्री पुरुषोत्तमोत्तम श्री गोकुल प्रभुन में प्रेम भक्ति को वारंवार सुरत करत श्री सुंदर गोकुल में आवे है ॥ वेग ही श्री प्राणनाथ जी के निकट आयके आपके उदार श्री चरण **कमलन** को **प्रणाम** करें हैं ॥ तब मंद हास्य मिले श्री मुख कमल वारे श्री **महाप्रभु** जी **वासूं** पूछे है, कि सो लेखदूत भक्त गयो ॥२५॥ तब श्रेष्ठ भक्त विज्ञापना करें हैं, कि श्री यमुनाजी के पार पर्यंत वाके संग गयो हू वहां सूं आगे **चलने पर फिर** यहां आयो हू ॥ उछलित हर्ष पूर्वक श्री आपके दिये उपरना को **मस्तक में** धारण करत वेग ही जाय रहे वाने श्रीराज के चरण कमलन में हजारन प्रणाम किये है ॥ सो वेग ही जाय रहयो है ॥ श्री राजके हितकारी पत्र हू वेग पहुंचे ही जाने ॥ प्राण प्रभो श्री राजके वचनामृतन सो वाको बड़ो ही संतोष भयो है, यह मैंने देख्यो है ॥२८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे सप्तदश तरंगः ॥१७॥

॥ तरंग -- १८ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ सत्तरहमो तरंग लिख्यते ॥१८॥

श्लोक -- **इत्येवमेषा प्रिय राजधानी गतामयासं जगदे प्रवृतिः**
ईतो थता सांचलितेथ लेखहारे तदिया विनीगद्यत सा ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि या प्रकार सूं यह प्राणप्रिय जी की राजधानी श्री **गोकुल** को प्रकार कि श्री गोकुल में भक्तन के, कि भक्त सुंदरीन के पत्र जैसे आवे है सो कहयो है ॥ अब इहां सूं कि श्री गोकुल सूं पत्र लेके जो लेखहार भक्त दूत चले है सो विनको जो प्रकार सो अब कहे हैं ॥१॥ जब सो भक्त दूत श्री गोकुल सूं पत्र लेकर, वा भक्त **सुंदरीन** के प्रति चले है तब विन सुन्दरीन को बिना कारण मन निमर्याद प्रसन्न **होयवे** लगे है ॥ कि बायो लोचन, कि भूजा हू फरके है, कि रोम हर्ष **होय है**-आनंद के आंसू आवे है, तथा प्रभात समय कोई मनोहर हर्ष कारी **स्वप्न आवे** है ॥ ऐसे वा वा कारण कूं सर्व भक्त सुंदरी वा रीति सूं विचार **करें हैं** ॥

सो मेरो लेख ले आयवेवारो दूत अब वा प्राणप्रिय के सुंदर लेख को पायके सुंदर स्वरूपवारो होयके थोड़ेक दिनन में इहां आयके, मैं दीन, कि उदास को प्रसन्न करेगो -- या प्रकार विचार करें हैं ॥ कि प्रिय के लेख पत्र के देखवे को बड़ी उत्कंठा भरी है ॥ कि वा लेख सूं कृपा सागर परम पुरुषोत्तम श्री प्राणनाथ के वृत्तांत समूह को जानवे लिये हू उत्कंठा भरी है ऐसी वे कमल नयनी सुंदरी वा दूत के आयवे वारे मार्ग में प्रति दिन ही वांके जानवे कूं दोय, कि तीन जनन कूं पठावत रहे हैं ॥ विनको कहे हू राखे हैं, कि तुम नित्य दशकोश, कि अधिकी हू वा लेख लायवे वारे के आगे जावो वाकू देखके तुम सबन में जो मेरे पास दौड़के पहले आवेगो वाकूं मैं वाके मनोरथ सूं हू बहुत ही प्रसन्न मन होयके देवूगी ॥ ऐसे कहे राखें हैं ॥ यामें जब मंगलमय दिन आवे है वैसे विनके जब भाग्य हू परिपक्व फलवारे होय है तब वा भक्त दूत को मार्ग में आवत देखके दौड़के इहां आयके वा प्रिय सुंदरीन को कहे हैं, कि वाको मैं देखके आयो हूं तब वे मृगलोचना जन प्रसर रहे हर्षवारी होयके वेग ही वांके संपूर्ण मनोरथन को सिद्ध करके याके मुखारविंद को प्रेम विशेष सूं स्वच्छ मिसरी भरके तथा शोभा विशेष सूं इन्द्र के आयुध वज्र को उगल रही ऐसी शोभायमान हीरा मोती रत्न, भरी सोना, की जिह्वा याकू देके कोई बहाना बनायके गुरूजन, कि विमुख पुरुषन सूं छिपके दोय तीन सखी संग लेके वाके आगे बड़े उत्साह सूं भरी वे सुंदरी दोय, कि तीन कोश आगे जायके वा श्री प्राण वल्लभ गुण सागर प्रियके लेखपत्र को लाय रहे वा भक्त दूत को निरखें हैं -- वे प्रणाम करें हैं ॥ तब सो लेखहारी हू प्रणाम करके विनसूं पूछवे पर प्रेम हर्ष उत्कंठा रस विशेष प्रसन्नता कि नम्रता प्रवाह सूं भर्यो होयके प्राण प्रिय जाके वा वा कुशल प्रेम उत्कंठादि को कहे हैं ॥ एकांत में मस्तक पर विराजमान वा पत्र को उतार के विनके प्रति देवे है ॥ सो वे सुंदरीजन हू उछलित कंप पसीना रोम हर्ष सूं प्रकाश भये अंग अंगवारी होयके हर्ष के आंसुन को वरसावत ही अंजली सूं वा पत्र जी कू पधराय लेवे है ॥ सिर पर राखे है ॥ कि हृदय सो लगावे है, कि नैनन पर राखे है, कि मस्तक पर, कि दोनों कपोलन पर, कि दोनों कंधा कि भुजा, कि स्तनन पर, कि सुंदर वा वा अंगन पर धर धरके प्रसर रहे हर्ष पूर्वक प्रियवर ने वांके प्रति, कि वाकी सखी के प्रति जो लेख लिख्यो है सो वांचके

अक्षर-अक्षर में उछलित होय रहे प्रियवर के वा वा भाव को मन सूं भावना करत ही तब वे भाग्यभरी सुंदरी वा पत्र जी पर सोना मोती माणिक हीरा आदि की माला कि और बड़े मोलवारे भूषणन को, कि वस्त्रादि कों कि वा वा वस्तु को हू बहुत वार वारें हैं ।। कि अपने आपको हू वार डारें हैं ।। तब तो या भाग्यवती सुंदरीन की जो दशा होय है वाकी स्वराज्य, कि स्वर्गादि लोकन को राज्य, कि साम्राज्य, कि भूतल को चक्रवर्ती राज्य की निधि समूहन की प्राप्ति की जो दशा है सो हू दास होयवे की अभिलाषा करें हैं ।। सो हू कहा मिले ।। तब वे मृगलोचनी कछुक समय इहां ठहर के पीछे घर में जायके कोई बहाना सू प्रथम कहे प्रकार सूं क्षण क्षण में बढ़ रहे गुप्त सुंदर मनोहर भाव समूह पूर्वक बहुत दान मान सो मिले गान नृत्य नाच हिंच वाजा गाजा सू भक्त समूह को प्रसन्न करवे वारे बड़े महोच्छव को विस्तार सूं करें हैं ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि जब सराहना योग्य दिन आवे है, कि वा कोमल अंगवारी सुंदरी को अपनो मनोहर प्रेम प्रवल होय है, कि वा प्रियवर को हू मनोहर प्रेम प्रबल होय है तासूं सो वैसे दीन कि विनको प्रबल प्रेम कि प्राण प्रियको प्रबल प्रेम ही सबन को समाधान करके सखिन के संग ही वा सुंदरीन को निजधाम श्रीमद्गोकुल में प्राप्त करें हैं, कि ले जाय है ।।२०।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि या बड़ी भाग्यवारी सुंदरीन के ऐसे सुंदर वृत्तांत समूह की कथा रस के कल्लोल समूहन सो प्रेरणा कियो हौं वा वा विनके निजधाम श्रीमद् गोकुल में पधारवे की, कि शय्याजी पर, कि प्राणप्रिय जी के श्री उत्संग में पधारवे के प्रकार को वर्णन करू हूँ ।।२१।। श्री प्राण नायक कितने जे भक्ति भरे भक्त है जे बड़े प्रतिष्ठित है अपने कि प्रभुन के हू आवश्यक अलौकिक, कि लौकिक कार्यन में जिनको मन लग्यो रहे हैं, कि जिनको निरंतर बड़ो ही कुटुंब है, कि जे पालना योग्य असंख्यात दास भक्त मित्र बंधु संग संबंधिन सूं मिले है ।। कि बड़े महात्मा है, कि जे प्राणनाथ में अत्यंत भक्तिवारें हैं, कि अपने बिना सिद्ध न होयवे वारे कार्यन कूं छांड के या श्री गोकुल प्राणनाथ के या श्री गोकुल मंडल में वैसे प्रभुन के निकट आयवे में जे समर्थ नहीं है परंतु ऐसे महाप्रभुन के निकट आयवे के सदैव ही इच्छावार हैं ऐसे या प्रतिष्ठित भक्तन की जे कमल नयनी स्त्री है सो वे तो अत्यंत ही पराधीन है ।। वे प्राणनाथ जी के वैसे मनोहर वचनामृतन

को हम कैसे पान करे ।। कि भाव सूं भरी उछल्लित तरंगवारे रस सागरन को निरंतर वरस रही, कि वैसी उत्कंठा कूं प्रगट कराय रही ऐसी या प्राणनाथकी प्रसन्न दृष्टि हम कूं कब परस करे ।।३०।। कि घोंट्ट पर्यंत लंवे भुज दंडन सूं शोभायमान, कि श्री मुख सूं निरादर किये हैं अनंत चंद्रमा जाने, ऐसे या प्रभु को, के वाट को विजय करवे वारो बड़ो विशाल हृदय हू हमकू कब आलिंगन करेगो जासू हम कृतार्थ होय जायगी ।। कि अहो वांको जिनको प्रसरनो है, कि मंद हास्य सूं जे भूषित अंग अंग वारें हैं, कि श्याम शोभा सूं, कि लाल लहरिन सूं जे भरी है, कि क्षीर सागर के अर्बन प्रवाहन को जे विजय करें हैं, कि जे साधारण जनों के हू मन को जबरसू हरवे वारे हैं विनके अर्थ आतुर होय रही कोमल उदर वारीन को मन हरे -- यह कहनो ऐसे प्राणनाथ जी के मनोहर जे कटाक्ष है वे कब हमारे सगरे अंगन को आलिंगन करके वेग ताप रहित ही कर देवेंगे ।।३३।। इत्यादि प्रकार की चिंता सूं व्याकुल मनवारी होयके वे मृगलोचना वा अपने पतिन के आगे कछु कहवे में समर्थ नहीं होय है ।। श्वास भरें हैं नींद नहीं करें हैं आनंद को रंच हू नहीं प्राप्त होय है ।। ऐसी वे सगरी दुःख की दशा को भोगे है ।। विनकी ऐसी दुःखन की दशा को स्वयं श्री गोकुलचंद्रमा ही जाने है ।। रस कृपा समूह सूं अनुराग भरे चित्तवारो होयके श्री प्राणनाथजी वा सुंदरीन को जो अंतरंग संबंधी है जो अपने पास रहे हैं -- अपनो हू अधिक भाव विश्वास कृपा को जो भर्यो पात्र है ।।१।। ऐसे वा श्रेष्ठ भक्त के आगे सो श्री प्राण वल्लभजी आज्ञा करें हैं "तुम तो सब जानो हो, चतुर हो वा सुंदर भाव भरी को भर्ता वाके संग इहां आवे है, कि नहीं आवे है, कि कब आवेगो -- तुम कछु जानो हो का" ।। वे श्रेष्ठ भक्त तो या प्रकार के महारस सूं जटित श्री प्राणनाथजी के ऐसे मनोहर वचनामृत सूं वा प्राण प्रिय के वैसे भाव को जानके हाथन को बांध के महाप्रभुजी के आगे निवेदन करें हैं ।।१।। कि "महाप्रभो कृपा सिंधो यह भक्त को आवश्यक ही कार्य हतो या वा कार्य कूं करवे लिये बहुत ही दिन अपने देश में ठहेर्यो है ।। राज के श्रीमुख चंद्रमा के दर्शन की इच्छा वाकूं बहुत है ।। अब तो श्री राज के कृपाबल सूं ही सगरे बड़े हू अंतरायन को विजय करके या श्रीमद् गोकुल में वेग ही परिवारी गणव के संग ही, कि वा, कोमलांगी आरत भरी स्त्री के संग ही आयके प्रभो श्री राजके श्री चरण

कमलन को प्रणाम करेगो ।। सो इहां याके तब तब आय रहे बहुत ही पत्रन सूं यह वृत्तांत हम जाने है ।। प्रभो अवसर के न मिलवे सूं हमने आपको विज्ञापना नहीं करी है ।।४१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे अष्टादश तरंगः ।।१८।।

।। तरंग -- १९ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ उगणीसमो तरंग लिख्यते ।।१९।।

श्लोक -- **एवं विभु प्राण पति निजंते विज्ञाथत तादृश भावनुभागत्वागहं द्राग्वीलिखंति लेखं सर्वस्व कियेषु तथा विधुषुः ।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, कि या प्रकार श्री गोकुलवासी श्रेष्ठ भक्त प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी को विज्ञापना करके वैसे आपके भाव सूं प्रेरणा किये वे अपने घर में जायके वे सगरे वैसे अपने मिलापी विश्वासपात्र चतुर, कि प्राणनाथ के भक्त, कि सगरे अर्थन के सिद्ध करवे की समर्था सूं शोभायमान जे अंतरंग सुजान विदेश में रहें हैं -- विनके पास वैसे सुन्दर, कि प्रिय के गुप्त भाव सागर सूं मनोहर सगरे वृत्तांत वारे, कि कर्तव्य वा वा कार्य के सुविधा की प्रकार के सहित, कि वा वा कार्य के करवे में उद्यम के बढ़ायवे वारे लेख पत्रन को वेग लिखे हैं ।।३।। वा वा देश में वा वा लेख पत्र को पायके वा सगरे अर्थ को जानके तासूं उच्छलित भाव सूं प्रेरणा किये वे सगरे भाग्यवान भक्त सुजान श्री प्राणनाथजी के --, कि वैसे वा भक्तराज के अत्यन्त मनोहर कार्य में अत्यन्त पान करें हैं, कि अपने जन्म को बहुत रीति सूं धन्य ही जानें हैं ।।४।। अहो बड़ो हर्ष है, कि हम भाग्यवारेन में हू श्रेष्ठ हैं ।। जासूं श्री प्राणनाथजी की जो कृपा समूह सो वा ब्रह्मादिकन को हू दुर्ल्लभ है ।। सो सब देह धारीन को हू अत्यन्त दुर्ल्लभ है ऐसी वा कृपा समूह सूं भलीभांति सूं प्रेरणा किये भक्ति वारेन में श्रेष्ठ महद भक्तवर जो हमकूं वा श्री गोकुलपति प्राणनाथ के -- कि सगरे हू अन्याश्रय की गंध को हू जाने पखार डार्यो है, कि जो सगरे हू जगत को अपनी एक किणका सूं हू अत्यन्त पावन कर रह्यो है ऐसो जो सुन्दर उज्ज्वल श्रृंगार सार रूप प्रिय

को रस प्रवाह है वा रस प्रवाह कूं बाहिर, कि भीतर हू धारण कर रही जो मनोहर मृगलोचना है वा मृगलोचना सुन्दरी के मनोरथ कूं पूर्ण करवे वारे जे अत्यन्त दुर्ल्लभ मंगलमय मनोहर कार्य है वा सगरे कार्यन में प्रेरणा करे हैं ।। वे भक्तवर प्रिय के, कि वा प्रिय की वांछित सुन्दरीन के मनोरथन को पूरण करवे वारे कार्यन में हमकूं प्रेरणा करें हैं तासूं हम धन्य हैं, यह भाव है ।। या रीति सूं चित्त में बहुत प्रकार सूं हर्ष को धारण करें हैं ।। ऐसी वे भाग्यवान भक्तजन प्राणनाथ के भक्ति सूं भरे अत्यन्त चतुर अपने दोय, कि तीन मित्रन को संग लेके वा बड़े राजसी जनन, कि हरिणलोचना स्त्रीन के समाधान करवे कूं अपनी स्त्रीन को पठायके भक्तन सूं, कि भक्ति सूं इस सागरन के सागर श्री प्राणनाथ के अत्यन्त उछल रहे रस रूप गीतन सूं, कि गुणानुवादन सूं शोभायमान वा राजसी भक्तन के घर में वे जाय हैं ।।११।। वे राजसी भक्तजन हू विनकूं अपने घर में पधारत देखके अपने कार्य को छांड़के उच्छलित अनुराग वारे होयके नम्रतापूर्वक रोम हर्ष पूर्वक घर सूं उठके द्वार में आगे जायके प्रणाम करें हैं ।। नयनन सूं आनन्द के आंसुन को बरसावत ही विनके मुखचन्द्र को निरखें हैं ।। अपने को धन्य ही जानत विनको गाढ आलिंगन करें हैं ।। फिर प्रणाम करें हैं ।। फिर ही प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द होयके आलिंगन करें हैं ।। बड़े हर्ष वारे वे अपने घर में ले जाय हैं, कि बड़े आदर सूं श्रेष्ठ आसन पर बैठावें हैं ।। वा वा कुशलादि कूं पूछें हैं, कि मधुरता सूं विनकी कृपा को वर्णन करें हैं ।। कृपा की बड़ाई करें हैं, कि परम पुरुष प्राणप्रिय श्री गोकुलपति के गुण समूहन को कहवे लिये, कि वृत्तांत समूह, कि मधुर वा कथान को, कि रस सागर की वर्षा करवे वारे प्रिय के स्वरूप को वर्णन करवे लिये भलीभांति सूं प्रार्थना करें हैं ।।१५।। उच्छलित रोमावली वारे होय रहे वे भक्तजन उच्छलित अनुराग सों वा प्राणनाथजी के गुण लीला स्वरूप को वर्णन करत मनोहर भाव भरे वा राजसी भक्तन को वे भीतर, कि बाहिर हू द्रवीभूत कर देवे हैं ।।१६।। अहो वा समय में लोहा हू विशेष पिघल जाय, कि वज्र हू रोम हर्ष वारे होय जाय हैं ।। कि काष्ट हू अत्यन्त पसीना वारे होय जाय हैं, कि सगरे पत्थर हू हर्ष के आंसून को बरसावें हैं ।।१७।। श्री प्राणनाथजी की वा वा लीला सूं शोभायमान विनके वचन समूहन कूं भलीभांति सूं सुन रहे हैं ।। विनकी महाप्रभुन में एक तानता एक

चित्त भाव उदय होय है ।। वाकी मधुरता तो अत्यन्त ही अगाध है ।।१८।। विशेष कहां लों कहें -- वा परम प्यारे श्री महाप्रभुजी के अनुभव सूं अत्यन्त भरे वे उज्ज्वल भाव वारे भक्तजन स्वयं जो जो कहें हैं सो सो बड़े अमृत के समुद्रन को ही वर्षा करें हैं ।।१९।। वा भक्तन के वैसे वचन रूप अमृत सागर के कल्लोल समूहन सूं सिंचन किये वे राजसी भक्तजन कोई ऐसी अनिरवचनीय शीतलता को प्राप्त होय है ।। जो वचन, के चित्त, के हू पार ही प्रकाशमान है, कि जाकूं वचन वर्णन नहीं कर सकें हैं ।। कि चित्त हू नहीं जाने है ।।२०।। वे राजसी भक्त हू वा भाग्यभरे भक्तन को वा वचन सुनके वा प्राणनाथजी के अनुभव किये वैसे रस प्रवाह सूं उच्छलित वा वा चरित्र को स्मरण करके प्राणनाथ के दर्शन करवे कूं उच्छलित उत्कंठा वारे होय हैं ।।२१।। तब वा राजसी भक्तन के उद्दीपन होय रहे प्राणनाथ के वियोग अग्नि के ज्वाला समूहन सूं जव्ति होय रहे, कि उछल रहे हैं ।। वा प्रिय के दर्शन संबंधी भलीभांति सूं पसरे हैं, कि प्रगट होय हैं ।।२२।। ऐसे विनके श्वासादि सूं विनकी उच्छलित होय रही, प्राणनाथ के श्रीमुख चन्द्रमा के दर्शन की इच्छा को विचारके सुजान वे भक्तवर हू श्वासन को छोड़ें हैं, कि प्रगट करें हैं ।।२३।। ऐसे श्री प्राणनाथ के श्री मुखारविन्द संबंधी रस समूह के हजारन समुद्रन के पान करवे की उच्छलित इच्छा वारे वे राजसी भक्त विनसूं पूछें हैं, कि ऐसो भगवत वार्ता प्रसंग को प्रचार होय रह्यो है यामें आपके मुखारविन्द सूं प्रगट होय रही यह अत्यन्त गरम श्वासन की धारा का कारण सूं होय रही है ? यह कारण हमसूं कहोगे सो आपको कृपा समूह ही है ।।२५।। कि हमारे जीवन रूप कृपासिन्धु सो प्राणनाथजी हम सबन के सगरे कार्यन के सिद्ध करवे लिये सदा कमर कस रहे हैं ।। सो तो हम सबन के प्राण हैं, कि निधि हैं, कि मंगल हैं, कि आश्रय हैं, कि नयन हैं, कि कब हैं, कि सो फलरूप हैं, कि वा प्राणप्रभु की कृपा हू हम सबन के अनिष्ट रूपी वचन को नाश करवे वारी है ।। के सबसूं ऊंचो सुख रूप है, कि सुन्दर जीवन रूप है ।। तासूं तुम काहे को ऐसे दीर्घ श्वांस भरो हो ।। तामें कारण का है ? यह सुनके वो भक्त हू अपनी श्वास परंपरा को बड़े यत्न सूं रोकके विनके आगे अपनो आशय सुनावें हैं ।। कि **अयि रसार्दीः** तुम तो श्री प्राणनाथ के रस सों आर्द्र हो सदा भींजे हो, कि उच्छलित वा प्रिय प्राणनाथ के वियोग

रूप वन अग्नि सूं भीतर बाहिर जर रहे हो, कि नयनन सूं आंसून के महासागर समूहन को वरसाय रहे हो, कि प्राणनाथ के समागम लिये उछल रही अत्यन्त उत्कंठा सूं भरे हो ऐसे प्राणनाथ के श्रीमुख चन्द्रमा निमित्त तृष्णा के सागर ही जिनमें निरन्तर जटित हैं ऐसे तुम भाग्यवानों के संग सूं हमारी हू वा प्राणप्रिय के दर्शन की इच्छा अंकुरवारी होय गयी है -- सो सुने जाय है, कि सो श्री गोकुल के जीवननाथ अपने वा वा अंगन सूं, कि निर्दोष विलासन सूं, कि गुणन सूं, कि वचनन सूं, कि वैसी मनोहर क्रियान सूं, कि मंद हास्य सूं, कि गति सूं महारस के समुद्रन को बरसावें हैं ॥३०॥ हे ईशाः तुम बड़े हो, ईश्वर हो, अहो बड़े चतुर, कि सावधान जन हू श्रीमद् गोकुल में सदैव ही ढूंढ़ रहे हैं सो वा श्री गोकुल को तिल मात्र हू ऐसी नजर नहीं आवे है ॥ जो श्री गोकुल प्रभु के रस सूं भीजी ही रहे हैं ॥३१॥ अहो सो प्रियवर तो चन्द्रमा समूहन कूं विजय करवे वारे, कि दीनन को हू चांदनी रूप बनाय रहे ऐसे श्रीमुख कमल सूं तीनों हू लोकन को बल सूं ही शीतल करें हैं तो अपने सगरे जीवन को शीतल करें हैं, तो अपने सगरे जीवन को शीतल करें हैं यह का कहेनो है ॥३२॥ अहो जे भाग्यवान भक्तवर प्राणनाथ के श्रीमुख सूं झर रहे मंदहास्य रूप अमृत को नयन रूप अंजलीन सूं निरन्तर पान करें हैं, वे सुजान तो योग सिद्धीन को, कि मोक्ष को हू तृण रूप हू नहीं माने है ॥३३॥ अहो कमल सूं हू सुन्दर मुख वारी जा सुन्दरीन को प्राणनाथजी के अमृत की धारान सूं हू मधुर कटाक्षन ने स्पर्श कियो है विनको वा समय में उदय भयो जो रोमहर्ष है सो कबहू शांत होयगो का ?, कि कबहू न होयगो ही ॥३४॥ अहो श्री गोकुल के भूषणरूप वा प्राणप्रिय को दर्शन करके घर में आय रही मृगलोचना सुन्दरीन के हर्ष के आंसू समूहन सूं शोभायमान अंगवारी जे वा श्री गोकुल की गली है वे हू सर्वोपर शोभायमान होय रही हैं ॥३५। अहो श्री प्राणनाथजी के दर्शन करवे लिये अत्यन्त बढ़ रही उत्कंठा सूं आय रही वा सुन्दरीन के भूषणन के झनकार को जो समूह है सो वाके कानों में अमृत समुद्रन को वर्षा वारो नहीं करें हैं ॥ कि सबन के कानों में अमृत सिन्धु को बरसावे है ॥ अहो भक्त भक्त सुन्दरीन के महाहर्ष सूं प्रफुल्लित श्रीमुख कमलन सूं उछल रहे सुगंधी के प्रवाहन सूं भर रहे श्रीमद् गोकुल में कल्पवृक्षन के फूलन को त्याग के यहां आय रहे भ्रमर के समूह शोभायमान

ऊपर चंदुवा रूप होय हैं ॥३७॥ अहो शय्या सूं उठे वा प्राणनाथ के दर्शन अर्थ आय रही जे असंख्यात सुन्दर नयन वारी सुन्दरी हैं विनसूं प्रहर वाकी रही रात्रि हू वा समय वहां मध्याह्न समय रूप होयके अत्यन्त शोभायमान होय है ॥३८॥ अहो वा समय में जाको आलस्य है उदार जाकी शोभा है -- मंद मुसकान सों जिनको श्री मुखारविन्द शोभायमान है, कि तांबूल, वीड़ी सूं जिनको लाल अधर पल्लव है, कि जिनके कुंडलन सों तांडव नृत्य उछल रह्यो है, कि जंभायी जो मनोहर है, कि कमल जैसे प्रफुल्लित जाके नयन हैं, कि पूर्ण चन्द्रवदना सुन्दरीन में जो निर्दोष विशाल अत्यन्त उज्ज्वल रस सागरन को जो वर्षा कर रहे हैं, ऐसे प्राणनाथजी को जो निरखे है वे अत्यन्त ही धन्य हैं ॥४०॥ अहो जे रत्नजटित पीढ़ा पर विराजमान हैं, कि उच्छलित अनुराग वारे हैं श्री हस्त कमल सों दंत काष्ट को ले रहे हैं, कि मृगलोचना सुन्दरीन को अमृत समूहन को बरसाय रहे हैं, कि निरन्तर विह्वल कर रहे हैं, कि जे अत्यन्त आनन्दित कर रहे हैं ऐसे कृपा सागर को जे निरखे हैं वे तो भाग्यवारेन में हू अत्यन्त श्रेष्ठ ही महात्मा भक्त हैं ॥४२॥ अहो जे प्राणनाथजी श्रीमुख चन्द्रमा को पखार रहे हैं, कि बड़े प्रकाश भरे श्रीअंग में अभ्यंग कर रहे हैं, कि विलास पूर्वक स्नान कर रहे हैं, कि निर्दोष मनोहर श्रीअंग सूं कोमल धोती को पहिर रहे हैं ॥४३॥ कि श्री मस्तक में कुमकुम को उर्दपुंड्र तिलक कर रहे हैं, कि संध्याविधि को आदर दे रहे हैं, कि दंड दीप के उच्छलित प्रकाश में जाको श्रीअंग, विलास प्रवाह प्रकाश वारे होय रहे हैं ॥ ऐसे सो श्री प्राणनाथजी श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधार रहे हैं, कि श्रेष्ठ भक्तन को दृष्टि सूं ही आदर दे रहे हैं, कि प्रसन्न कर रहे हैं, कि वा श्री गिरिधारीजी को बहुत प्रकार सूं भाव सूं श्रृंगार धरायके वैसे आरति वार रहे हैं, कि कमल सूं हू सुन्दर वदन वारी सुन्दरीन को मनोहर दृष्टि विलासन सूं आनन्दित कर रहे हैं, कि मंद मुसकान सूं आपको श्रीमुख शोभायमान होय रह्यो है ॥ कि या श्री गिरिधारीजी के आगे खिलोनान सों खेल रहे हैं, कि भक्त और भक्तसुन्दरी जाको चारों ओर सूं घेर रही हैं, कि श्री यमुनाजी पर न्हायवे को पधार रहे हैं, कि वामें न्हाय रहे हैं, कि वा श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधार रहे हैं, कि बड़े हर्ष सूं वाकी सेवा करके मनोहर चवयी पर विराजमान होय रहे हैं, कि ब्राह्मणन के प्रति द्रव्य, कि

भोजनदान कर रहे हैं, कि फिर भोजन लीला को कर रहे हैं ।।४८।। कि ता पाछे उच्छलित विलास पूर्वक श्रीमुखादि के पखारवे की माधुरी दिखायके सगरे भक्त जनन को कृतार्थ कर रहे हैं, कि फिर धीरे-धीरे अपनी श्री बैठकजी में पधार रहे हैं ।।४९।। कि वहां तांबूल वीड़ी आरोगवे की लीला पूर्वक कछुक विराजके पीछे मनोहर भूमि शैया को अलंकृत कर रहे हैं, कि कितने सेवकजन आपके पास आय रहे हैं ।। विनके संग शोभायमान हैं ।।५०।। विश्राम करके पीछे उठके अपने सुन्दर आसन पर शोभायमान हैं, कि यहां बहुत प्रकार की लीला कर रहे हैं ।। कि वा लीलान सूं बड़े भाव भरी अनेक प्रकार की सुन्दर कमल वदना सुन्दरीन को, कि आपकी लीला ही जिनको जीवन है ऐसे भक्तराजन को हू प्रसन्न कर रहे हैं ।। कि फिर न्हायके श्री गिरधारीजी के मंदिर में पधार रहे हैं, कि अपने जनन को वैसे आनंद के सागर में निमग्न कर रहे हैं, कि वा मंदिर के भीतर पधार वा वा सेवा को कर रहे हैं, कि श्री गिरिधारीजी के दर्शन के श्रेष्ठ बहाने सूं अपने दर्शन लिये उच्छलित उत्कंठा वारे अपने भक्तन को उछलित उदार लीला वारे सुन्दर उच्छलित कृपा सूं भरे अपने दर्शन को कराय रहे हैं ।। कि फिर श्री गिरिधारीजी के शयन पर्यंत सेवा को करके वैसे वैसे वहां रस सागरन को वर्षा कर रहे श्री प्राणनाथजी फिर अपने श्री मंदिर में पधारके पुत्र संबंधी भट भाणेजन के संग विराजमान हैं, कि फिर भोजन मंदिर में पधार रहे हैं ।। कि वहां मनोहर भोजन लीला कर रहे हैं, कि फिर अपनी श्री बैठकजी में पधारके अनेक प्रकार के विलासन सूं भक्तन को श्री चन्द्रवदनी सुन्दरीन को आनन्दित कर रहे हैं, कि रात्रि को पहेलो प्रहर गुजर गयो है ।। फिर सबन को विदा करके चन्द्रमा को विजय करवे वारो जाको श्रीमुख है ऐसे जो प्राणनाथजी वैसे वैसे मनोहर विहार कर रहे हैं ।। ऐसे करोड़न काम को विजय करवे वारे श्री प्राणनाथजी को निकट निवास कर रहे भाग्यवारेन में श्रेष्ठ वे वे भक्त ही दर्शन करें हैं., कि प्रणाम करें हैं, कि वैसे वैसे सेवा हू करें हैं ।। अहो ऐसे श्री गोकुल मंगल रूप प्राणनाथजी के दृष्टि के तुम पात्र हो ऐसे आप भाग्यवानों की उच्छलित कृपा ही हमको हू श्रीराज के निकट जायवे वारेन को अत्यन्त दुस्तर, कि दुःख सूं तरवे योग्य हू मार्ग रूप सागर क्षण सूं ही गोप्यद रूप, कि तुच्छ, कि गाय के पांव नीचे जितनों जल आवें हैं ऐसे सुगम उल्लंघन योग्य होय

जाय है ।।५४।। अहो स्त्री पुत्र सगे संबंधीन के संगम हू या प्राणनाथ के श्रीमुख चन्द्र बिम्ब को निरखे, कि या प्रभुन के वचनामृत समुद्रन को पान करे, कि वैसे हमहू श्रीराज के वैसे मनोहर दंतन की कांति सूं पुष्ट मंद हास्य की चांदनी में विहार करें, कि श्री यमुनाजी के लहरीन के विजय करवे वारे ऊंची भ्रू विलासन में निमग्न होवे कि प्रसर रही वाके श्रीअंग की उछल रही सुगंधी के प्रवाहन में वैसे हम हू तरे, कि ब्रज कमलनयनी सुन्दरीन की जीवन रूप रस रूप अनेक अनेक प्रकार के भावन सूं प्रकट भयी या प्रिय की रात्रि संबंधी लीलान में वैसे पूर्ण रस सागर या प्रिय के, कि याकी कृपा रस भरी कमलनयना सुन्दरीन के रस योग्य कार्यन में स्त्री, पुत्र, सगे संबंधी सहित हमहू दौड़े, कि वैसे कार्य हमहू दौड़-दौड़ के करें, कि प्राणनाथ के मनोहर रसात्मक कार्यन में हमारे हू प्राण, कि धन कमललोचना स्त्री, कि पुत्र, कि मित्र, कि दृष्टि, कि शरीर, कि मन, कि सगरे ही उपयोग में आवें ।। अहो सो जीवन कह्यो जाय है ।। का किन्तु सो जीवन हू जीवन नहीं है, कि सो धन हू धन नहीं है किन्तु निधन है मृत्यु रूप है तथा वे गुण ही गुण नहीं किन्तु दोष रूप ही हैं जे वा प्राणप्रिय के प्रसन्न करवे में समर्थ नहीं है ।। वे कछु नहीं है ।। अहो अपार अमृत समुद्रन के अभिमान को विजय करवे वारे वा प्राणनाथ के चरणकमल सूं गिर रहे रस को, कि चरणामृत रस को विजय करवे वारे वा प्राणनाथ के चरणकमल सूं गिर रहे रस को जे जन राज के श्रीमुख को निरखत ही पान करें हैं वे भाग्यवारे ही पुण्य समूह करवे वारे हैं ।। कि जे जन प्रातः समय आयके श्रीराज के अमृत सों वरस रहे श्री चरणकमलन को प्रणाम करें हैं, विनको ही सगरो जन्म, कि जीवन हू सफल है ।। कि औरन को निष्फल ही है ।। अहो हे रस सागर सूं भींजे गुण सागर रूप भाग्य भरे भक्तवराः तुमारो स्वभाव बड़ो मधुर है ।। तुम बड़े दया भरे हो ।। आप हमारे ऊपर प्रसन्न होये, जासूं हमहू श्री गोकुल में जायके श्री राज के श्रीमुख चन्द्रमा को निरखें, कि अनेक प्रकार के बड़े ताप समूहन सों दुःखी होय रहे, कि विषयन में डूब रहे ऐसे अपने को हमहू श्री प्राणनाथजी के अंगीकार में आरोगवे में आय रहे अनुपम मनोहर पान वीड़ी के सुगंधित समूहन में निमग्न करें ।।७०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे एकोनवीस स्तरंगः ।।१९।।

तरंग ॥२०॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति अथ बीसमो तरंग लिख्यते ॥२०॥

श्लोक -- **इत्यादि तेषांवत जल्पतां दागा क्षिप्य वा कांपदयो निर्पत्य आश्लिष्य गाढं बहुता नु रसार्दान् एते निबद्वीजलि मालपंती** ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याभट्टजी कहें, कि इत्यादि प्रकार सूं आनन्द के आवेश सूं कह रहे वा श्रेष्ठ भक्तन के वाक्य को -- आक्षेप करके बीच में रखवाय के विनके चरणन में गिरके रस सूं भीज रहे वा श्रेष्ठ भक्तन को गाढ़ आलिंगन बहुत वार करके दोनों हाथन को बांधके यह राजसी भक्त कहें हैं, ''कि अहो आपकी उज्ज्वल सुन्दरता, कि मधुर वाणी, कि मंद हास्य के कृपा, कि अखंड यह भाव, कि आपके चरणकमल, कि विन सबन की हम वन्दना करें हैं ॥ जे सगरे वे प्रसन्न होयके हमारे मन में प्रवेश करें हैं ॥ जे ब्रह्मा को हू दुर्ल्लभ हैं, कि जे अपनी मनोहर उज्ज्वल चांदनी सूं सगरे हू जगतन को वेग ही शुद्ध कर देवें हैं, कि जे सुन्दर प्रेम, कि मंगलरूप हैं ॥ ऐसे यह हमारे चित्त में प्रवेश करके वाकूं विशेष सूं शुद्ध करके वामें श्री गोकुलाधीश महाप्रभुन के श्रीमुख चन्द्रमा की शोभा कूं अत्यन्त प्रसर रही देखवे की इच्छा को वेग ही धरके श्री आप भाग्यवानों के संग ही कुटुम्ब, दास, सगे मित्रन सूं मिले हम सबन को श्री प्राणनाथजी के अर्थ वाके धाम श्रीमद् गोकुल में प्रस्थान करावें हैं, कि अत्यन्त ही उतावले करावें हैं ॥५॥ हम तो स्वयं हू पहले या श्रीमद् गोकुल में जायवे की इच्छा वारे हैं ॥ परन्तु यह निरन्तर प्यारे को उदय होय रह्यो सो कार्य ही हमकूं बारंबार रोक ही देतो है ॥६॥ हे अंग अब तो सो आवश्यक कार्य हमने सिद्ध ही कर लियो है ॥ तासूं हमकूं जायवे में रंच हू विलम्ब नहीं है ॥ हम तैयार हैं ॥ शुभ होय, मंगल होय, चलो उठो अहो करुणाभराद्र तुम तो कृपा समूह सूं भीजे ही हो -- हमारे घर में रंच प्रसाद लेवो ॥ वेग ही हम हू अपने हाथी, रथ, ऊंट, घोड़ा, कि सेवक दासादि, कि स्त्री मित्र सगे संबंधी सगरे जनन को तैयार करें हैं ॥ सुन्दर मुहूर्त आज आय ही गयो है ॥९॥ आज हमारो मनोहर प्रबल भाग्य ही अत्यन्त उच्छलित भयो है ॥ जो पुरुषोत्तम श्री गोकुलनाथ महाप्रभुजी की, श्री गोकुल में हम चले हैं ॥१०॥ यह सुनके वे श्रेष्ठ भक्त

प्रसन्न होयके नम्र होय रहे वा राजसी भक्तन को बहुत वार प्रणाम करके आलिंगन करके प्रेम पूर्वक विनसों प्रसाद लेकर ता पाछे विनकी वा भाग्यवती सुन्दरीन के निवास घर में गुप्त रीति सूं जाय हैं ।। वे श्रेष्ठ भक्त वहां जायके कृश होय रहे श्री अंग वारी वा सुन्दरीन को निरखें हैं ।। कि जे चिन्ता सूं भरी हैं, कि अत्यन्त ताप सूं तपी हैं, कि जे बारंबार अत्यन्त श्वांस भरें हैं, कि श्रेष्ठ बुद्धि सूं शोभावारी सखीजन जिनको वैसे बहुत रीति सूं धैर्य दे रही हैं ।। इन भाग्यवान श्रेष्ट भक्तन की वैसी अपनी स्त्रीजन हू वैसे वैसे धैर्य दे रही हैं, कि जिनमें उत्कंठा के तरंग बढ़ रहे हैं, कि बढ़ रहे आंसुन सूं जिनके नयन कमल व्याकुल हैं, भर रहे हैं, कि श्रेष्ठ किरण समुद्रन की शोभा जिनकी उच्छलित होय रही है ऐसी भाग्यवती वा सुन्दरीन को निरखके वे वेग ही अत्यन्त बड़ी भक्ति सूं वा भाग्यवतीन के आगे बारंबार हू दंडवत प्रणाम करें हैं, कि प्राणप्रिय सूं शोभायमान होय रही श्रीमद् गोकुल में प्रस्थान के निश्चय कथन सूं विनको बधायी हू देवें हैं ।। तब वे भाग्यवती तो वा वधायी सूं प्रगट भये हर्ष के अपार गंभीर महासागरन में निमग्न होयके दुःख रूप, कि चलवे के निवर्त होयवे सूं कोई अनिर्वचनीय अवस्था को प्राप्त होय हैं ।। विनकी चित्त की वृत्ति प्राणनाथ की अत्यन्त प्रसन्नता के विचार सूं उदय होय रहे हर्ष रूप भ्रमरन सूं मिली होय के सूर्य के उदय में कमलनि जैसे वेग ही प्रफुल्लित होय जाय है ।। तब वा सबन के हर्ष संबंधी कोलाहल के तांडव, कि महानृत्य की शोभा अनेक प्रकार के प्रिय के श्रेष्ट गुण समूहन के गान संबंध सूं शोभायमान होवत अत्यन्त ही उछले है ।।१७।। वा भाग्यवतीन की कितनी सखी तो वामें नीचे हैं ।। कितनी तो हर्ष सूं प्रणाम करें हैं ।। और कितनी तो वा श्रेष्ठ भक्तन के गुण समूहन की सराहना करें हैं ।। कितनी तो विनके प्रभाव को वर्णन करें हैं, कि और कितनी तो ऐसे प्रफुल्लित कोऊ अत्यन्त दुर्ल्लभ अपने मनोहर भाव सूं अमूल्य होय रहे अपने को या श्रेष्ठ भक्तन के ऊपर न्योछावर करें हैं ।।१९।। तब भवसागर के उच्छलित होय रहे असंख्यात सुन्दर, कि आकाश को प्रसर रहे कल्लोलन के विशेष संबंध सूं वे भाग्यवती सुन्दरी श्रेष्ठ भक्तन के मुखन को मधुरता भरी मिसरी सूं भरे हैं ।।२०।। बारंबार पूछें हैं -- कि यह अत्यन्त दुर्ल्लभ मनोहर कृपा हमारे ताप समूह को शांत करत हमारे ऊपर कैसे अमृत की वर्षा करें हैं ।। तथा हे

सख्य तुम वेग ही उतावल करो वे वे वस्त्र, कि भूषणन को, कि वा वा वस्तुन को लेकर तैयार होवो वा गोकुल में हम चलें, कि जहां सुन्दरता सों काम के हू अभिमान को जाने नीचो उछार्यो है ॥ ऐसो करुणा समुद्र सो हमारो प्यारो विराजे है ॥ जो सरस कटाक्षन सूं कोमल उदरवारी सुन्दरीन के हृदय के तापन को नित्य ही उन्मूलन करें हैं, कि निकार डारें हैं ॥२३॥ इत्यादि प्रकार सूं वे बारंबार कहे हैं, कि प्रस्थान करवे कूं सगरे जन तैयार होय है ॥ अहो या समय में निश्चिन्तता कि निद्रा समूह, कि आनन्द, कि चेष्टा, कि ज्ञान यह सब लाज समूह सूं नम्र होय के वा भाग्यवती सुन्दरीन की सेवा करवे लिये आवे है ॥ अहो प्रिय के वियोग संबंधी ताप के बढ़वे में हमकूं छांड़के तुम सब दौड़ गये हो ॥ अब आये हो तासूं उच्छलित क्रोध सूं भरी वे कृश अंगवारी सुन्दरी वा सबन कूं आदर नहीं देवें हैं ॥२५॥ प्रसर रहे उत्साह उत्कंठा को ही वे मन सूं आदर करें हैं, कि अनुराग समुद्र के हजारन तरंगन सूं प्रेरणा करी वे वा श्रेष्ठ भक्तन कूं कहें हैं ॥ वा प्राणनाथजी के अनेक प्रकार के मनोहर गुण समूहन को तुम भली भांति सों वर्णन करो हो, तथा हे मृगाक्ष्यः मृग जैसे नयन वारी सखीजनो तुम तो गुण रूप रत्नन के पर्वत हो, तुम हू बिना कारण प्रसन्न होयके प्रिय के गुणन को गावो ऐसे फिर हू कहें हैं ॥२७॥ अहो करुणासागर पूर्ण चन्द्रमुख वा प्राणनाथजी ने हमकूं जा दिन सूं उपेक्षा करी ही वा दिन सूं आज दिन सुधी तो हमकूं न कोऊ आनन्द भयो है, कि ना निद्रा हू कछु आयी है ॥२८॥ अहो अपने अनेक प्रकार के बड़े मनोरथन सूं निरन्तर दुःखी होय रही हमको जासूं बड़े दुःखन सो निकरनो होय सके है ॥ ऐसे कारागर, कि बन्दीखाना रूप घर सूं मोक्ष को, निकरवे को मुहूर्त कब आवेगो ?॥२९॥ कितने पल नाम वारे युगन के पीछे सो प्राणनाथजी हमारे प्रति अपनो दरशन करावेगो ॥ कि जा पल में हम इहां सूं प्रस्थान करके प्रतिदिन दोहरी मजल चलती, कि यासूं हू अधिकी चलती वा अत्यन्त दुर्लभ, कि रस सूं भीजे श्री गोकुल के चक्रवर्ती प्राणनाथ को दर्शन करे ऐसो पल कब आवेगो ॥ अहो कब हम प्राणप्रिय की राजधानी श्रीमद् गोकुल में प्रवेश करके वामें विराजमान या प्राणनाथ के श्रीमुख चन्द्रमा की शोभा को निरखत अपने नयन कृतार्थ करेंगे ॥ अहो हरष सों श्री गिरिधारीजी को श्रृंगार धरायके वाके आगे आरति वार रहे हैं, कि वा श्री गिरिधारीजी के आगे खिलोना धरके

खेल रहे हैं, कि दर्प्पण को श्री हस्त में धर रहे हैं ।। कि प्रसर रही है सुगंधी जाकी ऐसी फूल माला को श्री हस्त में धर रहे हैं ।।३३।। कि नाना प्रकार के बड़े मोल वारे पेटीन में धरे वस्त्रन को समारवे में आशक्त चित्त है, कि विनको समार रहे हैं ।। कि राजभोग को समारवे में आशक्त चित्त है ।। कि विनको समार रहे हैं ।। कि राजभोग को समय निकट जानके, कि राजभोग के समर्प्पण में लगे है ।। कि उछल्लित प्रेम सूं रसोयी घर में पधार रहे हैं ।। कि श्री यमुनाजी में नहाय रहे हैं ।। कि वा श्री यमुनाजी सूं अपने श्री मंदिर में पधार रहे, कि वहां चटयी को शोभायमान कर रहे हैं ।। कि भोजन करवे कूं पधार रहे हैं ।। कि वहां मनोहर भोजन कर रहे हैं ।। कि भूमि शय्या पर अंगन को पसार के विराजमान है ।। कि पोढ़ रहे हैं ।। कि भली-भाँति जाग रहे हैं ।। कि उठे है, कि अपने बड़े तकियावारे आसन को आप अलंकृत कर रहे हैं ।। कि अपने श्रेष्ठ भक्तन के संग कथा कर रहे हैं ।। कि श्री गोवर्द्धनधारी जी के मनोहर वैसे गुण वर्णन में आशक्त चित्त है ।। कि अपने स्वजन समाज को समाधान कर रहे हैं ।। कि अपने कृपापात्रन सूं श्री अंग को अभ्यंग कराय रहे हैं ।। कि स्नान कर रहे हैं ।। कि अंग वस्त्र कर रहे हैं, कि धोती उपरना धर रहे हैं ।। कि कुमकुम को उर्द्धपुंड तिलक कर रहे हैं ।। कि निर्मल मनोहर मुद्रिका धर रहे हैं ।। कि अत्यंत मनोहर गुंजा हार को धर रहे हैं ।। कि फिर श्री नाथ जी के मंदिर में पधार रहे हैं ।।४१।। कि हर्ष सूं विलास पूर्वक संध्या आर्ती कर रहे हैं ।। कि प्रिय श्री गिरधारी जी के श्रृंगार कों श्री अंगन सूं भूषणन को बड़ो कर रहे हैं ।। कि रस विशेष सूं श्री गिरधारीजी को घैया आरोगायवे में आशक्त चित्त है, कि शयन भोग को समर्प्पण करके संध्या विधि कर रहे हैं ।। कि शयन आर्ती कर रहे हैं ।। कि श्री गिरिधारीजी को पोढ़ाय रहे हैं ।। कि फिर वा मंदिर सूं अपनी श्री बैठक जी में पधार रहे हैं ।। कि होम घर में पधार के होम कर रहे हैं ।। कि कोई अपने भाग्यवान ने अर्प्पण किये कछुक नयी सामग्री को आरोग रहे हैं ।। कि अपने सुंदर बे तकियावारे सुंदर मनोहर गादि को अपने सूं अलंकृत कर रहे हैं ।। कि वहां अनुपम बीड़ी को आरोग रहे हैं ।। कि नकल टेक हास्य विनोद प्रसंग में आशक्त चित्त है ।। कि अनंत प्रकार, कि मनोहर कथान में अपने को आशक्त चित्त कर रहे हैं ।। कि अथवा अपने तैलाभ्यंग के सुंदर

पलंग को शोभायमान कर रहे हैं ।। कि वा पर उठ बैठ के विलास सो मूड़बंधो बाँध रहे हैं ।। कि वैसे एकांत घर में पधार रहे हैं ।।४७।। वहां सूं पधार के सुंदर चरण कमलन को पखार रहे हैं ।। निद्रा के आदर लिये बड़ी सेज्या पर विराजमान होय रहे हैं ।। कि मधुर भ्रु विलास सूं सगरे अपने जनन को विदा कर रहे हैं ।। कि अकेले विराज रहे हैं ।। वहां पधार रही अपनी श्री मुख्य स्वामिनी जी को वैसे वैसे विलासन सो आनंदित कर रहे हैं ।। कि अथवा कोई वांके केशवारी भाग्यवती के मनोरथन को विलास पूर्वक पूर्ण कर रहे हैं ।। कि फिर विलास पूर्वक पोढ़ रहे हैं ।। कि रात्रि के चोथे प्रहर में निद्रा को विदा कर रहे हैं ।। रस की शोभा सों भरे हैं ।। दंत शोधन कर रहे हैं ।। कि विलास पूर्वक एकांत घर में पधार रहे हैं ।। कि फिर वहां सूं पधार के सुंदर चरण कमलन को पखार रहे हैं ।। कि अपने कृपापात्र सेवकन सूं तैलाभ्यांग कराय रहे हैं ।। कि विलास सूं प्रकाश भरे श्री अंग दर्शन पूर्वक स्नान कर रहे हैं ।। कि केसर रंग सूं रंगे प्रसर रहे प्रकाश वारे धोती उपरना कूं, कि केसर की बिंदुन सूं चित्रित, कि श्वेत ही धोती उपरना को विलास पूर्वक पहेर रहे हैं ।।५३।। श्री मस्तक में कुमकुम को उर्ध्धपुंड तिलक कर रहे हैं ।। फिर श्री गिरिधारी जी के मंदिर में पधार रहे हैं ।। कि वहाँ वैसे प्रबोध को पाठ कर रहे हैं ।।५४।। श्री नाथजी को उठाय रहे हैं ।। कि श्री नाथजी के आगे बालभोग को धराय रहे हैं ।। कि संध्या विधि को मान दे रहे हैं ।। कि इहां और हू सो सों विहार कर रहे हैं ।। ऐसे वा श्री गोकुलाधिपती के मनोहर स्वरूप को निरख के अपने जन्म की, जोबन रूप की, कि तनुकी, जीवन की शोभा, कि लोचन, कि सगरे गुणन को हू अत्यंत सफल करेंगे ।।५६।। वा मनोहर दिन के सुंदर चरण कमलन को प्रणाम करें हैं ।। कि वा सुंदर प्रहर के ऊपर हू अपने को निरंतर वार डारें हैं ।। कि गुणन के सागररूप वा श्रेष्ठ मुहूर्त के हम सदैव ही देनेवारे ऋणी है ।। कि करोडन अमृत सूं हू मीठे वा क्षण की हू हम इच्छा सो सदा के लिये ही दासी है ।। कि जो दिन, के प्रहर, कि मुहुर्त, कि क्षण आयके हमकूं वा प्रियवर के मनोहर मंद हास्य सूं शोभायमान श्री मुखारविंद को दर्शन करावेगो ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि अत्यंत उत्कंठा भरी, चित्त कि वृत्तिवारी वा रसभरी सुंदरीन के या प्रकार सूं कहत ही वे श्रेष्ठ भक्त हू विनकूं बहुत वार प्रणाम करके

विज्ञापना करके अपने घरन में जाय है ।। कि वहां जायके श्रीमद् गोकुल में चलवे लिये तैयार होवे है ।।६०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे बीसमो स्तरंगः ।।२०।।

तरंग ।।२१।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ एकबीसमो तरंग लिख्यते ।।२१।।

श्लोक -- **ततो रस सरोजाक्ष्यः पूर्वमेव तथा प्रीयार्थ**
खलु संगप्ताधावधि स्थापित बत ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहे हैं --, कि तब वे रस भरी कमल लोचना सुंदरी प्रथम ही आजदिन पर्यंत प्राणनाथजी के लिये जो जो वस्तु संग्रह करके राखी ही सो सो वस्तु ले लेके वेग ही तैयार होय जाय है ।। तामें नीमा, जामो, के उपयोगी अत्यंत कोमल तारवारो जे बहुत महंगे सुंदर अनेक प्रकार के वस्त्र है, कि शय्याजी के ऊपर बिछायवे में उपयोगी जे मनोहर चरण गाम के बास्ता नाम के वस्त्र है, कि वैसे अनेक प्रकार के अत्यंत उत्तम जे कमर पटका है, कि तथा रूईदार नीमा डगलादि, उपयोगी जे मनोहर वस्त्र है, कि तथा कमर पटकान के उपयोगी जे वस्त्र है, कि अद्भुत सुंदर मुड़बंधा, कि अनेक प्रकार की सोनारूपा तार के उत्तम जरी के जे पाग है, कि वस्त्र है दूर परदेश को जो लाल कोमल स्पर्श वारो बड़ो मोलवारो मखमल है, कि पुर्तगाल नाम देशांतर में सिद्ध भयो जो रोमवारो वस्त्र, सकलात नाम को है ।। कि और हू सुंदर वस्तु है ।। कि प्राणनाथ जी की मुख्य प्रिया श्री पार्वती बहुजी के पहिरवे योग्य जे मनोहर नारी कुंजर नाम को वस्त्र है, कि प्रभुन के मन को प्रसन्न करवे वारो सुखदायक जे वैसे दिव्य अमूल्य वस्त्र है, कि अनेक रंगवारी अंगियान के समूह है ।। कि अनेक प्रकार के छोटे लेहंगान के जे समूह हैं -- कि पुस्तकन के जे अनेक प्रकार के सुंदर चित्रन सूं अद्भुत बंधन वस्त्र हैं तथा सोनाजरी, कि रूपा जरी की जे अनेक प्रकार की पिछवाई हैं, कि तथा अनेक प्रकार के सुंदर चित्रन सूं मिली सोना की रूपा, की चौकीन के जे समूह है, कि विनके जे अनेक प्रकार के सुंदर चित्रवारे

वस्त्र है, कि अनेक प्रकार के जे भूषण है ।। कुंड्ल युगल है, कि अमुल्य रत्नन सूं शोभा भरी मुद्रिकान के जे समूह है ।। प्रकोष्ट के जे दिव्य भूषण हाथ सांकलादि है, कि सोना माणिक मोती आदि की मालान के जे सुंदर समूह है, कि सांकल नाना प्रकार की, कि धुकधुकीन के समूह कि सुंदर मनोहर मणिन सूं जटित अनेक प्रकार की सोना के पदक और सुंदर कोमल पनहीन के समूह, कि सुंदर अनेक प्रकार के चमकने चित्रन सूं चित्त कूं हरवे वारे मांखी के निवारण करवे के वस्त्र, कि बड़े उत्तम मुख वस्त्र, तथा चरण पोंछवे के वस्त्र, के और हू सुंदर अनेक वस्तु सगरी लेकर उत्कंठा सूं अत्यंत भरी वे तैयार होय जाय है ।। इनके जे पति हैं वे हु प्राणप्रिय के अर्थ पहले सूं लेकर आज दिन लो जे जे वस्त्र, कि भूषण, वैसे वैसे वे वे अद्‌भुत अनेक प्रकार के संग्रह किये हैं -- वा सबन को सजावे हैं ।।२०।। कि सुंदर जाति के जे वेग सुख सों चलवे वारे श्रेष्ठ लक्षणवारे घोड़ा हैं, कि सुंदर घोड़ावारे रथ हैं, कि मनोहर बैलवारे रथ हैं, कि अनेक प्रकार के बड़े मोलवारे जो वा रथ गाड़ीन के सुंदर साज हैं, अपने लिये जे संचय किये साज हैं, कि वैसे अनेक प्रकार की गाड़ी हैं, कि बहुत वेग चलवेवारे श्रेष्ठ बैल हैं, कि बहुत भार के उठायवे वारे अत्यंत गुण वारे बड़े मोटे सुंदर, कि प्रतिदिन दोहरी, कि तिहारी मजल चलवे में समर्थ हैं ।। जिनकूं गुड़, दूध, घी, मधु आदि दे देके अत्यंत पालन कियो है ऐसे जे प्रबल बैल हैं ।।२४।। अनेक प्रकार की जे पालखी हैं, के जे उठायवे वारे मनोहर कहार हैं, कि और जे मनोहर डेरा तंबु हैं ।।२५।। कि अनेक प्रकार के चंदवा हैं, कि मनोहर बड़े बड़े वस्त्रन के घर हैं, कि अनेक प्रकार के जे पात्र हैं, कि पकवान हैं, कि वस्त्र हैं अनेक प्रकार के जे साज हैं वाकूं वहां वहां वैसे वैसे यथा योग्य सजाय के फिर श्री महाप्रभुजी ने अपने श्री पादुकाजी आदि जा भाग्यवान को सेवा करवे लिये दान किये हैं याके घर में यह भाग्यवान भक्त न्हाय के मनोहर सुंदर धोती कि बड़े मोलवारी रेशमी धोती को पहिर के जाय हैं ।। अत्यंत बढ़ रही भक्तिसूं वहां प्रभुन के आगे दंड्वत प्रणाम करें हैं ।। फिर चरण स्पर्श करके श्रीमद् गोकुल में निर्विघ्नता पूर्वक जानो, कि विना यत्न के श्री मुखारविंद के दर्शन की प्राप्ति को मागे हैं ।। फिर साष्टांग प्रणाम करके फिर वा मंदिर सूं बाहिर आवे हैं ।। वस्त्रन कूं पहिर के इहां ठहर रहे अपने स्वजनन को

प्रणाम करके यात्रा लिये आज्ञा मांगे हैं ॥ वे स्वजन जन हू विनके मंगल की अभिलाषा वारे हैं ॥ तासूं अत्यंत सुंदर आसन पर विनको बैठाय के प्रसाद दही लिवाय के आचमन हाथ खासा करके ठहरे विनको आज्ञा करें हैं, कि भले मंगल पूर्वक जाओ ॥ फिर रस सौभाग्य वारी अपनी कमल लोचना स्त्रीजन द्वारा कुंमकुम आदि सूं मिले पात्र को मंगवाय के विनके मस्तक पर कुंकुम को शोभायमान चर्णामृत कि अधरामृत सो मिल्यो सुंदर बीड़ा हू देवे हैं ॥ कि महाप्रसाद पकवान, कि तुलसी माला, कि गुंजाहार, कि सोना को अद्‌भुत पवित्रा कि पटुको पवित्रा, कि सुंदर सुगंधी भरी फूलमाला, बीड़ा हू दिवायके विनके हाथ में श्री प्राणनाथजी के लिये मनोहर सो सो भेट हू धरें हैं ॥ इनके आगे दंड्वत प्रणाम करें हैं ॥ कि इनके आगे अत्यंत उदास हृदय होयके वैसे वैसे विज्ञापना हू करें हैं ॥ ऐसे विचारे हू है, कि अहो यह तो बड़े ही बड़भागी जनन में श्रेष्ठ है, कि प्राणनाथ जी की कृपा सों भरे ही है ॥ जासूं यह तो श्रीमद् गोकुल में जायके श्री प्राणनाथ के शोभायमान श्री मुखारविंद को, नयन कमल सों इच्छानुसार ही पान करेंगे ॥ अत्यंत दुर्बुध्दि हम तो दुःख तरवे योग्य संसाररूप अगाध महाकीच में डूब रहे हैं ॥ या प्रकार सूं ही विचारके आंसुन की धारान सूं भूतल को जलसूं भरत कछुक हू कर नही सके हैं ॥ कि कछु कहवे में हू समर्थ नहीं होय है ॥ यह श्रेष्ठ भाग्यवारे भक्त तो, श्री गोकुल यात्रा के अधिक उत्साह संबंधी हर्षसूं भीतर भरे हू है ॥ तोहू इनके उछल रहे बड़े दुःख को विचार के करुणा स्नेह रससूं अत्यंत ही आर्द्र होयके रुदन हू करें हैं ॥ वैसे वैसे वे वे वचन कहे कर विनको समाधान हू करें हैं ॥ कि हमारे भगवान प्राण वल्लभ महाप्रभु जी बड़े कृपासिंधु है ॥ सर्वज्ञ हैं ॥ आप सबन के मनोरथ को हू वेग ही पूरण करेंगे ॥४५॥ आपतो बड़े महात्मा हैं, आप सबन की हमारे ऊपर होय रही कृपा को विचार के जो श्री गोकुल चंद्रमा हमारे मनोरथ को ऐसे पूरण कर रहयो है तो आपके वा मनोरथ के पूरण करवे लिये विलंब करेगो का, किंतु कबहु बिलंव नहीं करेंगे ॥ सो अत्यंत उदास मत हूजीये इत्यादि वचन हू कहे हैं ॥ यह भक्त, कि वे भक्तवर आपस में आलिंगन करें हैं ॥ कि प्रणाम हू करें हैं ॥ या रीति सूं इनके घर की स्त्री जन हू आयके इनकी, कि इनके सेवक दासन की, कि इनकी स्त्रीन की, कि विनके हू संग जायवे वारी सब स्त्रीन की हू अत्यंत

सराहना करें हैं ॥४९॥ या प्रकार सूं यह श्रेष्ठ भाग्यवारे भक्तजन आज्ञा लेवे लिये और भक्तन के घर में हू जाय हैं ॥ वैसे वेहू विनकूं वैसे ही आज्ञा देवे है ॥५०॥ प्रायः सगरे ही भक्तजन उछलित प्रेम सूं या श्रीमद् गोकुल में जायवे वारे भाग्यवारेन के संग ही चले हैं ॥५१॥ ऐसे इन भाग्यवानों के प्रस्थान करवे पर उछलित प्रेम सूं प्रेरणा किये और भक्तजन हू वेग ही तब सब सजाय के वेहू संग चल पड़े हैं ॥५२॥ तथा श्रीमद् गोकुल यात्रा के उत्साह को जे बढायवे वारे प्रथम कहे श्रेष्ठ भावी भक्त वे हू आयके विनको मिले है ॥५३॥ इनकी जे हरिण लोचना सुंदरी है जे प्रथम वर्णन किये प्रेम सूं प्रकाश भरी है ॥ कि जिनको प्राणनाथ के भाव ने दृढ आलिंगन कर राख्यो है ॥ ऐसे भाव सूं जे सर्वोपर विराज रही है ॥५४॥ हर्ष सूं प्रफुल्लित रोमावली वारी वे सुंदरी हू, सखी गणन के संग ही, बढ रहे उत्साह सूं शोभायमान होयके अपने पतिन सूं वैसे वैसे आगे करी ही आगे चल रही हैं ॥ वें श्रेष्ठ राजसी भक्त तो निर्दोष सुंदर मुहूर्त में शुभ प्रस्थान को करके अपने नगर के बाहिर पास ही डेरा तंबू लगायके वाकी कार्य की सिद्धि लिये सबन के संग ही दोय कि तीन दिन इहां रहे हैं ॥५५॥ वामें अपनी तथा सब संबंधीन की रक्षा के अर्थ शस्त्र अस्त्र सूं मिले चतुर शूर बहुत ही पहेरेदारन को संग्रह करें हैं ॥ या प्रस्थान के डेरा में प्राणनाथजी की, श्री गोकुल में जाय रहे या भक्तन की बढी भक्ति सूं विदा करवे लिये वा देश के वासी स्त्री कि पुरुष हैं जे वा वा प्रकार के भावन सूं शोभायमान है ॥ ऐसे अनेक प्रकार के अनंत भक्त ही आवे है ॥ जासूं वे ऐसे विचारें हैं, कि यह धन्य है ॥ कि वा श्री प्राणनाथजी महाप्रभुजी की श्रीमद् गोकुल में कलत्र वेटी, बेटादि परिवार सहित ही जाय रहे हैं, कि वहां वा श्री महाप्रभुजी के श्री मुखारविंद को दर्शन को इच्छानुसार ही प्राप्त होयगे ॥ सो प्राणनाथजी हू अपने वचनामृत समूहन को हू इनको पान करावेगे, कि प्राणनाथजी दुर्बुद्धि हम सरीखेन को, जाको लवलेश हू दुर्ल्लभ है ऐसो वा वा मनोहर सुखन को ही विनके अति स्नेह पूर्वक ही देवेगे ॥ या प्रकार के विचार सूं उछलित होय रहे दीन भाव सूं भरे स्वरूप वारे वे स्त्री पुरुष जन चिरपर्यंत ही अपने को धिक्कार करत ही रुदन हू करत, ही धैर्य के दूर होयवे सूं भक्तन के, कि प्राणनाथ जी के संताप सागर में मग्न होवत ही वा यात्रावारे भक्तन के मंगल की चाहना करत ही विनके,

हाथन में श्री फल धरें हैं ।। कितने तो सोना की मोहोर हू धरें हैं और कितने तो रुपा, कि मोहरे हू धरें हैं ।। कि कितने वस्त्रन को, कि और तो और और हू धरें हैं ऐसे वे आवे हैं ।। विनको चाहना सूं निरखे है ।। कि प्रणाम हू करें हैं ।। कि कछुक समय इहां ठहरे हू हैं ।। ऐसे जो विनके लिये ले आये हते सो सो देके, कि श्री गोकुलेश प्राणनाथजी के लिये जो निर्दोष सो सो भेट आदि ले आये हैं सो सो हू विनको देके प्रणाम करके यों विज्ञापना हू करें हैं ।। कि कृपा सागर तुम सब हमारी ओर सूं प्रणाम करके हमारी भेटादि हू अर्पण करके वा रीति सूं विज्ञापना विनती हमारे लिये हू करोगे, कि जा रीति सूं प्रसन्न होयके श्री प्राणनाथ जी हमको हू कृपासूं अपनो सुंदर श्रीवदन पूर्ण चंद्रमा को दर्शन करावेगे ।। ऐसे विनको विज्ञापना करके प्रणाम हू करके विनसूं हू प्रणाम किये, कि गले हू लगाये वे सब बहुतवार विनको आलिंगन करके समाधान हू करके नैन सूं नीर वरसावत ही वेसे मनोहर यात्रा रूप हर्ष में हू नैनन सूं नीर वरषा रहे वा यात्रावारे भक्तन सूं दीन होयके अपने घरन में ठहरवे के लिये विनकी आज्ञा मागे हैं ।। तब वे यात्रा वारे हू राजसी भक्त अपने सजे गाड़ी घोड़ा ऊंट पालखीन को अपने सूं आगे ही रवाना करके अपने प्यारे संग आय रहे भक्त समुहन के संग वार्ता करत ही दोय, कि तीन कोश तो पावन सूं ही चलते चले है ।। फिर कछु ठहर के विनको प्रणाम करके विदा करें हैं ।। विनसूं प्रणाम करके आज्ञा किये वे भाग्यवारे राजसी भक्त अपनी अपनी सवारीन पर चढ़के विनको पीछे देखत ही इहां सूं चल पड़े हैं ।। अहो यह श्री गोकुल प्रति चल रहे या भक्त समूह सूं उछलित होय रही श्री प्राणनाथजी के सुंदर श्रीमुख चंद्रमा के निरखवे की इच्छा सूं प्रेरणा किये कितनेक और भक्त हू पहले अपने पिता, भ्राता कि संबंधीन को न जतायके हू वेग ही निकसके ही विनके संग ही जाय है ।। वे नगर निवासी स्त्री पुरुष भक्तजन तो जाय रहे वा बड़भागी भक्तन को निरखत ही वहां बांधे जैसे ही ठहर जाय है ।। फिर विनकी गाड़ी आदि सूं उछल रही रजको निरखत ही कछुक समय वहां ठहरें हैं ।। जब सो रज हू नजर नही आवे है तब तो विनको अनेकवार प्रणाम करके श्वासन को भरत ही अत्यंत उदास हृदयवारे होयके फिर पीछे घरन में आवे है ।।८१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे एकवीश स्तरंगः ।।२१।।

तरंग ॥२२॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ द्वावीशः तरंग लिख्यते ॥२२॥

श्लोक -- **अथै ते प्रथमे हंतदिवसे कुर्धते खिलांः**
एकं सार्दयोजनं वागत्वैवाव स्थितिं मुदा ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं -- पहले दिन तो यह यात्री सगरे चार कोश के छे कोश चलके हर्ष सूं डेरा करें हैं ॥१॥ आगे और और दिनन में तो दश कोश की बारह कोश, कि पंद्रह, कि पच्चीस कोशहू चलके डेरा करें हैं ॥२॥ मार्गे संबंधी छोटे के बड़े पुर में जहां प्रभु के भक्त रहते होंय, वामें निवास करें हैं ॥ वे भक्त हू वा आय रहे भक्तन को सुनके रथ कि घोड़ा, कि गाड़ा, कि पालखीन पर सवार होयके अथवा प्रेम सूं चरणन सूं चलके ही चारों ओर सूं आगे आवे है ॥४॥ अपने जनन सूं शीतल जल सूं भरे कलशा उठवाय लावे है ॥ कि सुंदर बरास स्वच्छ मिसरी के श्रेष्ठ पणा के कलशा हू उठवाय के लावे है ॥ श्रेष्ठ मिसरी, कि धृत सूं स्वयं पणा के कलशा हू उठाय के लावे है ॥ श्रेष्ठ मिसरी की धृत सूं स्वयं सिद्ध किये अनेक प्रकार के मनोहर कोमल महाप्रसाद पकवान हू स्वयं लावे है ॥ कि पान वीड़ान के समूह, कि वैसे और और हू योग्य वस्तु लावे है ॥ अपने सन्मुख आय रहे इनको जानके वे भाग्यवान हू अपनी असवारीन सूं उतरके हर्ष सूं जायके प्रणाम कर रहे विनको प्रणाम करें हैं ॥ कि उछलित चिर पर्यंत दृढ़ आलिंगन हू करें हैं ॥८॥ वहां बैठके वे सगरे आपस में कुशल पूछे है ॥ कि श्री प्राणनाथ के कुशल वार्ता को हू अत्यंत विस्तार सू करें हैं ॥९॥ वे भाग्यवान जो श्रेष्ठ ठंडो जल, कि पणा आदि ले आये हते विनकूं वे सगरे ही प्रेम सूं लेवे है ॥ फिर अपनी-अपनी सवारी पर सवार होयके विनके गाम पर्यंत सुख सूं चले है ॥ फिर सब मिलके विनके गाम में प्रवेश करें हैं ॥ फिर वारंवार जो अत्यंत नम्र होयके प्रार्थना कर रहयो है ॥ ऐसे वा प्रेमवारे मुख्य भक्त के घर ही हर्षसूं जायके ठहरें हैं ॥१२॥ वहां वेग सूं ही बहुत प्रकार सूं पाक आदि सूं सिद्ध रसोई, दार भात आदि कि शाक दही दूध आदि खीर महाप्रसाद को लेवे है ॥ हर्ष सूं वा प्राणनाथ के गुणानुवादन कर रहे हैं ॥ कि वाकु गान करत ही, कि वा जगत्पती श्री महाप्रभुजी की

स्तुति करत ही एक, कि दोय दिन विनकी प्रार्थना सूं, कि वा संग के प्रति लोभ सूं इहां निवास करें हैं ॥ फिर इहां सूं चले है ॥ इन भाग्यवानो के चलन में और हू कितने अत्यंत श्रेष्ठ भक्त श्री प्राणनाथजी के मनोहर श्री मुख चंद्रमा के दर्शन की अत्यंत उछल रही इच्छा सूं प्रेरणा किये वेगा वेगी सब साज करके स्त्री, पुत्र, बेटा, बेटी, बेटा की बहू सबन के संग चले है ॥ इहां ठहरवे वारे भक्तजन तो प्रेम सूं अत्यंत बहुत उत्तम पकवान महाप्रसाद लेके चार कि पांच कोश प्रेम सूं भरे होयके चले है ॥ तब विनके परिश्रम को सहन करवे में असमर्थ होय रहे विनसो विदा किये वे भक्त विनको प्रणाम करके महाप्रभुन को महाप्रसाद विनको देके, विनसो प्रणाम किये वे भक्तजन स्वयं नयनन सो नीर वरसावत कि वैसे विनको गले लगाय के दीन होयके बहुत यत्न सूं ही निवर्त होय है ॥ श्री महाप्रभुजी के अर्थ वा भक्तन ने दिये वा वा भेट आदि को भली भांति सो ले के इहां सूं उतावल सूं ही आगे चले है ॥ गरमी के दिनन में तो सावधान होयके यह भाग्यवान रात्रि में ही प्रायः चले है ॥ दिन में हू पहले पहर पर्यंत ही चले है ॥ फिर अत्यंत मनोहर स्थल जहां देखे है, जामें सुंदर शीतल तलाब होय, कि जो नदी सूं शोभायमान होय, कि जो बावली सूं शोभायमान होय, कि मीठे पानी वारे कुवा सूं शोभायमान होय के जामें वांछित अनेक वृक्षन की छाया होय वा स्थल में सब रहे हैं ॥ वहां वेगा वेगी अपनो अपनो न्यारो सुंदर डेरा बनाय के पवित्र मनोहर सिद्ध किये रसोई घर में स्नान करके सुंदर शुद्ध धोये अपरस के वस्त्र पहिर के न्यारे न्यारे प्रकार सूं सुंदर रसोई सिद्ध करके अपने घर में जैसे करें हैं वैसे सेव्य स्वरूप की सेवा करके श्री महाप्रभुन के प्रसाद को लेवे है, जे कलत्र परिवार सहित चल रहे हैं वे अत्यंत श्रेष्ठ भक्त जे अकेले चल रहे हैं विनको भोजन के लिये अवश्य ही बुलावे है ॥ विनके ऐसे करत में ड़ेढ पहर दिन गुजर जाय है ॥ फिर वे सगरे भाग्यवान विश्राम करें हैं ॥ वैसे घोड़ा बैल कि ऊंट वे सगरे ही घास आदि खायके, अब सुखी होयके सुखसो बैठ गये है ॥ ऐसे पहर भर विश्राम करके फिर तैयार होयके अपनी-अपनी सवारी पर सवार होयके अत्यंत शोभा सूं इहां सूं चले है ॥ पांच, कि सात कोश चले है ॥ जब संध्या को समय होय है वा समय में वनके फूलन को सुगंधी के हरवे में सावधान अत्यंत शीतल मंद सुखदायक पवन चल रहयो

है ।।३२।। तव अपनी अपनी सवारी सूं स्त्री कि पुरुष हू उतरके पावन सूं ही चले है ।। मिलके प्रभुन की वा वा लीला को प्रकाश करवे वारे गीतन को गान करें हैं ।।३३।। तव श्री महाप्रभुजी के भक्तन को अत्यंत आनंदित करवे लिये प्रसर रही चांदनी सूं उछल रहे उत्साह सागर के कल्लोलन सूं प्रेरणा किये वे सगरे भक्त श्री प्राणनाथ जी के आवेश सूं सुंदर प्रकाश भरे होवत कहू रमणीक स्थल को देखके दोय घड़ी की वासूं हू अधिक वहां ठहेर के गान करें हैं ।। हींच नाच करें हैं ।। वैसे उछलित प्रेम पूर्वक मिसरी आदि की बांट बूटी आदि और और हू करें हैं ।।३६।। भक्तन के भाव के वश सुंदरवर पुरुषोत्तमन के मुकुटमणि श्री महाप्रभुजी हू उछल रहे हजारन, रससागरन सूं शोभायमान होयके या भक्तन को आद्र करत कि शीतल करत, कि पूर्ण करत, कि शोभायमान करत ही वा भक्तन के हृदयों में, कि नयनों में प्रगट होय है ।। या समय, कि इन भक्तन, कि सो दशा वचन रूप समुद्र के पार विराजमान अपने अनुभवरूप भवन में सदा विराजमान होवत ही या रीति सूं रंच मात्र हू हमकूं स्पर्श करके अद्भुत ही कृतार्थ कर देवे है ।। या प्रकार सूं सुंदर वे भक्त समाज पांच, कि सात कोश प्रस्थान करके आगे निकट आये कहु उत्तम गाम में, कि स्थान में चार घड़ी रात्रि के गुजरने पर उतर के रहे हैं ।। न्यारे-न्यारे अपने डेरा सुखसूं सिद्ध कर लेवे है ।। तामें भगवान श्री गोकुल प्रभु के रस सागर में निमग्न है हृदय आदि जिनके, ऐसी चंद्रवदना जनन के संग, कि अपने हू गणन के संग मिलके उछलित भावसूं प्रकाश भरे अत्यंत प्यारे श्री राजको अनेक प्रकार सूं गान करें हैं ।।४३।। या समय में हू आवश्यक श्री प्राणनाथजी के यथा योग्य सेवा को करके श्रेष्ठ भक्त स्त्री पुरुषन सूं मिलके अनेक प्रकार के उत्तम महाप्रसाद को विनकू लिवावत विनकी आज्ञा सूं उछल रहे हर्षवारे वे भक्तवर स्वयं हू प्रसाद लेवे है ।।४५।। फिर चार मुहूर्त, कि पांच मुहूर्त, पहर, सवा पहर श्रम को मिटायवे वारी निद्रा को हू वे रससागर भक्तवर करें हैं ।। फिर डेढ प्रहर रात्री रहे पर, हर्ष सूं भरे वे सगरे प्रस्थान करें हैं ।। दिन के प्रहर, कि डेढ प्रहर चलके फिर डेरा करें है ।। या प्रकार यह उत्साह सू भरे भक्तवर मार्ग में ऐसे चले है तामें पल-पल में उछल रहे अनेक प्रकार के भजनानंद के सागरन में निमग्न होवत ही मार्ग को जाने हू नहीं है ।। वैसे अपने घर ही जाने है ।। कि वासूं ही

अधिकी माने है ।। जासूं अत्यंत दुर्ल्लभ जो प्रियवर के अनंत भक्त है विनके संग सूं सब आनंदित है ।। तासूं परदेश प्रतीत हू नहीं होय है ।। तथा मार्ग में जैसे कोई को रंचहू क्लेश न होय वैसे ही वे सगरे भक्तवर अत्यंत सावधान होयके चले है ।। तथा प्रियवर प्रभुजी ने एकादशी व्रत को आदर कियो है तासूं वे बड़भागी भक्तवर मार्ग में हू होय तासूं थके हू होये तोहू एकादशी व्रत को कबहु नहीं छांड़े है ।। तथा मार्ग में हू यह भाग्यवान स्नान कि सगरे आचार, कि श्री महाप्रभुजी की जो सेवा घर में जैसे करें हैं वैसे ही करें हैं ।। कबहू हीन नहीं करें हैं ।।५३।। तामें शीतकाल में, कि वर्षाकाल में यह भाग्यवान भक्तवर दिन में ही चले है ।। जैसे इन भक्ति भरेन को शीत हू वाधा न करे, कि वर्षा हू बाधा न करे ।।५४।। जैसे जैसे श्री प्राणनाथ जी को वैसे श्रीमद् गोकुल निकट आवे है, वैसे वैसे ही या भाग्यवान को आनंद समुद्र, कि उत्साह को सागर हू बढ़ जाय है ।।५५।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे द्वावीश स्तरंगः ।।२२।।

तरंग ।।२३।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ त्रयोवीशः तरंग लिख्यते ।।२३।।

श्लोक -- **श्रीमत्यो रस लीलाक्ष्यस्तथा विरह विक्लवाः**
ताः कदाचित्प्रभोदाब्धौ कदाचित्तापनीरधौ ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, **कि प्राणनाथजी के विरहसूं व्याकुल वे रस चंचल लोचना श्रीमती सुंदरी कबहु हर्ष सागर में, कि कबहु ता ताप सागर में, कि कबहु चिंता सागर में अत्यंत डूबत ही स्वयं, कि औरन के द्वारा अपने पतिन को उतावल करावत ही सदैव और संगिन को हू वैसे वैसे वा वा वहाना सूं उतावल करावत ही, कि अपने भाव को छिपावन में हू सावधान होयके ही ऐसे चल रही है ।। ऐसे उछल रही या श्रीमद् गोकुल यात्रा में जे उत्साह के बढ़ायवे वारे भक्त प्रथम कहे हैं ।।४।। विनके पठाये प्रथम कहे अनेक प्रकार के लेखन सूं श्री राजके निकटवासी भक्त जन वा भाग्यवतीन के पधारवे को सुनके उछलित हर्षवारे होयके एकांत में उत्कंठा भरे प्राणनाथजी को सो विज्ञापना करें हैं ।। कि वा लेखन को हू दिखावे**

है ।। कि वा वा वृत्तांत को हू सुनावे है ।। श्री प्राणनाथजी तो अत्यंत प्रसन्न ही मुखारविंद होयके वा वा हर्षादि को मंद मुसकान सूं कहे रहे मंद हास्य सूं या निकट निवासी भक्तन को समाधान करें हैं ।।७।। कृपा रसके सागर श्री प्राणप्रिय जी वहां पठायवे लिये प्रेम सूं वा भक्तन के हस्त कमल में दिये पत्रन सूं वा भक्तन को, कि या भक्त सुंदरीन को हू अत्यंत समाधान करें हैं ।।८।। वे श्रीमती सुंदरी हू वैसे वैसे मनोहर पत्र लाभ, के हर्ष समूह सूं, पुष्ट होय रही जो श्री गोकुल में अपनी यात्रा है, सो श्री प्राणनाथ जी के यत्न सूं ही भयी है यह जानके तब तब कल्लोलन की पंक्तिन सूं शोभायमान उछल रहे हर्ष के वा वा सागर में अत्यंत ही निमग्न होय जाय है ।। कि आवर्त, कि भ्रमर समूह सूं पुष्ट होय रहे उत्कंठा के सुंदर वड़े सागर में निमग्न होय जाय है ।। वहां वहां बहुत प्रकार के विज्ञापना पत्रन को लिखके एकांत में प्राणप्रिय के पास, कि अपने मिलापी भक्तन के पास हू पठावे है ।।११।। सो श्रीमती सुंदरीन को लेख हू श्रीमद् गोकुल में जायके वहां के वासी वा श्रेष्ठ भक्तन को आनंदित करके प्रियवर श्री महाप्रभुजी को अत्यंत प्रसन्न करें हैं ।। या प्रिय को अत्यंत उत्कंठा वारो हू करें हैं ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि या रीत सूं प्राणप्रियजी की अत्यंत प्रियाजन यह मार्ग में बहुत बार स्वप्न में जो देखे है सो यह कछुक हों वर्णन करू हूं ।। वे व्रज सुंदरी श्रीमद् गोकुल में जायके दिनके चौथे प्रहर में विश्राम करके प्रियवरजी उठे है ।। अपने बड़े तकियावारे आसन आदि पर विराजमान है ।। अथवा और हू सुंदर समे में श्री प्राणनाथजी को निरखे है ।। प्रणाम हू करें हैं ।। श्री प्राणनाथजी हू प्रसन्न होयके मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्री मुखारविंद सो वा सुंदरीन सो वा वा वृत्तांत को चाहना पूर्वक पूछे है ।। वा सुंदरीन के जे जे मनोरथ पहले उदय भये हते वे क्रम सूं सगरे ही श्री प्राणनाथ जी द्वारा अत्यंत पूर्ण होय जाय है ।। इत्यादि प्रकार को जे वे भाग्यवती सुंदरी स्वप्न में अनुभव करके जागे है तब तो अत्यंत ही बढ़ रहे विरह अग्नि सूं जर जाय हैं ।। कि धैर्य नष्ट होय जाय है -- अत्यंत ही दुःखी होय हैं ।।१८।। पास रहवेवारी अपनी सहचरी को सो सब सुनावे है ।। तब वे सखीजन हू या प्रकार सूं धैर्य देवे हैं ।। कि श्री प्रियजी की श्रीमद् गोकुल अवतो निकट ही आय रही है ।। तुम ऐसे काहे को उदास होवो हो ।। धैर्य करिये -- रस सागर श्री

प्राणनाथ प्रियवरजी स्वप्न में जैसे तिहारे सगरे ही मनोरथन को पूरण करेंगे ही -- ऐसे धैर्य देवे हैं ॥ ऐसे धैर्य देवे पर हू वा सुंदरीन में तो उत्कंठा समूह सो प्रकाशवारो सो ताप अत्यंत ही बढ़ जाय है ॥ तब वे सुंदरी गण बड़े श्वासन को भर भर के अत्यंत ही उदास हृदय होयके वा अपनी सखी कूं कहे हैं, कि तुम तो कहो हो, कि श्री प्राणप्रिय को श्रीमद् गोकुल निकट आय गयो है ॥ प्रिय हौं तो अत्यंत ही उत्कंठावारी हूं, कि उदास हूं मैं अपने हृदय में सत्य ही जानूं हूं, कि श्री गोकुल तो अत्यंत ही दूर हो तो जाय है ॥ कि त्रुटि मात्र को हू युगरूप ही कर रहयो है ॥ सो अब मैं का करूँ, कि कहां जावुं या प्रकार सूं वे सुंदरी कहे रही हैं ॥ कि वैसे वैसे क्लेश को हू प्राप्त होय रही है ॥ विनके प्राणन की रक्षा कों सो प्यारी सखी ही प्राणनाथ के गुणगान सो बड़े यत्न सो ही करें हैं, कि वैसे वा समय में वा मनोहर प्राणप्रिय ने पठायो जो एकांत में धैर्य देवेवारो पत्र है सो हू प्राणप्रिय को उत्कंठा समुद्रन को कहत ही वा समय में ही हस्त कमल में आयके वा प्रियागणन के प्राणन की रक्षा को करें हैं ॥२८॥ **जैसे जैसे श्रीमद् गोकुल निकट आवे है वैसे वैसे या भाग्यभरी सुंदरीन के हृदय में रस सागर के अत्यंत ही मनोहर मनोरथ प्रगट होय है ॥ कि भाव भेद के अनेक ही सागर उछले है ॥** वेसे चिंता, कि उत्कंठा के सागर, कि अत्यंत ही दुस्तर, कि दुःख सूं तरवे योग्य तर्क वितर्क हू वे वे अनेक ही उछले है ॥ उत्कंठा भरे मनसूं यह सुंदरी गण यों भावना, कि विचार करत ही चले है ॥ कि श्री महाप्रभुन को लेख पत्र लायवेवारो कोई वैष्णव, कि भक्त, कि सेवक वा श्रीमद् गोकुल सो आय रहयो होय ॥३२॥ हम वासु वा प्राण प्रिय के वा वा वृत्तांत समाचार को पूछे-सोहू वैसे है, कि जैसे हमारो हृदय चाहना करें हैं ॥ या प्रकार विचार करत चले है ॥ कबहु या भक्त को निरखे है ॥ तो अपनी असवारी सूं हू वेग ही उतर के अत्यंत उदास वे सुंदरी कोई बहानासूं एकांत में जायके यह का कहेगो -- ऐसे मनमें संशय करत ही वे बड़े आदर सूं वासूं पूछे हैं ॥३५॥ कि ''अये भद्र, भले पुरुष तुम कहा श्रीमद् गोकुल सो आय रहे हो'' -- यह सुनके सोहू कहे हैं, कि ''हां हां सत्य है वहां सूं ही आवु हूं'' तब वे पूछे है, कि ''अये भले पुरुष वहां को समाचार तुम जानो हो का'' सो कहे हैं, कि सब जानू हूं ॥ वहां अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारी लीलान

सूं भक्तन को सुखदान करत साक्षात मनमथ के हू मनमथ महा सुंदरवर श्री गोकुलनाथजी अत्यंत शोभायमान होय रहे हैं ॥ वाके भक्त हू सदा उछल रहे हैं ॥ लावण्य पराग के सागर जासूं उछले है ऐसे प्रियवर के श्रीमुख कमल को लोचनन सूं पान कर रहे हैं ॥'' या प्रकार यह सुनके अमृत समुद्र में डूबने को अनुभव करके प्रफुल्ल वदन चंद्रवारी होयके फिर वासूं पूछे है, कि ''अये भद्र भले पुरुष हमारो सो सुंदरवर, गुण सागर सबन को प्यारो कृपासिंधु ईश्वर सुंदर कमल नयन पूर्ण चंद्रमा समूह की शोभा को हरवे वारो, जाको श्रीमुख है ऐसो श्री गोकुल वल्लभ प्रभु तुमने अपने नयनन सूं देख्यो है का'' ॥ यह सुनके प्रसन्न वदन होयके यह कहै है, कि ''तुम प्रतीत नहीं करो हो, कि मैंने तो अपने ही नयनन सो ही चिरपर्यंत ही सो मुसकान, सों शोभायमान श्रीमुख कमलवारो, प्रसन्न मनवारो, सो प्यारो, सुंदर अपने पुष्ट स्वरूप सूं अपने भक्तन को आनंदित करत ही निरख्यो है ॥ वा श्री महाप्रभुजी के आगे होय रही वार्ता हू मैंने सुनी है ॥ कि वा प्राणप्रिय के भक्त तुम सबन को साथ वेग आयवेवारो है -- ''यह सुन्यो हू सुन्यो है ॥ तुमारे लिये अत्यंत उत्कंठा भर्यो सो प्यारो तुमारी वाट देख रहयो है ॥ सो तुम बड़े भाग्यनवारी हो, सो वेग ही उतावल करो, कि वेग ही जावो'' ऐसे वाके वचन को सुनके ऐसे वा भक्त ने प्रिय के वृत्तांत कहेवे सूं वधायो है सो वा वधायी को पियके प्रसन्न होयके वाके चरणन में सिर को धरके प्रणाम करें हैं, कि वस्त्र आभरण, कि सो सो द्रव्य हू याके प्रति देवे है ॥ वाकूं प्रेम सूं प्रार्थना करें हैं ॥ कि ''अये भद्र भले पुरुष आज तो प्राणप्रिय की कथा सूं हमारे मन को सुखी करत हमारे ही संग चलो अपने स्थान में तो जानो है सो पीछे ही जानो ॥ हम महाप्रभुजी के वा वा मंगलरूप वृत्तांत को पूछनो चाहे हैं'' ऐसे दीनता प्यार के वचन विशेषन सूं वाकूं अपने गाड़ा में चढ़ाय के अपने पास ही बैठाय के श्री महाप्रभुजी के वा वा वृत्तांत को प्रेम सूं पूछे हैं ॥ अत्यंत उत्साही कानो सूं वाकूं वहां तक पान हू करें हैं ॥ कि जहां सूधी अपनो साथ वांछित डेरा में जायके ठेहरें हैं, कि सब कोऊ अपनो अपनो डेरा तंबु लगावें हैं पीछे यह बड़ भागिन अपने गाड़ा सूं उतर के बड़ो उछव करें हैं ॥ बड़े उत्साह सूं भरी यह नाचे है, कि गान करें हैं ॥ फिर अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य लेहय चूष्य पेय सखरी अन सखरी पकवान आदि उत्तम सब सामग्री सिद्ध करके

श्री प्राणनाथजी को समर्प के सगरे हू भक्तन के संग नम्रता प्रेम आदर हर्ष सूं शोभायमान सुंदर बुद्धिवारी वे भाग्यवती महाप्रसाद लिवावे हैं ।। कि स्वयं हूं लेवे हैं ।। फिर वाकू जायवेवारो जानके वस्त्र कि भूषण, कि वा वा द्रव्य सूं पूजा करें हैं ।। कि वैसे प्रणाम करके प्रेमसूं पहुचाय के आज्ञा मांगके वाकूं हू जायवे लिये आज्ञा देवे हैं ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि पुरुषोत्तमो के मुकुटमणि श्री गोकुलेश महाप्रभुजी में ऐसे उछलित भावकूं धर रही ऐसी या श्रीमती सुंदरीन के निमर्याद अद्‌भुत भाव कूं लेश सूं हू कहवे में कोन समर्थ होय सके अपितु कोऊ हू समर्थ नहीं है ।।४८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे त्रयोवीश स्तरंगः ।।२३।।

तरंग ।।२४।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ चोबीसमो तरंग लिख्यते ।।२४।।

श्लोक -- **एवं मेता श्चते चालं सविधं प्राप्य चंचतः**

श्री गोकुल स्वतस्या लंता दशस्य परेहनि ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहे हैं, कि या रीति सूं यह भक्त सुंदरी, कि वे भक्तगण हू वा मनोहर सुंदर श्रीमद् गोकुल के निकट प्राप्त होयके वे भाग्यवारे भक्तगण दूसरे दिन वामें प्रवेश करवे की इच्छा करत तासूं पहले दिन में सरसों की खली के चूर्ण सूं, कि कंकोड़ी को जो चूर्ण है वाको जलसूं पीसकें वस्त्र सूं छान के वासूं, कि वैसे कोई द्रव्य आमरा आदि सूं उत्साह सूं भली भाँति सूं न्हाय के या प्रकार मार्ग की मलीनता सूं निरंतर सुंदर अंगवारे होयके बड़े मोलवारे निर्मल वस्त्र, कि भूषण सब पहिर के बड़े शोभायमान होवत ही उछल रहे मनोरथ समुहन सूं भरे वे रात्रि में ही चारों ओर प्रकाशवारे दंड दीपन को आगे करके वेग ही चले हैं ।।६।। वा श्रीमद् गोकुल के पास जायके वे बड़भागी अब तो श्री महाप्रभुजी को निजधाम श्रीमद् गोकुल पांच कि छः कोश ऊपर विराजमान है यह जानके परम हर्ष को प्राप्त होय हैं ।। तब घोड़ा आदि को, कि गाड़ा गाड़ी सुखपालादि सवारी को, कि सेवकन को हू उतावल सूं चलावत स्वयं हू वेग सूं चले हैं ।। जब श्रीमद्

गोकुल दोय कि तीन कोश ऊपर ठहरें हैं तब प्रायः प्रभात होय जाय है ।। वेगा आगे कछुक जायके दूर सूं अवार की खिरक के सुंदर वृक्षन को देखे हैं ।। कि प्राणनाथ के श्री अंग स्पर्श सूं अत्यंत शोभावारी श्री यमुनाजी को निरखे हैं ।। कि वैसे वहां, कि और हू सब वस्त्र वा प्रिय के संबंध सो अद्‌भुत रूपवारी होय रही है ।। ऐसे विनको देखे है ।। तब विचार करें हैं, कि यह कहा स्वप्न है, कि सत्य है ।। फिर वामें बड़े यत्न सूं ही वाको साचो ही जाने हैं ।। तब तो वे बढ़ रहे उत्साह सूं अत्यंत उतावले होयके कितने तो घोड़ान सूं, कि और कितने रथन सूं, कि कितने ही सब प्रकार सूं दौड़े है ।। हौं पहले जावू कि हौं पहले जावू, ऐसे विचारत हर्ष सूं पुष्ट होय रहे हैं ।। इनमें कितने महात्मा तो सबन को छांड के वेग ही दौड्त सबन सूं पहले ही श्री महाप्रभुजी के हजारन पूर्ण चंद्रमान को विजय करवे वारे वा मुखारविंद को निरखे हैं ।। कितने तो वाकी रात्री होय है तब अवार की खीरक में आय गये है ।। और कितने तो निर्मल प्रभात के होयवे में आय गये है ।। और कितने तो दोय कि तीन घड़ी में आय गये हैं ।। और कितने तो दोय कि तीन घड़ी दिन चढ़े ही आये हैं ।। और तो और समय में ही आये हैं ।। श्रीमद् गोकुल सूं बहुत ही भक्त इहां आयके पहले ठहरे हते सो पहले इनकूं प्रणाम करें हैं ।। वे हू विनको प्रणाम करें हैं...दृढ़ चिरपर्यंत गले लगावे हैं ।। प्रेम प्रकाश पूर्वक कुशल परस्पर पूछे हैं और और हू मंगल समाचार परस्पर पूछे हैं ।। यह यात्री भक्त तो अपनी सगरी सामग्री कि गाड़ी गाड़ा आदि इहां छांड के ही वा श्री गोकुल निवासी भक्त के संग ही स्त्री बेटी बहु आदि को संग लेकर नाव पर सवार होयके पार जाय है ।।२१।। वा सगरे भक्तन सूं कि भली भाँति सूं पहिरें हैं अमूल्य वस्त्र भूषण जिनने, ऐसी विनकी चंद्रमुखी गणन सूं, कि विनके अनेक प्रकार के भावन सूं, कि विनके सुंदर श्री अंगन की किरणन सूं, कि विनके मंद हास्यरूप चांदनी के तरंगन सूं, कि वस्त्रन के चमत्कार सूं, कि विनके भूषण संबंधी मणि समूह के उछल रहे कांति समूहन सूं, कि हर्ष कोलाहल के प्रकाशमान होय रहे उज्ज्वल अमृत समुद्रन सूं, कि सुंदर चमकने कंकण कि मंजीरन के शब्दन की माधुरी लहरीन सूं, कि वैसे विनके और और हू अनेक प्रकारन सूं श्री यमुनाजी के तीर कि मार्ग में, कि श्री गोकुल की प्रायः वाकी गली हू सगरी

सब प्रकार सूं बैकुंठ को हू दुर्ल्लभ जो महा शोभा है, वाकूं प्राप्त होय रही है ।। अहो तब यह मृगलोचना सुंदरीन के हर्ष के सघन गान समूहन सूं पवन की स्वछंद गती हू रोकी जाय है ।। कि तब पवन हूं इच्छानुसार नहीं चल सके है ।। तो और जनन की, कि पक्षीन की इच्छानुसार गती चलनी कैसे होय सके है ।। जन कि मांखी हु आय जाय नहीं सके है वामें आय रहे इन भक्तन के देखवे की इच्छा सूं प्रियवर श्री गोकुलेश प्रभु के प्रायः कितने भक्त गृहदास कितने भंडारी के अधिकारी पहले ही इहां आयके ठहरें हैं ।। वैसे और भक्त हू इहां आयके ठहरें हैं ।।२५।। वा यात्री भक्तन को वे प्रणाम करें हैं ।। विनकूं हू आदर सूं प्रणाम करें हैं ।। दृढ़ आलिंगन करें हैं ।। कुशलादि हू पूछे है ।। तब वे सगरे भक्त तथा वे हू कमल लोचना सुंदरी वा प्राणनाथजी के वा मनोहर मंदिर में जाय है ।।२८।। वहां जायके कृपासिंधु श्री राज के अर्वन पूर्ण चंद्रमान को विजय करवे वारे अद्‌भुत श्रीमुख कमल को टक-टकी लगाय के निरखे है ।। हस्त कमल में उत्कृष्ट मंगलमय नारियल को लेकर धन सोना की मुद्रा कि रूपा की मुद्रा हू बड़ी भक्ति सूं प्राणनाथ के आगे धरके प्राणनाथ के श्री चरण कमल में दंडवत प्रणाम करें हैं ।। सो श्री प्राणनाथ जी तो उछलित कृपावारो होयके बड़े आदर सूं अपने सगरे भक्तन को प्रेम पूर्वक निरख के अत्यंत शोभायमान होवत विनको कुशल पूछे है ।। तुमारो सगरो साथ कुशल आयो है का ।। मार्ग में तो कोऊ पवन कि धूपादि सूं क्लेश तो नहीं भयो ।। मार्ग में कितने दिन भये ।।३८।। यह सुनके हाथन कूं बांध के या प्रिय के श्री मुख चंद्रमा की सुधा को, वचनामृत को पान करत उत्साह कि दीनता, कि संभ्रम, कि हर्ष समूह, कि नम्रता सूं भरे वे भाग्यवान थोड़ेक अक्षरन सूं प्राणप्रिय के आगे उत्तर विज्ञापना करें हैं ।। कि श्री महाप्रभो, श्री प्राणनाथ जी, कि अत्यंत प्रबल कृपा सूं सगरो ही साथ विना क्लेश के थोड़ेक दिनन सूं ही इहां आयके श्री राजके श्रीमुख चंद्रमा की सुधा अमृत के पान सूं कृतार्थता को प्राप्त भयो है -- या प्रकार विज्ञापना करें हैं ।।३६।। रस वामलोचना, कि रसभरी मनोहर नयनवारी सुंदरीजन वे श्री प्राणनाथ जी के निकट विराज रही है ।। प्राणप्रिय के अत्यंत उछल रहे श्रीमुख कमल संबंधी मकरंद के सागर समूहन को नयनरूप मुखन सो पान करत इहां अचम्भित होयके मौन गहे रही है ।। कि विचार करत है, कि का यह कोई स्वप्न है,

कि इन्द्रजाल है, कि यह चित्तभ्रम है, कि कोई मधुर नाटक होय रहो है, कि यह कोई की माया है -- यह कोऊ सुख है, कि मन को विलास है, कि अमृत के समुद्रन को वर्षा कर रहयो यह कछु और ही बढ़ रहयो है ।।५०।। अथवा सदैव हमारे हृदय में निवास कर रहयो, कि तासूं वा हृदय में निरंतर उछल रहे मनोरथन को जान रहयो जो हमारो प्राणनाथ है ।। वा प्राणप्रिय की ही अमृत के समुद्रन सूं हू मनोहर कि पूर्ण चंद्रमान की चांदनी सूं हू अत्यंत शीतल वा प्राणनाथ की कृपा ही है या प्रकार सूं विचार कर रही है ।। कि कंठ जिनको गद्‌गद्‌ होय गयो है, कि नयनन सूं हर्ष के आंसुन को वर्षा कर रही हैं ।। अहो सो प्राणनाथजी हू औरन सूं गुप्त प्रकार सू जा भाग्यवतीन के श्री मुख चंद्रमा में, कि सुंदर नयन कमलों में, कि मनोहर भ्रु विलासन में, कि चुंबन के लिये प्यासे होय रहे प्रफुल्लित दोनों कपोलन में, कि फरक रहे अधर में, कि सोना के कमल कली युगल की शोभा के चोर उछल रहे मनोहर कुच युगलों में, कि दीर्घ श्वेत कमल माला की शोभा कूं वरसाय रहे, कि दूध सागर संबंधी प्रवाहन के श्वेतताके समूहन को वरसाय रहे अमृत की माधुरी के सागरन को वरसाय रहे, कि निधि समूहन सूं सुंदर बड़े तरल जे ऐसे कटाक्ष है विनमें, कि कोमल भुज लतान में, कि सिंह की कमर की शोभा को जाने जय कर लियो है ऐसी कटि कमर में, कि सुवर्ण पर्वत की मनोहर शिलान सूं हू स्थूल नितंबन में, कि सोना के कदली स्तंभन की शोभा को विजय करवे वारे दोनो उरुन में कि जंघान में, कि कल्पवृक्ष के नवीन कोमल पल्लवन की शोभा को लूटवे वारे वैसे दोनों चरणन में, कि वैसे मनोहर और हू वा वा अंगन में वस्त्र में, कि मनोहर छोटे भीतरी लहेगा में सुंदर चमक रही अंगिया में, कि सगरे हू भूषणन में, कि सर्वात्म भाव सूं उछल रहे विनके सर्वोत्तम भाव में, कि उत्कंठा समूह के सागर में, कि आकाश कूं परस रहे वैसे कल्लोलन में उछलित तृश्नापूर्वक जिनको अंग अंग में पान कर रहयो है ।। कि अहो सुंदर कोमल है मंद मुसकान जामें, कि जो अत्यंत ही प्रसन्न होय रहयो है, कि अत्यंत फूल सूं रहे कपोलन सूं जो शोभायमान है, कि जो चिरकाल सूं वांछित या सुंदरीन के लाभ संबंधी हर्ष प्रवाहन कूं जो अक्षरन के विना ही स्पष्ट कहे रहयो है ।। ऐसो प्राणनाथजी को जो श्रीमुख कमल है जो निमर्याद अमृत के सगरे हू अंगन को बाहिर

कि भीतर हू शीतल कर रहयो है ऐसे श्रीमुख सूं बड़े यत्न सूं जिनको प्राणनाथ जी धैर्य दे रहे हैं, ऐसी वे कोमल अंगवारी सुंदरी तो आश्चर्य भरी होयके मौन गहे के रही हैं ॥५४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चतुर्विंश स्तरंगः ॥२४॥

तरंग ॥२५॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ पंचवीश तरंग लिख्यते ॥२५॥

श्लोक — **पश्चादव स्थिताये भक्ताः पुरुषाः स्त्रियो**

वान्ये ते पित्वराभरेणात्र समागत्याधुनासवैः ॥१॥

याको अर्थ — श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि और जे भक्त पुरुष कि स्त्री पीछे ठहरे हते वे सगरे हू उतावल सूं अब इहां आयके प्रभुन के चरण कमलन कूं आनंद सूं दंडवत प्रणाम करें हैं ॥ तब कृपासिंधु भगवान प्रियवर जी वा सबन कूं मंद हास्य वारे श्री मुखारविंद सूं, कि वाणि सूं, कि दृष्टि सूं, कि जाके समान ही ओर नहीं है — विशेष कहा सूं होय ॥ ऐसी सर्वोत्कृष्ट अनुभव करायी अपनी मनोहर मूर्ति सूं हू समाधान करें हैं ॥ कृपासिंधु श्री महाप्रभु जी वा सबन कूं अपने घर में आयके ब्रह्मादिकन को हू अत्यंत दुर्ल्लभ महाप्रसाद को लेवे लिये आज्ञा हू करें हैं ॥ कि सब वेग जावो, न्हाय न्हाय के वेग ही आयके भीतर जायके संबंधिन के सहित ही महाप्रसाद लेवो ॥५॥ ऐसे या श्री प्राणनाथजी की आज्ञा को माथे पर धरके उछल्लित हर्षवारे वे सगरे वा श्री महाप्रभुजी को वारंवार दंडवत प्रणाम करके न्हायवे लिये जाय है ॥६॥ तब वे सगरे संबंधिन के सहित न्हाय के वेग ही प्राणनाथजी के रसोई घर में आयके वहां श्री पार्वती बहुजी की सगरी बेटी बहू आदि ने परोसे सुंदर दही, दूघ, शीखरनादि कि मिसरी, घी, पकवान समूह को, कि अनेक प्रकार के शाक, दार, भात आदि महाप्रभुन के महाप्रसाद को कंठ पर्यंत भरके लेके उठके ॥९॥ भली भांति सूं आचमन करके उछलित हर्षवारे वे सब भक्त फिर हू जाके देखत कबहु तृप्ती न होय ऐसे वा प्रियवर के श्रीमुख चंद्रमा के दर्शन कूं करवे कूं मंदिर में जाय हैं ॥१०॥ उछलित कृपावारे सो श्री प्राणनाथ जी

तो अधिकारी को बुलाय के वा सबन के रहवे लिये डेरा दिवायवे कूं आज्ञा करें हैं ।।११।। सो सुजान हू वा सबन को वेग ही यथा योग्य डेरा देवे है ।। तव वे सगरे पारसू आयी सगरी अपनी अपनी सामग्री, के गाड़ा, रथ आदि को हू लायके अपने-अपने डेरा में रहे हैं ।। वे सुजान भक्तजन समय-समय में श्रीराज के दर्शन को करत, कि वचनामृत को हू पान करत अपने को अत्यंत कृतार्थ ही जाने है ।। दोय कि तीन दिन पीछे यह भाग्यवारे भक्तजन प्रेम सूं निर्दोष प्राणनाथ के आगे धरवे योग्य जो भेट लाये हते सो कृपानिधी प्राणप्रिय के निकटवासी द्वारा विज्ञापना करके आगे धरें हैं ।। अहो प्राणनाथजी हू आदर सूं वाकूं माने हैं ।। स्नेह भरसूं लाये हैं यह विचार के आदर पूर्वक निरखे हैं ।। फिर श्री हस्त कमल सूं लेकर प्रेम सूं अंगीकार करें हैं ।।१६।। फिर भगवान श्री गोकुल प्रभुजी यथा योग्य भंडारी द्वारा यह उठवावे हैं ।। उछलित कृपा समूह सूं कछुक श्री अंग सेवक सू हू उठवावे हैं ।।१७।। ता पाछे अपने गाम के, कि मार्ग के गाम के निवासी भक्तन ने दंडवत प्रणाम बहुतवार कर करके प्रभुन के लिये जो जो वस्तु भेंट दीनी ही सो यह भाग्यवारे लाये हैं ।। वा भेट समूह को या भक्त की वैसी प्रणाम निवेदन करके विनके मनोरथ समूह हू विज्ञापना करके विनके नाम ले लेके श्री राजके श्री चरणारबिंदन के निकट धरें हैं ।। अत्यंत प्रसन्न श्रीमुख कमल होयके प्राणप्रिय जी अंगीकार करें हैं ।। विनके कुशल समाचार हू पूछे हैं ।। फिर यह भाग्यवान जे जामा, नीमा, कमर पटका, पाग, धोती, उपरना, चादर, दुपट्टा आदि लाये है प्रकाश भरे सुंदर वा वस्तुन सूं या प्राणप्रिय की प्रेमसूं वा पहिरामनी को करावे हैं ।। जो रस सुंदरीन के नयनों में अमृतन को वरसावे हैं ।।२२।। तथा अनेक प्रकार के घोड़ा, कि चंचल तुरंग, कि परदेशी घोड़ा, कि रथ, कि बड़े प्रबल बैल, कि गाड़ा, कि विनमें जोतवे योग्य श्रेष्ठ बड़े बैल की और और हू जो भेट करवे कू लाये हैं विनमें कितने तो मुहूर्त में जब श्री राज श्री गिरिराज जी में पधारवे लगे हैं तब भेट करें हैं ।। कितने तो इहां, कि कितने तो वांछित उच्छव के दिन में ऐसे अपने भाव अनुसार, कि कोऊ और दिन में भेट करें हैं ।। उछलित कृपावारे श्री प्राणनाथ जी तो निरंतर प्रसन्न होय रहे श्री मुखारविंद सूं विनको अंगीकार करें हैं ।। तथा सो श्री महाप्रभुजी वामें वा भाग्यवान भक्तन के भाव के अनुसार वा वा समय में वैसे वैसे अत्यंत

मनोहर उछलित रस समुद्र समुहवारे निर्दोष लोकातीत अत्यंत ही मधुर वा फलकूं देवे हैं ॥ जो वाणि और मनके पार विराज रहयो है ॥ तथा कितने वा भक्तन के वा भाव को हू उल्लंघन करके विनके मनोरथ अनुसार ही जगत्पति प्रभु जी फल देवे हैं ॥ कितने भक्तन के तो मनोरथ को हू उल्लंघन करके प्रथम किये विचार अनुसार ही फल देवे है ॥ कितने भक्तन को तो वा विचार को हू उल्लंघन करके अपने अब ही किये विचार अनुसार फल देवे है ॥ कितने भक्तन को तो महा उदार चरित्रन के निधीरूप महाप्रभु जी वा अपने वा समय के विचार को हू उल्लंघन करके अपने स्वरूप अनुसार ही फल देवे है ॥ वैसे सर्व समर्थ श्री महाप्रभुजी कितने भक्त, कि वा कितनी भक्त सुंदरीन के प्रति तो वा अपने स्वरूप को हू उल्लंघन करके हू फल को देवे है ॥३१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायाविधि विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे पंचवीश स्तरंगः ॥२५॥

तरंग ॥२६॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ षटद्विश तरंग लिख्यते ॥२६॥

श्लोक -- **अथ रस हरिणी नयना मुक्तात्मि यां विभूषयत्पस्मिन्**
अन्हः सार्द्र प्रहसन तर मीशे त्रिलोक रत्नेन ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि जब डेड प्रहर दिन से पीछे यह श्री प्राणनाथजी भोजन लीला को करके त्रिलोकी के रत्न रूप अपने स्वरूप सूं अपनी भूमि सेजा को अलंक्रत करें हैं, कि अत्यन्त प्रिय प्राणनाथजी निद्रा रस को हू आदर करें हैं जब भक्तजन, कि रसिक वनिता समूह हू अपने अपने घर में गये हैं तब यह हरिण लोचना सुन्दरी एकांत जानके श्री बैठकजी के पास ही प्रतिदिन आयके ठहरें हैं ॥ कोई दिन तो श्री अंग सेवक खवासजी की सम्मति सूं बड़े यत्न सूं निर्मक्षिक समय को पायके प्यारी सखी के संग वहां भीतर प्रवेश कर जाय हैं ॥ अनेक प्रकार की भेंट सेवा सामग्री के संग प्रवेश करके ठहरें हैं ॥ कोई दिन तो एकांत में मौन गहके ही प्राणनाथ के जागरण के मधुर समय को प्रतीक्षा करें हैं, कि देखें हैं ॥ सर्वज्ञ यह रसिक

सुन्दरीन के चक्रवर्ती गुणनिधि कृपासिन्धु श्री प्राणनाथजी वा हरिण लोचना सुन्दरीन के वा हृदय के भाव को वेग ही जानके वेग ही जागें हैं ।। अपने अत्यन्त मनोहर जलपान पात्र सूं उच्छलित अतुल शोभा समूह भरे सो श्री प्राणनाथजी जलपान हू करें हैं ।।६।। या क्षण में सो प्यारी सखी वेग ही पास आयके जलपान जाने कियो है, कि मंद हास्य सूं प्रफुल्लित जिनको श्रीमुख पूर्णचन्द्र है, ऐसे या प्रियवर के आगे प्रणाम करके अमृत के समुद्र समूहन को नीमड़ा जैसे कड़वा सूचना करवे वारी की महामधुर वाणी सूं धीरे धीरे वा मृगलोचना सुन्दरीन के आवने को कहें हैं ।।३।। यासूं सो श्री प्राणनाथजी रस सागर तो उच्छलित रोम हर्ष वारे होयके अगाध हर्ष सागर में निमग्न होय जाय हैं ।। या सखी के अत्यन्त मधुर भ्रू विलास सूं भलीभांति सूचना करी, कि दिखाई कोमल अंग वारी सुन्दरीन को सुन्दर कृपा, कि रस सागर समूहन को वर्षा कर रहे तासूं अत्यन्त सुन्दर अपने मनोहर नयन कमलन सो टकटकी लगायके बहुत वार पान करें हैं, कि निरखें हैं ।। कि मनोहर हंस रहे श्रीमुख कमल में बीड़ा हू अंगीकार करें हैं ।। तब काम को हू विजय करवे वारे भूमि शैया पर विराजमान रस सागर वां प्रियवर को निरख रही, कि अत्यन्त प्रियवर वा श्रीजी सूं कछुक दूर हू शोभायमान स्थिति वारी वा सुन्दरीन के जे कटाक्ष हैं वे वा प्राणनाथ के मंद हास्य सूं मनोहर वा कटाक्षन सूं बहुत वार ही अत्यन्त मिले हैं, कि वा सुन्दरीन के प्रेम सूं प्रकाश भरे जे मंद हास्य की माधुरी के सागर हैं ।। वा प्रियवर में कोऊ मनोहर उत्कंठा को निरन्तर धारण करें हैं, कि उत्साह को बढाय देवें हैं ।।१०।। तब अत्यन्त प्यारे प्राणनाथजी के कटाक्ष नाम वारे दीर्घ पाशन सूं आकर्षण करी तासूं निवर्त होय गई है लाज समूह रूप सांकल जिनकी ऐसी वे भाग्यवती सुन्दरी सुन्दर अत्यन्त विलासन सूं धीरे-धीरे या स्थान सूं वा प्राणप्रिय के निकट आयके आपके शोभा भरे श्री चरणकमल युगल को इच्छानुसार ही प्रणाम करें हैं ।।११।। तब उच्छलित मनोहर रस सागर, कि उच्छलित प्रेम भर सो श्री प्राणनाथजी अपने श्री चरणकमल में शोभायमान विराज रहे विनके शिरन को कपोलन के परस सूं प्रफुल्लित होय रहे रोम सूं प्रकाश वारे दोनों हाथन सूं कृपा सूं उच्छलित हर्षपूर्वक ऊंचो करें हैं ।।१२।। जो प्रियवर प्राणनाथजी प्रेम रस कृपा उत्कंठा, कि हर्ष उत्साह के समूह सों सुन्दर शोभायमान है ।।

कि जो श्वेत धोती, कि श्वेत सुन्दर उपरना धर हैं, कि स्निग्ध, कि श्याम आपके केश पाश हैं, कि जूरा है ॥ वा केशन सूं गिर रहे कछुक फूलन, के सूक्ष्म किणका समूह सूं शोभायमान होय रहे भाल में मृगनयनी सुन्दरीन के मान हरवे वारे तिलक को जो धारण करें हैं ॥१३॥ कि सघन बीड़ी के रंग सूं बिंब फल समूह को विजय करवे वारे दोनों अधर ऊपर के ओष्टन को जो धारण करें हैं ॥ कि अपनी स्वच्छता सूं सोना के दर्पणन को हू निरस्कार करवे वारे शोभायमान ऐसे कपोलन को जो धारण करें हैं, कि मंद हास्य के अवसर में कछुक प्रगट होय रहे उज्ज्वल दंतन की कांति दंडन की परंपरा सूं या श्री बैठक जी में दिन सों दिन प्रकाश को निकार के जोर सूं चांदनी रात्रि को जो धारण कर रहे हैं ॥१४॥ कि श्रृंगार सार सागरन के तरंग समूहन को वर्षा कर रहे नयन कमलन सूं मृगनयनी सुन्दरीन के चित्तन को खेंचके गुण हैं सो हस्त है वा हस्त सूं अपने स्वरूप में जो बांध रह्यो है, कि जटित कर रह्यो है, कि जटित है मणि, हीरा, मोती जामें ऐसे श्रेष्ठ कुंडलन सों जाके कर्णपाश शोभायमान हैं ॥१५॥ कि श्री मस्तक पर कस्तूरी सूं जैसे बनाईहोय वैसे स्वाभाविक श्याम रेखा सूं जो अत्यन्त शोभायमान है ॥१६॥ भीतर बाहिर प्रसर रहे श्रृंगार रस सो जो प्रकाश वारो है, कि तिलक सों उछल रही मनोहर कुमकुम की निमर्याद किरणन सूं कंपायमान कर दियो है ॥ रसिक हरिण लोचना सुन्दरीन को धैर्य रूप पर्वत समूह जाने, कि बीड़ी के आरोगवे सूं जाग रहे जे कपोलन के चंचलता के विलास हैं विनसूं आलेख्य जैसे, कि लिखी मूर्ती जैसे विराजमान जे स्त्री हैं विनके हू जो मन को हर रह्यो है, कि मधुरता सूं शोभायमान सौम्य, कि शीतल, कि तेजस्वी, कि तेजवारे तेज समूहन सूं मध्याह्न के बड़े तेजस्वी सूर्य को हू समूह सूं भली भांति शोभायमान होय रहे ऐसे श्री अंगन सों कामदेव के हू गर्व पर्वत को जो खंडन कर रह्यो है, कि घोंटू पर्यन्त दीर्घ अत्यन्त मनोहर दोनों भुजदंडन सूं, कि विशाल वक्षस्थल हृदय सूं सुन्दर दृष्टि वारी सुन्दरीन के मन के आलिंगन करवे की इच्छा को जो प्रफुल्लित कर रह्यो है ॥ कि रत्नजटित मुद्रिका सों विराजमान दक्षिण हस्तकमल सों सुन्दर दृष्टिवारी, सुन्दरीन के उरोजन को जो अत्यन्त रोम हर्ष वारो कर रह्यो है ॥ कि मोतीन को हार, कि स्वर्ण

की माला, कि तुलसी की माला, कि कंठाभरण कि अमूल्य मणीन सूं शोभायमान पदक यह सगरे श्रीकंठ आदि श्री अंगन की माधुरीन सूं क्षण क्षण में रंजित होय रहे हैं ॥ ऐसे वा सबन के परस्पर सूं, कि अपने स्वरूप सूं, कि अपने रस सागर भाव सूं, कि अपनी लीलान सूं, कि अपने जोवन सूं जो निरन्तर ही शोभायमान कर रह्यो है ॥ कि भादों के सघन मेघ रूप अपने सगरे श्री अंगों से श्रृंगार रस सर्वस्व के सार महा समुद्रन को जो वर्षा कर रह्यो है ॥ ऐसो सो प्राणप्रियजी या सगरी सुन्दरीन को अत्यन्त अपार हर्ष समुद्र में निमग्न कर देवे है ॥ फिर मंद हास्य सूं शोभायमान श्री मुख वारे, कि नयनन सूं आनन्द, कि आंसून को वरसावत सो प्रियवरजी वा सुन्दरीन, की सखी को कहे हैं ॥ "कि या श्रीमद् गोकुल में अब बहुत ही वे वे भक्त श्रेष्ठ आये हैं ॥ वे सगरे हू बहुत प्रकार सूं सेवा भली भांति सों करें हैं ॥ वा वा प्रश्न को हू करें हैं ॥ वैसे भलीभांति सूं बोलें हू हैं ॥२८॥ तिहारी सहेली को पति हू अत्यन्त भक्त है ॥ कि बाके सम्बन्धी हू अत्यन्त भक्त हैं, कि अत्यन्त कोमल सरल हृदय वारे हैं ॥ समय समय में मेरे पास हू आवें हैं ॥२९॥ यह तिहारी सखी तो इतने दूर अपने गाम सूं पति के संग आयी हू है ॥ परन्तु हमारे देखवे में तो यह कोमल अंग वारी प्रतिपदा, के चंद्र रेखा जैसे कबहू हू बडे यत्न सूं ही आवे है ॥३३॥ अहो याके मुख रूप क्षीर सागर सूं उदय होय रहे वचनामृत के तरंगन सूं अपने ताप के निवर्त करवे की दिन रात्रि ही इच्छा वारे हू मेरे कानों के मनोरथ को यह रंच हू पूरण नहीं करें हैं ॥३२॥ अहो इहां आय आयके हू वेग ही यहां सूं जाय रही यह तेरी प्यारी सखी अपने स्वरूपामृत के पान करायवे कूं मेरे नयनन को उत्कंठा वारो हू करें हैं ॥ न के आज दिन लों पान हू करावे है -- यह कहा योग्य है का ? ॥ अहो मेरे हृदय के मनोरथ को याको हृदय जाने है का ? नाहीं ना रंच हू नहीं जाने है ॥ यासूं याकूं नहीं जतावे है ॥ वा मेरे हृदय के वा मनोरथ को यह अत्यन्त उदार चरित्र वारी हू पूरण नहीं करें हैं ॥ आज तो यह तिहारी सखी यहां कैसे आय गयी है ॥ हां हां यह निश्चय है, कि मेरे प्रबल मनोरथन ने ही याको जोर सों खेंच लियो है ॥३५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधी विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे द्वीषट स्तरंगः ॥२६॥

तरंग ॥२७॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ सप्तविश स्तरंग लिख्यते ॥२७॥

श्लोक -- **एवं बाग्मृताब्धिस्तोमं वषर्त्य मीष्ट वरे स्मयमान**
वदन कमला विज्ञाययते सखी तासाम् ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि वांछित वर श्री प्राणप्रियजी के या प्रकार वचनामृत सागर समूह के वर्षा करत में मंद हांसी कर रह्यो है श्रीमुख कमल जाकूं ऐसी वा सुन्दरीन को सखी विज्ञापना करें हैं ॥१॥ ''हे प्रिय सार्वभौम प्रिय चक्रवर्ती महाप्रभो या मेरी सखी को श्रीराज के श्रीमुख चन्द्रमा के दर्शन की जो इच्छा है सो बड़ी प्रबल है ॥ सो इच्छा या मेरी सखी को अपने घर में हू सुख सूं क्षणमात्र हू बैठवे नहीं देती ही वाने ही या श्रीमद् गोकुल में वेग आयवे लिये प्रेरणा करत ही -- हे सुंदरवर रसिकन के शिरोमुकुट, कि मालारूप श्री राज की जे कृपा है -- जो कर्तुं अकर्तुं कि अन्यथा कर्तुं में समर्थ है ऐसी वा कृपासूं ही मेरी सखी में तापको बढ़ाय दियो हतो सो श्री राज के दर्शन की प्रबल इच्छा ही अत्यंत दुर्ल्लभ है ॥ विचार को लवलेश हू जामे ऐसी तिहारी या श्रीमद् गोकुल में हू बलसूं ही याकूं ले आयी है ॥ राज यह तो बाल अवस्था की है ॥ कि अवला तो स्वभाव सूं अवला है ही ॥ तामें हू यह तो कोमल अंगवारी है -- सो हू पराधीन है -- लाज हू याकूं सांकल जैसे बाँध रही है -- ऐसी या मेरी सखी को सो श्री राज के दर्शन, कि इच्छा ही श्रीराज के निकट विराज रही वा कृपा सूं श्रीराज की वांछित सेवा को निरंतर करायवे लिये विलंब करायगी का ॥ कि कबहु विलंब नहीं करायगी ॥६॥ कि जा श्रीराज की दर्शन इच्छा ने याकूं घर नहीं बैठवे दियो जा इच्छा ने कृपा को सहायक कर यामें ताप बढ़ायो, कि जो इच्छा या श्री गोकुल में आपकी कृपा सो ले आयी, सो इच्छा अब आपकी कृपा सूं यासूं आपकी सेवा करायवे में बिलंब करेगी का -- किंतु विलंब नहीं करेगी, यह निष्कर्ष है ॥ हे प्रिय, हे प्रभो श्रीराज के चरण कमलन की रजहू सर्वोपर बिराजमान है ॥ कि हे पुरुषोत्तमोत्तम श्रीराज तो सगरी मर्यादा के अगाध सिंधु है ॥७॥ कि अयि महासुंदरवर प्रायः अत्यंत उछल रहयो है प्रेम समुद्र जिनमें ऐसे लाखन करोडन भक्तजन श्रीराज के श्री मुख

चंद्रमा सूं गिर रहे अमृत के हजारन समुद्रन को पान कर रहे हैं ॥८॥ कि अयि माधुरी सागर महाप्रभो लाखन करोड़न अर्बन रस पूर्ण चंद्रमुखी सुंदरीन के लोचन रूप भौरा श्रीराज के अंगरूप कमल की माधुरी समुद्रन को निरंतर पान कर रहे हैं ॥९॥ अयि सर्व सेव्य महाप्रभो, हे श्री मान महाशोभा भरे प्राणप्रिय करोड़न बंधु ज्ञाती अत्यंत संबंधी, कि और हू वे वे लोक समूह श्री राजके श्री चरण कमलन को वैसे वैसे निरंतर सेवा कर रहे हैं ॥१०॥ कि हे सर्व सुखदायक स्वभाव वारे कृपा रस सिंधो महाप्रभो रसभरी जोवन वारी सुंदरी जनन के जीवन रूप मंद मुस्कान सो श्री राज को श्रीमुख चंद्रमा सदा शोभा भर्यो ही रहे हैं ॥ कि हे प्रियवर श्री प्राण वल्लभ प्रभो यह मेरी सखी अकेली मेरे को साथ लेके प्रतिदिन ही सब लोकन सूं अजाने आयके श्रीराज के या श्री विश्राम घर के पास कहू एकांत में आयके ठहरे हैं ॥ हे सुंदरवर प्रिय श्रीराज के लिये अपने घर सूं छिपाय के सो सो भेट जो लायी है वाकूं हू संग ले आवे है परंतु भय लाज समूह सूं याको मन निरंतर भर्यो रहे हैं ॥ एकांत समय में अर्बन प्राणन सूं प्यारे श्रीराज के आगे अर्पण कर्यो चाहे हैं ॥ या मेरी सखी को वैसो एकांत को समय मिलतो नहीं हतो ॥ आज ही श्रीराज के दर्शन की वा इच्छा ने ही याके ऊपर कृपा करी है ॥ कि श्रीराज के निकट इहां प्रवेश कराय दियो है ॥ कि श्रीराज के श्री मुख चंद्रमा को हू दर्शन करायो है ॥ कि अमृत को हू विजय करवे वारो वचनामृत हू पान करायो है ॥ हे सुंदरवर प्राण प्रभो अत्यंत उत्कंठा उत्साह भरे हृदयवारी हू यह हरिण लोचनी मेरी सखी जो राज के नयन कमलन में अपने रूप को, कि राजके कानों में अपने वचनों को, कि राजके हृदय को अपने हृदय की उत्कंठा समूह को निसदिन भेट करवे में जो समर्थ नहीं भयी है ॥ किंतु विनोद कारण ही याके संग द्वेष कर रहे देखोगे, कि दूसरो योग्य समय को न मिलनो यह दोनों को ही अपराध है'' ॥१८॥ या प्रकार सखी की करी विज्ञापना को सुंदरवर प्रियजी कानरूप दोना पात्रन सूं पान करके रससागर प्रियवर जी हर्ष के सागर में डूब जाय है ॥ रोम हर्षवारो होयके विलासपूर्वक जो कहयो है, कि अहो इहां या श्रीमद् गोकुल में आये सबन ने ही मेरे लिये जो लाये हते सो सबही अर्प्पण कियो है परंतु यह तिहारी सखी अपनी सो सो भेट लायी नहीं है ॥ कि कछुक लायके हू एकांत समय के न मिलवे

सूं, कि कछू और कारण सूं इहां नहीं लायी है ॥ सो तो मेरे को अत्यंत बांछित है -- सो कब लावेगी ॥२२॥ कब वाकू हम देखेंगे, कि कब परस करेगे, कि कब लेवेगे, कि कब तक तब वैसे वैसे अपने उपयोग में लगावेगे ॥२३॥ ऐसे या प्रकार सो आज लों ही हम विचार करत ही अत्यंत उत्साह में रहे हैं ॥ अब तो यह हमारी प्रसन्नता ही करी है ॥ जासूं प्यारी ऐसे प्रेम सूं जो ले आवे सो भेंट हजारन अमृतन सूं हू सुजान प्रिय को अत्यंत ही मधुर लगे है ॥ सो मेरे आगे वेग ही लावो ॥ अब काहे को विलंब करो हो ॥ सो तिहारी प्यारी सखी अत्यंत उत्साह मेरे प्रति वेग ही सो अर्प्पण करे ॥ या प्रकार सूं ऐसे मंद हास्य सूं जटित अमूल्य वचनरूप मुक्ताफलन को प्रगट करके अपने सूं कछुक दूर ठहर रही वा सुंदर दृष्टिवारी सुंदरीन के लाज समूह सूं नम रहे श्रीमुख चंद्रमा को मौन पूर्वक या प्रिय के पान करत में तब आनंद सो वे सुंदरी अपनी सखी को धीरे-धीरे कहे हैं, ''कि हे सखी जो यह कछुक है यह तिहारे प्यारे प्रभु के योग्य है का'' ॥ तोहू अपनो शून्य हाथ न होय -- केवल याके लिये ही जो लाये है सो हम कैसे अर्प्पण करे यह आनंद है जो तुम ही अर्प्पण करो ॥ वा सुंदरीन के प्रेम रस, कि लाज रस सूं सो यह वचन तो वा प्राण प्रिय के कान में अमृत सार समुद्र के कल्लोलन को वरषा करें हैं ॥ कि मनमें तो प्रसर रही सुंदर सुगंधवारी अनेक प्रकार की अत्यंत दीर्घ उत्कंठा समूह रूप मालान को पहिरावे है ॥३२॥ कि सुंदर मंद हास्य भाव सूं शोभायमान किये श्री मुख कमल सूं चातुरी भर्यो यह वचन हू कहवावे है ॥ कि ''अब तिहारी प्यारी सखी मेरी वांछित भेट के अर्प्पण करवे में काहे को विलंब करें हैं'' ॥ यह वचन के सुनवे में हर्ष सूं उछले मंद हास्यरूप मुक्तान सूं जटित अधर पल्लव के विलास भरे श्रीमुख कमलवारी सखी हू यह कहे हैं ॥ ''अहो यह रीति तो कहू देखी नहीं है ॥ कहू सुनी हू नहीं है ॥ जो अपने परम प्यारे प्रभु लिये जो वस्तु ले आयी होय सो वेग स्वयं न अर्प्पण करे ॥ कि और के द्वारा अर्प्पण करवे की इच्छा करी जाय सो अपनी भेट रूप तुमको इहां जैसे मैंने अर्प्पण कियो है, कि वा प्राण प्रभु जी ने हू सो अत्यंत उछलित प्रेम सूं स्वयं ही मानके लीनी है -- हे सखी वैसे ही तुम हू वेग अर्प्पण करो ॥ कि अत्यंत प्यारे प्रभु को प्रसन्न हू करो ॥ यह प्रिय चक्रवरती प्राणनाथ जी हू प्रेम सूं ही अत्यंत अंगीकार

करेगे ही'' ॥३८॥ ऐसे यह सखी कहेकर या प्रिया जी को हाथ कमलन को पकर के जोर से ही या प्रिय के निकट ले आवे है ॥ कि प्रेम सूं स्थिर हू करें हैं ॥३९॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधी विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे सप्तवीश स्तरंगः ॥२७॥

तरंग ॥२८॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ अष्टविश स्तरंग लिख्यते ॥२८॥

श्लोक -- **अथ विज्ञप्ति पुरस्पर मीशं विश्राम शय्यायाः**

कृत्वोत्थितं चतुष्चयाः मुपवेशयते धृतायां शकू ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, कि ता पाछे सो सखी विज्ञापना पूर्वक श्री महाप्रभुजी को विश्राम शय्या सूं उठायकर वेग आगे धरी चौकी पर बैठाये है ॥ सो वा भेट को हू लायके राजके पास ही धरें हैं ॥ तब सो सखी पाग आदि को उठाय के मधुर प्रकार सूं वा सुंदरीन के हाथ में अर्पन करत ''प्राणनाथ को अर्प्पण कर यह पहिराय'' ऐसे सो सखी कहे हैं ॥२॥ तब सो सुंदरी हू लज्जा पूर्वक श्री मुखरूप निर्मल पूर्ण चंद्रमा को नमाय के हर्ष सूं भरी होयके या प्रिय के मंद मुसकान सो प्रफुल्लित श्री मुखारविंद को निरखत ही कंप सूं शोभायमान अत्यंत सुंदर श्री हस्त कमल सूं लेकर रोमावली सूं भरे श्री हस्त सूं प्रेम सूं याकूं प्रभुन में अर्प्पण करें हैं ॥४॥ प्रथम तो अंजली में धारण करी अमूल्य कि घरी करी पाग को, नम्रता पूर्वक प्रसन्न होय रहे प्राणनाथ सो आछी रीति सो बंधवावे है ॥५॥ मंद मुसकान सो शोभायमान श्री मुखवारे श्री प्राणनाथजी विलास पूर्वक अत्यंत प्रफुल्लित नयन कमलन सूं विनके भाव की सुंदरता को पान करत ही या पाग के आगे वारे पल्लू को श्री मस्तक में धर के उछलित रोमावली वारो होवत ही बांधे है ॥ या समय में वा सुंदरीन की, कि वा प्रियवर की छिपके चली दृष्टि हू आपस में अत्यंत गाढ आलिंगन को प्राप्त होय है ॥ वा प्रियाप्रिय को अत्यंत अधिक ही आनंदित करें हैं ॥ कि नाचे हू है ॥ कि हंसे है -- मधुर वैसे वैसे परस्पर कहे है ॥ वामें कौन अति चतुर को, चित्त प्रवेश कर सके है ॥

अपितो कोई को हू प्रवेश नहीं कर सके है ॥९॥ मंद हास्य को कर रहे या प्रियवर के श्रीमुख चंद्रमा को निरख के मंद मुसकान कर रहे वा कोमल श्री अंग वारी सुंदरीन के श्रीमुख को वर्णन करवे में समर्थ होय तो हर्ष के आसुंन को वरसाय रहे प्राणप्रभु के नयन ही समर्थ होय सके है ॥ और कोऊ हू नहीं होय है ॥ श्री प्राणनाथजी के जे नयन कमल है -- के अपने पलकन सूं वा नम्र अंगवारी सुंदरीन को अपने पास बुलावत ही विनके सगरे ही धैर्य को पान कर लेवे है ॥ ता पाछे वा सुंदरी आगे को दोनों पल्लुन में चातुरी सूं घरी किये बीच में तरंग वारे होय रहे सुंदर केसर रस सूं, कि चोवा सूं छीटे वारे वैसे और सुगंधी द्रव्यन सूं सुगंधी किये सुंदर देखोगे उप संख्यान की धोती को वा प्रियवर के प्रति अर्प्पण करें हैं ॥ तब प्रफुल्लित श्री मुख चन्द्रवारे सो श्री प्राणनाथ जी तो उछल रहे मानो आदर सूं ही वेग उठके उछलित विलास समूह पूर्वक वा धोती को पहिरें हैं, कि बांधे है ॥ उछल रहे कोमल तंतुवारे वे डरे हरिण बालक जैसे अत्यंत चंचल नयन कमलवारी सुंदरी लाज और उत्साह पूर्वक निरखे है ॥१६॥ ता पाछे वे चकोर नयनी सुंदरी वा वा भाग में चातुरी सूं वैसे वैसे चुने, कि परम कोमल अत्यंत सूक्ष्म तंतुवारे उज्वल जामा कि नीमा को प्रियवर के श्री हस्त कमल में अर्प्पण करें हैं ॥ सो प्राणनाथ जी हू श्री अंगन में पहिरें हैं ॥ सो जामा निमा हू प्रिय के सगरे अंगन में सघन मनोहर ऐसो बैठ जाय है, कि जैसे न घटे है, कि बढ़े है ॥ वा सुंदरीन को अत्यंत ही प्रसन्न कर देवे है जासूं वे जाने है, कि चातुरी सूं मै हू या प्रिय के श्री अंगन में गाढ़ लिपट रही हूँ ॥१९॥ रोम हर्षवारी, कि वा प्यारे के रूपकी माधुरी समूह सूं सुखी भयो सो कृशोदरी सुंदरी उछलित रस सागर पूर्वक वा प्रिय के अत्यंत निकट आयके वा नीमा जामा को समारें हैं ॥ कि वाके बंध हू बांधे है ॥ वामें वा वा अंग के भली भाँति सूं स्पर्श रूप अमृत को निरंतर पान करत है ॥२१॥ तब सो श्री प्राणनाथ जी हू तब वा सुंदरीन के विलासन को, कि स्वभाव को, कि चातुरी को, कि आलस को, कि लाज की उत्कंठा, कि सुंदरता को, कि अनेक प्रकार के स्पर्श के प्रकारन को एकतान मन सूं, कि नयनन सूं, कि रोम हर्ष वारे, कि वैसे सगरे अंगन सूं हू पान करें हैं ॥२३॥ ता पाछे सो श्री प्राणनाथ जी वा सुंदरी गणन ने अर्प्पण किये मनोहर तरंगवारे, कि सुंदर सोना जरी के

कमर पटका को कमर में बांधत विनके मनको हू बांधे है कमर पटका के बांधवे में श्री प्राणनाथ जी ने चातुरी सो कियो जो चारो ओर वाको फेरें हैं ।। सो रस सागर को भवर जैसे अत्यंत शोभायमान होय रहयो है ।। जा भवर में वा सुंदरीन को मन मग्न होय गयो है ।। वा मग्न भये मनके वा चंद्रमुखी सुंदरी फिर निकासवे में बड़े यत्न को करत हू समर्थ नहीं होय सके है ।।२६।। ता पाछे वे सुंदरी बड़े मोलवारे अत्यंत सुंदर उपरना को वा प्रिय को पहिराय के टक टकी लगाय के उछलित प्रेम पूर्वक वा प्रियवर को निरखे है ।। फिर सुगंधी सूं भ्रमर समूहन को खेंचवे वारे अगरू चंदन के सार चोवा को वा प्रिय के अंग अंग में, कि प्राणपति जी के पात्र में, कि मनोहर जामा कि नीमा में स्पर्श रस के स्वाद पूर्वक वैसे वैसे लगाय रही वे सुदंरी जन कहे हैं, ''कि इनके अमृत सिंधु के समूह को तुम अवगाहन करोरी'' ।। ऐसे तब मंद मुसकान सों सुंदर कछुक कछु उदय होय रहयो वचन जय को प्राप्त होय रहयो है ।। कि सर्वोत्कर्ष सो शोभायमान होय है ।। तब वे सुंदरी जन गंभीर लालिमा सूं भरे कुमकुम के निस्तुष रस को रत्न जटित काचन के पात्र सूं लावे है ।। बढ़ रहे रसवारी वे मृग लोचना चतुर सुंदरी सुंदर विलास पूर्वक वाकूं लेकर उत्कंठा समूह सूं निर्भय होयके चातुरी सूं वा रससूं वा प्रिय को इच्छानुसार जामा नीमा में, कि पाग में, कि कमर पटका में, कि वा वा अंगन में हू सिंचन करें हैं ।।३२।। वे चारो ओर सूं अधिक विराजमान जे श्रेष्ठ कुमकुम रस की बूंदे है वा प्रियवर को निरंतर शोभायमान करें हैं ।। कि भीतर बाहिर वा प्रिय को शीतल हू करें हैं ।। कि वा सुंदरीन के नयन, कि मन को आनंदित हू करें हैं ।। फिर अनेक प्रकार के बड़े मोलवारे सुगंधी द्रव्यन सूं सिद्ध किये सुंदर अंगराग को वे सुंदरीजन लेकर वा प्रिय के श्री कंठ में, कि कधान में, कि हृदय में हू विलास पूर्वक ही लेपन करें हैं ।।३५।। यासूं वा प्रियको निरंतर शीतल करें हैं ।। कि अपने को उछलित रोमवारो निरंतर करें हैं ।। या समय में वा प्रिय के, कि वा प्रियान के कोऊ अनिर्वचनी रस को अनुभव कर रहे भाग्यवानों के वे वे जे वैसे हर्ष की हास प्रगट होय है विनको लेश मात्र सूं हू वर्णन करवे में मो सरीखो को समर्थ होय सके है ।। अपितु कोई समर्थ नहीं होय सके है ।।३७।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि वा प्रिया प्रिय के परस्पर वे मंद मुस्कान के विलासन सूं प्रकाशवारे

वे निरखन, कि वे स्पर्श, कि वे नर्म हास्य टेक विनोद हू सगरे जिनके हृदय में स्फुरें हैं वा भाग्यवानन को यदि मैं दर्शन करूं तो सब प्रकार सूं रोम हर्ष वारो होयके विनको नमन करू यह मेरी अभिलाषा है ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि ता पाछे प्रकाश भरी सोना की माला, कि रत्न की माला, कि मोतिन की माला को वा श्री प्राणप्रिय के श्री कंठ में वे भाग्यवती पहिरावे है ।। अमुल महा रत्न समूह जामें जटित है ऐसे सोना के श्रेष्ठ पदक को पहिरावे है ।।४०।। सुंदर मणि समूह सूं जटित मनोहर सोना की चौकी को पहिरावे है ।। कि चतुर सोनी ने गढ़ी (बनाई) अत्यंत प्रकाश भरी सांकल हू श्री कंठ में पहिरावे है ।।४१।। कि अंगुलिन में सुंदर निर्दोष मनोहर श्रेष्ठ रत्न जटित मुद्रिका हू पहिरावे है ।। कि हस्तमुल में दिव्य बड़े मोलवारे प्रकोष्ट भूषण को पहिरावे है ।। श्री कानों में सुंदर मनोहर मणि जटित रमणीक कुंड्ल पहिरावे है ।। कि पाग के ऊपर निर्मल चमकनो सोना को कमल पहिरावे है ।। वैसे वा वा अंगन में और हू सुंदर आभरण विलास पूर्वक अर्प्पण करें हैं ।। यह प्राणनाथ जी हू हर्ष पूर्वक अंगीकार करें हैं ।।४४।। यह भाग्यभरी सुंदरी जैसे जैसे वा वा वस्त्र, कि आभरणन को अर्प्पण करें हैं वैसे वैसे या सुंदरीन को मानो विजय करत वैसो इनको भाव हू प्राणप्रिय के या श्री अंगन में प्रवेश करत विन भूषण वस्त्रन सूं हू बड़े महेगे कि अत्यंत अधिक मोलवारे अनेक प्रकार के कटाक्ष कि अत्यंत मधुर भ्रू विलास कि गूढ़ भाव वारे नर्म हास्य विनोद, कि अत्यंत चाटुकार, कि उज्वल अमृत को विजय करवे वारे लाज कि मंद हास्य को हू भेट करें हैं ।।४७।। श्री प्राण प्रिय जी हू मंद हास्य भरे श्री मुख सूं, कि प्रसन्न मन सूं हू वा सबन को हू अभिनंदन करें हैं ।। सराहना करें हैं ।। ता पाछे वे कमल नयना सुन्दरी मनके हरवे वारी निर्दोष अनेक प्रकार के सुगंधी फूलन की माला को प्राणप्रिय के श्री कंठ में स्पर्श रसके स्वाद सहित पहिरावे है ।। वहां पूर्ण चंद्रमा सूं हू सुंदर श्री मुखवारी वे सुंदरी वा प्राण वल्लभ को प्रसन्न करवे वारे अंबर की कृष्णागरू चंदन के टूकन के धूप को प्रगट करें हैं ।। तब सुगंधित कियो है सगरो घर आंगन जाने, कि भमरा समूहन के गुंजारन सो मनोहर जो धूप है सो चारो ओर प्रसर गयो है ।। जासूं वा प्रिय को सो विश्राम मंदिर अत्यंत ही शोभायमान है ।।५०।। ता पाछे वे कोमल अंगवारी सुंदरी हस्त कमल सूं तांबुल बीड़ा को

लेकर विलास पूर्वक वाकूं खोल के यथा योग्य प्रेम सूं वा प्रियवर को अरूगवावे है ।।५१।। तब बीड़ी कूं आरोग रहे, कि विलास पूर्वक प्रिय वचनन को कहे रहे वा प्राण प्रिय के बढ़ रहे जे दर्प्पण को हू विजय करवे वारे कपोलन के चंचलता के विलास है ।।५२।। कि पक्वबींब फल के गर्व समूह को पान कर रहे अधर के जे चलन वलन की शोभा प्रभा के तरंग है, कि दंतन की जे शोभा है, कि मंद मुसकान, कि जे माधुरी है वे सब ही वा सुंदरीन के नयनन को कि मन को वश करें हैं, कि दास बनावे है ।। कि सखी हू करें हैं ।। कि यासूं नचावे है ।।५४।। यह भाग्यभरी सुंदरी और हू जो जो वस्तु आप लायी है सो सो वस्तु या अवसर में सखी के हस्त में देके प्रेम सूं प्राणनाथ जी के आगे भेट धरें हैं ।।५५।। तव कमल लोचना वा सुंदरीन के अनेक प्रकार के निवेदन के प्रकार की वा वा नम्रता को हू निरख के प्राणनाथ जी प्रसन्न होय जाय है ।।५६।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधार्सिधो सायावधी विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे अष्टविश स्तरंगः ।।२८।।

तरंग ।।२९।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ उनत्रिस स्तरंग लिख्यते ।।२९।।

श्लोक -- **अथ जांबूनद पात्रं अत्युप्तानिक हीरमणि मुक्तं --**
तांबुलैरपि कुसुमैः सो वर्णेश जतैश्च संवलितम् ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि ता पाछे प्रिय सखी जामें अनेक हीरा कि मणि, कि मोति जटित है, कि जामें बीड़ा सोना रूपा के फूल हू धरें हैं, कि मणि हीरा मोती समूहन सूं शोभा भरे दीपक, कि मंगल वस्तु अनेक हू जामें धरें हैं -- गंध अक्षतादि सूं जो मिल्यो है ऐसो सोना को थार सजायके लायके वा भाग्यवती सुंदरीन के हाथ कमल में देवे है ।। वे भाग्यवती हू लेके हर्ष सूं श्री प्राणप्रिय के सुंदर भाल में तिलक करके श्री हस्त कमल में बीड़ो पधराय के यह भाग्यवती आर्तीवारें हैं ।। विशेष सूं सुंदरवर के सुंदर श्री मुख कमल को वे अत्यंत प्रसन्न करें हैं ।। कि मंद हास्यरूप चंबेली के फूलन सूं, कि मुख की नयनरूप कमलन सूं के -- कि अधर रूप

बंदुक फलन सूं हस्तरूप पवन सूं वांकी वे भाग्यवती सेवा करें हैं ।। फूल वारे हैं, वारनो वारें हैं ।। श्री मुख पर कोमल हस्त फेरें हैं ।। यहाँ से कुछ प्रसंग हमने नहीं लिये है सो हमें क्षमा करोगे...... ।। कृपासिंधो श्री गोकुलाधीश महाप्रभो है, कि हजारन अर्बन प्राण समूह जा पर वारे डारे ऐसे सुंदर श्रीराज को यह भूमि शय्या सूं उठवे को सुंदर मधुर समय है ।। चिरसों श्रीराज को निहार रहयो, कि श्री राजके दर्शन बिना विकल होय रहयो जो भक्तन को, कि भक्त सुंदरीन को अनेक प्रकार को समाज है सो श्रीराज के विश्राम सुख भंग के भय सूं बड़े-बड़े यत्न सूं ही अबलों अपने-अपने घर में ठहर रहयो है ।। यासूं पीछे अब तो अत्यंत उछल रहे उत्कंठा समूह सूं प्रेरणा कियो सो अत्यंत दौड़त गिरत परत वेग ही आय रहयो है ।। तथा प्रफुल्लित होय रहे श्री राज के श्री मुख कमल को निरखवे लिये श्री राज की प्यारी या प्रिय सखी को पति आदि गुरूजन हू वेग ही आवेगे -- विनको अनुकूल चलनो हू आवश्यक है .....

(यहां से और रस प्रकार नहीं लिये सो हमें क्षमा करोगे ।।)

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधी विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे उनत्रीस स्तरंगः ।।२९।।

तरंग ।।३०।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ त्रिस स्तरंग लिख्यते ।।३०।।

श्लोक -- **इत्यादि तासामुदितानुरागं निगधस्त्य कज लोचनानाम्**
प्रातः प्रयाणोपयिकं समस्तं वितन्वतिनां निखिलैव रात्रीः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं, कि उछलित अनुराग पूर्वक इत्यादि प्रकार सूं कहे कर प्रातः समय यात्रा के उपयोगी सगरे कार्य को कर रही वा श्रेष्ठ कमल लोचना सुंदरीन की सगरी रात्री गुजर जाय है ।। कि कछुक दिन हू गुजर जाय है ।। रस सागर श्री प्राण नाथ जी तो श्री गिरिधारी जी के राजभोग पर्यंत सेवा को भली भाँति सूं करके, कि अपने कृपा पात्रन के संग भोजन लीला को हू करके, श्री मुखारविंद कि श्री हस्त कमलन को पखार के अपने विश्राम घर में वेग पधारे हैं ।। तामें उछलित

प्रेम समूह सूं जो सुंदर है, कि बड़े मोलवारे वस्त्र कि भूषण समूहन सूं जो मन को हरें हैं, कि प्रस्थान में पधारवे लिये जो तैयार है, कि अत्यंत शोभायमान है मुखचंद्रमा जाकूं ऐसी जो प्रिया है जो प्रथम दिन निश्चय किये संकेत सूं सखी के संग की पूर्णभाव सूं विराजमान मनोहर मृगलोचना के संग ही आय गयी है ऐसी वा प्रिया को निरख के श्री महाप्रभुजी अत्यंत प्रसन्न होय है ॥५॥ श्री प्राणनाथ जी बीड़ी को आरोग रहे हैं ॥ श्री मुखारविंद आपको अत्यंत प्रसन्न है ॥ सुंदर जामा, पाग, कमर पटका, कि धोती उपरना, कि बड़ी चादर को पहिर के विलास सूं प्रकाशमान आपके श्री अंग सुंदर है ॥ संग चलवे वारे लोकन की वाट निहारवे लिये क्षणेक ठहर के आगे देखोगे थार के अत्यंत शोभायमान पड़गा की तष्टी में प्रसादी बीड़ी को पधराय के अभिप्राय भरे मंद हास्य सूं शोभायमान है ॥ कि सो सखी तो वेग ही आयके वा प्रसादी बीड़ी को वा सुंदरीन को अरूगवावे है ॥ तामें वाकू ले रही वा सुंदरीन कूं गुप्त अपने कटाक्षन सूं सन्मान देकर विराजमान है वे परम चतुर, कि इन्दीवर श्वेत कमल की माला जैसे दीर्घ लोचनवारी सुंदरी श्रीराज को बड़ी उत्कंठा सूं निहार रही है ॥ बड़े मान के सागर सुजान, कि मनोहर लीला वारे यह अपने पुत्र विट्ठलराय को, कि सुंदर प्रेम की नम्रता सूं शोभायमान, कि वाके बड़े भैया ऐसे श्री गोपाल जी को स्नेह भरी दृष्टि सूं, कि प्रिय वचन सूं विदा करें हैं ॥ तब श्री राज को जो बड़ो पुत्र श्री गोपाल जी है सुंदर फूल माला को श्री राज के अत्यंत शोभायमान श्री कंठ में धरावे है ॥१०॥ ता पाछे उछलित अनुराग भरे श्री महाप्रभु जी रत्न चौक में पधारें हैं ॥ वहां घोड़ान के सेवक सजाय के आगे राखे घोड़ा राज पर आप सवार होय है ॥११॥ रस भरी हरिण नयनी सुंदरीन के समूह सूं, कि असंख्यात भक्त समूहन सूं, कि अपने सगरे संबंधीन सूं मिली पीछे आय रही वा सुंदरीन को पूर्ण भाव भरे श्री प्राणप्रिय जी विलास समूह पूर्वक ही देख रहे हैं ॥ कि संख्या सूं रहित, कि असंख्यात, कि रससूं भरी पूर्ण चंद्रमुखी समूह, कि निर्दोष महानुभाव, कि भक्तिवारेन में श्रेष्ठ चक्रवर्ती भक्तजन हू भाव सहित ही श्री राजको सब देख रहे हैं ॥१२॥ कि जय शब्द के समूहन सूं श्रीराज को बढाय रहे हैं ॥ अनेक वार दंडवत प्रणाम हू कर रहे हैं ॥ कि बड़े उछलित उत्साह सूं, श्रीराज के, सब वे पीछे चल रहे हैं ॥ कि आपके निर्मल मनोहर लीला को गान कर रहे हैं ॥१४॥

सो श्री प्राणप्रिय जी कितनेन को करुणा को वरसाय रही दृष्टि सूं समाधान कर रहे हैं ।। कितनेन को तो मनोहर मंद मुसकान सो समाधान कर रहे हैं ।। कि कितनेन को अमृत को वरसायवे वारी वाणी सूं समाधान कर रहे हैं ।। विलास सूं श्रीराज को अंग शोभायमान है ।।१५।। गाढ़ा रथ अनेक प्रकार की पालखी, कि सुखपाल, कि मनोहर घोड़ा सवार, कि मनोहर घोड़ा यह आपके पीछे चल रहे हैं ।। पाउ प्यादा तो श्रीराज के आगे हू चल रहे हैं ।। या रीति सूं श्री प्राणप्रियजी श्री गोवर्द्धन यात्रा कर रहे हैं ।।१६।। तथा भक्तन में श्रेष्ठ जो गढ़वी नाम वारो विश्नुदास है जो बड़े हर्षसूं घोड़ान के स्वामीरूप अधिकार को आछी रीति सूं करें हैं ।। सो हू भाषा प्रबंध दुहा चोपाई छंद कवित्त सवैयान सूं, कि वार्तान सूं श्रीराज को प्रसन्न करत ही घोड़ाराज पर सवार होयके श्रीराज के साथ ही आपके निकट शोभायमान होवत ही चले है ।। तथा जे भाग्यवारेन में श्रेष्ठ भक्तजन या प्राणप्रिय महाप्रभु को कबहु नहीं छांडे है ।। वे भक्त राज हू अत्यंत प्रसन्न श्रीमुख, कि हृदय वारे होयके आपके आगे चले है ।। तथा जे सुंदर भावभरे भक्तवर वा प्रियवर के वैसे सुंदर मनोहर विशेष शोभाभरे श्री मुख कमल के दर्शन विना जलपान हूं नहीं करें हैं ।। ऐसे वे लाख करोडन सूं अधिक है ।। वे हू श्रीराज के संग ही चले है ।।१९।। कि जे वा श्रीराज के भोजन थार में रहे श्रीराज के भोजन शेष महाप्रसाद मिले विना भोजन नहीं करें हैं ।। वे द्रढ़व्रत वारे भक्त हू श्री प्राणनाथ के आगे ही चले है ।।२०।। तथा जे भाग्यवान श्रीराज के साक्षात चरणारविंद सूं गिर रहे अमृत कि चरणामृत के पान किये विना कछु खानपान नहीं करें हैं, कि जीवे-हू-नहीं है ।। वे इहां केसे रहे सके है ।। कि बेहू संग चले है ।।२१।। कि तथा जे भाग्यवान भक्त वा श्रीराज के वचन रूप मनोहर मुक्ताफल कानों में न पहिरावे है वे तो जल के विना मछली, ताकी जैसे दशा होवे है ।। वा दशा को प्राप्त होवे है ।। तासूं वे हू वा श्रीराज के साथ निकट ही चले है ।।२३।। जिनके नयन कमल वा प्रिय के श्री मुखचंद्र की सुधा के पान विना जीवे नहीं है वे चंद्रवदनी सुंदरी तो पारस रूप प्रियवर के क्षणमात्र हू छोड़वे में समर्थ नहीं है ।।२४।। कि अहो या रसिक राज प्रियवर ने जिनके नयन अपने रूप सूं जिनको हृदय अपने गुण समूहन सूं, कि जिनके कान अपने वचनन सूं, कि जिनके घ्राण अपने श्री अंग की सुगंधी सूं, कि जिनके

सगरे स्वरूप को अपने स्वरूप सूं ही बांधके राख्यो है वे भाग्यभरी सुंदरी इहां केसे रहे ॥२४॥ तथा जो भाग्यवतीन को या प्रिय के समीप रहवे लिये अमृत समूह सूं जट्ति हू सगरो जगत सगरे विषयन सू हू दूर छांड्वे योग्य होय है ॥ कि विषय सूं हू बुरो जाने है ॥ वे कोमल अंगवारी हू श्रीराज के संग ही आगे ही चले है ॥२५॥ जा भाग्यभरीन को या प्रिय चक्रवर्ती के बिना सगरो हू जगत अंधकार रूप भासे है, वे मनोहर अंग वारी सुन्दरी या प्रिय के श्रीमुख चन्द्र की शोभा कों पान करत ही मधुर प्रकार सूं चले हैं ॥२६॥ तथा जा चतुर भाग्यवती सुंदरीन ने अपनो सगरो संबंधी, कि सर्वस्व, कि अपनी शोभा हू या प्राणप्रिय में निवेदन करके सबन के साररूप यह प्रियवर ग्रहण कियो है, अपनो कियो है वे भाग्यवती वा प्रिय कूं क्षणमात्र हू कैसे त्याग करे ॥ तासूं वे हू संग चले है ॥२७॥ अहो सुंदर अमूल्य वस्त्र कि आभरणन सूं शोभायमान होय रही प्रिय की या भक्त सुंदरीन सो, कि वैसे भक्तन सूं हू वा श्री गिरिराज को जो मार्ग है सो तब सुंदरता की सुगंधी, कि गान, कि माणिक मोती सुवर्ण सूं, कि ऐश्वर्य चतुरता की पवित्रता, कि भाव, कि रत्न समूहन सूं मानो चारो ओर जटीत कि प्रतीत होय है ॥ कितने भाग्यभरे भक्त तो श्रेष्ठ नीमा पाग कमर पटका कि धोती उपरना कि मनोहर अमूल्य भूषणन को धारण करके या प्रिय के सेवा अर्थ उत्साह समुद्र सूं भरे होयके उच्छलित हर्ष सूं या प्रिय के संग चले है ॥३०॥ कितने भाग्यभरे भक्त तो या प्रिय के वा श्री मुखारविंद को देखे बिना ठहरवे में समर्थ न होवत, कि और भक्त तो या महाप्रभु जी के सुख कि दुःख के कारणन को बहुत प्रकार सूं विचार के, वा सुख, कि सुख के साधनन को करवे लिये, कि दुःख, कि दुःख के साधनन को निवर्त करवे लिये, कि वा प्रिय के संग ही चले है ॥ तथा जे भक्त जन या प्रभु की अनेक प्रकार की वा वा मनोहर सेवा को करवे लिये, कि कोई औरहू कारण सूं श्री गोकुल में ही ठहरवे की इच्छावारे हैं ॥ वे हू सगरे या प्रिय के संग दूर पर्यंत चलके पुरुषोत्तम प्रियवर के वचन सूं, कि कृपा दृष्टि सूं आर्द्र होय गये हैं ॥ विदा होयके प्रिय के श्री मुखारविंद को वारंवार फिर फिर के देखत ही श्वासन को भरत ही अत्यंत वेग वारे बड़े मोलवारे घोड़ा, कि सुंदर घोड़ा वारे रथ इहां ले आये है ॥ वे हू या अवसर में वा श्री महाप्रभुजी को विज्ञापना करके वा पर सवार करावे हैं ॥

यह कृपा सागर श्री प्राणनाथ जी हू विन पर सवार होयके प्रसन्न होवत ही चले है ॥ तब सगरे भक्तजन, कि कमल वदनी सुंदरी हू या प्रियके बहुत गुणन को गान करें हैं ॥ कि स्नेह सूं जय जय कार हू करें हैं ॥ या प्रिय के श्री मुख चंद्रमा के अमृत तरंगन को हू पान करें हैं ॥ तथा जे प्राप्त भये संकेत सू बढ़ रहे उत्साह विशेष सूं प्रफुल्लित श्री मुखवारी सुंदरी हैं वे प्रिया तो सर्वात्मभाव नामवारी मालान सूं उत्साह रूप भुजा के हाथन सूं गुंथी कटाक्षरूप नील कमलन की मनोहर दीर्घ मालान कों या अवसर में प्रिय के श्री मुख चंद्रमा में, कि वा वा अंगन मे हू पहिरावें हैं ॥ तथा जे भाग्यवती या प्रिय कूं सोना, मोती, मणि, कि हीरान की मनोहर मालान सूं हू अत्यंत शोभायमान करें हैं ॥ वे सुंदरी हू श्रृंगार सर्वस्व रस सागर प्रिय को अत्यंत ही प्रसन्न करें हैं ॥३९॥ जब मनोहर रूपवारी नाव पर प्रिय चक्रवर्ती श्री गोकुलाधीश जी चढ़े है, कि वे वे श्रीराज के भक्तवर, कि वे वे सुंदर नयनवारी भक्त सुंदरी हू चढ़े है वा समय में श्री यमुनाजी में, कि वा सुंदरीन में जो कोई शोभा अत्यंत उछले है याकूं वर्णन करवे में समर्थ होय सके है, कि जो विनके विशाल अनुभव में हू समाय नहीं सके है, तो वर्णन में कैसे आवे है ॥४१॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि वा एक नाव में विराज रहे वा श्री प्राणप्रिय के, कि वा सुंदरीन के जे अत्यंत उछल रहे भ्रू विलास है, कि श्री मुख कमल है, कि मंद हास्य हैं, कि उत्कंठा सू निरखवो है, कि अन्यापदेश सूं और के बहाने सूं वचन विलास है वे सगरे जिन भाग्यवानों के मनके भीतर उज्वल अत्यंत मनोहर रस सागर को प्रवेश कराय के अधिक जटित ही कर देवे है ॥ वा महाभाग्यवानों के चरण कमलन को, कि विनकी रज को हू प्रणाम करवे वारेन को हू हों सदैव दास हू ॥ कि विनकी कृपा कटाक्ष को हों चाहना करू हूँ जासूं मेरो सगरो वांछित विनके ही आधीन है ॥४४॥ श्री कल्याण भट्ट जी अपनो मनोरथ उद्गार कहे कर अब प्रसंग कहे हैं, कि ता पाछे उछलित अनुराग भरे श्री प्राणनाथ जी वा नाव सूं उतर के सुंदर अमूल्य साज सू सजे, कि इन्द्र के घोड़ा कूं हू विजय करवे वारे उछल रहे घोड़ा राज को प्रायः अलंकृत करें हैं ॥४५॥ कबहु श्रेष्ठ घोड़ा वारे रथ कों, कि कबहु सुखपाल को, कि कबहु गाड़ा को हू अलंकृत करें हैं ॥ श्री राज के पीछे बड़े उदार भाववारे अनंत भक्त कि भक्त सुंदरी हू काम के अभिमान

को हरवे वारे प्रियवर के रूप को, कि अमृत के हजारन समुद्रन को निंब रस जैसे कड़वे जतायवे वारे महा मधुर वचनामृत को हू पान करत ही चले है ॥४७॥ तथा पवन के अभिमान समूह को जाने विजय कर लियो है ऐसे प्रियवर के घोड़ाराज के अत्यंत दौड़त में हू श्रीराज के स्वरूप माधुरी के समूह सूं जिये भये श्री राज के भक्त आगे हू चले हैं ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं, कि अहो प्राणनाथ जी की सेवा भक्तवर समूह के प्रति को जाने, का रस की सो रसदान करें हैं सो हम नहीं जाने है ॥ जासूं या प्रिय के वांछित वा वस्तु समूह सूं शोभायमान हस्त कमल वारो यह भक्त समूह या प्रिय के पीछे अणु मात्र हू कबहू नहीं ठहरें हैं ॥ किंतु आगे आगे ही चले है ॥४९॥ तथा वा सुंदर वर के आगे सदा चल रही कमल लोचना सुंदरीन को जो हृदय है सो सुंदर पुष्ट वक्ष युगलन को, कि नितंब बिंबन को या प्रकार सूं कहे हैं ॥ कि या अवसर में मैं उत्कंठा सूं ही भर्यो हू ॥ अत्यंत ही पुष्ट हू तासूं भार समूह सू देने वारे औरन सू मेरो कार्य नहीं है ॥ जब श्री प्राणप्रिय जी वा उरोज युगल कि नितंबन की ओर निरख्यो तब तो विनके सो हृदय हू अत्यंत हर्ष को धारण करें हैं ॥ प्रथम सू हू विशेष पुष्ट होय जाय हैं ॥५२॥ तथा कार्य के वश सू, कि कोई कारण सूं जे सेवक जन, कि जे चंद्रवदनी सुंदरी गोकुल में ही रहवे, कि इच्छावारे हैं वे सहू तो पावन सूं ही चलत या प्रिय के संग ही दूर पर्यंत आयके या प्राणनाथ की कृपादृष्टि को प्राप्त होय के आंसुन के समूह को वरसावत ही या प्रियवर के आगे चलने पर यह पीछे वगद कर वारंवार प्रिय के मुख चंद्रमा को निरखत ही, कि प्रेम के भार सूं अनेक प्रकार, कि आशीष या प्रिय को सदा देवत ही, कोई ने जिनको सगरो हू धन लूट लियो होय, ऐसे ही उदास होय के आंसून सूं मार्ग की भूमि को कीच वारो करत ही शुद्ध चित्तवारे वे भक्तजन अत्यंत नम्र मुख कमल होयके श्वासन को भरत ही अपने घर कों जाय हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी के आवन पर्यंत या प्रिय के गुणगान सूं ही काल को बड़े कष्ट सूं ही गुजारें हैं ॥५५॥ विलासन सूं शोभायमान श्री अंगवारे कृपासागर स्पष्ट शोभाभरे प्रियवर जी कितने भक्तन को पावन सूं दूर पर्यंत चलत निरख के सवारी पर सवार होयवे लिये स्पष्ट ही कहे हैं ॥५६॥ कितने भाग्यवान तो

सवारी हू पास है अंग हू कोमल है ।। सवार होयवे के लिये प्रभुन ने कहयो हू है तो हू भाव के भेद सूं आपके आगे सवारी पर सवार नहीं होय हैं ।। कल्पवृक्ष के नवीन पल्लव जैसे कोमल चरण तल वारे हू हैं ।। हर्ष सूं ही वेग ही दौड़े हैं संकेत वारी जे श्रेष्ठ कमल लोचना सुंदरी है वे तो नाव सूं उतर के बड़ी उत्कंठा सू, कि प्रेम समूह सूं, कि भक्ति सूं पावन सूं ही वा प्रिय के पीछे चले हैं ।। कि कितनी और चंचल नयना सुंदरीन सू मिलके आगे हू चले हैं ।। सो प्राणनाथ जी तो यासूं वा सुंदरीन में वा संकेतवारी कोमल सुंदरीन को मधुर मनोहर भ्रू के विलास सू, कि मधुर श्री हस्त सूं सुखपाल में, कि रथ में सवार करावे हैं ।।६०।। तब अपने रूप सूं, कि भाव सूं, कि गूढ़ भाव वारी सुंदर नकल टेक सूं, कि वचनामृत सूं, कि मंद हांसी सूं, कि बीड़ी आरोगवो, कि जलपान करके आदि के बहाना सूं अद्‌भुत रीत सूं निरखवे आदि सूं, कि दूर मनोहर वा स्वरूप सूं, कि वैसे मनोहर वस्त्र भूषणन सूं, कि मनोहर उर्द्धपुंड सूं, कि कृपा समूह सूं अनुभव कराये अपार अगाध हर्ष सागर में भक्तन कूं, कि भक्त सुंदरीन को, कि विशेष सूं वा रस सुंदरीन कूं निमग्न करत स्वयं हू निमग्न होवत मधुर प्रकार सूं हू चले है ।।६४।। श्री गोवर्द्धन राज में विराजमान श्री महाप्रभु जी को मंदिर जैसे जैसे निकट आवे है वैसे प्राणनाथ जी के सगरे भक्त में, कि या संकेत भरी सुंदरीन में, कि प्राणनाथ जी में वा सबन के अत्यंत बढ़ रहे उत्साह समूहन सूं, कि मनोरथ सू सो श्रीराज को मंदिर अत्यंत ही दूर ही होय जाय है ।। वा सबन को जो मनोहर मधुर स्नेह है, कि मनोरथ है, कि उत्कंठा समूह है, कि वचन है विनके जे तरंग है वे तो आकाश कूं परस कर रहे पर्वत राज है ।। वा सबन कूं वाणी रूप सीप में धरवे लिये बहुत यत्न करत हू को समर्थ होय सके है ।। कि कोई वर्णन कर सके है, किंतु कोई हू नहीं वर्णन कर सके है ।।६७।। वे सगरे भक्तवर, कि सगरी वे रसकमल लोचना सुंदरी या रस सागर श्री प्राणनाथ जी को निरखत ही वैसे सो प्राणनाथ जी हू मंद हास्य सूं शोभायमान वा सुंदरीन के मुख चंद्रमा को ही निरखत ही चल रहे हैं ।।६८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधी विनोद भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे त्रीस स्तरंगः ।।३०।।

तरंग ॥३१॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ एकत्रीश स्तरंग लिख्यते ॥३१॥

श्लोक -- **सप्राप्य शैलदमुदार कीर्ती रे वंसछन्सु शोभा समुद्र**
तैस्ताभिरप्यंग तथा विधामिस्वामिश्च साकं स्वगृह प्रविश्यं ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि या प्रकार सो उदार कीर्ति वारे शोभा के समुद्र श्री गोकुलनाथजी वा भक्तन के संग, कि वा भक्त सुन्दरीन के संग, कि वा संकेत वारी सुन्दरीन के हू संग श्री गोवर्धन पर्वत को प्राप्त होयके अपने श्री मंदिर में प्रवेश करके ॥१॥ दृष्टि, कि वचनामृत कि मंद हास्यादि सूं अपने सगरे समाज को समाधान करत महाप्रभुजी वस्त्रन को बड़ो करें हैं ॥ वेगा वेगी फुलेल सूं श्री अंगन में अभ्यंग करके सुहाते ताते जलन सूं स्नान हू करके सो गुणसागर प्राणपतिजी वा सबन के संग ही श्री गिरिराजजी पर पधारे हैं ॥ वहां श्री गोवर्द्धननाथजी के श्रीमुख कमल को निरख के उछल रही शोभावारे, कि उदार लीला वारे श्री महाप्रभुजी उच्छलित प्रेम सूं शयन आर्ती करें हैं ॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें, कि जो यह करोड़न रस सागर रूप मूर्ती वारे श्री प्राणप्रियजी शिरीष के फूलन सूं हू कोमल श्रीअंग वारे हैं ॥ ऐसे परम कोमलांग प्रियजी हम सबन को सुखदान करवे लिये अपनी श्री गोकुल सूं बारह कोस दूर यहां पधारे हैं ॥ आपको श्रीअंग श्रमित होयगो तासूं आपके श्रम आदि दोष को निवर्त करवे वारी, कि सुन्दर मंगलन को बढायवे वारी निरांजन, कि आर्ती करवो उचित है ॥ तोहू अनेक भाव भरे इतने बहुत जनन के देखत ही परवश हम आर्ती कैसे करें, कि कैसे नहीं करें या प्रकार सूं संकेत वारी नीलकमल लोचना सुन्दरी अत्यन्त ही उत्कंठा भरी उदास होय रही हैं ॥ विनके मनोरथ सो प्राणनाथजी श्री गोवर्द्धननाथजी, कि आर्ती सूं अपनी आर्ती करत ही पूर्ण करें हैं ॥ तथा वा रस संकेतवारी सुन्दरीन के अत्यन्त उछल रहे ताप को हरवे लिये अपनो मनोरथ जो अत्यन्त बढ गयो है वाकूं हू वा आर्ती श्री गोवर्द्धननाथ की, के समय में अपने श्रीमुख कमल के उच्छलित अमृत समूह रूप दर्शन सू इच्छानुसार ही पूर्ण करें हैं ॥०॥ अब यह कृपासिन्धु प्राणप्रियजी श्री गोवर्द्धनधर के श्री मंदिर सूं अपने श्री मंदिर में पधारेंगे ॥ या रीति सूं विचारके श्री प्राणनाथजी

के सगरे भक्त आपके आंगन में, कि गली में, कि घर में जायके श्रीराज के श्री मुखचन्द्रमा की शोभा को पान करवे लिये ठहरे हैं ।। ईश्वरेश्वर प्रिय श्री महाप्रभुजी वहां सगरे कार्य को समाप्त करके बाहिर पधारके जलघरा के मार्ग सूं सुन्दरन के चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी अपने मंदिर में पधारे हैं ।। तामें करोड़न पूर्ण चन्द्रमान सूं आपको श्री मुख कमल अधिक प्रकाश वारो है ।। दंड दीपन को समूह हू श्री राज के आगे पीछे, कि चारों ओर अत्यन्त बड़ो प्रकाश कर रह्यो है ।। वामें अत्यन्त चमक रही सुन्दर मूर्ती वारे श्री प्राणनाथजी चल रहे हैं ।। तामें उज्ज्वल अत्यांतयत जामा कि उपरना, कि वैसे बड़े मोल वारी सुन्दर उज्ज्वल श्वेत श्रेष्ठ धोती को अपने श्री अंगन सूं शोभायमान कर रहे हैं ।। कि श्री अंगन को वा वा वस्त्रन सूं शोभायमान कर रहे हैं ।। कि उछल रहे हैं कांति सूं अनेक, श्री यमुना जिनसूं ऐसे सुन्दर स्निग्ध श्रेष्ठ कारे वारन को जो जुरा है जो और को परस हू नहीं करें हैं, कि और में जाकी शोभा कबहू नहीं होय है ऐसे वा जूरा सों जो शोभायमान हैं ।। कि मणी हीरा मुक्तान सूं शोभायमान जाको कर्णपाश है, कि सुन्दर चन्दन की श्रेष्ठ कुमकुम सों रचना किये मनोहर उर्द्रपुंड्र तिलक सों जो शोभायमान है ।।१०।। कि वा तिलक के मध्यम में स्थित स्वाभाविक सूक्ष्म श्याम रेखा सूं हू जो शोभायमान है, कि जव्ति होय रही मंद मुसकान सों शोभायमान वचनामृत समुद्रन सूं भक्तन को जो अत्यन्त सिंचन कर रह्यो है ।। तथा विजय किये हैं मूंगा प्रवाल, कि कल्पवृक्ष के नवीन सुन्दर पल्लव जाने, ऐसे अधर की निर्मल कांति प्रवाहन सूं, जो सगरी दिशान को लाल रंगवारी कर रह्यो है ।।१४।। कि श्री कंठ की उछल रही निर्मल कांति रूप गंभीर अमृत नदी में विहार करवे सूं अत्यन्त सुन्दर अंग वारी जो तुलसी माला है विनसूं हरिण लोचना सुन्दरीन के धैर्य कों जो हर रहे हैं, कि सुन्दर मुक्ता, कि मणी, कि हारन, कि लक्ष्मी की शोभा जामें तरंग जैसे लगे है ऐसो निर्मल मनोहर जाको हृदय है, कि गुंजा की माला सूं कमलमुखी सुन्दरीन के मन रूप हरिण को जो खेंच रह्यो है, कि श्रीकंठ सूं लेकर नाभि पर्यंत विलास कर रही मनोहर वैजयंती माला के प्रसर रहे सुगंधी के मनोहर प्रवाहन सूं जो त्रिलोकी को सघन ही भर रह्यो है ।।२२।। कि सुन्दर मनोहर सारंगी सूं शोभायमान है हस्तकमल जाको ऐसो श्रेष्ठ भाव भर्यो, कि गुणी जनन को मुकुट रूप जो

अपनो ध्यानदास है सो सारंगी सूं उछल रहे, कि अनंत अमृत के तरंगन को विजय करवे वारे गीतन सूं जाको प्रसन्न कर रह्यो है ॥ कि जा प्रियवर के शोभा भरे श्रीमुख की शोभा समूह के पान के लोभ सूं अहं पूर्विका सूं, कि हों पहेले जावुं, कि हों पहेले जावुं या प्रकार की उतावल सूं आगे पीछे, कि इतउत सूं आय रहे सगरे भक्तजन जाकूं चारों ओर घेर रहे हैं ॥ कि वैसे सुन्दर लोचनवारी सुन्दरीहू जाकूं चारों ओर घेर रही हैं ॥२३॥ कि यह संकेत वारी मनोहर सुन्दरी तो उदय होय रही तृष्णा के तरंग पंक्ति सूं शिख सूं लेकर नख पूर्ण चन्द्रमा पर्यंत जाकी बहुत श्री अंग की शोभा को पान कर रही है ॥२४॥ कि श्री गिरिराजजी की तरहटी में ठहर रहे, कि श्री राज के यश को गान कर रहे, मृगलोचना समूह, के श्री राज के दर्शन के आनन्द समूह सूं उछल रहे गान सूं जो अत्यन्त प्रसन्न होय रह्यो है ॥२५॥ कि अत्यन्त प्रिय के पधारवे सूं पहेले ही आयके भक्तजन भीड़ कर देंगे तासूं या भय सूं अपने सगरे संबंधीन के सहित ही द्वार में स्थित भक्त सुन्दरी चन्द्रमुखी है, कि कि सेवकजन हैं विनके किये जय जयकार समूह को दोनों कानों सूं जो पान कर अभिनन्दन कर रह्यो है ॥ कि उच्छलित होय रहे विलासन सूं जाको श्रीअंग सुन्दर शोभायमान है ॥२७॥ ऐसे सो श्री महाप्रभुजी ऐसी अधिक शोभा सूं भरे निज मंदिर में पधारके सगरी संध्या विधि को हू करके कृपासागर श्री प्रियवरजी अपने श्रेष्ठ भक्तप्रवर ने भक्ति सों लायके अर्पण किये भोग सामग्री तबकडी को श्री मुखारविन्द सों आदर करके प्रथम जाको स्वरूप कह्यो है ऐसे आसन कि गादी, कि तकिया को अलंकृत करें हैं ॥ श्री राज के जे भक्तवर हैं वे हू आगे, कि इत उतकूं बैठ जाय हैं ॥२९॥ तब श्री महाप्रभुजी अधिकारीजी को भोग विलास पूर्वक आज्ञा करें हैं ॥ कि यहां जे स्त्री पुरुष आये हैं विनको सो पात्र, कि मनोहर देश को पलंग, कि बिछोना, कि और हू जो जो चहिये सो सो यथायोग्य विचारके वेग ही देवो ॥ तब सो हू श्रेष्ठ बुद्धि वारो है, जायके श्री राज की आज्ञानुसार वेग ही वैसे ही सब करें हैं ॥ फिर आयके विनय करें हैं ॥ कि सब ही कर दियो है ॥३१॥ तब श्री महाप्रभुजी बीड़ी को आरोग रहे हैं ॥ मंद हास्य सूं श्री मुखारविन्द शोभायमान है कथा, कि हास्य वार्ता हू करत ही अपने सगरे भक्तन को सुख दान देवें हैं ॥ फिर उछल रहे उत्कंठा के सागर श्री प्राणनाथजी संकेत वारी मनोहर सुन्दरीन

को गुप्त रीति सूं रस विहार के योग्य वा वा कार्य करवे कूं कटाक्षन सूं सूचना करें हैं ॥ ता पाछे वे भाग्यवती हू अपने डेरा में जायकर सखी द्वारा उछल रही अत्यन्त सुगंधी के मनोहर प्रवाह वारे उवटनान सूं श्री अंगन में उवटना करायके फुलेलन को हू लगायके वैसे सुगंधित जलन सूं न्हायके अंगन में वैसे अतरादि सुगंधी हू लगामें हैं ॥ श्री प्राणनाथजी में बढ रहे प्रेम सूं बड़े मोल वारे उज्ज्वल मनोहर छोटे लहंगा पहले पहेरे हैं ॥ फिर प्रसर रही सुगंधित समूह वारे फुलेल को सिर में लगायके फिर सुन्दर वेनी गुंथायके सिर के सगरे मनोहर भूषणन को धराय के फिर यह भाग्यभरी सब अंगन में भूषणन को धरें हैं ॥३३॥ चरणन में महावर सूं चित्र काढे हैं, कि श्रेष्ठ काजर सूं नयनन को शोभायमान करें हैं, कि भाल में हींगुल की बेंदी शोभायमान करें हैं ॥ वाके ऊपर श्रीमुख को उच्छलित मणी जटित सोना को मनोहर तिलक शोभायमान करें हैं ॥ सीमंत में मोती की दोहरी पांत लगामें हैं ॥ कि कानों में ताटंक फूल लटकावें हैं ॥ कि अंगुली पल्लवन में रत्नजटित मुद्रिका पहिरें हैं ॥ तथा चौवा मेद जवाद की प्रसरवे वारी सुगंधी सूं भरी बड़ी मंहगी, कि बड़े मोल वारी सर्वोत्कृष्ट सोना जरी की दिव्य साड़ी को पहिरें हैं ॥ ता पाछे सखी दर्प्पण ले आवें हैं ॥ वामें अपने सर्वोपर शोभायमान श्रीमुख को निरखें हैं ॥ वरास कस्तूरी एलची आदि सूं मिले प्रसर रही सुगंधी वारे सखी ने सजाय के दिये बीड़ा को वे कमलनयनी आरोगें हैं ॥ ता पाछे एक क्षण को हू युग समान विचार कर रही वे सुंदरी उच्छलित उत्कंठा सूं प्रेरणा करी भयी ही प्रियवर के अवसर कूं जानवे लिये श्री राज के लीला मंदिर में सखी कूं पठावें हैं ॥ तथा या प्रकार सूं विचार करें हैं, कि आज हमारे अंग, कि रूप, कि शोभा के तरंग कि सुन्दर वस्त्र, कि यह आभरण, कि जोवन, कि वे वे गुण, कि प्रेम, कि चातुरी हू आज प्राणप्रिय में इच्छानुसार उपयोग को प्राप्त होयके सफल होय जायेंगे का ॥४६॥ हमको अत्यंत कृतार्थ करेंगे का ? या प्रकार सूं उत्कंठा समूह को प्राप्त होय रही हैं ॥ फिर वे सुन्दरी सब अंगन को कहें हैं, कि अहो मेरे अंगवर सो रस सागर श्री प्राणप्रियजी जा रीति सूं, कि जा उपाय सूं, कि जा कृति सूं जा सेवा सूं जा बुद्धि सूं सदैव ही प्रसन्न होंये वा रीति सूं, कि वा उपाय सूं, कि कृति, कि सेवा, कि बुद्धि सूं वाकूं प्रसन्न करवे लिये तुम यत्न करोगे ॥४८॥ कि कबहू लाज, कि

वाम प्रकार, कि प्रतिकूलता, कि और कछु वामें विघ्न कबहू नहीं करोगे या प्रकार सूं चंचल स्वभाव वारी वे सुन्दरी अपने अंगन को चित्त सूं बारंबार समझाय रही हैं ॥ तब सो सखी हू आयके विनको विज्ञापना करें हैं, कि सुन्दरवर श्री प्राणनाथजी सगरे कार्यन को करके, कि सगरे आये संबंधीन को समाधान करके ही सगरे भक्तन को विदा हू करके अब पलंग में पधारवे की इच्छा कर रहे हैं ॥ यह समय अभिसार को बहुत ही श्रेष्ठ है ॥ कोई न आय रहे न कोई जाय रहे हैं ॥५१॥ तासूं अये मृगलोचनी प्रिये अब चादर ओढ़के सगरे अंगन को ढांपके ही चलो ॥ मेरे संग छिपके चल रही तुमको कोऊ हू मार्ग में देखवे में समर्थ नहीं होय सकेगो ॥५२॥ यह सुनके यह बड़भागिन अत्यन्त ही प्रसन्न होय हैं ॥ तब श्री प्राणप्रियजी के लिये या सखी के हाथन सूं मनोहर बीड़ा समूह, कि फूलन की माला, कि अनेक प्रकार की सुगंधित वस्तु, कि अनेक प्रकार के वस्त्र, कि सुन्दर भूषण हू सुन्दर मणी जटित सोना के मनोहर डब्बा में धरके उठवावे हैं ॥ कि अत्यन्त उज्ज्वल मनोहर सुन्दर धोती, कि उपरना, कि नीमा, कि पाग, कि कमर पटका हू उठवावे हैं ॥ कि सुन्दर घृत पक्व मनोहर कोमल मधुर सुगंधी भरे पकवान हू उठवावे हैं कि तामें अपने श्रृंगार में उपयोगी वांछित वे वे सुन्दर वस्त्र, कि भूषण सुन्दर चादर, छोटा लंहगा, कि सुन्दर वस्त्रन को उठवावे हैं ॥ तब वे डरे हरिण जैसे चंचल नयनवारी कोमलांगी सुन्दरी श्री अंग को मोटी चादर सूं ढांपके प्राणप्रिय के लीला मंदिर में छिपके पधारे हैं ॥५९॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे एकत्रीस स्तरंगः ॥३१॥

॥ तरंग -- ३२ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ बत्रीस स्तरंगः लिख्यते ॥३२॥

श्लोक -- **अलक्षिता एव परः प्रविश्यत दंबुरोहांति कवर्ति गेहे ॥**
अत्यंत संप्रोछलदछ नाना मनोरथौधाः सुखमासतेताः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के अंग अंग में उछल रहे हैं अनेक मनोरथ समूह जिनमें ऐसी वे भाग्यवती सुन्दरी औरन सूं बिना जाने

ही वा श्री राज के श्री जलघर के निकट वारे घर में प्रवेश करके सुखपूर्वक वहां बैठ जाय हैं ॥ चतुर सखी तो वा घर के किवाड़ को आच्छादन करके कोई बहाना सूं द्वार में ठाड़ी होय जाय है ॥ जब अत्यन्त उत्साह भरे श्री वल्लभ प्राणनाथजी सूं विदा किये सगरे भक्तजन जब यहां सूं निकस जाय हैं, कि वे वे सेवा करवे वारे सेवक जन हू जब निकस जाय हैं, कि वैसे और हू जन जब निकस जाय हैं तब श्री प्राणनाथजी तो पलंग पर विराजमान हैं ॥ वा संकेत वारी कमल लोचना सुन्दरीन की वाट देख रहे हैं ॥ कि उच्छलित विलास सागर पूर्वक चारों हू दिशान में नयन कमल को संचार कर रहे हैं ॥ कि वा घर की निर्जनता को निरख के प्राप्त होय रह्यो है मनोहर अवसर जाकूं ऐसी निरन्तर उत्साह भरी उत्कंठा सूं भर्यो है ऐसे श्री प्राणनाथजी के निकट आयके शोभायमान मंद हास्य सूं मिले मुख वारी सो सखी विलास नम्रता पूर्वक श्री राज के चरणकमलन को प्रणाम करके श्रीमुख को निरख के धीरे-धीरे सो आय गयी है ऐसे कहें हैं ॥ तब उच्छलित श्री मुखारविन्द की शोभा भरे प्रसन्न श्री प्राणनाथजी सो हमारी प्यारी कहां है, कि कैसे आयी है, कि कोऊ और ने वाकूं देख तो नहीं लियो है वा चंचल लोचना के वैसे श्रीमुख चन्द्रमा को दिखाय दिखाय ऐसे कहें हैं ॥७॥ तब सो सखी प्रियवर के आगे विज्ञापना करें हैं ॥ कि श्री राज की कृपा सों वाको कोई और ने देख्यो नहीं है ॥ सो स्वरूप सूं पद्मन लक्ष्मी के विजय करवे वारी सो तिहारी प्रियाजी यहीं आयके जलघरा के पास वारे घर में विराजमान है ॥८॥ उछल रहे अनिरवचनीय भाग्य वारी यह मृगलोचना श्री आपके यहां पधारी हैं ॥ हे रस सागर महाप्रभो ! हे उदार मूर्ति प्रभो ! अब निर्भय होयके अपने मनोरथ अनुसार याकूं सो सो सदा रसदान करिये तथा वा भाग्यवती के अर्प्पण किये हू सगरे रस को रस सूं अनुभव करिये ॥ हे अधिपते महाप्रभो ! श्री आप प्रियाप्रिय दोनों के स्वरूप सूं उछलने वारे मनोहर मधुर लीला समुद्रन के किणका के हू परस करवे में मेरी योग्यता रंच हू नहीं है तासूं हों जावुं हूं ॥१०॥ उछल रहे कृपा सागर के बड़े तरंग वारे श्री प्राणनाथजी तो सखी कों कहें हैं, "कि अहो चंचल लोचन कमल वारी प्रिये मेरे कूं तो तिहारो लेशमात्र हू संकोच नहीं है ॥ कि जैसे मेरे को यह प्यारी है वैसे तू नहीं है का ? ॥ कि वैसे तू ही मेरे को प्यारी है ही ॥ तासूं यहां ठाड़ी रहो

तब सो सखी विज्ञापना करें हैं ।। कि प्राणप्रिय श्री आप तो सदैव ही उछल रहे अनंत तरंग प्रवाह वारे रस सागर हैं ।। जब या हरिणलोचना के उदय भये श्रीमुख रूप पूर्ण चन्द्रमा को देखेंगे तब तो आप अत्यन्त ही उच्छलित होयगे ही तब वाकूं देखवे में मैं योग्य हूं का, ना हो ना मैं योग्य नहीं हूं तासूं मैं तो दूर ही ठाड़ी होवुंगी ।। श्री आप दोनों प्रिया-प्रिय यहां भली भांति सों विहार करें ।। यद्यपि श्रृंगार सार सागर संबंधी अमृत समुद्रन के दान में श्री आप बड़े दानवीर हैं ।। तासूं मेरे यहां ठाड़े रहवे पर हू श्रीराज तो संकोच नहीं हू करेंगे ।। तथापि मैं यहां योग्य नहीं हूं । श्रीराज या मेरी सखी अपनी प्यारी के प्रति इच्छानुसार अनेक प्रकार के दान करेंगे वैसो सो मेरी सखी हू आपके प्रति अनेक प्रकार के रसदान करेगी ।। विनके देखवे में मेरे को अत्यन्त ही संकोच होय है ।। या प्रकार सूं दीनता समूह सूं शोभायमान वा सखी की विज्ञापना को सुनके उदार स्वभाव, कि उछल रहे कृपा के मनोहर तरंग समूह भरे श्री महाप्रभुजी वा सखी कूं जायवे नहीं देवें हैं ।।१६।। किन्तु कोई अनिरवचनीय समूह सूं मनोहर या रस सार रूप लीला सुधासागर या सखी के हू श्रीअंग को, कि भाग्यन को, कि वा गुणन को, कि मनोरथ, कि दीनता, कि उदारता, कि दृष्टि को, कि भाव को, कि चरण रज को हू, कि सबको कृतार्थ कर रह्यो है ।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं -- हौं तो या भाग्यवती के चरणरज को ही सगरे भाव को हू शरण प्राप्त होवुं हूं ।। ता पाछे यह सखी प्रफुल्ल मुख वारी होवत जलघरा के निकट वारे घर में जायके या सुन्दरी को जबर सूं ही मानो हस्तकमल में पकरके प्रियवर की तिवारी में ले आवे हैं ।। तब अत्यन्त सुन्दर चमकने बड़े मोल वारे सगरे भूषण जिनके, कि वा भूषणन के मनोहर शब्द जिनके होय रहे हैं ।। कि प्रसरवे वारी सुगंधीन सूं जे मनोहर हैं ऐसी वे सुन्दरी हू उछल रहे विलासपूर्वक वहां आवें हैं ।।२०।। वा भाग्यभरी के भूषणन के नाद हैं, कि वा भूषण संबंधी रत्नन के जे किरण रूप दीर्घ दंड हैं, कि श्री अंग की सुगंधी समूह के जे प्रवाह हैं वे सगरे या प्रिय के रस वृक्ष को नवीन पल्लव वारो करें हैं ।। तथा वा सुन्दरी के श्रीमुख कमल सूं बीडी आरोगवे की सुगंधी प्रसरें हैं ।। वे भ्रमर समूहन को खेंचत ही वा प्रिय के आंगण में, कि घर में हू नहीं समावे है ।। वा प्राणनाथजी की शय्या के निकट धीरे-धीरे प्राप्त होयके लाज विशेष सूं श्री मुखारविन्द

को ढांप के विलास पूर्वक श्री राज के चरण कमल को प्रणाम करके श्री हस्तकमल में लिये सगरे भेट सामग्री सूं शोभायमान श्री अंग वारी वे भाग्यवती खंभा सूं श्रीअंग लगायके ठाड़ी होय हैं ॥ तामें सो प्रिया सखी हू दीपक के प्रकाश में अत्यन्त उछल रही वा सुन्दरी की, कि वा प्रियवर की शोभा को प्रफुल्लित दोनों नयनन सूं पान करत वा सुन्दरी के निकट ही विराजमान होय है ॥२५॥ रमण युद्ध में शूर रस सागर सो प्राणप्रिय जी उछल रहे हू अपने तत्व स्वरूप को प्रगट न करत ही, कि अपनी शय्या पर विराजमान होवत ही श्रृंगार लीला अमृत सूं रंगे कि उच्छलित विलासन सूं शोभायमान ऐसे अपने कटाक्ष लेश सूं वा सुन्दरी को निरखें हैं ॥ बल सूं ही मन को हर रहे वा प्रिय कूं वे रस सुन्दरी हू कछुक घूंघट को दूर करके लाज के विलासपूर्वक कोऊ अनिर्वचनीय वचनामृत सूं वा सुन्दरी को सिंचन करें हैं ॥२८॥ प्रिय के वा वचनामृत सूं ग्रहण कियो है, वश कर लियो है चित्त जिनको, ऐसी वे सुन्दरी लाज सूं निवारण करी हू कछुक हू उत्तर नहीं देवें हैं ॥ फिर हू प्राणप्रियजी और हू वचनामृत सूं विनको सिंचन करें हैं वैसे ही कि लाज सूं रोकी हू सो फिर हू उत्तर नहीं देवे है ॥२९॥ यह प्रियवरजी फिर हू वा सुन्दरी को वचनामृत सूं कछुक सिंचन करें हैं ॥ तामें लाज के विशेष होयवे सूं वे सुन्दरी कछुक पीछे सरक जाय हैं ॥ अहो या भाग्यभरी सुन्दरी ने प्रिय चक्रवर्ती श्रीराज ने पहले जो कटाक्ष चलायो हतो वा कटाक्ष को लेश हू आकाश बेल बन जाय है कि छिप जाय है ॥ तब तो लाज ही अत्यन्त बढ़त ही वा कमलनयना सुन्दरी को बल सूं ही पीछे ले जाय है ॥ उछल रहे भाव के वश होयके प्रियवरजी तो वा श्रेष्ठ पलंग सूं उठके वा सुन्दरी के सुन्दर विलासपूर्वक आंचर को पकर लेवे हैं ॥३१॥ उच्छलित विलास पूर्वक वे मृगलोचना वा लाज के समूह सूं जबर सूं वा अंचल को छुड़ायके फिर हू वेग सूं वा प्रिय ने पकरे वा अंचल को फिर हू छुड़ायके कछुक पीछे सरक जाय हैं ॥ कि जामें उज्ज्वल अमृत समुद्र झर रह्यो है, ऐसी नकल टेक हू धीरे-धीरे करें हैं ॥ या प्रकार अंचल के खेंचवे और छुड़ायवे सूं फट रह्यो हू सो या सुन्दरी को अंचल वा लाज के संग प्रफुल्लित दृष्टि वारे या प्राणनाथजी के मन को अत्यन्त ही प्रसन्न करें हैं ॥ अत्यन्त उत्कंठा समूह सों प्रेरणा कियो सो श्री प्राणप्रियजी वेग सूं जायके बहुत हर्ष सों वा सुन्दरी के जा हस्तकमल

को पकरें हैं ।। वा हस्त कूं छिपायवे कूं बड़ी यत्न वारी हू वे सुन्दरी भ्रकुटी को बांको कर लेवे हैं ।। कि मुखरूप चन्द्रविम्ब को हू क्रोध सूं लाल कर देवे हैं ।। श्री प्राणप्रिय वर में तीक्ष्ण धारा वारे कटाक्ष रूप वाण हू बहुत प्रकार सूं चलावें हैं ।। अत्यंत ही जो व्यग्र होय जाय है ।। श्री प्राणनाथजी हू तासूं वैसे वैसे अत्यन्त ही हंसें हैं ।। तब वे सुन्दरी कमल नयनी विश्वास देके बल सूं ही वा हस्त को छुड़वायके फिर पीछे सरक जाय हैं ।। तब श्री प्राणनाथजी उतावल सूं जायके अपने वायें श्रीहस्त कमल सूं उछल रहे रोम हर्ष पूर्वक बिनके दक्षिण हस्त कमल को दृढ़ पकड़ लेवें हैं कि ग्रहे हैं ।। तब रमण युद्ध में शूर, कि उछल रहे उत्साह समूह सों मनोहर सो श्री प्राणनाथजी दक्षिण श्री हस्त कमल के अत्यन्त कोमल सुन्दर अंगुली पल्लवन सूं लाज के भार सूं नम रहे श्रीमुख वारी वा सुन्दरी के अत्यन्त मनोहर चिबुक को विलास पूर्वक ऊंचो करत सुन्दर हास्य सूं प्रफुल्लित मुख पूर्णचन्द्र होवत कहें हैं कि ''अयी कमल लोचने, प्रिये मान करवे में तिहारो इतनो आदर अत्यन्त काहे को होय रह्यो है ।। अथवा यह मान हू ठीक है ।। सो यह मेरी ओर एक वार कछु दृष्टि तो करिये'' ।। या रीति सूं बड़े प्यार कि चुचकार पूर्वक प्रिय चक्रवर्ती श्री प्राणप्रियजी के याचना करवे पर वे कमल लोचना वा प्रियवर के रंच कटाक्ष करके मंद हास्य सूं शोभायमान श्रीमुख चन्द्रमा को अत्यन्त ही नमाय लेवें हैं ।। तब अत्यन्त गंभीर कि उज्ज्वल अनिरवचनीय कोई चांदनी को चारों ओर विस्तार करत कि सुन्दर लोचन वारी सुन्दरी के धैर्य रूप अंधकार समूह को अत्यन्त लीन करत कि त्रिलोकी के आभरण रूप वा प्रिय के हू आभरण रूप श्रीमुख चन्द्रमा को विशेष सूं शोभायमान करत ऐसो जो मनोहर पूर्ण विशेष मंद हास्य रूप पूर्ण चन्द्रमा है सो रस सागर के बढ़ायवे कूं भलीभांति सूं उदय होय है ।। तब वाके ठारन वारी वे सुन्दरीन के वैसे मनोहर धृष्टता को कि लाज विशेष के निवृत्त होयवे को देखके श्री प्राणप्रियजी मिथ्या रोष को दिखावत ही वा मंद हास्य रूप (कुंडी) सूं विनके मन को कि क्रोध को खेंच के ....

(यहां से हमने चार पाच कली नहीं लीं सो भक्तजन हमें क्षमा करें ।।)

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे बत्रीस स्तरंगः ।।३२।।

।। तरंग -- ३३ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।।अथ त्रयत्रीस स्तरंगः लिख्यते ।।३३।।

श्लोक -- **अस्मिन् वयस्पाव सरे विद्यते तिरस्कारी एया प्रसर त्प्रमोदा**
संका चितायावत साधु पूवं प्रसारणं भाग्यभृतां वरे एयाः ।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं या अवसर में भाग्यवती में श्रेष्ठ उच्छलित हर्ष वारी सो सखी पहेले लपेटके राखे टेरा को आछी रीति सूं लगाय देवे है ।।१।। तथा बड़े प्रकाश वारे दंड दीप को पास लायके धर देवे है ।। सो दंडदीप हू वा सुंदरी की कि वा प्रिय की हू लीला को देखके ऊंचे होय रहे शिखा के बहाने सूं मानो ऊंचे हर्ष के हास्य को कर रह्यो है ।।२।। तब प्यारे रूप की लीला वारे श्री प्राणप्रियजी निर्दोष या सखी के सुन्दर भाव कि चातुरी को देखके प्रसन्न होयके अपने श्री मुखारविन्द में विराजमान वीरी प्रसादी को या सखी के प्रति देवे हैं ।।३।। नम्रता कि प्रेम रस सूं भरी सो कोमलांगी सखी हू या प्रिय के आगे दंडवत प्रणाम करके अत्यन्त बढ़ रही अपनी कृतार्थता को जानत दोनों हाथन सूं वा प्रसादी बीडी को लेवें हैं ।।४।। तब अपनी सखी वा भाग्यवती सुंदरी के लिये लाये सुन्दर तांबूल सुन्दर बीड़ीन सूं भरे अनेक प्रकार के रत्न मोतीन सूं जटित अत्यन्त मनोहर सोना के ड्बबा या श्री राज के आगे धारण करे हैं ।।५।। तब मनोहर भाव भरे प्राणप्रियजी वा ड्बबा को विलास पूर्वक उठायके अपनी गोद में धरे हैं ।। देनों श्री चरण कमलन को आगे विराज रही सुंदर चौकी पर धरके विहार कर रहे हैं कि शोभायमान हैं ।।६।। तब कमल सूं हू सुंदर श्री मुख वारी वे सुंदरी विलास पूर्वक श्री राज की गोद सूं वा ड्बिबा को खेंच के वासूं सुंदर बीड़ी लेक करोड़न काम को विजय करवे वारी वा प्राणनाथजी को अरुगवावें हैं ।।७।। सो श्री प्राणनाथजी हू सुन्दर बीड़ी वा पूर्ण चन्द्रमा को विजय करवे वारे श्रीमुख वारी सुंदरी को अरुगवावें हैं ।। कि भ्रू के विलासन सूं कि मंद मुसकान की माधुरी सूं कि गुप्त भाव भरी नकल टोकन सूं कि अत्यन्त मनोहर परसके प्रकारन सूं विनको हर्ष के महासागर समूह में निमग्न हू कर रहे हैं ।। तब वा प्रियाप्रिय के परस्पर उछल रहे अमृत समूह समुद्रन को हू पान कर रही सो सखी

बड़े यत्न सूं हू तृप्त नहीं होय है ॥ तथा सो मृगलोचना सखी सर्वात्मभाव के परम फल रूप श्री गोकुल प्राणप्रभु को नेत्र रूप हाथ सूं लेकर मन रूप मुख सों भली भांति आस्वाद लेवे है ॥ तब वचन रूप समुद्र के पार ही विराजमान कोऊ अनिर्वचनीय सुख को यह संप्राप्त होय है ॥११॥ रोमावली प्रफुल्लित होय जाय है ॥ आनंद के आंसुन को बरसावे है ॥ कंपायमान होय है कि पसीना को प्राप्त होय है ॥ अहो या समय में या सखी को कोई ऐसे अनिरवचनीय शीतलता कि अत्यन्त मधुर माधुरी की धारा आलिंगन करें हैं ॥ जो कपूर के समूहन सूं कि अमृत के हू समुद्रन सूं कि बरफ के समूहन सूं नहीं होय सके है ॥ वा समय में सुन्दर अंग वारी सुंदरीन के नयन श्री प्राणप्रिय के श्रीमुख संबंधी जो सीतोपला को कि मिश्री के टूंकन को रस पान करें हैं ॥ सो या नयनन में चंद्रबिंब को चमत्कार रूप मधुर हू ईस्त्र की पोंडा (कामाद) (सेरडी) स्वाद देगी का ॥ कि ना हो ना ॥ फिर कैसे रसदायक बन सके है ॥ या रीति सूं परस्पर प्रिया प्रियवर के नकल टेक मंद हास्य कि वैसो आलाप कि विलास कि चुंबन आलिंगन मधुर रस आस्वाद रूप कौतुक समूह वारे अत्यन्त अत्यन्त मनोहर ऐसी बीड़ी के आरोगवे अरुगवाने के प्रकार प्रचार होवत में संकोच कि लाज आदि तो लीन ही होय गये हैं ॥ तब वे प्रियागण रस सागर प्राणप्रिय वर को कहें हैं कि ''**अयि प्राणपते, अहो प्राणनाथ श्री राज की कृपा सबन में विशेष होय है यामें संशय नहीं है ॥ सो हे श्री महाप्रभो श्रीराज उत्साह भरे हू उत्तम भूषण समूह को का कारण सूं कछुक हू परस नहीं करें हैं ॥ श्री राज भूषण समूह को का कारण सूं नहीं धरें हैं ॥ सो हे ईश्वरेश्वर महाप्रभो श्री राज के हर्ष भरे श्री अंगन को सब प्रकार सूं आलिंगन करवे लिये अत्यन्त उत्साह भरे वा भूषण समूह में श्रीराज आप अत्यन्त ही प्रसन्न होय ॥ हे प्राणप्रभो वेग ही मेरे को आप आज्ञा करें ॥ हे कृपा रस सिंधो अत्यन्त बढ़ रहे विनके मनोरथ को समूह को हीं भलीभांति सों पूरण करूं ॥१८॥** हे महाप्रभो अत्यन्त दूर मेरे घर सूं श्री राज के श्री अंग कि भलीभांति सूं सेवा करवे की कामना समूह सूं यह भूषण समूह आये हैं ॥ श्री राज के श्री अंगन को निरख के अहो यह तो स्वयं ही सबके भूषण हैं यह विचारके यह भूषण समूह लाज को प्राप्त होय रह्यो है ॥१९॥ सो श्री राज आप का कारण सूं भूषणन को नहीं धरें हैं ॥

आवो पधारो हौं, आपको भलीभांति सों पहिरावुं ।। अहो उछल रही शोभा वारे अनेक प्रकार के भाव भरे यह भूषण हैं ।। श्री आप देखें मैं लायी हूं ।। अयि प्राणनाथ श्रृंगार करवे में मैं बड़ी चतुर हूं ।। हे सुन्दरवर प्रभो अब ही हों आपको केशन सूं चरण नख पर्यंत सब प्रकार सूं अलंकृत करूं हूं ।।२१।।" या प्रकार सूं यह भाग्यवती भीतरी आशय सूं यों कह्यो है ।। तब मंद हास्य सूं अलंकृत श्री मुखारविंद वारे श्री वल्लभजी आज्ञा करें हैं ।। "कि अयि मृगलोचने तुम काहे कूं हमकूं अलंकृत करें हैं ।। हम अपने आपकूं अलंकृत नहीं कर सकें हैं का ?।। हमारे पास सगरे सुन्दर मनोहर भूषण नहीं हैं का ?" यह सुनके मंद हास्य सहित वे सुन्दरी रस सागर अपने प्राणनाथ को भीतरी अभिप्राय सों फिर कहें हैं ।।२३।। "अये प्राणप्रभो श्री राज आप श्रृंगार करवे में यदि चतुर होय कि यदि श्री राज के पास भूषण समूह हू होंय तो श्री अपने को श्रृंगार हू करते तासूं श्री आप सर्वथा वैसे नहीं हैं ।।२४।। कि आपके भूषण समूह हू नहीं हैं ।। श्री आप तो मिथ्या ही कहें हैं ।। तामें सो सखी आपके वचन को कैसे प्रतीत करे, कि सांचो माने ।। प्रियवर मेरे तो भूषण समूह श्री राज के सन्मुख ही हैं ।। श्री आप देखिये ।।" या प्रकार के विनके वचनामृत को पान करके मंद हास्य सों शोभायमान श्रीमुख वारे कि त्रिलोकी के तिलक रूप सो प्रियजी अपने श्रीमुख रूप क्षीर सागर सूं प्रगटे सुन्दर वचन रूप मुक्ता फलन सूं वा प्रियाजी के कानों को अत्यन्त शोभायमान करें हैं ।। "कि अयि सुन्दरी कि अपने श्रीमुख की शोभा सूं चंद्रमंडल को जाने विजय कर लियो है, हे ऐसी चंद्रमुखी प्रिय तुम प्रसन्न होवो ।। तिहारे सुन्दर भूषणन को हम देखे हैं ।। सो विनके देखवे के उच्छलित समुद्रन सूं भरे हमको यहां दिखाय ।।२७।।" तब मंद मुसकान रूप मोती जिनके अधर में जटित हैं कि प्रफुल्लित श्रीमुख कमल की जे शोभा भरी हैं ऐसी वे चंचल लोचना सुंदरी अपनी सखी को कहें हैं ।। "कि हे आलि सखी भूषणन सूं भरे मेरे सोना के डिब्बा को या श्री राज के आगे धर दे यह प्रियवरजी भूषणन को देखें ।। तब प्राणप्रियजी हू उच्छलित उत्साह सूं शोभायमान होवत कि प्रफुल्लित श्रीमुख चंद्र मंडल होयके वा सुन्दरी को आज्ञा करें हैं कि "अयि सुन्दर मुखी प्रिये डब्बा वारे तिहारे भूषणन को तो हों पीछे देखूंगो यहां अब तो अपने अंगन में जे शोभायमान भूषण हैं विनको दिखाय ।। हे सुन्दरी कि मेनका उर्वशी

को हू विजय करवे वारी प्रिये मैं जाननो चाहूं हूं, वे कितने हैं, कि कैसे हैं कि कौन को है कि कैसे धरे हैं यह सब हौं देख्यो चाहूं हूं ॥" यह सुनके तब स्वरा सूं कोकिल को हू तर्ज्जवे वारी वे सुन्दरी मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्रीमुख चंद्रमंड्ल होयके सुन्दर वचन कहें हैं ॥ "कि हे प्रिये हे सुन्दर मेरे देह में विराज रहे या सगरे भूषणन को श्री आप देख ही रहे हैं ॥ अयि रस सागर यह सब श्री आपके ही प्रतीत होय रहे हैं ॥ इनमें आपको कछु संशय होय है का ॥३२॥ तथा कछु और हू है कि हे प्राणप्रभो प्रिय हे चातुर्य्य रत्नाकर, कोई सुन्दरी हू के अंग भूषणन को कबहू कोऊ कहा अपनी इच्छानुसार देखवे में समर्थ होय सके है का ? तासूं हे प्राणनाथ प्रथम मेरे ड्ब्बा में विराज रहे मनोहर भूषणन को देखके, हे प्रियवर हे गुण सागर महाप्रभो पीछे मेरे अंगन में विराज रहे भूषणन को कोऊ और समय में कोऊ प्रकार सूं हू देख ही लेवोगे ॥ यह जो वा प्रिया सुन्दरी के रसायन रूप कथन हैं सो वा श्री प्राणप्रभुजी के रस विशेष को नवीन ही कर देवें हैं ॥ तथा रस विलास सिंधु वा श्री प्राणनाथजी सों ऐसो वचन हू प्रगट कराय देते हैं ॥ "कि अयि सुंदरी प्रिये तिहारे अंगन सूं ही शोभायमान होय रहे भूषणन को हौं पहले ही देखूंगो, तासूं पीछे औरन को हू देखूंगो ॥३६॥ वा श्रीराज के करोड़न अमृत को विजय करवे वारे या वचनामृत को कान रूप दोना सूं पान करके अत्यन्त तृष्णा प्यास भरी वे प्रिया सुन्दरी उच्छलित मुख कमल होयके वासूं प्रगटे हर्ष सूं मंद हास्य पूर्वक अंचल सूं अंगन को कि उच्छलित शोभा वारे विनके भूषणन को हू अत्यन्त ही छिपाय लेवें हैं ॥

(अपराध के डर सूं हमने यहां से बहोत ही प्रसंग छपने योग्य नहीं समझे इसलिये छोड़ दिया है सो हमें माफ करोगे ॥)

श्री कल्याण भट्टजी या रस सूं उछले अपने उद्धार कूं कछु कहें हैं कि अहो मेरे यह चित्त रूप सिंहासन है सो लोहा को हतो तासूं याकूं नमस्कार करे ॥ अपितु कोऊ हू नहीं करतो परन्तु या मेरे लोह रूप चित्त सिंहासन को जो भक्तराज श्री मोहन श्री गोकुलभाईजी के चरण कमलन के पारसमणि रूप रज स्पर्श भयो है ॥ वाने सगरो ही सुवर्ण कर दियो है ॥ कि विनके स्पर्श सूं सुवर्ण रूप होय गयो है तासूं वा भक्तराज मोहनभाई श्री गोकुलभाईजी

की कृपा सों मेरो चित्तरूप सुवर्ण के सिंहासन पर या प्रकार की लीला रसभरी सुंदरीन के संग ही श्री रस सागर श्री प्राणनाथजी कृपा विशेष सूं श्री चरण धारण किये हैं तासूं तथा वा समय के वा प्रियाप्रिय के जे परस्पर आलिंगन चुंवनादि हैं कि रस स्वाद कि सुन्दरता है कि नखक्षत कि दंतक्षत हैं कि परस्पर श्री अंगन के अनेक प्रकार के बंध विशेष हैं कि सुन्दर जल्प आलाप निरखन कि टेक हास्य वचन हैंकि रसभरे कुंजन कि भूषणन के नाद हैं ॥ कि अत्यन्त शोभा भरे स्वरूपन के उछल रहे जे विलास हैं ॥ कि रस के राजा ने बजाये जे परस्पर अंग नाम वारे बाजान के जे नाद हैं जे अपनी माधुरीन सूं द्राक्षा मधु कि अमृत कि मिसरी आदि की माधुरी को हू विजय करें है ॥ ऐसे जे नाद हैं कि गान हैं कि हास्य हैं वैसे वैसे और और हू जे प्रेम के संबंध भरे लीला रस हैं वा सबन के संग ही प्रियाप्रियजी या मेरे चित्तरूप सोना के सिंहासन पे विराजमान होयके किये हैं तासूं या मेरे चित्तरूप सिंहासन की महिमा अत्यन्त मनोहर बड़ी ही बनाय दीनी है ॥ जायूं यह मेरो चित्त आदि को श्री गोवर्द्धन को हू मर्दन करें हैं कि तासूं हू विशेष होय गयो है ॥ ऐसे मेरे या चित्तरूप सिंहासन को अब कौन महात्मा हू नमस्कार नहीं करे ॥ कि तुम सब महात्मा हू याकूं यासूं नमस्कार करे हू है यह भाव है ॥ ऐसे श्री कल्याणभट्टजी अपनो रस उछलन सूं उद्‌गार कहेकर अब प्रसंग को कहें हैं कि ॥७९॥ या प्रकार की सुन्दरता माधुरी भरी लीलान सूं रात्रि के बहुत ही गुजरने पर वे भाग्यवती सुंदरी चंचललोचना अत्यन्त प्रसन्न होयके अपने प्राणन के अत्यन्त प्यारे श्री महाप्रभुजी को प्रेम सूं जे मनोहर सुन्दर वस्त्र भूषण लायी हती वे सब समर्प्पण करे हैं ॥ तब प्रेम आदर आनंद समूह सूं मनोहर प्रफुल्लित सुंदर निर्मल श्री मुखचंद्र वारे श्री प्राणप्रियजी शोभायमान मंद हास्य भरे श्रीमुख वारे होवत विलास पूर्वक आज्ञा करें हैं कि "हे प्रिये सुंदरी आपने सुंदर मनोहर आनंदमय या क्रीड़ान सूं, वैसे प्रसन्न होयके मेरे प्रति जे यह वस्त्र कि भूषण समर्प्पण किये हैं विनसूं तथा अपने हू सगरे वस्त्र भूषणन सूं तुमको अलंकृत करवे लिये हों चाहना करूं हूं ॥ वामें स्वीकार करवे वारे भ्रू रूप नट के विलास भरे या उच्छलित श्रीमुख सूं आप प्रसन्न होये ॥ कि हंसत श्री मुख सूं भ्रुव की सूचना करे "कि भले करो" यह भाव है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे त्रयत्रीस स्तरंगः ॥३३॥

॥ तरंग -- ३४ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ चतुस्त्रीस स्तरंगः ॥३४॥

शलोक --**एवं निगधाय निपीयतासां भ्रु नेत्र वक्ताधरे सागरोत्थान-स्वादूनलंट्ट कुचषकछयेन विलास पीयूष रसानधीशः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि प्राणप्रभु श्री महाप्रभुजी या प्रकार सूं कहेकर वा सुन्दरी के भ्रु कि नेत्र कि श्रीमुख कि अधर रूप समुद्रन सूं प्रगट होय रहे स्वादु विलास रूप अमृत के रसन को दोनों नयन पात्रन सूं पान करके वा सुंदरी के यथायोग्य प्रमाण के जे वस्त्र गुप्त रीति सूं बनवाये हैं वे श्री गोकुल सों खटी ले आये हैं ॥ सो बड़े मोल वारे अत्यन्त अद्‌भुत सुन्दर शोभावारे श्रेष्ट जामा, नीमा, पाग, कमर पटका, धोती उपरेना कि अमूल्य भूषणादि हैं सो सगरे या सुन्दरी के आगे धरके विनसों प्रेम आदर आनंद समूह सूं विलास पूर्वक वा सुन्दरी को अलंकृत करें हैं ॥३॥ उछल रहे उत्कंठा कि भाव सूं भरे सो रस सागर श्री प्राणनाथजी या सुन्दरी के श्री मस्तक में श्री हस्तकमल सूं विलास पूर्वक अमूल्य मनोहर पाग को बांधें हैं ॥ ता पर सुन्दर रत्नन सूं मिले श्रेष्ठ मोतीन के मनोहर हार को बांधें हैं ॥ ताके ऊपर उच्छलित विलास सों शोभा भरे महाप्रभुजी सोना को सुन्दर चंचल पीपल पत्ता की सोना को कमल धरावे है ॥ फिर सुन्दर मनोहर धोती बांध के वा हरिण लोचना सुन्दरी को हठ सों पलंग पर बैठाय के ईश्वरन के ईश्वर स्वयं तो वा पलंग सों उतरके ठाड़े होयके ही पानी में डूबवे वारे अगरु सार कि चोवा तथा मेद जवादादि अंगराग जो पहले या सुन्दरी के लिये सुन्दर भलीभांति समार के सजायके राख्यो हतो ॥७॥ सो रस सागर श्री प्राणप्रियजी ले लेकर या सुन्दरी के हृदय पर वैसे और हू अंगन में यथायोग्य लगामें हैं ॥ कि कुमकुम रस की सुन्दर विंदुन सूं हू या सुन्दरी को वा वा पाग जामादि में यह प्रभुजी अलंक्रत करें हैं ॥ फिर वैसे वैसे निरखें हैं ॥ कि रोमावली प्रफुल्लित होय जाय है कि अनेक प्रकार के ऊंचे तरंगन के रंग वारे कि सुन्दर अत्यन्त

मनोहर हजारन आवर्तन सूं रमणी के अत्यन्त गंभीर ऐसे आनंद के सागर में फिर फिर अत्यन्त ही निमग्न होय जाय हैं ॥ तब प्रेमआदर कि आनन्द सूं भरी वे मृगलोचना हू प्राणप्रिय के वा वा मधुर विलासन को कि अमृतको विजय करवे वारी वा वा लीलान को हू निरखके मन रूप मुख सूं अत्यन्त पान करें हैं ॥ वामें प्रेम के समूह सों मनोहर प्राणप्रियजी जो जो कार्य करें हैं, उछल रही रोमावली वारी सुन्दरी को सो सो कार्य अत्यन्त ही रुचे है ॥ ता पाछें सो श्री प्राणप्रभुजी अपने सगरे भूषण वा सुन्दरी को भलीभांति सूं पहिरायके वा सुन्दरी के श्रीअंगन में और श्रीअंग भूषण हू अंगीकार करामें हैं ॥ वा सुन्दरी की अत्यन्त उच्छलित परम शोभा सों प्रसन्न होयके प्रियवर जी नयन कमलन सूं अत्यन्त पान करें हैं ॥१३॥ यह श्री प्रियवरजी आप स्वाद को पायके या सुन्दरी को हू वा शोभा को पान करायवे लिये अत्यन्त मनोहर विशाल पात्र में मुक्तामणी जटित सुवर्ण के दंडवारे स्वच्छ देखोगे दर्प्यण आगे विनके धरे हैं ॥ वा दर्प्यण में वे सुन्दरी चतुर प्रियवर ने अपने को प्रिय स्वरूप बनायो निरख के अत्यन्त ही प्रसन्न होयके अपने सगरे ही सर्वस्व को कि अपने आपको हू या प्रिय के ऊपर वार डारें हैं ॥१५॥ अहो या सुन्दर दृष्टि वारीन ने जे प्राण केवल अपने प्रिय ऊपर वारवे लिये पहले धरे हते विनको तो या प्रिय स्वरूप में न्यौछावर करके याके न्योछावर को प्राप्त भये वा प्राणन को फिर धर राखे हैं ॥१६॥ वे प्रिय सुन्दरी अपने श्री प्राणप्रिय को अपने में जो प्रियवर ने अपनी शोभा प्रगट करी है सो अपने श्रीमुख कमल की वेष शोभा रस समूह के पान सूं मत्त भयो देखके अब वा श्री प्राणनाथजी रूप चन्द्रमा में अपनो कमल मुख को श्रृंगार है वाके परम शोभा रूप अमृत समूहन सों अपने में हू वा मत्तता को सिद्ध करवे लिये चाहना करत वा प्रिय के श्रृंगार धरवे को प्रारंभ करें हैं ॥ तामें प्रिय के अत्यन्त दीर्घ शोभायमान वारन सूं मनोहर बेनी गूंथे है ॥१८॥ वामें दीप्ति के विस्तार सूं जाने दिशा समूह लाल कर दिये हैं ऐसे चूड़ामणि तो वामें धरे हैं ॥ वैसे सीमंत के रत्नजटित भूषण को धरामें हैं ॥ कि शीशफूल कि और हू भूषण धरामें हैं ॥ उच्छलित अनुराग वारे वे सुन्दरी मनोहर चमकने तारा कि भूषण हू वा बेनी में लगामें हैं ॥ सुन्दर अंगिया धरावें हैं कि सुन्दर लंहेगा हू उच्छलित हर्ष सूं धरावें हैं ॥२०॥ प्रियवर के दोनों नयन कमलों में अंजन आंजे हैं ॥ श्री भाल में

चमत्कार समूह सूं मनोहर कि अनेक प्रकार के रत्न मुक्तान सूं जटित सोना को विशेषक कि बड़ो चन्द्र रूप तिलक धरावे हैं ।। तथा मनोहर श्री मुखारविन्द की शोभा के तरंगन को बढ़ाय रहे उच्छलित मणि कि दीप्ति समूहवारे ऐसे ताटंक कि कर्णफूलन को प्रिय के कानों में धरावें हैं ।। सुन्दर श्री मुख वारी वे सुन्दरी वा प्रिय के कानों के ऊपर बड़े मनोहर शोभा वारे कर्णोत्पन को युक्ति सों धरके सुन्दर अवलान के योग्य अनेक प्रकार के कंठाभरण को हू श्री कंठ में धरावें हैं ।। कि सूक्ष्म हार धरावें हैं ।। बड़े मोल वारो पदक धरावें हैं ।। कि कोहनी के भूषण बाजूबंध कि कंकण मुद्रिका कि कलायी को भूषण मनोहर धरावें हैं ।। कि धन धनकार कर रही माणिक जटित सुन्दर कटि मेखला हू धरावें हैं ।। श्री चरण कमल के भूषण कि मणि जटित नेपुर कि मुद्रा अंगुठडे कि अंगुलीन के छल्लाहू धरावें हैं ।।२५।। वैसे उच्छलित हर्ष वारी वे कोमलांगी सुन्दरी वा श्री गोकुलपति वर के और हू अंगन में मनोहर और हू आभरण धरावें हैं ।।२६।। वे मृगलोचना वा प्रियवर के केश सूं लेकर नख पर्यंत ऐसे अलंकार धरायके विलास पूर्वक सुन्दर मनोहर साड़ी को पहिरावें हैं ।। चरणन की तली में महावर हू लगावें हैं ।।२७।। ता पाछे पलंग प्रवर में विराजमान नायिका रूप किये प्रिय के अत्यन्त गंभीर शोभामृत सागरन को पान करत वे मृगलोचना सुन्दरी या प्रियवर को अपने श्री हस्तकमल सूं बीड़ी अरुगावें हैं ।। श्री प्राणप्रिय विनकूं श्रीमुख सूं विनकूं देवें हैं ।। वे हू श्रीमुख सूं लेके आरोगे हैं ।।

(यहां से बहोत ही लीला हमने छोड़ दी ही याने कि छपाने योग्य नहीं समझी है इसलिये हम माफी चाहते हैं ।।)

वीर प्रभुजी प्रसन्न करत ही अपने घरन में कि श्री गोकुल में पधारे हैं ।।७३।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चतुस्त्रीस स्तरंगः ।।३४।।

।। तरंग -- ३५ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ पंचत्रीस स्तरंगः लिख्यते ।।३५।।

श्लोक -- **एवं मया भक्तिमृतांनृ प्राणांत तथा परेषामपि चंचलाक्ष्यः यथा समृद्ध प्रणयाः प्रिये स्मिनृलिखंती विज्ञापन पत्रमस्मेण ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि या प्रकार सूं श्री प्राणनाथजी के भक्ति भरे राजा की राजसी बड़े पुरुषन की चंचल लोचना सुंदरी या प्राणनाथ जी में उछलित प्रेमवारी होयके जा प्रकार सूं या प्राणनाथ जी के पास विज्ञापना पत्र लिखे है ।। कि विनके प्रति उछलित प्रेम रस सागर रूप श्री प्राणनाथ जी जा प्रकार सूं प्रसाद पत्र लिखे है, कि जा प्रकार सूं विनको अपने निकट बुलाय के प्राप्त होय है सो संक्षेप सो मैंने सूचना कियो है ।।२।। अब कितनी ऐक कमल लोचना सुंदरी अपने घर सूं निकस के श्री प्राणप्रिय के संग समागम को प्राप्त नहीं होय सके है ।। तासूं अपने ही घर में प्रिय के वियोग अग्नी सूं पीड़ित होय है ।। श्री प्राणप्रभु के अंग संग को अत्यंत चाहना करत लेखरूप मुख सो श्री राजके आगे जैसे प्रार्थना करें हैं ।। सो हू मैं संक्षेप सूं वर्णन करूं हूं ।।४।। "अयि श्री प्राणवल्लभजी के भक्तवरः अब वाकूं पान करिये" ।।५।। "अयि श्री गोकुलाधीश प्रभो, श्री राज के मुख को दर्शन मोकूं होय नहीं है ।। औरन को तो जासू देखूं हूं तासूं मेरे नयनन में अत्यंत बढ़ रहे श्रीराज के वियोग संबंधी वन की अग्नि को निवर्त करत मेरे घरन में स्वयं इच्छानुसार पधार के बिहार करिये ।। अयि कृपा सिंधो महाप्रभो श्रीराज अपने मंद हास्य भरे श्रीमुख के दंत अधर संबंध सूं प्रगट होय रही श्वेत लाल कांती सूं प्रकाश भरी सुंदर हाँसी टेक वारे अपने वचनामृत के तरंगन सूं हर्ष पूर्वक प्रथम जैसे मेरे को अत्यंत शीतल करीये ।।५।। अथवा हे गोकुलाधीश महाप्रभो जय जय जय अनंत भक्त की उत्तम राजाधिराज सिर पर मोतिन के समूह कि अमूल्य माणिक समूहन सूं जटित सोना के शोभायमान सुंदर चमक दमक वारे मुकट घर घर आवे हैं ।। श्री राज के अलौकिक आनंद समूह की वर्षा सूं आर्द्र होय रही सगरी भूमि मंडल में ही श्री चरणन के आगे वा अमूल्य किरीट मुकुटन की रत्न समुहन सूं श्री चरण कमलन को प्रणाम करें हैं ।। ऐसे वा श्री राजके श्री चरण कमलन सूं मधुर रस के सागर समूह उछले

है ।। विनके तरंग समूह ऐसे नाचे है ।। जो वा नृत्य लीला सूं निमर्याद नाच रहे रस मार्ग को हू लाज सूं शांत करें हैं ।। तथा हे श्री महाप्रभो श्री राजने ऐसो सुंदर श्री अंग धारण कियो है जामें अत्यंत तपाये सुवर्ण की आभा, अंग अंग में झलके है ।। विजुरी छटा को हू जाकी शोभा विजय करें हैं ।। तामें पूर्ण चंद्रवदना जन निरखे है ।। विनके नयन कमलों में ताप बढ जाय है ।। वाके विलास समूह सूं भीतर को भाव बाहीर प्रगट होय है जामें अनेक प्रकार के मंद मुसकान पूर्वक प्रिय को देखे है ।। तामें श्री राज विनके प्रति हर्ष विशेष जो दान करें हैं तासूं वे श्री मुख चंद्रमा को प्रेम सूं आस्वादन करें हैं ।। वा श्रीमुख चंद्रमा सूं चांदनी के प्रवाह उछले है विनको श्रीराज के भक्त जनन के लोचन कुमोदनी पान कर प्रफुल्लित होय है ।। विनके सुगंधी समूह चारों ओर प्रसरें हैं ।। तब वा सुगंधी को चित्तरूप नासिका सूँ सूंघ के भक्त लोकरूप भवरा हू हर्ष सूं श्री राज के गुणगान करें हैं ।। सेवागान की माधुरी रूप लक्ष्मी, जिनको निरादर सूं हू देखे है तासूं विनको जो संपदा, भक्तिभाव, योग्यता प्राप्त होय है, तासूं सगरे लोक वैकुंठ पर्यंत हू कृतार्थ होय जाय है ।। तासूं वे वैकुंठनाथ हू श्री राज के वा दासन के चरण कमल संबंधी उछल रही रजको हू चाहना करें हैं ।। अहो हे गोकुलाधीश महाप्रभो श्रीराज के अत्यंत चंचल जे नयन कमल है विनकी शोभा के अणु लेश मात्र सूं हूं चंचल मछली, कि कमल को अभिमान, कि खंजन समूह देखेगे को अभिमान हू निवर्त होय जाय है ।। कि मनोहर भाव सूं काम को हू विजय करवे वारी लक्ष्मी पर्यंत सर्वोत्तमोत्तम युवतीन के जे लोचन सम ही को प्रबल अभिमान रूप पर्वतराज है सोहू चूर्ण होय जाय हैं ।। कि उछलित कुमोदिनी समूह की पङ्क्ति भाव की संपदा समूह है कि अत्यंत डरपे हिरिणीन के जे नयनन के उत्कर्ष समूह है सो हू खंडीत होय जाय है ।। तथा श्री राजके जे दीर्घ निर्मल स्निग्ध चमकने घुघरारे केश समूह है विनसूं उछल रहे जे हजारन श्री यमुना जी के प्रवाह है सो तो भौरी समूहन के कि नील कमल समूहन के अभिमान को हू शांत करें हैं ।। कि निमर्याद वन की अग्नि विशेष के हू अभिमान को शांत करें हैं ।। तथा जे विनकी सुगंधी कि सुंदरता कि माधुरी कि सुंदर विलास कि कांति के समूह उछले है ।। तथा अधर की शोभा के जे उंचे पर्वत है कि मंद हास्य के प्रकाश की जे शोभा है कि बीरी आरोगवे

सूं बढ़ रहे जे मंद हास्य में प्रगट होय रहे दंतमूल की श्याम घटा है कि अधर की लालीमा समूह है कि उछल रहे तेज चमक दमक है कि वामें जो थोरी-थोरी प्रकट होय रही स्वच्छ दंतन के किरण प्रकाश के चमत्कारधारी है तथा दर्प्पण समूह के विशेष चमत्कार की स्वच्छता को निरादर कर रहे जे श्री राज के हर्ष सूं प्रफुल्लित कपोल है विनकी जे निर्मल श्याम शोभा प्रभा को जो नृत्यादि है, सो मानो शस्त्र समूह है ।। विन सूं अनेक पूर्ण चंद्रमुखीन की माधुरी को चूर्ण चूर्ण करो हो ।। श्री राज तो ऐसे सर्वांग शोभायमान है ।। तथा हे श्री महाप्रभो श्री राज तो अपनी स्वरूप शोभा सूं कि वा स्वरूप की सदा सेवा कर रहे सुंदर रसमय असंख्यात भाववारे सर्वोपर विराजमान निर्दोष की ईर्ष्या भरेन के हृदयों में रुचिरूप सूं प्रवेश कर रहे कि वे ईर्ष्या भरे हू जिनकूं माने ऐसे अपने संपूर्ण गुणन सूं कि चरण कमलों की शोभा सूं कि श्री चरण संबंधी नखन के किरण समूहन सूं कि वा श्री चरण कमलों की रज संबंधी माधुरी के बिंदुन सूं कि विनके पखारवे के जल बिंदुन के विलास समूह सूं कि देव देवाधिपती सदा सेवा करवे लिये जिनको ढूँढ़ रहे हैं ऐसी सुंदर उज्वल चमकनी उत्तम पनहीजी सूं वेग ही वल सूं ही सबन के चित्त को अत्यंत स्पष्ट हर ही सुंदर सरखे रंग सूं रंगी चमकनी मनोहर धोती सूं कि वैसे सबन के मन को जबर सूं हरवे वारे केसरी मनोहर उपरना सूं कि चंचल होय रहे सुंदर उदर सूं कि शोभायमान हृदय स्थल सूं कि मनोहर दोनों उरू स्थंभन सूं कि परम सूक्ष्म कमर सूं कि विशाल भुजान सूं कि शंख, कमल, चक्रादि मुद्रान सूं कि मनोहर कुमकुम के उर्ध्धपुंड तिलकन सूं कि स्थूल मोतिन के हार सूं कि तुलसी की शोभा भरी सुंदर मालान सूं शोभायमान श्री कंठ सूं कि उज्ज्वल सुंदर दर्प्पण के श्रेष्टता संबंधी मुद्रान को छेद भेद करवे वारे, कि शरद ऋतु संबंधी अर्बन पूर्ण चंद्रमान के अहंकार को काटवे वारे ऐसे श्री मुखारबिंद सूं अत्यंत विशाल लोचन युगल सूं कि कटाक्ष विशेषन सूं कि मंद हास्यन सूं कि भ्रु विलासन सूं वा वचनन के विलासन सूं कि श्रेष्ट नर्म हास्य टोक विनोदन सूं अत्यंत मनोहर हृदयवारी सुंदर अंगवारी सुंदरीन के करोडन हू युथन को अत्यंत उत्कंठा वारो करो हो ।। कि नष्ट धैर्य करो हो ।। कि डोरी सूं बाँध के ही बल सूं हूं खेंच रहे हो कि अपने हू घर में क्षणमात्र हू बैठवे नहीं देवो हो ।। कि विन सबन के नाम पंक्ति

को ले लेके ही बुलाय रहे हो ।। कि मंगाय रहे हो कि बंधन करो हो ।। कि पीड़ित करो हो कि डरावो हो, कि मोहित करो हो, कि मूर्छित करो हो कि देखता करो हो कि शयन करावो हो कि घूर्णित करो हो, कि कंपित करो हो कि पसीना वारी करो हो ।। कि कुपित करो हो कि खिन्न करो हो कि नचावो हो, कि बोधवारी करो हो, कि प्रफुल्लित रोमावलीवारी करो हो कि स्तंभ भाववारी करो हो कि गद्‌गद् कंठवारी करो हो, कि बुलवावो हो, कि लाजवारी करो हो कि धृष्ट करो हो कि नम्र करो हो कि सखा बनाय रहे हो कि दासी बनाय रहे हो कि वश कर रहे हो कि आलिंगन करो हो कि रमण रस सागर में विहार कराय रहे हो ।। कि वामें निमग्न करो हो कि वासूं उद्धार हू कर रहे हो ।। कि वे आपकूं आलिंगन करें हैं ।। कि परस करें हैं ।। कि वारंबार चुंबन करें हैं कि अधर पान हू करें हैं कि आपकू श्रृंगार धराय रही है ।। कि दंतन सूं खंडन करें हैं ।। कि वा वा प्रसंग में विन सूं जल्पवाद कर रहे हो ।। कि कछु मांग रहे हो ।। कि विनके प्रति सो सो वस्तु दे रहे हो कि बिना यत्न के देके हू वल सूं खेचके ले रहे हो ।। कि वचनन की चातुरीन सूं कि हृदय सूं कि वा वा अंगन सूं वा सुंदरीन सू एक रूप होय रहे हो ।। अहो श्री राज को स्वरूप संबंधी हर्ष, वाणी कि, मन सूं हू दूर है ऐसे श्री महाप्रभो मेरे नयनों के सन्मुख ही वेग ही प्रकट होयके मेरी रक्षा करिये ।। कछु और हू है कि हे श्री प्राणप्रभो श्रीराज जा क्षण में प्रकट भये है सो क्षण अमृत सूं हू मीठो है, कामदेव सूं हू अत्यंत ही सुंदर है, कपूर सूं हू सुगंधी है ।।१।। हे प्रभो जा क्षण में श्रीराज प्रकट है सो क्षण इन्द्रसूं हू विशेष मान योग्य है कि कर्म राजा सूं हू बड़ो दानवीर है कि सुवर्ण के पर्वत सूं हू भारी है ।।२।। हे महाप्रभो श्री राज जा क्षण में आप प्रगट भये है सो क्षण अपने चरणन स्वरूप सूर्य के प्रकाशन सूं सगरे जगतो के अंधकार समूह को नाश करें हैं ।। यश हू वाकूं अत्यंत अभिलाषा करें हैं ।।३।। श्री राज जा क्षण में आप प्रकटे है सो क्षण तो अपने मुखरूप चंद्रमा सूं सगरे सुहृद सज्जनों के नयनरूप कुमोदिनी समुहन को प्रकाशित कर रहयो है ।। सगरे क्षण समूहन को सो चक्रवर्ती राजारूप है ।।४।। अहो प्रभो जा क्षण में श्रीराज प्रगट भये है सो क्षण तो कामधेनु को हू छेलीरूप जतावे है ।। अमृत को हू विष जल जैसे जतावे है कि कल्पवृक्ष को हू स्वाणु

की वृथा वक्ष स्तंभ जतावे है ।। कि कामधेनु, कि अमृत, कि कल्पवृक्षन सूं हू परम विशेष मनोरथ पूरण करें हैं ।। या क्षण कूं सब वांछा करे है ।। विनकी ओर कोई झांके हू नहीं है, चाहना हू नहीं करे है यह भाव है, अहो श्री राज जा क्षण में आप प्रकट भये है या क्षण ने तो सगरे सज्जन अपने भक्तन के मस्तक वा सुवर्ण के पर्वत मेरु सूं हू ऊंचे कर दिये है ।। कि सगरो हू जगत श्रेष्ठ लाखन रसायन सूं हू विशेष जोवन भर्यो नवीन ही कर दियो है ।।६।। विशेष कहाँ लो कहे ।। अहो सगरे अवतारन की महिमा समुह हू जाके चरण की रज पर हू निरांजन होय है ।। कि वारने जाय है कि स्वयं राज हू जाकी उपमा देवत संदेह करो हो ऐसे सर्वोपर क्षण में श्री राज प्रगटे है ।।७।। अहो या सर्वोत्कर्ष ने कौन सो तप कियो है सो हम नहीं जाने है जासूं यह स्वरूपात्मक सर्वोत्कर्ष श्रीराज को कि श्री राज के संबंधी सगरेन को ही लिपट के अत्यंत ही आनंदित होय रहयो है ।।८।। तुलसी माला को आलिंगन करके विराजमान होय रहे या श्री राज के कंठ ने सो तुलसी माला वैसे सर्वोपर करी है जैसे अपने सूं नीचे ठहर रहे कल्पवृक्ष की कल्पलतान को देखे हू नहीं है ऐसी सर्वोपर होय गयी है ।। हे प्राण नाथ श्रीराज के श्री मुख स्वरूप कमल के प्रफुल्लित होयवे सूं जोबन भरी सुंदरीन के नयनरूप भौरी नाचे है ।। कि राज के श्री मुखरूप चंद्रमा के उदय होयवे सूं जोवन भी सुंदरीन के नयनरूप चकोरी होय नाचे है ।।१०।। हे प्राणनाथ श्री राज के कोमल मधुर मंद हास्य पूर्वक वचनन सूं प्रफुल्लित करी ही हंसायी सुन्दरीन सूं सर्वांग हंसाये कि प्रफुल्लित किये श्री राज के श्रीमुख कूं जे सुंदरी निरखे है, वे हू सराहना के योग्य हैं कि धन्य हैं ।।११।। प्राण प्रभो अत्यंत कोमल श्रीअंगवारी सुंदरीन को वा वा अधर कपोल आदि अंगन में जो दंतन सूं कि नखन सूं खंडित करो हो सो मैंने जान लियो है कि या सुन्दरीन के तापरूप वृक्ष के बीज को हू निकारो हो ।।१२।। श्री प्राणप्रभो श्री राज ने कृपा सूं अपने विस्तार वारे दोनों भुजान के कोट में जा भाग्यवती जोबन भरी सुंदरीन को प्रवेश करायो है वा भाग्यवती सुंदरीन को विरह संबंधी तापरूप शत्रु मार नहीं सके है ।।१३।। अहो दोनों ओर मुद्रा रूप शंख कि पद्म को कि बीच में चक्र को कि गदा को धारण कर रहे श्री राज के हृदय देश में भाग्यवती सुंदरी आवे है सो कबहु निर्धन नहीं होय है ।। कि कबहु डरे हू नहीं है ।। जासूं

शंख पद्मरूप निधि वाकूं सहज प्राप्त होय जाय है ॥ चक्र कि गदा हू सहज में निकट रहे हैं सो शत्रुन को निवर्त कर दे है ॥१४॥ अहो श्रृंगार सागर कि माधुरी सागर की, श्रेष्ठ सौंदर्य क्षीर सागर के मंथन सूं प्रकट भयो जो अतुल कि सर्वोपर विराजमान अमृत है सो तो सब प्रकार सूं निरंतर श्री गोकुल में ही विहार करें हैं सो रसभरी सुंदरीन के मुख अमृत को पान हू निरंतर करत वामे ही दृढ़ अभिलाषा वारो हतो ऐसे यह श्री राज ही है ॥१५॥ अहो हे द्राक्षे कि हे श्वेत सीते कि श्वेत उज्ज्वल मिसरी, के हे रसाल फल, के आंब, तुम जो श्री गोकुल रत्न प्रभु के आलाप रूप महाराज के दास वनके रहवे लिये कमर कसो हो का ॥ सो सत्य ही कमर कसो हो तो यह वृथा ही कसो हो जासूं याके दास बनवे में तो अमृत समुद्र को हू मनोरथ अत्यंत ही दृढ़ है ॥ परंतु सोहू अब तक तो सूचना करवे लिये हू याके चरणन को प्रार्थना कर रहयो है ॥ वाकूं आज्ञा नहीं मिले है तो तुमारी कहा चली ॥१६॥ अहो कटाक्ष जामे नाच रहे हैं सो इलायची रूप है कि जामें मुख चंद्रमा अत्यंत चतुर प्रफुल्लित है सो बरासरूप है कि उछलित जामे भ्रु है सो कारी मिरची रूप है ॥ सुंदर दृष्टिवारी सुंदरी सगरे ही अंगन सूं जाकूं पान करें हैं ऐसो यह अलौकिक अद्‌भुत पान के रस को पना है सो अमृत को हू विजय करें हैं, ऐसो पना इहां बढ़ रहयो है ॥ कि सर्वोपर विराज रहयो है ॥१७॥ हे श्रीमद् गोकुल रत्न श्री महाप्रभो मृग लोचना सुंदरीन की जो दृष्टि तिहारे अंगन में कोऊ अनिरवचनीय मधुर सुंदर रस को पान करत, अहो और सगरे हू अंगन को प्यास भर्यो करत, या रस कूं त्याग करवे में समर्थ जो नहीं होय है, सो वा रसपान को तृष्णा वा दृष्टि को व्यग्रता कि उदासी रूप वन की अग्नि लिपट जाय है ॥ हे सर्वज्ञ वर्गन के अधिपते महाप्रभो यह जान के कृपानिधि श्री आप जा रस सूं वाकूं वाके अंगन को हू पान करावत ही वा दृष्टि कि वा अग्नि को हू शांत कर देवो हो, तासूं यह सो दृष्टि कि वा अग्नि को हू शांत कर देवो हो तासूं यह दृष्टि कछुक उछल रहे पलक समूह सूं रोम हर्षवारी होयके हर्ष के अश्रु समुह रूप स्तोत्रन सूं कि श्याम ताशरूप नील कमलन सूं, कि उज्वल कांती रूप कुमोदनी कि श्वेत कमलन सूं राज की प्रेम सूं पूजा हू करें हैं ॥ कि लाज सूं नम्र होयवे सूं स्पष्ट प्रणाम हू करें हैं ॥१९॥ तथा अहो बाल की तुम तो बावरे हो, जासूं श्री गोकुल रूप

महेन्द्र, श्री गोकुलेश जी के हू प्राप्त होयवे कूं, कि वाकी समानता करवे कूं यत्न करो हो सो तो वृथा ही है ।। जैसे चारों ओर प्रकाशमान होय रहे चंद्रमा की समानता दोय तारा कर सके है ।। किंतु सब तारामंडल हू नहीं कर सके है ।। वैसे तुमकूं कहा सामर्थ्य है किंतु कोई को यह सामर्थ्य नहीं है ।। जासूं तुम सबनने सो तप नहीं कियो है कि जो ताप अनुपमताने ही कियो है ।। सो बड़ो तप है जासूं सो अनूपता कि सर्वोत्कर्षता तो वा श्री गोकुलपति को प्राप्त होयके उछलित रोमावली को धारण करत अत्यंत ही नाच रही है ।।२०।। अहो कमल तुम प्रफुल्लित होयके श्री वल्लभ जी के श्रीमुख चंद्रमा के उपमान में कि समान होयवे कूं जो उत्साह करो हो सो तो तिहारी आंखे है नहीं तासूं तोकू उत्साह करनो ठीक है जो वाको निरुपम सौंदर्य तू देखे नहीं है ।। देखतो तो उत्साह हू नहीं करतो तथा तेरी नासिका हू नहीं है ।। तासूं वांकी सुगंधी को हू तू सूंघे नहीं है कि जाने नहीं है ।। जासूं जाकी सुंदरता की सुगंधी सूं यह सगरो जगत ही सुंदर सुगंधीवारो होय रहयो है ।। अहो श्री गोकुलवल्लभ प्रभो जाके आगे अमृत हू प्रणाम कर रहयो है तासूं अमृत के मुकुट संबंधी रत्नन की किरणन के समूह सूं मनोहर जाके चरण लाल होय रहे हैं ऐसे श्री राज के वचन के ऊपर मिसरी हू अपने प्राणन को वारवे लिये का-का नहीं करें हैं ।।२२।। तथा जा तिहारे वचन के आगे सो अमृत प्रणाम कर रहयो है ।। वाके मुकुट संबंधी रत्नन की किरणन के समूह सूं जाके चरण नख लाल होय रहे हैं ऐसे श्री राज के वचन के आगे अपने को न्योछावर करवे लिये कोयल के गान को बुद्धि हू नहीं आवे है ।। कि समर्था नहीं होय है ।।२३।। तथा श्री राजकी वाणी के आगे अमृत सागर प्रणाम करें हैं ।। वांके मुकुट संबंधी माणिक के समूह की उछल रही जे कांती समूह है सो तिहारी वाणी के चरण को अनार के फुल सूं हू सुंदर कर रही है सो तिहारी वाणी को श्री राज के श्री मुख को संबंध है तासूं सो वाणी को चरण कि वाक्य हू सुगंध वारो है तासूं वा श्री आपकी वाणी के सुगंधीवारे अनार के फूल रूप वाक्य को मृगनयना सुंदरी अपने कानों में भूषणरूप सूं धरें हैं सो अत्यंत ही श्रेष्ठ है युक्त है ।।२४।। हे श्री महाप्रभो जैसे श्री आप आज जेसे सुंदर गुणन सूं आप मिले हो कि जैसे बड़े विचार वारे भक्तजन आपकी सेवा कर रहे हैं कि जैसे श्री मंदिर में श्री राज आप

विराजमान हो कि अपनी भक्त सुंदरीन में जा सरस लीला को वारंवार करो हो कि जा अपनी कृपा को करो हो सो यह सगरी ही लीला इहां या मेरे घर में मोकूं श्री राज दर्शन सदा कराईये, सो यह सदा सर्वोत्तम फल है ॥२५॥ हे श्रीमद् गोकुल मंडन सर्व भूषणरूप प्रभो श्री आपको जो अद्भुत महाआनंदमय स्वरूप है सुंदर सरोवर है जामें श्री राज स्वरूप जल है, कांतिरूप लहरी है ॥ जामें श्री मुख कमल ऐसे प्रफुल्लित अनेक कमल है जिनकी उछल रही शोभा रूप मधुर मकरंद को भक्तन के नयनरूप भ्रमर निरंतर पान कर रहे हैं तोहू विनको सदा तृप्ति नहीं होय है ॥२६॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि जिनको रूप प्रथम कहयो है ऐसी मृगलोचना कितनी तो प्रियवर को या प्रकार सूं 'स्वस्ति' प्रथम लिखके विज्ञापना करें हैं ॥ कितनी तो या प्रकार के ऐसे वचन सूं ही विज्ञापना करें हैं ॥२७॥ वा सब सुंदरीन के मनोरथ समूह के अनुसार रस सागर अचिंत्य शक्ति वारे भगवान श्री गोकुलाधीश जी वा वा सुंदरी के घर में प्रगट होय के कि गाम में पधार के सब सेवक भक्तन के संग ही अपने श्रीमद् गोकुल धाम में विराजमान हू होवत कि अपने रंच विरह के सहन में असमर्थ वा गोकुलवासी भक्तन को छांडवे में समर्थ न होय के वा भक्त सुंदरीन के हू मनोरथ को वारंवार पूरण करें हैं ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि या प्रकार सूं श्री महाप्रभु जी के पत्र पठायवे कि माधुरी के वर्णन करत ही वाके प्रसंग सूं जनन के मंगल की अभिलाषा वारे मैंने श्री महाप्रभुजी के भक्तन को हू पत्रादि पठायवे कि विज्ञापना कि माधुरी कि वैसे और और हू मधुर प्रकार कछुक वर्णन कियो है ॥३१॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि अहो या प्राणनाथ जी के भक्तन के चरित्रन में अत्यंत विराजमान होय रहे माधुरी को वर्णन करवे में परार्द्धन मुखवारो हू को समर्थ होय सके है ॥ कि कोऊ हू समर्थ नहीं होय सके है ॥ अहो प्रथम तो मोकूं सब प्रकार सूं श्री राज के महा मनोहर मधुर स्वरूप ने ही बांध लियो है ॥ फिर हू सो स्वरूप ही वा बंधन गांठ कू अत्यंत दृढ कर रहयो है ॥ तासूं कहूं अनंत मोकू जायवे हू नहीं देवे है तासूं हू सो श्री राज अपने अखंडित मधुर मनोहर वा वा गुणन सूं हू फिर दृढ बांध रह्यो है ऐसे हू मोकूं प्रथम कही प्रिय के भक्तन के चरित्रन की जो माधुरी है सो तो या प्रकार सूं अत्यंत ही आकर्षण करें हैं कि आंदोलित हू करें हैं, सो का कहूं ॥ सो तो इहां रहे हैं भक्तजनाः

पसारे कानरूप मुखन सूं कि चित्तरूप अंजलीन सूं या चालू प्रसंग संबंधी अमृत को अत्यंत पान करीये ।। श्री कल्याण भट्ट जी अपने मन कूं कहे हैं कि कामको मान हू जाने हर लियो है ।। कि व्रजभूमी श्रीमद् गोकुल में जो विराजमान है नित मनाय रहयो है कि सुंदर दृष्टिवारी सुंदरी जाकू गान कर रही है कि सदा जो विजय कर रहयो है कि मानवारे हू जाकूं वंदना करें हैं ।। सबन को जो बहुत मान देवेवारो है ऐसे कोऊ अनिर्वचनीय कि मानवारे प्रभु श्री गोकुलाधीश को तुम मान सहित सेवन करो ।।३६।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे पंचत्रिस स्तरंगः ।।३५।।

।। तरंग -- ३६ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ षटत्रीस स्तरंगः लिख्यते ।।३६।।

श्लोक -- **प्राणाधिनाथो निजमासनंत द्विभूषयेन तथोपधानं --**

भक्तैः सुदृशग्मिश्चदगबुवान पात्रेण तृह्मक् प्रवरैर्नितानं ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी अब श्री प्राणनाथ जी जैसे अपने कृपापात्रन को सेवा पधराय देवे है सो कहे हैं ।। कि श्री प्राणनाथ जी अपने गादी तकिया को अपने सूं अलंकृत कर रहे हैं ।। स्वरूप रूप परस के प्यासेन में श्रेष्ठ कि अत्यंत प्यासे भक्तजन कि वैसी सुंदरी दृष्टिवारी सुंदरी जन हू श्री राज के श्रीमुख कमल को शोभा रूप अमृत समुद्रन के हजार परार्द्धन कल्लोल समूहन को पान कर रहे हैं ।। श्री प्राणनाथ जी अत्यंत उछले रससो मनोहर स्वरूप है ।। श्री राज के कृपारूप तरंग भक्तन की आर्ति को निवारण कर रहे हैं ।। सर्वज्ञ समूहन के मुकुटमणि प्राणनाथ जी अधिकारी वरजी की विज्ञापना सूं सेवा पधरायवे की इच्छावारे श्रेष्ठ भक्त के मनोरथ को जानके वा भक्त के लिये प्रसन्न श्री मुखचंद्र होयके कृपा समूह सूं पहले ही स्वयं लिखके धरे सुंदर प्रभाव समूहवारे सेवा पत्रन सूं भरी मनोहर पेटी को मंगाय के वा पेटी में सू वा सेवा पत्रन सूं ऐक पत्र को शोभा भरे श्री हस्त कमल सूं लेकर उछलित कृपा भरे होयके ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभु जी कछुक क्षण कछुक अनिर्वचनीय भावना करके वा सेवा पत्र को दान करें हैं ।। सो भाग्यवान

भक्त हू उछलित हर्ष वारो होयके श्री राज के आगे प्रणाम करके बड़े आदर सूं सजायी अंजली सूं लेवे है ।। उछलित कंप भाव वारो होवत वा सेवा पत्र राज को, अपने मस्तक में धरें हैं ।। तथा प्रियवर के दोनों श्री चरण कमलन पर प्रेम सूं अपनो मस्तक धर के प्रणाम करें हैं ।।५।। श्री प्राणनाथजी तो उछलित हर्षवारे होवत वाके मस्तक को उठावे है ।।६।। कृपा सागर श्री राज ने वा सेवा पत्र में जो स्वयं लिख्यो है सो श्री गोकुल के चंद्रमा भगवान प्राणप्रिय जी ''**श्री कृष्णः शरणं ममः**'' ऐसे अमृत के समुद्रन को विलास समूह पूर्वक वर्षा करें हैं ।।८।। फिर याकूं श्री मुख सूं प्रसन्न होयके आज्ञा हूं करें हैं ।। कि याकी सेवा तुम भली भांति सूं करियो ।। भक्ति सूं पकवान सामग्री सिद्ध कर याको समर्पण करके बड़े आदर सूं प्रसाद लेनो ।।९।। सगरे अवतारन सूं श्रेष्ठ परात्पर श्री पुरुषोत्तम को श्रेष्ठ भक्त होय रहे तुमने अन्य मार्गी सो संग न करनो वा रसात्मक पुरुषोत्तम के अनन्य श्रेष्ठ भक्त सूं ही संग करनो ।।१०।। यह सुनके सो भाग्यवान हू उछलित भक्ति समूह सूं मनोहर होय के कृपा सागर प्रभुन के आगे विनय करें हैं कि ''गुणसागर श्री महाप्रभो मेरी स्त्री कि बेटी कि बेटा कि बहु की ओर हू मेरे कितने संबंधी जे शरणागतन के पालक श्री राज के शरण नहीं आये है ।। महाप्रभो विनके संग हौं व्यवहार कैसे करूं-सो आज्ञा करीये'' ।। यह सुनके श्री प्राण प्रभु जी विलास पूर्वक वचनामृत सागरन को वर्षा करें हैं ।।१२।। ''वा संबंधीन को भली भाँति के अपरस में न्हवाय के अपरस के सुंदर धोये वस्त्र पहिराय के विनसूं यह पत्र जी वंचावनो पीछे विनके संग खान पान को व्यवहार करनो ।। यासूं सो तोकूं बाधक नहीं होयगो'' ।। यह सुनके सौभाग्यवान भक्त वा प्राण प्रभुन के आगे दंडवत प्रणाम करके अपने घर में जाय है ।।१४।। अब और कितनेक बड़े भक्त श्री गोकुलपति कृपा समूह सूं भरें हैं वे तो या प्रकार सूं विचार करें हैं कि ।। अहो श्री प्राणनाथ जी के सदा निकट जे रहे हैं वे सगरे बड़भागी है ।। या ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभु जी की अनेक प्रकार सूं ही सेवा करें हैं ।। अहो महाराज शिरोमणि के निकट हमारी स्थिति है नहीं है ।। हमतो अनेक कार्यन में लिपटे है परदेश में ही रहे हैं ।। इहां आय सदा रहते तो हमारे जे कार्य है वे हू सिद्धि कूं प्राप्त होय जाते, सो सेवा तो महाराज के प्रकार वारी सो अब कैसे सिद्ध होय ।। घर में सेवा होय सो तो घर में कल्पवृक्ष है परंतु सो सेवा हू

अत्यंत दुर्ल्लभ है ।। श्री प्राणप्रिय जी तो अदेय दान में हू कमर कसे है ।। कृपा समूह सूं वा कार्यन कि सिद्धी लिये कि सेवा फल की हू सिद्धि लिये अपने श्री चरणारविंद के स्पर्श सूं सर्व समर्था के सागर महाप्रभु जी वैसे श्री आप अपनो हू स्वरूप सिद्ध करके उछलित श्रेष्ठ भाव सूं भरे अपने भक्तिभरे कृपा पात्रन को पधराय हू देवे है ।। परंतु तामे बड़े महद भक्त कि श्री अधिकारी जी अत्यंत विनय करे तो तब मिले ।।२०।। सो श्री महाप्रभु जी सूं सेवा को हम कैसे प्राप्त होय सके जासूं हमतो श्री राज की सेवा के योग्यता सूं रहित है ।। धन सूं रहित है, बुद्धि सूं हू रहित है वैसे सहायकन सूं हू रहित है शुद्धि नहीं है वैसो भाव हू नहीं है ।। तामें श्री अधिकारी वरजी कि वैसे श्री राजके महद भक्त हू ऐसी अयोग्यता भरे हमारे लिये अपने श्री प्राण प्रभुजी में विज्ञापना करेगें का ।। कि वेहू नहीं करेंगे ।। वे भाग्यवान कबहु विज्ञापना करे हू तो हू सो गुण सागर नहीं माने तो हम का करे, कहा जाय, हमारो आधार को होय ।।२३।। या प्रकार सूं जिनको लेशमात्र हू पूर्ण न होय सके ऐसे जबर सूं उछल रहे मनोरथन सूं वे भाग्यवान अत्यंत दुःखी होवत ही दीन भाव भरे वे बहुत काल पर्यंत बहुत प्रकार सूं विचार करत-करत ही उछलित आंसू समूहन को वरसावत बहुत आश्वासन कूं हू भरते कोई दिन कछुक अपनी स्त्रीन के आगे कि भैया कि बहु कि मित्रन के आगे कि संबंधीन के आगे कहे हैं ।।२५।। ''वे सगरे तो भाग्यभरें हैं तासूं विनको अनेक प्रकारन सूं उत्साह देवे है ।। कि तथा युक्ति की कि प्राणप्रभु की कृपा दिखाय के याकी प्रसन्न भावना कि बुद्धि को निवर्त करें हैं ।। तब वे भाग्यवान वा स्त्री पुत्रादिन के संग ही डरत डरत अधिकारीन में मुख्य अधिकारी जी को कि प्रभुन के कृपा पात्र भक्तन में मुख्य भक्तन को हू धीरे-धीरे अपने वा सेवा के लिये मनोरथ को निवेदन करें हैं ।। फिर हू हाथन कूं बांधके विनके आगे यह हू कहे हैं ।। सब रीत सूं योग्यता सूं रहित ही हम है, तासूं तो हमारो यह मनोरथ यद्यपि अत्यंत ही दुर्घट है सिद्ध होयवे को नहीं है -- तोहू श्री प्राणप्रभु जी के आगे रहवे वारे आप यदि याकूं आदर कर देवे तो अवश्य ही पूरण होय जायगो ही, ऐसे दीनता पूर्वक विनके मनोरथ को निवेदन करत ही वे भाग्यवान हू कृपा समुद्र है वाके भाव को मनोहर ऊंचे स्थिर जानके बहुत प्रकार सूं आदर सूं विनको समाधान करत उत्साह बढावे है ।।३०।। या

प्रकार कछुक दिनों के गुजरने पर वा भक्त के भाग्यन के प्रफुल्लित होयवे पर कि अपनी प्रसर रही सुगंधिन सूं सब दिशान को भरवे पर भक्तन के संग संमती करके अत्यंत उदार गुणवारे मनोहर मुहूर्त में श्रेष्ठ भक्तन के संग सो अधिकारी जी अपने हाथन में जिनके भेंट समूह विराज रही है ऐसे अपने अपने स्त्री पुत्रादि संबंधीन के सहित वा भक्तन को प्राण प्रिय के पास ले जाय है ।। तब तो वे भक्त तो श्री प्राण प्रिय जी के मनोहर श्री चरण कमलन को प्रणाम करके आगे ठहरें हैं ।। अत्यंत मनोहर श्री पादुका युगल सिद्ध कराय के मनोहर पेटी में धरके लाये है ।। कि श्री प्राणनाथ जी के योग्य मनोहर सुंदर जामा नीमा पाग आदि वस्त्र हू लाये है कि सुगंधी सोंधा अत्तर फुलेलादि समूह हू लाये है ।। कि सुंदर मनोहर फूलन की माला हू लायके इहां धरें हैं वैसे मोती मणि हीरान सूं जटित अमूल्य उज्वल नवीन सुंदर चमकने भूषण हूं सुंदर मनोहर पात्रन में अनेक प्रकार के धरें हैं ।। तथा सोना की मोहरे कि रूपे की मोहरे कि रत्न कि सोना कि मत्तवारे हाथी राज कि आछी जातीवारे घोडा हू भक्ति सूं अनेक प्रकार के लावे है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे षट्त्रीश स्तरंगः ।।३६।।

।। तरंग -- ३७ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ सप्तत्रीस स्तरंगः लिख्यते ।।३७।।

श्लोक -- **अथधिकारी प्रवरः प्रणम्य प्रेयासमीझी सरसी रुहाक्षं**
मनोरथं हंत तथा विधंतं तेषां सविज्ञापयते विनीतः ।।१।।

याको अर्थ -- तब अत्यंत नम्र श्रेष्ठ अधिकारी जी कमल नयन प्राण प्रिय वरजी को प्रणाम करके वा भक्तन के वैसे सेवा के मनोरथ की विज्ञापना करें हैं ।।१।। तब कृपा समुद्र की अत्यंत सुंदर मुस्कान सूं शोभायमान श्री मुखारविंद वारे कि अदेय दान में कसी कमरवारे सो उदार लीलावारे श्री प्राणनाथ जी **''हाँ अवश्य'' ऐसे वचन को कहे रहे ऐसे कि अमृत के समुद्रन को वर्षा करत श्री मुख चंद्रमा सूं वाकूं अत्यंत अंगीकार करें हैं ।।२।। तामें यह तो अधोक्षज की इन्द्रियातीत बड़ेन सूं हू बड़े ही प्रभु है ।। तथा हमतो योग्यता**

रहित है सो हमारे या बड़े मनोरथ को पूरण करे कि न करे पहले या प्रकार के विचार सूं जे भक्त कंप सूं व्याकुल चित्त हते वे अब यह भक्त परम सहर्ष को प्राप्त होय जाय हैं ।। कि अपने हृदय में नाचे हैं ।। कि प्रफुल्लित परम सहर्ष को प्राप्त होय जाय हैं ।। कि अपने हृदय में नाचे हैं ।। कि प्रफुल्लित रोमावली वारे होय हैं ।। कि वा प्रभुन के आगे वारंवार दंड्वत प्रणाम करें हैं ।। वा अधिकारी जी द्वारा पहले विज्ञापना कराय के वा श्री प्राणनाथ जी के शोभा भरे, औरन को सुगंधी कि सुंदर कर रहे श्री अंगन सूं मनोहर अमूल्य वस्त्रन को अंगीकार करावे है ।। अत्यंत मनोहर कुमकुम के रस सूं प्रियवर को मनोहर रीति सो सिंचन करें हैं ।। कि वा प्रिय चक्रवर्ती को वा श्री अंगन को चोवा सूं टपका लगावे है ।। कि मनोहर सुगंधी लगावे है ।। कि प्रसर रही सुगंधी सूं भौरा समूहन को वश कर रहे ऐसे अंग राग को वे भाग्यवान प्रिय को लगावे है ।। उछलित प्रेम समूह सूं या प्रियवर में अनेक प्रकार की मालान को अर्प्पण करके अपने कूं अनेक प्रकार सूं कृतार्थ ही माने है ।। नयनन सूं श्री राज के श्रीमुख चंद्रमा की सुधा के पान कर रहे हैं ।। ऐसे या भक्तन के सब वस्तु को रस कि कृपा समूह सूं रंजित कि त्रिलोकी को सगरो शीतल कर रहे श्री मुख चंद्रमा सूं अंगीकार करें हैं ।। तब उछलित अनुराग वारे यह भक्तजन वा पेटी सूं या श्री प्राणप्रभु जी के आगे वा मनोहर पादुका जोड़ी पधरावे है ।। वाके ऊपर अपने को वारंवार न्योछावर कर रहे हैं ।।१०।। तब इश्वरेश्वर महाप्रभु जी विनमें क्षणेक कछु भावना करके करोडान समूह रस सागर जिन सूं झर रहे हैं ऐसे अपने अत्यंत मनोहर चरण कमलन को विनके ऊपर विलास सूं धरें हैं ।।११।। वा समय में श्री प्राण प्रभु जी के जे श्री मुख के हर्ष उछले है कि कृपा के कटाक्ष उछले है कि भ्रुवो के हू अतुल विलास उछले है सो वे जा भाग्यवारे जनन के हृदय में प्रवेश कर गये है वे तो आज दिन लों ही वा हृदय सूं निकरे नहीं है ।।१२।। ता पाछे श्री चरण कमल की रज के लवलेश की शोभा सूं हू जिनने अमृत की वर्षा कि कल्पवृक्ष कि चिंतामणिन को हू विजय कर लियो है ऐसे आनंद सागर रूप श्री मुख सूं उदय भये चंद्ररूप या प्रकारके वचनन सूं हू वा भक्तन के प्रति वा श्री पादुका जी को दान करें हैं ।।१३।। श्री राज के स्वरूपात्मक चिंतामणि सार्वभौम सूं जटित होयवे की महा सुंदरता को धारण

कर रहे कि महानुभाव समूह जामें निरंतर जाग रहे हैं ऐसे वा श्री पादुकाजी को वा भाग्यवान भक्त के प्रति दान करके वा भक्त को आज्ञा करें हैं कि ''अयि धीमन अये सुजान यह सेवा ले इनकी श्री गोकुलाधीश बुद्धि सूं आदर सूं सदा सेवा करियो ।। कबहु यामें अन्यथा भाव नहीं जाननो'' श्री प्राणनाथ जी के ऐसे वचनरूप उज्वल अमृत समुद्र को कान कि मन रूप पात्रन सो पान करके विराजमान होय रहे वा भक्तन के जे नयन है वे तो आश्चर्यवारे होयके हर्ष के आंसू समूहन को वर्षा करें हैं ।। कि तथा कंप कि पसीना की विवर्णता कि मूर्छा कि गद्‌गद कंठता कि स्तंभ कि रोम हर्ष यह सगरे सात्विक भाव वा भक्त को आलिंगन करके दृढ़ ही निपीड़न करें हैं ।।१७।। वे भाग्यभरे भक्तजन अत्यंत मधुर कि चिंतामणिन के समूहन को कि अमृत के समुद्र समूहन को कि कल्पवृक्ष संबंधी फूल समूहन की सुगंधी प्रवाहन को वर्षा कर रहे कि प्रसरवे वारे प्रकाश सूं भरे वा दोनों श्री पादुकाजी को हृदय में कि नयनों में कि नासिका पर प्रेम सूं धरत नम रहे शिरन में धारण करें हैं ।। वे धन्य भक्तजन साक्षात प्रिय चक्रवर्ती राज के चरणारविंदु संबंधी माधुरीन के आकाश को परस कर रहे कि अत्यंत ऊंचे अर्बन हजारन कल्लोलन में अपने शिरन को निमग्न करें हैं ।। कि अत्यंत स्नान करावे है ।। कि वारंवार चिरपर्यंत वा श्री पादुका जी के शिरन सूं विश्राम करामें है ।। कि आलिंगन करामें है ।। कि इच्छानुसार अपने शिरन को उज्वल हू करें हैं ।। कि उछलित उज्वल भाव वारे वे बड़े हर्ष सूं कूदे है, खेले है, नाचे है, कि अपने को शोभायमान हू करें हैं ।। ता पाछे वे भाग्यवान भक्तजन अमूल्य रेशमी वस्त्र जामें बिछायो है ऐसी वा रत्न जटित पेटी जी में वा प्रियवर के सुंदरता मधुरता समूह कि अनुभाव प्रभाव की सुगंधी की श्रेष्ठता की मनोहर अद्‌भुत चमत्कारन सूं भीतर बाहीर भरे अत्यंत शोभायमान वा श्री पादुका जी को पोढाय के सुंदर अत्यंत कोमल चादर सूं ढांप के या श्री राज के चरणारविंदन में वा वा भेट कूं धरके कृपा सागर या ईश्वरेश्वर पायके अपने घर में पधराय ले जाय है ।। तामें मार्ग में सगरे भक्तन सूं कि अपने सगे संबंधीन सूं मिले है ।। सब आनंद समुद्र में निमग्न होय रहे हैं ।। गान कर रहे हैं ।। कि उदार जिनको भाव है कि नाच रहे हैं चंद्रवदना सुंदरी हू गणना सूं रहित है ।। कि सगरे अंगन में प्राणनाथ जी के स्वरूप कि माधुरी जिनमें जटित है तासूं

जे नम रही है ।।२५।। सुंदर भलि भांति सूं गांन तथा नृत्य के तरंगन सूं जिनके अंग अंग भरें हैं कि वा प्राणनाथ के अगाध गुण सूं जटित मनोहर स्वभाव वारे शोभायमान उछलित प्रेमवारे मनको जे धारण करें हैं ।। कि जय जय कार कि स्तोत्र कि सुंदर मनोहर हास्य सूं जिनके श्रीमुख पूर्ण चंद्र शोभायमान है ऐसे वे भक्तजन अग्ने घर में जाय है ।। वहां जायके अमुल्य मणि समूहन सूं शोभायमान बड़े सिंहासन में भली भाँति सूं बड़े उत्साह सूं पधराय के प्रथम कहे प्रकार सूं वा प्रभुन की सेवा करें हैं ।। वैसे वैसे उछल रहे उज्वल भाग्य कि दासभाव के सागर के हजारन कल्लोन सूं प्रेरणा किये वे भक्तजन सुंदर विविध प्रकार के भोग सुंदर वस्त्र कि फूल की धूप आर्ती कि फूलमाला समूहन सूं कि सुंदर गान स्तोत्र नृत्यन सूं कि जय जयकारन सूं रस चंचल लोचना सुंदरीन के समाज कि सन्मान चातुरीन सूं कि निष्कपट प्रेम भक्तिदान मान नमस्कारन सूं भली भांति सूं ही वा श्री महाप्रभुजी की सेवा करें हैं ।।३०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे सप्तत्रीस स्तरंगः ।।३७।।

।। तरंग -- ३८ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ अष्ट्रीस स्तरंगः लिख्यते ।।३८।।

श्लोक -- **एवं परे केवन भाग्य माजः प्राणेश्वर स्या स्पपदाश्च चिन्हे**
प्रेमणा समम्युच्छलता नितातं निषे वितुहंत समोहमानाः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं -- वैसे अब और कितनेक भाग्यवारे भक्तजन या प्राणनाथ जी के श्री चरणकमल संबंधी चिन्हन को कि श्री चरण छाप को निरंतर उछलित प्रेम सूं सेवा करवे की अभिलाषा करत वा श्री अधिकारी प्रवर जी को वा श्री चरण छाप की सेवा करवे को अपनो मनोरथ सुनायके वा अधिकारी जिने इनको उत्साह समूह बढ़ायो ।। तासूं यह भाग्यवारे भक्त श्रेष्ठ मनोहर मुहूर्त में या अधिकारी जी के संग कि अपने जन स्त्री बहु कि मैया कि बेटा कि बेटीजी आदि के संग मनोहर श्वेत वस्त्र सूं कि वैसे मनोहर सुंदर रेशमी वस्त्र सूं मिली के कोऊ और अद्भुत बड़े मोलवारे वस्त्र सूं मिली अत्यंत मनोहर सुंदर पेटी को लेकर तथा सुगंधी वस्तु

समुह सूं मिले बड़े मोलवारे घी से श्रेष्ठ कुंकुम को कि प्रसर रही सुगंधी सूं भौरा समुह को वश करवे वारे कि मुक्तामणि हीरा समूह सूं जटित मनोहर पात्र में विराज रहे अद्‌भुत शोभाभरे ऐसे चंदन को हू लेकर सुंदर वस्त्र कि भूषणन को लेकर परम पुरुषोत्तम श्री महाप्रभुजी के घर में जाय हैं ।। श्री राज के आगे दंडवत प्रणाम करके नम्रता पूर्वक इहां बैठे है ।। श्री राज के कृपा कटाक्ष को निरख रहे हैं ।। कि श्री राज के श्री मुख चंद्रमा के चांदनी के उज्वल तरंगन को पलक रहित नयनन सूं कंठ पर्यंत वारंवार पान करत हू तृप्ति के लेश को हू नहीं प्राप्त होय है ।।७।। तब श्री अधिकारी जी हाथन कूं बांध के नम्रता पूर्वक विनको, मनोरथ को कहे हैं ।। तब श्री प्राणप्रिय जी हू विलास शोभा पूर्वक ''अवश्य'' ऐसे कहत वा मनोरथ को अंगीकार करें हैं ।। ता पाछे आगे वा बड़े मोलवारे मणिन सूं शोभायमान चौकी को आगे धरें हैं ।। कृपा समुद्र प्रिय चक्रवर्ती श्री राज को वा चौकी पर विराजमान करें हैं ।।९।। वा चौकी के पास मुक्तामणि जटित सोना को पींढ़ा धरें हैं ।। वाके ऊपर उछलित कांति रस के प्रवाह भरे श्री राज के दोनों चरण कमलन को धारण करामे है ।।१०।। यह भाग्यभरे भक्त तो नम्रता पूर्वक हस्त कमलन सूं प्रथम कहे श्रेष्ट चंदन पात्र को धरके राजके पास ही आगे ठहरें हैं ।। अपने जन्म को बहुत प्रकार सूं श्रेष्ट धन्य ही जान रहे हैं ।।११।। तब श्रेष्ठ सो अधिकारी जी कि श्री राज के कृपा कटाक्षन सूं परस कियो कोऊ और कृपा पात्र श्री महाप्रभु जी के चरण कमलन को सुंदर चंदन सूं लिप्त करें हैं भरें हैं ।। तब श्री प्राणनाथ जी मंद हास्य सुं शोभायमान श्री मुखारबिंद होवत ही वा श्री चरण कमलन को वा पीढ़ा पर पहले धारण कियो वा वस्त्र के ऊपर ही विलास पूर्वक धारण करें हैं ।।१३।। श्री महाप्रभुजी वैसे ही क्षण मात्र ठहर के वा वस्त्र पर उदित भयो श्री चरण चिन्हन को विचार के जटित शोभा भरे श्री चरण कमलन को हमारे श्री प्राण वल्लभ जी उठाय लेवे है ।।१४।। तब वैसे मनोहर रूप वारे सुंदर चंदन सूं लिपे श्री प्राणनाथ जी के दोनों श्री चरण तलन को निरख रह्यो, निज भक्तन के जे नयन कमल है सो वा चरण तलन सूं गिर रहे जा प्रकाश भरे अमृतन को कि चिंतामणीन के समूहन को कि श्रेष्ठ निधिन के समूहन को लूटें हैं वा भक्तन के श्री चरण कमल संबंधी रेणु को किणका हू देवनाथ कि ब्रह्मा कि इन्द्र कि सगरे अवतारन

के नयन कमल कि मस्तकन को हू दुर्ल्लभ है ।। विनको नहीं मिले है ।। तथा जे उछलित भाव भरे सुंदर भाग्यवारे भक्तजन वा श्री चरण तलन को पोंछ के वा चंदन को संग्रह करें हैं ।। कि जे इत उत सूं विखरे हू वा श्रेष्ट चंदन को प्राप्त होय हैं ।। वे हू अपने हृदय भूमि में नाचे हैं ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि वा भक्तन के चरण कमल संबंधी रजरूप हौं कब होवुगो ।।१८।। तथा वा समय में स्वभाव सूं लाल रंग सूं शोभायमान कि वा चंदन कुमकुम के लगायवे सूं पीरे होय रहे कि उछल रही सुंदर अनिर्वचनीय रूपवारी रेखा की कोमलता कि शीलता वारे वा प्राणप्रिय के श्री चरण कमल के तल को निरख के विनके ऊपर जा भाग्यवारेन ने अपने प्राण कि संपत्सर्वस्व वारे हैं -- विनको दासानुदास हौं होवुगो का ।।२०।। तब प्रिय चक्रवर्ती श्री प्राणनाथ जी प्रथम कहे प्रकार सूं प्रसन्न श्री मुख कमल पूर्ण चंद्र सूं सेवा कि प्रसाद लेवे आदि सगरे प्रकार कूं आज्ञा करत ही उज्ज्वल अमृत समुद्र समूहन सूं वा भक्तन को विशेष सूं सिंचन करें हैं ।। तब श्री चरण छाप जाको अपने घर में ले जावे लिये आज्ञा करें हैं ।। वे भाग्यवान तो श्री प्राणप्रभु जी को प्रणाम करके वा प्रियवर को निरखत ही श्री राज के श्री चरण कमल में भेट को धरके उछलित हर्षवारे वे भक्तजन गान करत ही अपने सगे संबंधीन के सहित ही वा सेव्य प्रभु को घर में पधराय ले जाय हैं ।। वहां प्रथम कहे प्रकार सूं वैसे वैसे आनंद गान पूर्वक उछलित मोद सूं बड़े उच्छव को करें हैं ।।२३।। कितने भाग्यवारे तो श्री राज के चरण कमल संबंधी वस्त्र को कि श्री राज की तनियाजी को कि श्री राज की पनही जी को भक्ति सो सेवा करवे लिये इच्छा करें हैं ।। विनकी विज्ञापना को हू श्री अधिकारी जी सूं सुनके आदर करके उदार लीलावारे कृपा सिंधु श्री राज हमारे प्रियवर जी विनके मनोरथ को पूरण करें हैं ।।२५।। वैसे और कितने जन तो नंद नंदन श्री व्रजभूषण की त्रिभंग ललित की, वंशीधर की, व्रज की कमल लोचना जन श्री गोपीजन के अत्यन्त जीवन प्यारे, श्री कृष्ण की मनोहर मूर्तीन को सेवा करवे की इच्छा सूं कि बालकृष्ण की मूर्ती को हू भक्ति सूं श्री प्राण प्रभु जिनके निकट ले आवे हैं ।। श्री अधिकारी जी के मुख सूं श्री राज के आगे अपनो मनोरथ सूचन करें हैं ।। तब श्री प्राणनाथ जी श्री हस्त कमल सों वा मूर्तीन को लेकर अपने परस सूं वैसी भावना करके वामें कछुक

अनिर्वचनीय चपलता हू धरके वा भक्तन को देकें विनके सेवा के प्रकार को हू कहे कर कृपासिंधु श्री महाप्रभु जी विनके मनोरथ को पूरण करें हैं ।।२८।। वे भक्तजन हू वेग ही कृतार्थ होयके जासू अनेक प्रकार के भाव भरें हैं तासूं प्रिय के अनेक प्रकार के स्वभावन कूं अनुकूल होय के अनेक प्रकार कि सेवा को करुणासागर श्री महाप्रभुजी के उत्थापन समय में कि कबहु और समय में हू पधरावे हैं ।।२९।। प्रिय चक्रवर्ती यह श्री महाप्रभु जी कबहु भोजन करके विश्राम शय्या को त्रिलोकी के तिलक रूप अपने स्वरूप सूं अलंकृत करें हैं ।। कि गणना रहित श्रेष्ठ वैष्णवन के प्रति भक्ती भरी सुंदर चंद्रमुखी सुंदरीन के प्रति विनके मनोरथ समूह को विचार के अपने श्री चरण कमल के स्पर्श सूं उछलित शक्ति समूहवारे श्री पादुका जी को प्रथम कहे प्रकार सूं पधराय के दान करत हते तब या राजके निकट विराज के श्री ध्यानदास जी हू मनोरथ रूपवारी सारंगी को बजाय रहे हैं ।। यह श्री ध्यानदास जी प्राणप्रिय के स्वरूप रस में ही परायण है ।। कि केवल स्वरूप निष्ठावारो है ।। तासूं या स्वरूप सूं जो और सेवादि है सो अत्यंत बड़ो हू होय तो वा स्वरूप सूं और सबको अत्यंत अल्प कि छोटे ही जाने है ।। श्री राजके पूर्ण कृपा रस को सागर है ।। तासू तब यह ध्यानदास जी अभिप्राय भर्यो वचन कहे हैं कि "हमारे प्रभु सबन को काष्ट देके, यह मिले सबन को ठगे है का" ।। तीनबार ऐसे कहत भयो है यह कथन हू तब श्री गोकुल के जीवनरूप प्रियवर के हू कानों में अतिथि भयो, कि सुनवे में आयो ।। तब यह प्राणनाथ जी हू अभिप्राय भर्यो कहत भये है ।। "कि अरे वाचाट -- अरे मूर्ख फिर फिर तू का कहे हैं ।" यह सुनके फिर हू यह धृष्ट होयके ईश्वरन के चक्रवर्ती श्री महाप्रभु को कहत भयो है कि "मो महाराज सबन को ठगवे लिये तुम ही काष्ट देवो हो का" ।। यह सुनके हमारे प्रियवर धीर कृपासिंधु श्री महाप्रभुजी अतीत क्रोध समूह को प्रगट करत अपने दक्षिण श्री हस्त कमल को वा ध्यानदास के बांये कंधा पर धरके - तासूं सगरे अवतारीन के हू सबन सूं अत्यंत ऊंचे मस्तकन को हू दवाय के अधिक विराजमान परमेष्टि भाव को कि अपने सर्वातीत अछूतो सर्वोत्तम भाव को प्रकाश करत, कि अपनी संदर भक्ति भरेन के आर्तीरस सूं पूर्ण अपने स्वरूप को दान करत ऐसे आज्ञा करत भये है कि "अरे रे कुजात कोऊ मेरी ठगायी को प्रकट करत बल सूं तेरे कमर

पटका को गहे तो तू निःशंक मेरो कमर पटका गहीयो'' ऐसे श्री धीरवर ने आज्ञा करी ॥ अहो वा प्रिय के ऐसे कथन सूं आपको आशय कि बल कि निरंतर ऐश्वर्य कि उछलित कृपा को कि अपने जनन में मंधुर फलरूप के दान की इच्छा को जान के वे सगरे भक्त अत्यंत हर्ष को प्राप्त होय गये हैं ॥ कि प्रियवर के स्वरूप रस में निष्ठा वारो सो ध्यानदास जी हू उछल रहे वा प्रभु के वा स्वरूप संबंधी महिमा सागर के हजारन कल्लोन सूं प्रेरणा कियो भयो ही श्री आपके आगे प्रणाम करत भयो है ॥४३॥ श्री प्राणनाथ जी के वचनन सूं ऐसे उछल रहे अपार कि आकाश को परस रहे हजारन कल्लोलवारे आश्चर्य सागर में सगरे वे भक्त हू निमग्न होय जाते भये है ॥४४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे अष्टत्रीस स्तरंगः ॥३८॥

॥ तरंग -- ३९ ॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ चत्वारीश स्तरंगः लिख्यते ॥३९॥

श्लोक -- **प्रियाद वाप्य प्रभूत् कृपाश्चेः श्री शालिकेचिछत पादुका दीजी सेवनार्थ दृढ़ भक्ति भाज आज्ञामुपादाय विभोर मुष्यः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि कृपासिंधु प्रियवर श्री महाप्रभु जी सो शोभा भरे श्री पादुकाजी आदि सेवा को भली भांति सो सेवा करवे लिये प्राप्त होयके कितने भक्तवर या श्री महाप्रभु जी की आज्ञा को पाय के कितने भक्त अपने देश में जावत सुंदर तूल बिछोना सुंदर कोमल चादर आदि वस्त्रन सूं कि छोटे तकिया समूह कि उज्वल बड़े तकिया कि श्रेष्ठ बिछोना आसनादि सूं कि तांबूल बीड़ा जल पान पात्र झारी आदि सूं सुंदर मनोहर भोग्य योग्य वस्तु समूह कि अनेक प्रकार के फूल फल कि निर्दोष सुगंधी द्रव्यन सूं मिली पालखी सुखपाल को समार के वामें अपने सेव्य महाप्रभुजी को पधराय के मार्ग में हू समय-समय में वा वा देश में जल पकवान मनोहर सामग्री अर्पण करत साक्षात प्राणनाथ को ही प्रणाम करत इहां सूं श्रीमद् गोकुल सूं जे भक्तवर चले है जे भाग्यभरे भक्तजन श्री पुरुषोत्तमोत्तम श्री गोकुलेश प्रभु के निकट बहुत वर्ष कि महीना कि ऋतु कि दिन या निवास

श्रीमद् गोकुल में करके अब या श्री राज के सेवा योग्य अनेक प्रकार के अनेक भाव भरे कार्यन को करके अब या श्री राज के सेवा योग्य अनेक प्रकार के अनेक भाव भरे कार्यन को करवे लिये अब अपने देश में जाय है ।। कि कोऊ अन्य देश में जाय है ।। वा भक्तन के प्रस्थान कि चलवे के प्रकार कूं हों कछुक वर्णन करूं हूं ।।५।। वे भाग्यवारे भक्तजन श्री प्राणप्रभु जी को अपनो प्रस्थान कि चलवो श्री राज के कृपा पात्रन सूं कि अधिकारी जी सूं सूचना करावे है ।। तब गुण सागर श्री राज के अभिप्राय को जान के इहां सो सो कार्य करके तैयार होय जाय है ।। दया रस के सागर श्री प्राणनाथ जी को कोई आदर योग्य ज्योतिषी को बुलाय के इनके प्रस्थान योग्य अत्यंत उत्तम मुहूर्त पूछे है ।। कि ऐसो मुहूर्त होय जो अनेक गुण समूह सूं भर्यो होय कि विनके सगरे कार्यन के सिद्ध करवे में पूर्ण होय कि अपने कि विनके फिर वेग ही मिलानेवारे सुखसों होय कि अपनो निरंतर मंगलरूप होय कि विनके वा वा मनोरथ समूहन को सिद्ध करवे वारो होय ।। ऐसे कहे के वा ज्योतिषी सूं वैसो अलौकिक मुहूर्त अपने बल सूं ही बलात्कार कहवावे है । फिर अत्यंत सुजानवर श्री प्रभुजी वा मुहूर्त को सराहना करें हैं कि प्रसन्न शोभा भरे श्रीमुख पूर्ण चंद्रमावारो श्री महाप्रभु जी सभा में वा मुहूर्त के प्रथम कहे वैसे गुणन को हू निरंतर प्रकट करें हैं ।।१०।। वैसे गुणभरे वा मुहूर्त के आयवे पर वे भक्तजन सगरे आवश्यक कार्यन को करके तैयार होयके या भांति सो विचार करें हैं कि प्रस्थान के समय पर प्राणनाथ जी की जब आज्ञा मिले तब तो फिर अपने घर डेरा में आयवो ठीक नहीं है ।। और होय हू नहीं सकेगो जासूं हम वा समय में तो दुःखी होयगे कि व्यग्र उदास होयगे तब फिर आयवो घर में कैसे बने ।। यासूं यह विचार के पहले बिछोनादि जामें बिछाये है कि वा समय के उपयोगी अनेक वस्तु पदार्थ जामे धरें हैं ऐसे पहले सिद्ध करी पालखी कि सुखपाल मनोहर मंगवाय के परम पुरुषोत्तम श्री प्राणनाथ जी ने श्री पादुकाजी आदि अपनो जो स्वरूप दान कियो है वो जो सबन के शुभ मंगल सुख को करवे वारे सेवा मार्ग के प्रचार करवे को कि उछलित अनुराग वारे जे दूर देश में अत्यंत दुःखी होय रहे अपने सेवक जन है विनके अवलंबन लिये कि वैसे विरह के बड़े दुस्तर बड़े दीन है विनके गुजारवे लिये कि आपकी श्रीमत् शोभाभरी श्री गोकुल में आयवे

में जे समर्थ नहीं हैं ऐसे अनेक जन हैं विनके अनेक प्रकार सूं कृतार्थ करवे लिये कि सगरे गाम के वैसे देश कि वैसे वा वा स्थान के हू वैसे वैसे कृतार्थ करवे लिये ही है ॥ सो वा सेव्यरूप श्री प्राणप्रभु जी को वा सुखपाल में सुख सो पधराय के अपने अत्यंत विश्वास पात्र चतुर अत्यंत सुजान संबंधीन के संग श्री यमुना जी के पार शोभायमान होय रहे श्री खिरकमे पठवाय के स्वयं वे भाग्यभरे भक्तजन अपने संबंधीन के संग अनेक प्रकार के भेट आभूषण कि अनेक प्रकार के मनोहर श्रेष्ठ जामा नीमा कि पाग कि कमर पटका धोती उपरेना आदि अनेक वस्त्र हैं कि और और हू जे वस्तु कि धन कि सोना कि माला कि मणि जट्ति मुद्रिका है वे लेके उछलित प्रेम सूं मुह सूं सुंदर वे भक्त आयके या श्री राज के आगे ठहरें हैं ॥१८॥ जे विह्वल होय रहे हैं ॥ कि दीनता सूं जिनके मुख कमल नम रहे हैं ॥ कि श्रेष्ठ अधर पल्लव जिनके सूख रहे हैं कि निकट आय रहे प्रिय के वियोग अग्नि ज्वाला महासागर में गिरवे सूं जे डरप रहे हैं ॥ कि गंभीर चित्तारूप कूप में जिनके चित्त मग्न होय रहे हैं ॥ कि शोक संबंधी दीर्घा के अनेक प्रकार कि हजारन आंसू की धारान को वरसाय रहे नयन कमलन सूं जे अपनी वचन सूं न कहेवे में आयवे वारी दशा को कहे रहे हैं ॥ कि ऐसे यह भक्त ठहर रहे हैं ॥ तब अधिकारी जी नम्रता पूर्वक प्रणाम करके अपनो प्रियवर जो जतावे है कि ॥२१॥ राजाधिराज यह आपके श्रेष्ठ भक्त कार्य के अर्थ आज जायवे की इच्छा वारें हैं ॥ आपके निकट आये है, कृपा सागर श्री आपके आगे प्रार्थना करें हैं ॥ इन पर कृपा के सहित आज्ञा दीजिये ॥ तब उछलित क्रपावारे श्री प्राणनाथ जी स्नेह पूर्वक विनको बुलाय के पास बैठाय के आज्ञा करें हैं कि "सो शुभकारी मुहूर्त आय गयो है का" ॥२३॥ तब सो अधिकारी श्रेष्ठ कहे हैं कि हा महाराज सो मुहूर्त आय गयो है ॥ तब जिनको चित्त डोलमडोल होय रहयो है कि चित्र लिखे जैसे ठहरें हैं कि जे व्याकुल होय रहे हैं कि जे दिग्मूढ़ होय रहे हैं ॥ कि जे बड़े ताप सूं तप्त है कि चिंता सूं विकल है कि कांदिशीक है कि इत उत विखरे मन होय रहे हैं ऐसे वा अपने भक्तन को उछलित प्रेम समूहवारो कि रस सूं आर्द्र रहे चित्तवारो गुण सागर श्री महाप्रभु जी सो नाम लेके प्रसन्न होयके विलास सो अपने पास बुलावे है ॥२५॥ वे भक्त-वर हू लाज की चिंता आर्ती विशेष मोह कि खेद कि श्वास कि उत्कंठा कि संताप

समूह सूं नम्र होयके श्री प्राणनाथ के निकट आयके उछलित अनुराग भरे वे भाग्यवान प्रथम कहे वस्त्र कि भूषणन को भेट के भली भाँति सो अर्पण करें हैं ।। श्री प्राणनाथ कृपासिंधु श्री महाप्रभुजी वैसे विनके भावको देख के अत्यंत प्रसन्न होवत रससूं आर्द्र होय रही दृष्टि सो विनको देखत ही विनकी वा भेट को अंगीकार करें हैं ।। तथा आंसू की गद्‌गद्‌ कंठ सूं शोभायमान होवत श्री प्राणनाथ जी प्रेम अमृत सूं भींजे कि मनोहर प्रसन्नतारूप बरास सूं सुगंधी कि मंद मुसकान के विलासन सूं भरे कि कुंडल जामें तांडव नृत्य कर रहे हैं ऐसे मनोहर यह वचन'' अब तुम अलौकिक कि लौकिक कोऊ हू कार्य में कबहु चिंता नहीं करोगे ।। तुमने प्रभु जैसे इहां देख्यो है वैसे ही चित्त में सदैव अत्यंत ही भावना करोगे ।। कि **श्री गोकुलेशः शरणं ममः - श्री गोकुलेश प्रभु मेरी शरण हैं, रक्षक हैं आश्रय हैं ऐसे नित्य भावना करोगे'' ऐसे या प्रकार सूं कहे हैं ।।** ता पाछे उछलित कृपा सिंधु श्री प्रियवर जी अपनो उपरना कि चादर कि कोऊ ओर प्रसादी वस्त्र कि प्रसाद विलास पूर्वक विनको देवे है ।।३२।। तब वे भाग्यवान भक्त तो नयनन सूं आंसू के समुद्रन को वरसावत ही या श्री राज के दोनों श्री चरण कमलन पर सिरको धरके ठहर जाय हैं ।। कि विरह संबंधी आर्ती समूह को छिपावत ही हृदय में सब प्रकार सूं विदीर्ण होय रहे हैं ।। कि धैर्य समूह तो इनको सब प्रकार सूं नष्ट ही होय जाय है ।। तब रोके हू दुःख सागर के तरंग अनेक प्रकार सूं उछलित होय जाय है ।।३४।। अहो यामे विवेक अगस्त्य भाव को पायके का करेगो ।। जहाँ स्वयं हू होय नहीं सके है जो अगस्त्य कैसे बनेगो कि दुःख सागर को कैसे पान कर सकेगो यह भाव है ।। अहो या भक्तन को संताप रूप क्षीरसागर बढ़ के उछल के सगरे हू लोकन को डुबाय नहीं दे तो का ।। परंतु याके भीतर प्राणप्रिय को अभिप्राय विशेषरूप जो वडवाग्नी है सो प्रवेश नहीं कर जातो तो सब लोकन को डुबाय ही देतो ।। कि अहो होय रहयो सो प्राणप्रिय को वियोगरूप जो मदभर्यो गजराज है सो वा भक्तन के प्राणरूप कदली वन को निर्मूल नहीं कर दे तो का यदि प्राणनाथ की इच्छा याके ऊपर अंकुश नहीं होती तो निर्मूल कर ही देतो ।। अहो वा भक्तन में विह्वलता रूप जो विंध्याचल है सो बढ़ के वा भक्तन के प्राण रूप सूर्य के मार्ग को रोक ही देतो परंतु प्राणप्रिय को अभिप्राय विशेषरूप जो अगस्त है सो यदि

आयके जोर सूं निवारण नहीं करे तो प्राण रूप सूर्य को मार्ग रोक ही देतो अहो प्राणप्रिय के अनुग्रह कृपा की भावना रूप जल के किणका सिंचन हूं कर रहे है ।। तोहू वा भक्तन को रुदनरूप जो अग्नि है, धैर्य रूप तृण समूह सूं छिप्यो भयो हू फिर उदय हू होये आवे है ।। अहो शून्यता कि चिंता कि परिताप कि खेद कि शोक सागर के मध्य में निरंतर डूब रहे या भक्तन को दोनों श्री हस्त कमलन सूं विनके सिर को उठाय के वा दुःख सागर सूं निकार लेवे है ।। फिर कृपा रूप अमृत के समुद्रन को वरसाय रही दृष्टि सूं विनको देखत कि **श्री गोकुलेशः शरणं ममः** ऐसे गद्‌गद् कंठ होयके कहत ही वा भक्तन को धैर्य देवे है ।। तोहू वे भक्त तो अत्यंत ही उदास होय जाय है ।। कि अहो रससागर ऐसे प्रियवर के सुंदर ऐसे श्रीमुख पूर्ण चंद्रमा को फिर कबहु देखेगे ।। कि कल्पवृक्ष कि चिंतामणिन को हू विजय करवे वारे या प्रिय के मंद हास्य कि विलास सागरन सूं जटित अत्यंत मनोहर कृपा कटाक्षन को इहां कब प्राप्त होयगे ।।४३।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि वा भक्तन ने अपने अनुभवरूप वज्र के पंजरा में छिपाय के बैठाय राखी जो अपनी ऐसी दशा रूप.......... कि है वाकू कौन साहस वारो हू बुद्धिमान वचनरूप हाथ सूं लेवे में समर्थ होय सके ।। अपितु विन की दशा को कोई जाने नहीं है तो वचन सूं कहे नहीं सके है यह भाव है ।।४४।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चत्वारीस स्तरंगः ।।३९।।

।। तरंग -- ४० ।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ चालीसमो स्तरंगः लिख्यते ।।४०।।

श्लोक --**तदा वियोगानल कीलदाहत्र स्वछुदतिन्मृगलोचनास्ताः**

चिताप्मुचत्रार्तिमापि प्रकाशं मूर्च्छाच्च शून्यत्वमपि प्रयांतिः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि ता समय वियोगाग्नी संबंधी ज्वाला दाह सूं डरप रही जे वा भाग्यवान भक्तन की सुंदरी है वे तो चिंता कि शोक कि आर्ति के अत्यंत मूर्च्छा की शून्यता को ही प्राप्त होय है ।। न तो रोवे है न तो कछु बोले है क्षण-क्षण में बढ रहे अंधकार को

ही देखे है ।। पद-पद घर में गिरती परती जाय है ।। अंगन में काटी जैसी होय रही है ।। अहो श्री राज के अमृत समुद्रन को वरषा कर रहे मंद हास्य ने तो जिनको बंध कर लियो है कि प्रिय के मनोहर देखवो कि भ्रु के विलास कि सुंदर मनोहर बहोत प्रकार सूं प्यारे वचनने हू जिनको वेध कर लियो है ।।३।। कि प्रिय के सदा प्रसन्न श्री मुखारविंद की निरंतर विशाल हृदय कि घोंटू पर्यंत लंबे भुज युगल कि वैसे विशाल लोचन कि अत्यंत प्रफुल्लित दोनों कपोल कि श्रेष्ठ कुंडलन को तांडव कि श्रेष्ठ कुमकुम रससूं धोती उपरना कि मनोहर उर्ध्वपुंड तिलक कि सुंदर चमकनी मणि जटित मुद्रिका कि वैसे और हू अंगन ने वैसे वैसे जिनको सांकलन सूं बांध राख्यो है ।। कि प्रियके अगणित गुणन ने तो सगरे हू अंगन में जिनको दृढ़ ही बांध राख्यो है ।। कि कोउ उछल रहे अत्यंत मनोहर दृढ़ भाव ने हू जिनको कीलित कर राख्यो है कि रोक ही राख्यो है तो या श्री गोकुल सूं अब कहू और देश में कैसे जायगी परंतु तथा ऐसे भाग्यभरे भक्तन के संगम सूं वा वा देशादि के पावन करायवे को जो श्री प्राणनाथ जी को अभिप्राय विशेष है कि वियोग के पीछे जिनको समागम सूं उदय होय रहे सुख के देवे की कृपा सागर प्रभुन की इच्छा है ।।८।। कि तथा अपने पतिन को छांड के इहां हम सदा के लिये रहि जाय तो हमारो भाव प्रकट ही होय जायगो ।। या प्रकार सूं जो भय है यह सगरे भाव मिलके प्रबल होयके ही वैसे इहां ठहरवे लिये निर्भय होय रही हू वा सुंदरीन को स्वयं बल सूं संग लगाय के वा प्राणप्रिय के निकट लायके श्री राज के श्री चरण कमलन में प्रणाम कराय के श्री राज के आगे वर भूषण की धन की वस्तु कि वस्त्रादि वा वा भेट को हू धरवावे है ।। श्री प्राणनाथ जी हू उछलित अनुराग वारे होयके कृपा की उत्कंठा रस कि स्नेह समूह की प्रसन्नता कि उत्कंठा विशेष को वरषा कर रहे कि अमृत की धारान सूं हू मधुर कटाक्षन सूं वा सुंदरीन को भली भाँति सो अत्यंत समाधान करत ही वा सुंदरीन कि भेटन को अंगीकार करें हैं ।।१२।। अहो हमको या प्राणनाथ जी को यह ऐसो प्रबल प्रेम, फिर वेग ही या प्राणनाथ जी के संग भली भाँति सो मिलावेगो ही ।। या प्रकार सूं वा सुंदरीन के अंतःकरण में उद्भुत होय रही प्रबल होय रही विनकी बुद्धि यह आज्ञा नहीं दे तो तो यह प्राणनाथ जी में इनको प्रबल प्रेम तो या सुंदरीन के आवश्यक कार्यन को कि अवश्य

कर्तव्य भय को हू दूर कर देतो कि या प्राण प्रिय सो इनको वियोग हू न करावतो ॥१३॥ अहो श्री राज के दोनों श्री चरण कमलन पर सिर को धरके चिरपर्यंत स्थित होय रही वा सुंदरी के वा सिर को रोम हर्ष पूर्वक भाव सूं भरे दोनों श्री हस्तकमलन सूं यह प्राणनाथजी ऊंचो करत विनके दोनों कपोलन में रोम हर्ष को प्रकट करें हैं ॥ सो यह रोम हर्ष तो निरंतर ही शोभायमान होय रहयो है ॥१५॥ तथा वा सुंदरीन में उछलित अनुराग भरे रस सागर श्री प्राणनाथ जी वा समय में कितनिक सुंदरीन के दोनों कपोलन को धीरे धीरे उज्वल नखक्षतरूप माणिक सूं हू अलंकृत करें हैं ॥१६॥ या प्रकार सूं कोई ने लूट लियो है सगरी वस्तु कि धन समूह जिनको की तासूं जे अत्यंत दुःखीत है कि जिनके प्राण कि हृदय कि इन्द्रीय हू चिंता वियोग की अग्नि ज्वाला समूह में जर रहे हैं कि जे अपार अगाध दीनतारूप सागर में सब रीति सूं निमग्न होय रही है ऐसी वा सुंदरीन के हृदय में स्थित वा अर्थ को अनेक प्रकार के कटाक्षन सूं दान करत ॥१८॥ तब वा सुंदरीन के प्रति प्रस्थान मात्र के उपयोगी उत्साह लव को दान करें हैं ॥ तामें कितनी तो स्वयं, कितनी तो बंधु द्वारा कि और कितनी तो सुहृदय मित्र द्वारा और कितनी तो श्री अंग सेवक द्वारा कितनी तो प्राणप्रिय जी के अधिकारी द्वारा कि और कितनी तो सखी द्वारा कितनी तो मनसूं ही कितनी तो नम रहे मुख सूं और कितनी तो कटाक्ष विशेष सूं कितनी तो श्वास कि कितनी तो भ्रुवो के विलास सूं कि कितनी तो वैसे आंसू सागर सूं ही या प्रिय के आगे हाथन को बांधके प्रणाम करत एकांत में यह विज्ञापना करें हैं ॥ कि महाप्रभो अत्यंत चमकते शोभा समूह सूं शोभायमान यह श्री मुख दर्शन फिर वेग दान करोगे कि गाढ़ अंग निष्पीडन जामे हतो ऐसो आलिंगन फिर वेग दान करोगे कि सो चुंबन कि सो मंद हास्य कि सो उज्वल अमृत समुद्र समूह जासूं झर रहे हैं सो दंतक्षत कि अधरामृत को मनोहर पान कि सगरे पुरुषार्थन को विजय करवे वारो कि मधुरता के समूह सूं अत्यंत नम रहयो है उज्वल सगरो अंग जामे, ऐसो सुंदरता सों शोभायमान सो श्री अंग संग कि क्षीर सागर संबंधी प्रवाह, के प्रभा की विजय सूं बढ़ रहयो है अभिमान जामें, ऐसे सो कटाक्ष समूह कि वैसे आनंद महा समुद्र के उछल रहे तरंग पंक्ति सूं पुष्ट कि सगरे सुधा सिंधु समूह जाने दास बनाय लिये है ऐसो आपस में इच्छानुसार आलाप फिर

वेग ही दान करोगे ।। ऐसे अपने अपने मनोरथन को प्रथम कहे प्रकार सूं स्वयं कि कृपापात्रन द्वारा विज्ञापना वे सुंदरी करें हैं ।।२५।। श्री प्राणनाथ जी हू दया के सागर है वा सुंदरीन के वा वा द्वारा विज्ञापना किये सगरे अर्थ मनोरथ को अनुमोदन करें हैं ।। कि अवसर में यासूं हू अधिक सुखदान करें हैं ।।२६।। वैसे वैसे वे अत्यंत भक्त हू वा वा मनोरथन को स्वयं कि अपने हृदय सूं कि अपने मित्रन सूं कि और भाग्यवान सूं हू एकांत में श्री प्राणनाथ जी को विज्ञापना करें हैं ।। कृपा सागर श्री प्राणप्रभु जी हू वा विज्ञापना को अंगीकार करें हैं ।।२७।। कितने कृपापात्र भाग्यनिधि भक्तन को तो गुणसागर प्राण प्रिय जी सुंदर मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्रीमुख होयके अपने अत्यंत निकट बुलाय के प्रेम विशेष सूं याके कंठ में अपने दोनों भुज दंडन को धरके अखंड शोभा भरे कि उछल रहे कुंडल को तांडव को हू शोभायमान होवत या भक्तन के रोम रोम में अमृत के समुहन को वर्षा करत सो सो रहस्य बात आज्ञा करें हैं ।।२९।। वे भाग्यभरे भक्त हू उछलित अनुराग वारे होयके नम्र होय रहे मस्तक सूं उछल रहे रोम हर्ष वारे अंगन सूं कि हर्ष कि आंसून सूं भरे दोनों नयनन सूं ही वा श्री राज की आज्ञा को इहां अंगीकार करें हैं ।।३०।। ता पाछे प्राणनाथ श्री महाप्रभु जी कृपा विशेष सूं कितनीक कमल लोचना सुंदरीन के प्रति विलास पूर्वक अपने श्री हस्त कमल सूं तांबुल बीड़ी को देवे है ।। प्रेम रस के सागर श्री प्रभु जी कितने अत्यंत प्रतिष्ठित भक्तन को हू तांबुल बीड़ी श्री हस्त कमल सूं देवे है ।। वे भाग्यभरे तो वैसे प्राप्त होय रहे वियोग संबंधी दुःख में निरंतर श्वासन को भरत हू वा बीड़ी सूं अपने को कृतार्थ ही माने है ।।३२।। कृपा कि रस विशेष सों विवश होयके मनोहर चंचल दृष्टिवारे श्री प्राणप्रिय जी कितनीक रस भरी मृगलोचना सुंदरीन के लिये कि वैसे रसिक सेवकन के लिये हू पास विराज रहे सुधा अमृत सो बढे वा प्रसादी चर्वित तांबूल को पधरावे है ।। तब उछलित रोम हर्ष वारे वे भक्तजन कि भक्त सुंदरी हू वा कृपा विशेष को बहुत मानत ही संभ्रम सूं कि उतावल सू हू वा प्रसादी तांबुल को जायके उछलित आदर वारे हस्त कमल सूं उठाय लेवे है ।। फिर मुख कमल रूप धरके मध्य में पधरावे है ।। कि रससो वा रसाल रसको गाढ आलिंगन करें हैं ।। कि निरंतर उज्वल कि वचनन सूं हू दूर अत्यंत सुंदर मधुर अलौकिक वा रसको निरंतर पान

करें हैं ।। यह शीतल अधरामृत रस तो वियोग संबंधी दुःख अग्नि के प्रसर रहे ज्वाला समूहन सू अत्यंत जर रहे विनके हृदय को क्षण ऐक तो प्रसन्न करके पीछे तो अत्यंत ही दुःखी करें हैं ।।३८।। तब श्री महाप्रभु जी वा सुंदरीन के प्रति कि सगरे भक्तन के प्रति हु महाप्रसाद पकवान हू दिवावे है ।। **श्री गोकुलेशः शरणं ममः** ऐसे अमृत को विनके कानों में विलास पूर्वक पधरावत ही विनको विलास पूर्वक दृष्टि सूं ही जायवे लिये आज्ञा हू देवे है ।।४०।। वा श्री प्राणनाथ जी के श्री मुख के सन्मुख मुख करके श्री राज के मुख चंद्रमा के पान अर्थ अत्यंत उत्साह भरे चित्तवारे होयके उलटे पावन को धरत ही मंद मंद श्वास भरत ही कछुक वे जाय है ।। प्रिय श्रीजी या भक्तन के रस स्नेह कि गुण आदि गुणन सूं अत्यंत आकर्षण किये हू धैर्य के आधीन होय रहे स्वरूप सूं बड़े यत्न सूं ही अपने आसन पर विराजमान होय है ।। वे भक्तवर तो वा सिंहद्वार के आंगण के आगे जाय के वहां फिर दंडवत प्रणाम करके धीरे धीरे रुदन करत कि हृदय में अत्यंत विदीर्ण होवत ही अगाध कि अपार ताप सागर में निमग्न होय के आगे चले है ।। उच्छलित होय रहयो है अत्यंत छिन्न भिन्न होय रहे हैं सगरे मर्म बंध जिनके ऐसी कितनी स्त्री तो या प्रिय चक्रवर्ती कूं सहसा ही छांड के जायवे में समर्थ न होय के ही या भक्तन के संग ही विलंब करके ही बड़े-बड़े यत्न सूं ही प्राणनाथ कि दृष्टि सूं सांत्वन धैर्य के संग वैसे वैसे वारंवार निद्रा करी हू अत्यंत रुदन करत ही वहां सूं श्री यमुनाजी के तीर पर आवे है ।। वहां आयके फिर ही परत के वारंबार प्रणाम करें हैं ।।४५।। वे भक्तजन हू बहुत प्रकार सूं रुदन करत कि उछलित दीनतावारे होयके प्राणनाथ को दंडवत्प्रणाम करें हैं ।। वा श्री यमुनाजी की रज में हू लोभ सूं बांधे होयके, कछुक इहां बिलंब करके वारंबार श्वास भरत ।।४७।। कि प्राणप्रिय के श्री मुखारविंद के लोभ सूं विलंब कर रहे अपने संबंधीन की वाट निहार के पीछे आये रथ घोड़ा दास कि वस्तुन के सहित वा अपने संबंधी भक्तवरन के संग नाव पर चढके श्री यमुनाजी के पार सवारीन सूं, मिले गायन के खिरक में जायके इहां ठहरें हैं ।। श्री प्राणनाथ जी के श्री मुख कमल की पूर्ण चंद्रमा के दर्शन के लोभ सूं कि जे श्री राज के भक्तवरन सूं हू मिलवे की इच्छा सूं विलंब कर रहे हैं ।। अहो उदार जिनकी लीला है ऐसो अत्यंत सुंदर श्री मुख चंद्रवारो यह प्रियवर जी

कहा कि सर्वोपर विराजमान जिनके चरण कमलन की रज को लेश है ऐसे श्री राज के भक्तवर कहा इनको दर्शन तो हमको फिर दुर्ल्लभ ही होयगो ॥ यह विचार के उछल रहे उदासी समूह सूं भरे जिनके अंग अंग है तासूं जे बिलंब कर रहे हैं ॥ वा भक्तन की वाट वे निहारें हैं ॥५१॥ यह भक्त जब आय जाय है तब तो वे पहले आये भक्तवर सब काम संवार के दूसरे के तीसरे दिन स्वयं हू जायके निश्चल श्रीराज के मुख चंद्रमा को एकांत में निरख के फिर वेग आय जाय है ॥५२॥ पहले हू प्रणाम करके जे गये हते फिर हू वे प्राणनाथ जी के भक्त प्रवर कि अधिकारीजी कि भंडारी जी कि वा वा आय रहे भक्तन को वारंबार वेग ले लगाय के प्रणाम करके अत्यंत रुदन करत तथा रुदन कर रहे वा भक्तन को सन्मान करके विनकी संमती सूं चलवे लिये तैयार होय है ॥ विनके रथ आदि कि घोड़ा आदि हू तैयार होय जाय है ॥५४॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि वा समय की विनकी जो कोई अनिर्वचनीय दशा है सो रुदन कि भारी दुःख की अत्यंत उदासी है ॥ कि परस्पर को जो आलिंगन है कि प्रणाम है कि प्रियवर में जो प्रेम को उछलनो है इनके कहवे में बड़े चतुर वर हू समर्थ नहीं होय सके है ॥ ऐसे वे भक्तवर इश्वरेश्वर श्री महाप्रभु जी को शरीर कि वाणि कि मन सूं दंडवत प्रणाम करके मुख्य अधिकारी जी के हाथ में या महाप्रभु जी के लिये भेटान को अर्प्पण करके इहां सूं या खिरक सूं चले है ॥५७॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ सायावधी विनोदभये एकादश कल्लोले भाषानुवादे चत्वारीस स्तरंगः ॥४०॥

तरंग ॥४१॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ एक चत्वारीस स्तरंगः लिख्यते ॥४१॥

श्लोक -- **अमीतु भक्ता अनुभूप तेषां संप्रस्थिताना वत दुःखवृंद**
प्राणेश्वरायोग विणृमनाणंसु दुस्तरं तत्परिभावयतः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि यह श्री गोकुलवासी भक्तवर तो वा प्रस्थान वारे गुजराती भक्तन के श्री प्राणनाथजी के वियोग संबंधी बढ़ रहे दुस्तर दुःख को अनुभव करके वा दुःख को विचार करत वा भक्तन में

इनको प्रेम और दया विशेष सूं बढ़ रही है विनके वैसे क्लेश सूं विशेषकर दुःखी होय रहे हैं ।।१।। कि वा वियोग अग्नि सूं जर रहे हैं ।। अहो कबहू या अत्यन्त प्यारे सुन्दरवर सूं हम हू वियोग पावेंगे या रीति सूं अत्यन्त ही डर रहे हैं ।। वा प्राणनाथजी के बढ़ रहे वा भक्तन के वियोग संबंधी दुःख समूह को विशेष सूं विचार करके हृदय में विदीर्ण होय रहे हैं ।। अहो अत्यन्त ऊंचे भाग्य भरे या भक्तन की इनकी मृगलोचना सुन्दरीन ने जो वैसे वैसे प्राणनाथजी को क्षणक्षण में सुखसागर समूह उच्छलित शोभा पूर्वक दान किये हैं,अब वे सुख कौन अत्यन्त सुन्दर भाग्य वारे भक्तवर देवेंगे कि कौन सो उछल रहे उज्ज्वल भाव भरी मृगलोचना यह सुख देवेगी कि उच्छलित अनुराग वारे प्राणनाथजी बड़ी दुर्ल्लभ यह योग्यता को अभिषेक का भाग्यभरी को करावेंगे कि कौन को ऐसी योग्यता दान करेंगे ? या प्रकार के बढ़ रहे अगाध चिन्ता महासागर के तरंग समूहन सों अत्यन्त पीड़ित होवत ही या गुजराती भक्तवरन के बहुत दूर ही जायवे पर यह सगरे श्री गोकुलवासी भक्तवर बड़े यत्न सूं वा देश सूं पीछे होयके नाव पर चढ़कर वा श्री यमुनाजी को उतरके जायके सगरे दुःख रूप अंधकारन के नाश करवे में तीक्ष्ण किरण वारे सूर्य रूप श्री प्राणनाथजी के श्री मुखारविन्द को दर्शन करें हैं कि दंडवत प्रणाम हू करें हैं ।।९।। तब श्री महाप्रभुजी हू उत्कंठा पूर्वक इनसों पूछे है कि वे वा खिरक सूं चले गये हैं का ? यह सुनके अधिकारीजी तो प्रणाम करके या श्री महाप्रभुजी के आगे विज्ञापना करें हैं कि हां राज वे सब श्री राज को बहुत प्रकार सूं प्रणाम करके कि यह भेंट हू देकरके गये हैं ।। तथा वे उछल रही दीनता समूह सूं आज अब श्री आप अपने ही बल सूं हमको वेग ही बुलायके अपने पास ही सदा के लिये राखें यह हमारी विनती है ।।१२।। अहो श्री प्राणनाथजी राज के अत्यन्त बढ़ रहे वियोग रूप अग्नि ने वा भक्तवर को जो दशा पर चढ़ायो है -- वा दशा कूं तो कोऊ हू कछु हू कहवे में समर्थ नहीं होय है ।।१३।। श्री महाप्रभो राजाधिराज तो सदा सदैव अदेय दान में हू कमर कसें हैं ।।१४।। तामें हौं नहीं जानूं हूं, कि राज ने विनके प्रति का दान कियो है ।।१५।। जासूं प्रपंच रहित ही वे वेग ही वा प्रेम पर चढ गये हैं, कि जो और सबन सूं हू दुर्ल्लभ है सो प्राणनाथ श्री राज ही जानें हैं ।।१७।। वामें पक्षी रूप हमारी चोंच को हू वामें प्रवेश नहीं

होय सकें हैं ।। अहो हम तो विनके वा प्रेम को देख के हू पत्थर होय रहे हैं, कि लोह रूप होय रहे हैं, कि वज्र रूप होय रहे हैं ।।१९।। अहो श्री राज के वियोग अग्नि सूं तपके वे भाग्य भरे जब रुदन करवे लगें हैं कि विनकी मृगलोचना स्त्री हू रुदन करवे लगी हैं तब तो सगरे वृक्ष हू कि सगरे पक्षी हू कि सगरे पशु हू रुदन करवे लगे हैं ।। अहो पत्थर, ईंट हू सगरे पिघल ही गये हैं ।। या प्रकार की अधिकारीजी की विज्ञापना को सुनके श्री महाप्रभुजी उच्छलित कृपा वारे होय के विलास पूर्वक आज्ञा करें हैं कि अहो श्री गोकुल सूं जानो ऐसो ही होय है -- कि अपने प्रभुन के चरणकमलन सूं जो वियोग है सो तो दुःख के बड़े सागरन की वर्षा करें हैं ।। यासूं अधिकी और दुःख को है ? सगरे दुःख तो या दुःख के अत्यन्त पीछे ही ठहरे हैं ।। अहो भक्ति भरे भक्तन को ऐसे प्रभु के वियोग में दुःख न होय तो वा भक्तन में अपने प्रभु को संबंध वैसो होय ही नहीं -- तथा अहो अधिकारीजी -- संयोग के हर्ष के पीछे जो वियोग को दुःख उछले है तासूं अधिकी और दुःख नहीं है ।। वा वियोग दुःख सूं पीछे जो अपार शोभा भर्यो अपने प्रियतम के संयोग रूप सुख को उदय होय है सो स्थिर सुख रूप होय है वा संयोग के होयवे पर फिर तो कबहू वियोग नहीं होय है ।। अधिकारीजी जैसे भूमि में खोदी जाय है सो जैसे निकारके फिर खोदी जाय है तो फिर निकारी हू नहीं निकर सके है ।। वैसे ही यह हू विचार लेनो यह रीति सगरे शास्त्रन में प्रसिद्ध है ।। या प्रकार में ही प्रभुन ने होयवे वारो शुभ विचार्यो है याके सगरे अभिप्राय को जानवे में कोऊ हू समर्थ नहीं है ।। अपने अभिप्राय को गुणसागर प्रभु आप ही स्वयं जानें हैं ।। श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि प्राणन सूं हू अधिक प्यारे परमेश्वर श्री महाप्रभुजी को यह वाक्य या भक्तन के कानों में जा सुधा को वर्षा करें हैं वाको लेष हू विदुजन को कि बड़े देवतान को हू दुर्ल्लभ है ।। यह प्रसंगोपात कछु प्रकाशमान शोभा भर्यो वर्णन कियो है अब चालू प्रसंग कि विनके आगे चलवे को वर्णन करूं हूं सो हे विज्ञा सुजान वर भक्तजनो वाकूं अब सुनिये ।।२७।।

इति श्रीमद गोकुलेश सुधासिंधो सायावधि विनोद भये दिन विहार भये एकादश कल्लोले भाषानुवादे एक चत्वारीश स्तरंगः ।।४१।।

श्री श्री श्री

तरंग ॥४२॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ द्विचत्वारीश स्तरंगः लिख्यते ॥४२॥

श्लोक -- **देशांतरे तेषत संप्रेयातः सुताल काप्रछद सत्परा द्यैः**
स्वल्पो पद्मान प्रणयव इच्छोपधान साद्वास्तारण सनाद्धैः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि हर्षपूर्वक देशांतर में जाय रहे वे भक्तवर प्रभुन की सुखपाल कि पालकी में सुन्दर चादर श्रेष्ठ रेशमी वस्त्र कि छोटे तकिया समूह कि सुन्दर बड़ो उज्ज्वल तकिया कि बिछोना आदि हू सजायके धरे हैं तांबूल बीड़ी कि जलपान पात्र झारीजी आदि हू धरे हैं, कि सुन्दर भोग योग्य मनोहर वस्त्र समूह कि अनेक प्रकार के फूल सुगंधित द्रव्य अनेक प्रकार के फल निर्दोष अत्तर फूलेलादि हू धरे हैं ॥ ऐसी वा सुखपाल में अपने वा सेव्य प्रभुन को ले चले हैं ॥ मार्ग में समय समय पर अच्छे देश स्थल में प्रभुन को जल कि पकवान भोग हू समर्पण करत चले हैं ॥ साक्षात जैसे प्राणनाथजी को प्रणाम हू करत चले हैं ॥ सुखपाल के उठायवे वारे हू सुयोग्य होय हैं कबहू स्वयं हू उठावें हैं ॥ अपने घर में जैसे होय वैसे मार्ग में हू प्रभुन की सेवा करत प्रभु को प्रसन्न करें हैं ॥ अपने सगं संबंधी तथा और वैष्णवन सूं मिलके गान करें हैं, नाचें हैं, प्रभुन की स्तुति करें हैं, बड़े प्रसन्न होवें हैं, मार्ग में हू भक्तन को उच्छलित प्रेम सों अनेक प्रकार के प्रसादन सूं भोजन हू भली भांति सों करावें हैं ॥५॥ मार्ग में चल रहे हू या भक्तवरन को कहा करूं या श्री महाप्रभुजी की इच्छा सूं ही बाघ आदि सूं कि चोर म्लेच्छादि सूं भय हू आवे है, परन्तु यह भाग्यवान तो सदा अनुभव प्रभाव समूह सूं सेव्य जिनके चरणकमल संबंधी रज के किणका हैं, ऐसे प्रभाव वारे हैं, कि तथा औरन के हू कबहू दूर न होयवे वारे भय सागर समूह को हू कटाक्षन सूं ही हरवे वारे हैं ॥ ऐसे बड़भागीन के पास वैसो भय कैसे आय सके ? परंतु कोई कारण सूं श्रीराज की इच्छा सूं आवे तो यह भाग्यवान भक्त तो वैसे श्री महाप्रभुजी के मनोहर प्रबल स्वरूप संबंधी सगरी शक्तिन सूं मिले है सो तासूं इनको कौन डुलाय सके है कि डराय सके है ? ऐसे या भक्तन सों भय ही डरपत, अधर जाको सूख रह्यो है अपने को जो छिपाय रही है, कि अंग जाको नम गयो है पीछे हू जायवे

में जो समर्थ नहीं होय सके है या राज की वा कृपा सूं वैसे प्रेरणा करी, कि बारंबार गिरत परत ही हृदय सूं वेग ही वा भक्तन को दर्शन की इच्छा करत कि विनके मनोहर श्री अंग संग को चाहना करत आवे है ।। सगरे अंगन में सुन्दर शोभा भरी वा वैसी स्वरूपात्मक भय रानी को वे भाग्य वारे भक्त हू देखके बड़ो आदर देकें या भक्तन को तो प्रियवर एक श्री गोकुलेशजी ही प्यारे लगें हैं तासूं वा अपने प्रभुन में ही वा भय रानी को अधिक ही प्राप्त करें हैं ।। वा अपने प्रभु की शरण में पहुंचावें हैं ।। स्वयं तो वा मार्ग को हू वेग छोड़ देवे हैं कि जा मार्ग में या भक्त को संभव यह लेश होय तो निर्मल स्वभाव वारे वे भक्त, और भलो मार्ग लेकर वासूं चले हैं और मार्ग जब अच्छो नहीं मिले है तब तो दोय कि तीन दिन यथायोग्य रीति सूं वा मार्ग में ठहर ही जाय हैं ।। वहां सुख सों ठहरके हू पीछे सूं आय रहे सहायक समूह को सिद्ध करत कि पीछे ठहर रह्यो धनुष खड्ग कि चर्म आदि को धरवे वारे बड़े बल वारे योधा हैं विनके निर्दोष भारी सहायक समूह ही वाट को निहारत ही विनसों मिलके विनसों प्रीति को हू करके शस्त्र-अस्त्र को धारण कर रहे वा वा योद्धा कि वा स्वजन संबंधीनं सूं, कि वैसे अस्त्र शस्त्र को धरवे वारेन को अपनो दास बनायके बिनके संग हू मिलके स्वयं हू शस्त्र कि अस्त्रन को धारण करत ही विनको उत्साह बढ़ावत कि बारंबार धन दान मान वस्त्र भूषण दानन सूं कि प्रसाद दानन सूं कि सांत्वन धैर्य वचन कहवे सूं समाधान करत अत्यन्त सावधान होयके अपने सेव्य प्रभुन की पालखी को घेरके कि चारों ओर सूं भली भांति सों अविष्टन करके लिपटके पद पद में ही शंका को करत ही वे चले हैं ।। तब सर्वज्ञ समूहन सूं पूज्यनीय हैं चरण कमल संबंधी रज हू जाकी ऐसो श्री महाप्रभुजी तो यह भक्त तो मेरें हैं सब प्रकार सूं मेरे में सदा अनुराग भरे हैं यह मेरे मिलाप संबंधी यत्न को क्लेश विचारके संकोच को प्राप्त नहीं होय यह विचारके गुप्त रीति सूं वहीं कृपासिन्धु पधारके विनके भय को वैसे वैसे स्वयं कि वैसे और हू जनन सूं वेग ही हर लेवें हैं ।। जासूं प्रथम कहे वा भक्तन के वैसे भाव रूप अमृत के पान सूं अत्यन्त प्रसन्न हैं कि उच्छलित प्रेम समूह रूप अमृत सूं आर्द्र होय रहे हैं ।। तासूं विनकी रक्षा हू करके कबहू तो अपने दर्शन के दान सूं वा भाग्यवान को कृतार्थता की परम काष्ठा पर बढ़ायवे लिये कि परम कृतार्थ करवे लिये स्वयं

ही साक्षात श्री गोकुल के चन्द्रमा अनुपम नीले घोड़ा पर सवार होयके वा भक्तन में साक्षात प्रकट होयके विनकी वा भय संबंधी पीड़ा को वैसे वेग ही हर लेवें हैं ॥२२॥ कबहू तो श्री महाप्रभुजी विनके दर्शन की इच्छा तो करें हैं परन्तु वैसे उपकार करवे वारे अपने दर्शन देवे की विनके लिये इच्छा नहीं करें हैं ॥ जासूं ऐसे हू भय में हमारे प्रभु स्वयं साक्षात यहां बिना पधारे हमारी रक्षा करी है मेरो पधारवो यह बात यह भक्त नहीं जानें नहीं तो श्रम मेरो जानके उदास होयगे ही यह विचारके सकल गुण निधान सुजान शुद्ध श्री महाप्रभुजी कबहू वहां पधारके हू वेग ही विनके वा भय को हरें हैं स्वयं तो अपने प्रकारन सों छिपके ही विराजमान होय है यहां वा साथ वारेन में कितने भाग्यवानन को अपनो दर्शन देके श्री गोकुल के अलंकार स्वरूप श्री प्राणप्रभुजी फिर वेग ही छिप जाय है ॥ ऐसे बड़े भय के वेग निवर्त होयवे सूं कि जिनको प्रभुन को दर्शन भयो हतो विनके वा कहवे सूं ॥२५॥ श्री प्राणनाथजी को यहां पधारवो तथा भय सागर को सुखायवो कि नाश करवो कि अपनो जतायवो हू नहीं कि वैसो आशय कि वा वा निर्दोष गुणन को जानके वे भाग्य भरे भक्तवर आनंद के अत्यन्त अपार सागर में निमग्न होय जाय है ॥ कबहू तासूं निकरे नहीं है ॥२६॥ या रीति सूं श्री प्राणनाथजी सूं तब तब वैसे वैसे अपने को रक्षा किये सम्हारे जानके अपने को चिरपर्यंत धन्य ही जाने है, कि निरन्तर प्रफुल्लित रोम हर्ष वारे होय हैं यह कृपासागर वा भक्तन के भय को निवर्त करवे लिये अपने निवास श्रीमद् गोकुलधाम सूं जब ही पधारे हैं तब हू प्रबल पराक्रम वारे प्राणनाथजी वा श्री गोकुलवासी भक्तन के लिये अपने दर्शन को निवर्त नहीं करें हैं कि विनके प्रति हू वा समय में हू दर्शन देते ही रहे हैं जासूं राज की अनंत शक्ति अपरिमित पराक्रम है ॥२८॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कबहू शोभा समूह सूं भरी श्रीमद् गोकुल सूं भक्तराज हरिभाईजी कि वैसो दामोदरदासजी कि वैसे और हू श्रेष्ठ भक्त अपने कुटुंब के सहित अपने देश जायवे लिये चल रहे हते तामें मार्ग में जाते कबहू आय रहे चार पांच सौ चोर देखे कि जे लूटवे के लिये तैयार हैं कोई सूं दबायवे योग्य कि डरपायवे योग्य नहीं हैं, कि मारो मारो कि छेदो भेदो ऐसे कह रहे हैं शस्त्र अस्त्रन को धरें हैं ॥ घोड़ान को दौड़ाय रहे कितने प्यादा हू हैं ॥ बड़े ही क्रोध पूर्वक निकट आय गये हैं विनको देखके यह

सब अत्यन्त ही डर गये ।। तब तो श्री गोकुल के काम मनोरथ सिद्धि कर्त्ता प्रभु नीला घोड़ा पर सवार होयके वा अपने भक्तन के गाड़ान के पास ही अचानक प्रकट भये तब तो वे सगरे हू चोर वा बड़े वीरवर को देखके बड़े डरप गये, बुद्धि नष्ट होय गयी, आगे तो पाव हू धरवे में असमर्थ हैं , चित्र लिखे जैसे निश्चेष्ट जड़ ही होय गये ।। तब यह भक्तवर श्री हरिदासजी आदि तो उछल रहे आश्चर्य सूं मिले होयके इच्छानुसार आगे चले गये हैं और ही कबहू भाग्यवान् समूहों के शिरोमुकुट संबंधी हीरा रूप कि भक्तन के श्रेष्ठ चक्रवर्ती इन्द्र कि प्राणनाथ को अत्यन्त प्यारो जो श्री मोहनभाईजी है कि सगरे श्रेष्ठ अनन्त गुणन सूं भर्यो जो प्रभुन को प्रायः निकटवासी सेवक विठ्ठलदासजी हैं यह दोनों भाई ही कोऊ समय में श्रीमद् गोकुल सूं चले हते ।। मार्ग में सहायक हू नहीं हतो, गाड़ा सूं जाय रहे हते तामें अनेक प्यादा कि अनेक असवार इतउत सूं आयके वा दोनों भाईजी के गाड़ा कूं रोक लियो है वाण की वर्षा करत ही या गाड़ा के पास ही आय गये हैं ।।४०।। परन्तु वे सगरे हू चोर वैसे के वैसे ही रुक के ठहर गये, लूटवे में समर्थ नहीं भये हैं, वा गाड़ा को हू परस करवे में समर्थ नहीं भये हैं. चित्त में कांप रहे हैं ।। तब तो या दोनों भाईजी के चित्त में हू भय उछल्यो कि यह तो बहुत ही हैं हम दोनों के प्राणन को हरेंगे ही, तब यह दोनों भाईजी डरपके गाड़ा को वेग सूं ही चलावत भये हैं ।। वे सगरे लुटेरा चोर जो प्याउं प्यादा कि घोड़ा सवार हते वे सगरे ही श्री महाप्रभुजी के प्रभाव सूं रुके कि नष्ट भई बुद्धि वारे होयके देखते ही रह गये कछुक करवे में समर्थ नहीं भये हैं ।। यह प्रसंग संबंधी स्वभक्त रक्षा को प्रकार कह्यो है ।। अब चालू प्रसंग ही कहें हैं ।।४५।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले द्विचत्वारिश स्तरंगः ।।४२।।

श्री श्री श्री

तरंग ॥४३॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ त्रिचत्वारीश स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक — **स्वप्नादि रूपे अनुभवे प्रियस्य लब्धे पवा कुत्र यिदुत्सवाहे**
समागते ते परिहाययाम स्थितास्थले चारुणी निर्मलेलं ॥१॥

याको अर्थ — श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि मार्ग में जाय रहे वा भक्तन को स्वप्नादि में प्राणनाथजी को कोई अनुभव होय कि कोऊ उच्छव को दिन आय जाय तब तो वे चलवे को छोड़के कोऊ निर्मल स्थल में ठहर के चन्दुवा शमियाना बांधके चारों ओर टेरा के बड़े मोल वारे श्रेष्ठ आसन अनेक प्रकार के बिछाय के श्री राज के श्री पादुकाजी आदि की अनेक प्रकार के राजसी उपचारन सों सेवा करके नाचें हैं, गावें हैं सुन्दर मंगल बाजा बजावें हैं, भक्तन को प्रसन्न करें हैं, कि सब जनन को दान मान देकर सगरे भक्तन को भोजन लिवायके यहां दोय कि तीन दिन प्रसन्न होयके निवास करें हैं फिर यहां सूं चलें हैं ॥४॥ यह सो प्राणनाथ के गुणन को कहते जाय हैं कि या प्रियवर के श्री मुख चन्द्रमा को बहुत प्रकार सूं स्मरण ध्यान करते जाय हैं कि श्री प्राणनाथजी की कृपा समूह कि भावना सूं उछल रहे केवल आनंद समूह के समुद्र समूह में ही चरणन को धरत ही चले हैं तामे भूमि तो अपनी कृतार्थता लिये ही रोम हर्ष वारी होयके वा भक्तन के चरणन को स्पर्श करें हैं कि कहूं हर्ष आलिंगन हू करें हैं, कि प्रणाम हू करें हैं ॥६॥ ऐसे चलत यह भाग्य भरे भक्तवर अपने निवास वारे पुर के पास ही क्रम सूं पहुंचके अपने घर में रहवे वारेन के प्रति वधायी संबंधी मंगलाचार समूह सों मिले पत्र को लिखके कोऊ वेग चलवे वारे सुजान दास को अपने घर में पठावें हैं ॥७॥ वे घर में रहवे वारे भक्तजन हू वैसे समाचार सूं मिले लेख पत्र को पायके वांछित वधायी पहेरामनी देवें हैं तब वे सगरे हू विलंब को तजके घर सूं हाथी घोड़ा अमूल्य रथ गाड़ान सूं उच्छलित हर्षपूर्वक आगे दश कि द्वादश कि कछुक अधिकी कोश आगे जावें हैं ॥ परस्पर आनन्द सूं वे मिले हैं ॥१०॥ प्रणमें हैं कि श्री महाप्रभुजी को समाचार पूछे हैं कि बड़े हर्ष सूं श्री पादुकाजी आदि सेव्य स्वरूप को दर्शन करें हैं, कि साष्टांग दंडवत प्रणाम हू करें हैं वहां कोई

जलाशय के पास आयके सघन शीतल छाया देखके मनोहर दिव्य बिछोना बिछायके वहां बैठें हैं ॥ भोग तांबूल बीड़ा वहां अर्पण करें हैं ॥१२॥ वे रस सागर भक्तवर आपस में प्रेम सहित महाप्रसाद लेवें हैं, लिवावें हैं ॥ प्राणप्रिय की अनेक प्रकार की वार्ता करें हैं ॥१३॥ ता पाछे वे भक्तवर बड़े शोभा भरे सुशोभायमान वा पालखी को आगे करके घोड़ा हाथी कि रथ आदि सगरी जे अपनी सवारी हैं बिन पर चढ़के, विनको दौड़ावत ही वेग सूं चलें हैं, वहां वहां वैसे वैसे मार्ग में खेलते ही चलें हैं ॥ वा जाने योग्य पुर सूं सेवक चक्रवर्ती कि हजारन स्त्री पुरुष ही या प्रभुन में प्रेम को धारण करत श्री राज के वा श्री पादुकाजी आदि के दर्शन करवे कूं आवें हैं ॥ तब मृदंग वीणा पखावज नगारा की ताल डीडीम दुंदुंभी कि अनेक प्रकार के गोमुखादि बाजान के दीर्घ नाद उछलें हैं ॥१७॥ अब पुर तो चार कोस पीछे आवेगो, यह जानके सगरे ही भक्त पुरुष कि मृगलोचना स्त्रीजन हू अपनी अपनी सवारीन सूं वेगा उतरके उछल रही भक्ति समूह सूं शोभा भरे वे वा पालखीजी के आगे चले हैं, नाचे हैं, गावे हैं, कि प्रभुन की स्तुति करें हैं, कि प्रिय की अनेक प्रकार की लीलान को स्मरण करें हैं, कमल सों सुन्दर वदन वारी सुन्दरी तो भक्तवर श्री माधवदासजी ने किये जे मनोहर गीत हैं जो केवल प्राणनाथजी के स्वरूप परा हैं विनको गान करें हैं ॥ तब वा सुन्दरीन के जे कंकण कि नूपुरन के नाद हैं वे सगरे हू जगत में अत्यन्त प्रसर जाय हैं विनके भूषण संबंधी मणीन के जे प्रकाश हैं विनसूं रचना किये इन्द्र धनुष ही यहां लसे हैं ॥ तामें श्रेष्ठ बंदीजन मागध कि चारण कि गंधर्ववर कि याचकजन यह सब परम पुरुषोत्तम के यश को प्रेम हर्ष पूर्वक वर्णन करत चल रहे हैं ॥२२॥ भक्तराज की कमल वंदना सुन्दरीजन द्रव्य सुन्दर वस्त्र कि रत्न कि मोती आदिन की माला हू न्योछावर कर कर देते जाय हैं यह सब लेते जाय हैं ॥२३॥ तामें स्मार्त कि शैव कि वैदिक कि वैद्य कि व्यौपारी कि ज्योतिषी कि वैसे और हू वैसे ग्राम के बड़े प्रतिष्ठित कि अधिकारी जन हू राजा कि राजसीजन कि विनकी स्त्री पुरुष कि विनके हाथी घोड़ा रथ आय रहे इन सबन सूं बड़ी ही भीड़ होय जाय है ॥ या प्रकार सूं श्री महाप्रभुजी कि वा पालखी को हर्ष सूं आगे करके वे बड़भागी भक्तवर आय रहे हैं वामें वा पुर की जे सगरी स्त्रीजन हतीं ॥२६॥ वे सुन्दर उच्छलित प्रेम सूं भरी कि जडरे हरिण बाल जैसे नैन वारी जे जोबन

भरी सुन्दरी वे सगरी ऊंचे शिखरन पर चढ़के वा प्रभुन को निरख रही हैं ॥ कि भक्ति सूं प्रणाम ही करें हैं, कि उच्छलित हर्ष होयके भक्तन को हू प्रणाम करें हैं ॥ तामें वा भक्त श्रेष्ठन को अपने जे घर हैं, वे तो वामें रहवे वारे सगरे हू उज्ज्वल भाव भरे जनन में मार्ज्जन किये हैं कि शोभायमान किये हैं ॥ सगरे स्थल में उज्ज्वल सुफेदी करी है कि आछे चित्र हू लिखाये हैं, चंद्रवा ठामठाम बांधे हैं पिछवायी हू बांधी है ऐसो शोभायमान है जामे श्री राज के विराजवे को जो मंदिर है सो तो निरन्तर स्वच्छ सुफेदी सूं उज्ज्वल शोभायमान है ठामठाम चित्र जाने किये हैं, दिव्य वस्त्र समूह जामें बिछो है, मध्य में ऐसो मनोहर ऊंचो सिंहासन जामें विराज रह्यो है, रत्न जटित आसन जामें शोभायमान है सुन्दर तल बिछोना चादर सूं मिली शय्याजी कि पलंग जामें बिराज रह्यो है बड़ो तकिया बड़ी गादी है सुन्दर माणिक जटित कंबल जहां बिराज रह्यो है जहां बड़े मोल वारे उज्ज्वल अत्यन्त मनोहर अनेक प्रकार के पात्र धरे हैं कि शोभायमान उज्ज्वल रत्न समूह वारी जहां चौकी विराज रही है कि सुवर्ण को माणिक जटित पीढा बिराज रह्यो है ॥ अत्यन्त मनोहर बड़े मोल वारो जहां चंद्रवा मनोहर शोभावारो लटक रह्यो है, सुन्दर स्वरूप वारी सुन्दर पिछवाई जहां लगाई है ॥ अनेक पडगा जहां शोभायमान हैं ॥३२॥ कि जहां उज्ज्वल शीतल जल सूं भरे माटी के कलशा हैं कि जहां श्रेष्ठ कमललोचना सुन्दरीन ने रचना किये मनोहर श्रेष्ठ साथिया कि कमल कि कल्पवृक्षादि उज्ज्वल शोभायमान होय रहे हैं, कि सुन्दर आंख के नवीन निर्मल पल्लव समूहन सूं कि अशोक के श्रेष्ठ पत्र समूहन सूं जहां रचना करी श्रेष्ठ तोरण माला विराज रही है कि बहुत मनोहर सुगंधित प्रवाह वारे अनन्त फूलन सूं कि वैसी उदार शोभा भरी फूल मालान सूं अनेक ही रचना जहां सुन्दरीन ने करी है जहां रत्न समूहन सूं मिले मंगल रूप सोना के कलश मृगलोचनान के सिर में स्थित है कि जहां हजारन रत्नन सूं जटित सुवर्ण के मनोहर मंगल पात्र तार में उच्छलित उज्ज्वल शोभा समूह वारी मनोहर आर्ती सजाय राखी है ॥३७॥ कि जहां कृष्णागरु चन्दन चूर्ण के धूप शोभायमान है कि सुन्दर फुलेलन सूं भरे मनोहर जहां दीपक हैं कि सुन्दर फूल वारी जहां चित्रमाला विराज रही है कि वरास सुपारी के मनोहर चूर्ण चूना वारी निर्दोष अनंत तांबूल बीड़ा बीड़ी है ॥३९॥ गेहूं को सुन्दर मैदा,

कि मिसरी, श्रेष्ठ घृत, लवंग, वरास सौंठ, पिप्पली, कारी मिरची आदि सूं सिद्ध किये अनेक प्रकार के मनोहर कोमल पकवान जहां सिद्ध किये हैं, कि जे चणा के, कि मिसरी के, कि दही के, कि सुन्दर ओटे दूध के जे अनेक प्रकार हैं वे सगरे जहां सिद्ध हैं सुन्दर खटायी सूं मिली श्रेष्ठ पना जहां सिद्ध है कि ॥४२॥ अनेक प्रकार के शाक पाक हैं, कि वैसे और हू जहां ते मन सिद्ध है वैसे और हू अनेक प्रकार के मनोहर बड़े मोल वारे सेवा में उपयोगी सब वस्तु जहां सिद्ध हैं ॥ कि जहां अनेक प्रकार के गोमुख, ताल, भेरी, डिंडिम, उपांग आदि बाजा बज रहे हैं कि जहां गान है, कि नृत्य है, कि कंकण, नूपुर सूं मिली जहां मृगलोचना विराज रही हैं, कि जहां सुन्दर वेणु वीणा श्री मन्दिर सूं जो शोभायमान घर है वा घर को सब प्रसन्न होयके भक्त समूहन के सहित वामें प्रवेश करके श्री सेवा मन्दिर में वा पालखीजी को पधरायके मृगलोचना के मस्तक में विराज रहे मंगल कलश के जल सूं प्रभुन के अभिषेक करके पीछे सुन्दर बड़े तकिया कि प्राणप्रिय के विराजवे योग्य गादीजी सूं शोभायमान सिंहासन में श्री प्रभुन को पधरावें हैं ॥४५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले त्रिचत्वारिश स्तरंगः ॥४३॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥४४॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ चतुचत्वरीश स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **धूपादिकं तत्र समर्प्य दीपं सत्पानकं श्रांति निवारकं लक्ष्याणि भोज्यानिखिलानी नानाविधी निराम्यंचि फलानि चाल ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं धूपादि कि दीपक कूं वा मंदिर में श्री प्रभुन के आगे समर्पण करके श्रम के निवारण करवे वारे पणा कूं श्रेष्ठ अर्पण करके अनेक प्रकार के पकवान भोग योग्य सामग्री कि अनेक प्रकार के सुन्दर फलन को हू अर्पण करें हैं ॥१॥ तांबूल बीड़ी हू आरुगवाय के सुन्दर आरती वारे हैं वा उच्छव में उच्छलित उज्ज्वल भाव भरी मृगलोचना सुन्दरी सुन्दर गान करें हैं ॥२॥ भक्तजन हू गान करें हैं -- गान ताल मृदंगादि

बाजाके नाद सूं मत्त होयके नाचे है ।।३।। श्रेष्ठ चारण मागध आदि तथा ब्राह्मण की वैद्य हू वा जगत पति की स्तुति करें हैं ।।४।। भक्तजन कि पूर्ण चंद्रमुखी सुंदरीजन हू सोना की माला कि मुद्रा आदि कि मुक्तामणि हीरा आदि कि नाना प्रकार के आभरणन को हू न्योछावर कर करके विनके प्रति की आय रहे औरन के प्रति हू उछलित प्रेम की प्रेरणा सूं देवे है ।।५।। हां आये भक्तजन-प्राणनाथ को कि भक्तजनन को कि इनकी पूर्ण चंद्रवदना सुंदरीन को कि वा महोत्सव को बड़े आदर सूं वारंवार सराहना करत वा वा वस्तु कि मान को पायके चिर पर्यंत उछलित रोमावली वारे होवत अपने घर में जाय है ।।६।। तब वे भक्तजन बहुत प्रकार सूं शाक पाक सूं राजभोग को प्रभुन के आगे अर्पण करके फिर समयानुसार तांबुल बीड़ा को अर्पण करके वे भक्तजन भक्ती सूं प्रभुन को विश्राम करावें हैं ।।७।। तब सगरी पूर्ण रस भरी मृगलोचना बड़े आदर सूं हर्ष सूं प्रभून के मनोहर महाप्रसाद समूह को लेवे लिये बुलवावे है ।।८।। वे भक्तवर हू सुंदर बिछायी शोभायमान पातरन के पास बैठके उत्साह समूहं सूं प्रेरणा किये ही श्री महाप्रभु जी की स्तुति करें हैं कि गान करें हैं ।।९।। स्वकिय कि अपनो मिलायी संबंधी जब पातरन पर शाक पाक अनेक प्रकार के परोस धरें हैं ।।१०।। तब वे भक्तजन हू श्री प्राण प्रभु जी के श्री चरण कमल में अनेक प्रकार की भेट, सोना मुक्तामणि हीरादि, कि सोना की मुद्रा, कि रजत की मुद्रा, कि अनेक प्रकार के श्रेष्ठ आभरण, कि श्रेष्ठ बड़े मोल वारे वस्त्र, कि घोड़ा, रथ, हाथी, कि वे वे और हू वस्तुन को यह भक्त भेंट करें हैं ।। वैसे और हू सगरे भक्तजन कि कमल सों सुंदर मुखवारी सुंदरी हू भेंट धरें हैं ।।११।। वे भक्तवर नम्रता प्रेम की नमस्कार पूर्वक कि दोनों हाथन को बांध के वा भक्तन को भोजन करवे लिये विज्ञापना करें हैं ।।१२।। वे भक्त हू विनको प्रणाम करके प्रसन्न हृदय होयके प्रसाद को भोजन करें हैं ।।१३।। वे भक्तवर हू प्रफुल्लित हर्षवारे होयके सावधानी सूं वा वा प्रसाद को परोसत स्वयं भक्ति समूह सूं ही भोजन करावे है कि पूछे है वैसे प्रेम सूं करें हैं -- तब बड़े आदर सूं विनको भोजन करायके उछलित अनुराग वारे होयके आचमन हू करायके जब वे नीमा जामा पाग उपरना कमर पटकादि सुंदर वस्त्र पहर लेवे है ।।१४।। फिर विनको बड़े मोलवारे बिछाये बिछोना पर वेग बैठावे है ।।१५।। विनके प्रति प्रसादी बीड़ी देवे है विनके शिरन पर

उछल रहे चमेली केवड़ादि फूलन की सुगंधा सूं मनोहर तैल को डारें हैं ॥१६॥ विनके वस्त्रन में श्रेष्ठ केसर के रस को डारें हैं कि सुगंधी समुह सूं सिद्ध किये श्रेष्ठ अंगराग को लगावे ॥१७॥ फिर उज्वल कृष्णागरु को पंक-की चौवा वहां वहाँ लगावे है -- प्रसादी वस्त्र विनको देवे है चंचल लोचना सुंदरीन को तो विशेष सूं वस्त्र देवे है ॥१८॥ ऐसे बड़े उत्साह सूं दोनों हाथन को बांध के प्रणाम करके विज्ञापना हू करें हैं -- कि अहो इहां पधारवे के परिश्रम को अंगीकार कर रहे कि निर्हेतु संबंधी भावको धारण कर रहे कृपा समुद्र आप बड़ेन ने हमको पावन कर दियो है ॥१९॥ ऐसे वे आप अपने श्री महाप्रभु जी के गुण धर्मन सूं कि वैसे अपने गुणधर्मन सूं अनेक दोषन सूं ग्रस्त किये कि सगरे हू गुणन सो रहित ही नदीन ऐसे हू हम पर सदैव ही अत्यंत भक्ति सूं विनके आगे विज्ञापना करके स्त्री पुत्र बेटा बंधु संबंधी मित्रन के संग ही विनको प्रणाम करें हैं ॥२०॥ ऐसे वे भाग्यभरे भक्त हू उछल रहे उज्वल भावसूं विनको प्रणाम करें हैं ॥२१॥ विनके आगे प्रार्थना करके आज्ञा हू पायके अपने वा श्री महाप्रभु जी को कि आपकी कृपा को या भक्तन को कि महोच्छवन को उछलित अनुराग सो सराहना करत ही अपने घर में जाय है ॥२३॥ या प्रकार सूं श्री महाप्रभु जी के श्री चरणकमलादि सेवा जो आपने दान करी है ॥२४॥ सो पायके वा सेव्य स्वरूप को सेवा करवे लिये पधराय के अपने गाम में आय रहे सब ठौर प्रसिद्ध-धनी बड़े भक्तन को जो अपने घर में प्रभुन को पधराय के अत्यंत शोभायमान रस सो प्रकाशवारो उच्छव होय है ॥२५॥ सो अमृत को हू विजय करवे वारो उच्छव मैंने संक्षेप सूं कहयो है ॥२६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले चतुश्चत्वारिश स्तरंगः ॥४४॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥४५॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ पंचचत्वरीश स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ ये निर्धनाः सर्व सामर्थ्य परिवर्जितां निःसहाया**
अविख्यता भक्तिः श्री गोकुलेशितुः ॥१॥

याको अर्थ-- श्री कल्याणभट्टजी कहे हैं कि अब श्री गोकुलपति के जे निर्धन भक्त है कि जे सगरी समर्था सूं रहित है -- कि जिनके कोइ हू सहायक नहीं है और प्रसिद्ध हू नहीं है जिनकी दीनता बहुत ही सुंदर है ॥१॥ अहो सगरी समर्थावारो हू कृपा सिंधु श्री महाप्रभुजी जिनके वैसे ही अत्यंत शुभ फल करवे वारे वा दीनताभरे भाव को पुष्ट करवे लिये जिनकी वा निर्धनतादि भरी दशा को दूर नहीं करें हैं ॥२॥ वे भाग्यवान निर्धन भक्त श्री महाप्रभु जी सूं श्री राज के श्री चरण पादुका जी आदि को सेवा करवे लिये प्राप्त होयके जा रीति सूं दूर देश में ठहरे अपने घर में पधराय ले जाय है ॥३॥ सो हू संक्षेप सूं हौं वर्णन करु हूं तामें अयि सुजान जन तुम सावधान होयके सुनो ॥४॥ वांसकी पेटी झांपी लेवे है वामें कोमल वस्त्रादि लपेट के वामें श्री सेव्य प्रभुन को सुख सो पधराय के वामें सब सोंज सो सो धर के वा झांपी को गाडी में भली-भाँति सों पधराय के वाके पास आप बैठके सावधान होयके दोनों हाथ वा झांपी के ऊपर ॥५॥ कि इत उत धरके यथा योग्य वा झांपी को दृढ़ करके वैसे वैसे चले है ॥६॥ यदि मार्ग कठिन होय तो वैसे गाडी पर पधरावे है ॥७॥ नहीं तो बड़े आदर सूं वा झांपी जी को शिर पर उठायके उछलित प्रेम समूहवारे वे सावधान होयके धीरेधीरे पावन सूं ही चले है ॥८॥ जो स्थल उत्तम होय जल उत्तम मनोहर होय छाया हू मनोहर होय तो देखके भक्त श्रेष्ठ शुद्ध देश में धीरे धीरे वा झांपी जी को पधरावे है ॥९॥ वहां अपरस में न्हाय के कछुक भोग धरें हैं ॥१०॥ वामें जोड़ शील कि जवन के चूनकी कि गेहूँ की बाजरा की कि मक्की के चून की प्रेम सूं सिद्ध करके अथवा रोटी की खींचरी सिद्ध करके भोग धरावे है ॥११॥ कि चणाभूज की चणा कि भिजोयी कोमल दार कि बाजरी कि खील कि भिजोयी बाजरी कि तिल-गुड़ खंड अर्पण करें हैं ॥१२॥ शुद्ध जल हू अर्पण करें हैं फिर कितनेक कोश चले है ऐसे स्थिति लिये पहले निश्चय कर राखे गाम में जायके फिर ठहरें

हैं ॥१३॥ वहां अंगाखरी कि अंगारन पर सेकी रोटी कि खीचरी कि जो कछु और वनजाय सो सिद्ध करके अपने प्रियवर के आगे भोग धरें हैं ॥१४॥ ता पाछे उछलित हर्ष सूं वा प्रभू के वा प्रसाद को लेवे है ॥१५॥ अच्छे मनोहर स्थल में झांपीजी को पधरावे है वाके पास ही सोवे है क्रम सूं जागे है ऐक सोवे है ऐक जागे है चोरसू कि अग्नि सूं कि कुत्ता सूं कि वैसे और सू हू डरपत मन रहे हैं ॥१६॥ वा श्री प्रभुन की झांपी जी कि रक्षा तो अपने प्राणन सूं हू कि धन सूं हू स्त्री पुत्रन सूं हू सब प्रकार सूं विशेष ही करें हैं ॥१७॥ उछलित कृपासागर श्री महाप्रभु जी मार्ग में विनके भीतर छिपके चलत हू अपने भक्तन को अपनी अलौकिक रीति सूं सब प्रकार सूं रक्षा करें हैं ॥१८॥ नहीं तो विषम मार्ग में अपने सहाय की बलादि सूं रहित ही वे भक्त सो करोड़न पद्मन निधी जा पर न्योछावर करे ॥१९॥ ऐसे परम वस्तु सर्वोपर विराजमान महाप्रभुन को अपने शिर पर धरके कैसे अपने घर में जाय सके तासूं श्री महाप्रभु जी ही रक्षा करें हैं ॥२०॥ या रीति सूं अपने घर में आयके यह श्रेष्ठ भक्त-धन अनुसार सजाये घर में मंदिर में प्रभुन को यथा योग्य पधराय के सदैव उछलित प्रेम सूं भक्ति अनुसार प्रभु जी की सेवा करें हैं ॥२१॥ उच्छव दिन में कि प्रभुन के जन्मदिन में तो विशेष सो सेवा करें हैं ॥२५॥ यथा योग्य सामग्री सिद्ध कर अर्पण करें हैं शुद्ध कि शीतल ही कृपासागर प्रभुन को अर्पण करें हैं ॥२३॥ रात्रि समय में तो परम प्रेम सूं चणा भूने कि कछुक और प्रभुन के फिर अर्पण करें हैं ॥२४॥ भाव के लेवे वारे कृपासागर श्री महाप्रभु जी बड़े भक्तन में जैसे होय वैसे इनमें हू अत्यंत प्रसन्न होय के इनके लौकिक कि अलौकिक सगरे हू मनोरथन को वेग ही पूरण करें हैं ॥२६॥ सो भक्त वत्सल पुरुषोत्तम श्री गोकुलाधीश जी इनके घरन में हू प्रकट कि छिपके हू बिहार करें हैं ॥२६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले पंचचत्वारिश स्तरंगः ॥४५॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥४६॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ षट्चत्वरीश स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अप महात्मयधी स्नेह समुत्कंठा रसादिभी**
पादुकादि प्रभो रूपंतद वाप्यतत स्तथाः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहे हैं कि अब महात्मय ज्ञान कि स्नेह की उत्कंठा कि रसादि सूं या श्री महाप्रभु जी सूं श्री पादुकाजी आदि प्रभुन के स्वरूप को प्राप्त होयके अपने गाम कि मनोहर घर में जे पधराय के लावे है ॥१॥ जिनको पधरायवे को कियो महोछच्व वर्णन कियो है ॥२॥ ऐसे जे धनी बड़े गृहस्थी महात्मा भक्त है जे सदैव सर्व समय में श्री प्रभुन की दिनरात्री सेवा करें हैं ॥३॥ विनके सेवा के प्रकार को संक्षेप सूं कहू हू जो प्रकार अत्यंत मनोहर है कि सुन्यो भयो हू जो प्रकार भक्तन के प्रति उत्तम सेवा फल को दान करें हैं ॥४॥ वा भाग्यवानन को प्रभुन के सेवा योग्य मंदिर बड़ो विशाल कि मनोहर होय है -- सुफेदी सूं अत्यंत उत्तम ही शोभायमान होय है -- वा मंदिर में प्रभुन के विराजवे को सुंदर श्रेष्ठ निजमंदिर होय है वाके पास बड़ो सुंदर सजायो शय्या मंदिर होय है वाके पास सेवा सामग्री धरवे को सुंदर सोंजको घर होय है वामें वा वा वस्तु के धरवे के न्यारे न्यारे मनोहर स्थल होय है ॥७॥ विनमें अनेक प्रकार अनेक रंगन के मनोहर छोटे कि बड़े करंक की ट्रंक होय है ॥८॥ वा वा वस्त्र की भूषणन भरेवे की वैसी वा वा वस्तुन सूं भरी अनेक पेटी हू होय है ॥९॥ मनोहर फूलेलन सूं भरे इहां अनेक कांच के शीशा कि पात्र हू शोभायमान होय है ॥१०॥ तथा अनेक प्रकार के सुगंधी द्रव्यन के लिये श्रेष्ठ हाथी दांत के कि काष्टन के अनेक प्रकार के पात्र वहां धरें हैं ॥११॥ कि गुलाब जल के कि अबीर के कि मनोहर चंदन के कि अगरू चंदन के सार चोवा के, कि और और हू वस्तुन के पात्र वहां धरें हैं ॥१२॥ अनेक नवीन वस्त्र है कि विनकी गांठे है कि नाना प्रकार के रंगवारे नित्य उपयोगी वस्त्र हू वहां धरें हैं ॥१३॥ कि अनेक तुलिका कि अनेक छोटे बड़े तकिया कि रत्न जटित कंबल, प्रभुन के विराजवे की गादी नाम को आसन यह सब जहाँ विराजमान होय है ॥१४॥ याके पास और घर होय है जो भोग वस्तु सों मिल्यो रहे हैं ॥१५॥ जा सुंदर

बाल भोग घर में अनेक प्रकार के पकवान माठ आदि कि जलेवी आदि कि अनेक प्रकार के लड्डुवा आदि होय है कि बहुत प्रकार कि पूरी होय है ॥१६॥ कि श्वेत खांड के बूरा के अनेक प्रकार होय है -- कि जहाँ श्वेत मिसरी के कि फलन के अनेक प्रकार होय है ॥१७॥ तथा प्राणनाथ जी के पान योग्य जल को घर होय है ॥१८॥ जहां शीतल जल धर्यो जाय है कि प्रभुन के जल पान को पात्र शीतल जल सूं भर्यो रहे हैं ॥१९॥ जहां गान करवे वारे सगरे भक्त तथा प्रायः और हू सगरे भक्त कि सेवक हू रहे हैं ॥२०॥ याके पास बड़ो आंगण होय है जो परम अद्‌भुत सुंदर है कि जो सब ऋतु में सब कार्यन में उपयोगी होय है ॥२१॥ याके पास ऐक ओर रसोई घर विराजमान होय है -- याके पास-पास सेवा मंदिर प्रकाशमान होय है ॥२२॥ घर में पाक के उपयोगी कार्य होय है ॥२३॥ वामें एक ओर जल घरा होय है कि दूसरी ओर पाक के उपयोगी श्रेष्ठ मूंग, चावलादि होय हैं ॥२४॥ आंव आदि संधाना समूह सूं शोभायमान एक घर होय है ॥२५॥ सगरे स्थल अत्यन्त मनोहर उज्ज्वल उत्तम पवित्र होय हैं प्रायः सबन में ही टेरा पिछवाई चंद्रवादि होय है ॥२६॥ श्री गोकुलपति प्रभुन के विराजवे को जो सुंदर स्थल है वामें तो श्री महाप्रभु जी के विराजवे को अत्यंत मनोहर सिंहासन होय है सो तो गादि तकिया कि जलपान पात्र झारी जी के धरवे में हू उपयोगी शोभायमान होय है ॥२७॥ वा सिंहासन पर अमूल्य श्रेष्ठ मनोहर अनेक प्रकार के वस्त्र बिछ रहे हैं ॥२८॥ कि तामें देशांतर को अत्यंत प्रसिद्ध मनोहर इन्द्र गोप जैसे लाल रंग सूं शोभायमान रोमवारो मखमल नाम के वस्त्र सो सिद्ध रूई सूं भरी गादी नाम आसन शोभायमान रहे हैं कि वा गादी जी के ऊपर पीछे सूं वैसी रूई सों भर्यो मखमल को बड़ो तकिया रहे हैं ॥२९॥ बाये और वैसो सुंदर मनोहर बड़े मोल वारो झबिया रहे हैं वाके नीचे श्याम पाट के सुंदर बड़े मोल वारे फोंदना लसे है ॥३०॥ या सिंहासन के बाये भाग में शीतल जल सूं भर्यो जलपान को पात्र, झारी जी लाल भीजे सुंदर वस्त्र सूं नेवरावारी कि लपेटी ही चौकी पर शोभायमान रहे हैं ॥३१॥ सो जलपान को पात्र हू पीतल को कि रूपा को कि सोना को बड़ो उत्तम लसे है ॥३२॥ कपूरदानी हू सोना की कि रूपा की बड़ी मनोहर मनोहर बरास सूं भरी रहे हैं कि ॥३३॥ वैसे चूनादानी हू सोना की कि रूपा कि रहे हैं वामें श्वेत पत्थर सूं

सिद्ध भये कोमल अद्‌भुत चूना सूं भरी रहे हैं ऐक पात्र बीड़ा सूं भर्यो रहे हैं ॥३४॥ वैसे वामें कोइ की दृष्टि न परे यासूं वस्त्र सूं ढांप्यो रहे हैं, ऐक पात्र सुंदर मनोहर पकवान सूं भर्यो रहे हैं ॥३५॥ सो सबन की दृष्टि न परे यासूं सुंदर और पात्र सूं ढांप्यो रहे हैं ॥३६॥ वा चौकी पर दोय कि तीन रत्न जटित सोना के पात्र कि रूपा के पात्र कि कांस्य के पात्र मिसरी के अनेक प्रकार के मिठाई सूं कि अनेक प्रकार के श्रेष्ठ फलन सूं भरे रहे हैं -- श्वेत वस्त्र सूं ढांपे रहे हैं ॥३७॥ वा सिंहासन के दक्षिण भाग में हस्त पखारवे आदि कार्य में उपयोगी जल को करवा रहे हैं, सुंदर पण ही की तष्टी रहे हैं शीतकाल होय तो निर्धूम श्रृंगारन सूं भरी हसंती की अंगीठी रहे हैं ॥३८॥ गरमी को समय होय तो सुंदर अकाशी पंखा को पवन रहे हैं कि उत्तम शय्या जी रहे हैं ॥३९॥ मनोहर नेवार पट्‌टन सूं जो वुणि होय है -- कि कोमल सूत्र के पट्‌टन सूं सुंदर रचना करी होय है ॥४०॥ सो पलंग रूप वा शय्या को बड़े मोलवारो सुंदर श्याम पाटके फोंदना सूं मिल्यो सफेद पलंग पोस शोभायमान रहे हैं वाके ऊपर कोमल तूल लसे है ॥४१॥ जो शीतकाल होय तो बड़े मोलवारे अनेक रंग के कोमल सूक्ष्म वस्त्र सूं ॥४२॥ कि गरमी को समय होय तो वैसे गाढ़ा वस्त्र सूं रचना करी सो तूलवती होय है याके ऊपर सुंदर मनोहर चादर श्रेष्ठ रहे हैं ॥४३॥ जामें सोहू शीतकाल में सूक्ष्म कोमल वस्त्र की होय है उष्णकाल में गाढ़ा वस्त्र सूं रचना करी अत्यंत मनोहर होय है जामें ऐसी बिछायत होय है कि बीच में निबु कि गुजलक सूं रहित होय है ॥४४॥ ऐसे पलंग पर शिर के भाग में सुंदर कोमल तकिया रहे हैं ॥४५॥ कि कपोलन के उपधान कि गेंदुवारु रहे हैं यामें मनोहर चादर सूं मिली तूल रजाई रहे हैं ॥६॥ कि शीत विशेष होय तो दोय तूल रजाई रहे हैं -- वाके ऊपर हू चादर रहे हैं गरमी के दिनन में तो सुंदर कोमल चादर कि दुपट्‌टा रहे हैं ॥४७॥ वर्षा ऋतु में हू चादर कि दुपट्‌टा रहे हैं वा शैय्या जी के चारों चरणन के ऊपर मस्तक में कारे रेशमी सेज बंध कोस रहे हैं जासूं चादर वस्त्र आदि कबहु खसे नहीं है ॥४८॥ सेज के नीचे मस्तकवारे चरणन में नीचे छोटे प्रति चरण धरें हैं जासूं मस्तक को भाग ऊंचे रहे हैं ॥४९॥ या प्रकार सुंदर बिछायत किये पलंग के ऊपर सबन को ढांपवे वारो अद्‌भुत बड़ो चादर वस्त्र रहे हैं जो रज के संबंध को निवारण करत वारे

अत्यंत शोभायमान होय है ।।५०।। शिर के तकिया के पास नीचे एक चोकी और धरी जाय है जाके ऊपर बीड़ा रहे हैं कि जलपान को पात्र झारी जी कि और और हू जो वांछित होय सो रहे हैं ।।५२।। याके पास ही मनोहर माणिक जटित कंबल पर अद्भुत चरण कमल के पोंछवे को वस्त्र रहे हैं ।।५२।। शय्या के ऊपर सिराहने के पास श्री मुखारविंद के पोंछवे को वस्त्र रहे हैं ।।५३।। पाग हू धरी रहे हैं -- सुंदर तनिया हू मनोहर सजायके धरी जाय है नीचे इहां पण ही कि तष्टी हू धरी जाय है ।।५४।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले षट्चत्वारिश स्तरंगः ।।४६।।

श्री श्री श्री

तरंग ।।४७।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ सप्तचत्वारीश स्तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **रसवत्यां प्रभो रस्य पारु स्थाने सुमंजलेनाविधः**

सु रुचिरः पाकोमवति निर्मलः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि या श्री महाप्रभुजी रसोयी में मनोहर पाक के स्थान में अनेक प्रकार को अत्यंत मनोहर निर्मल पाक होय है ।।१।। वामें गेहूँ के चून की मनोहर रोटी होय है कि वेसन के मिलमा गेहूँ के चून की होय है अकेले चून की हू होय है ।।२।। अंगाखरी बहुत मनोहर होय है -- पुरी हू होय है ।।३।। भात तो अत्यन्त प्रसर रही सुगंधीवारो बहुत ही सुंदर होय है ।।४।। हींग के वगारवारे मूग आखे मनोहर होय है कढ़ी हू मरिचि मिली जीरा मिली कि मेथी मिली होय है कि यामें रायी हू डारें हैं शाक अगणित होय है सुंदर पकवड़ी सरस दायक होय है ।।५।। छाछ में डूबे हींग आदिक मरिची मिले सुंदर बड़ा होय है सूखे चिला होय है इडर होय है ।।६।। खीचरी मनोहर होय है -- बड़ी होय है -- पापड़ होय है कबहु वहां खंडमंडा जागे है ।।७।। बड़ी भात अत्यंत सुन्दर होय है -- शिखरन भात होय है -- कि दही भात सुंदर होय है ।।८।। वहां अमृत को विजय करवे वारो क्षीर होय है सुंदर मनोहर क्षीरवड़ा होय है ।।९।। मिसरी के पाक सूं

वे भरे जाय है सुंदर सुखपुरी होय है ॥१०॥ उड्द की पीठी सूं भरी हींग आदिक मरिची सूं मिली थोड़ी खट्टी ऐसी सुंदर कचौहरी होय है ॥११॥ आंब नींबु नारंगी सुरण कि अदरक आदि सूं उत्साह समूह सूं प्रकाशवारो सिद्ध कियो संधाना समूह हू होय है -- दूध अघोटे बासोंधी होय है ॥१२॥ भूने जीरा की कि सोठ कारी मिरच पीपरी की कि लोन की बुकनी होय है बोर की आंब आदि के पना सुंदर बरास मिले होय है ॥१३॥ केला के फल कि और हू सुंदर फल अनेक होय है ॥१४॥ कबहु कहू वार्ता प्रसंग में -- सब भक्तन के सुनत ही श्री महाप्रभु जी जो अपने को रुचे है -- कि जो नहीं रुचे है सो आप आज्ञा करत भये है सो हौं संक्षेप सो वर्णन करूं हू सो सुजान जन सावधान होय के सुनिये ॥१५॥ हमारे प्राणनाथ जी को शाकन में खटाइ थोडी रुचे है लोन हू बहुत नहीं रुचे है ॥१६॥ कबहु श्री राज ने आज्ञा करी है कि हम जब कुरुक्षेत्र में पधारें हते तब मेरे लिये प्रति दिन गोपीकांत भट्ट रसोइ करतो ॥१७॥ एक दिन हमारी रसोई में वाने काकड़ी को शाक कियो वा गोपीकांत भट्ट को खटाइ बहुत प्यारी हती सो वामें वाने काची केरी कि खटाइ डार के बड़ो खाटो ही शाक कर दियो ॥१८॥ सो काकड़ी को शाक बाने मोकुं परोस्यो मैंने हू रंच आरोग्यो विशेष खाटो होयवे सूं सो मोकूं रुच्यो नहीं तब मैंने वाकूं कहयो कि ॥१९॥ मेरे रसोई घर में एक ही शाक यह तुमने सिद्ध करयो सो हू अत्यंत खाटो काहे कूं करयो ॥२०॥ यह कैसे आरोगी जाय तब खटायी में प्रेम भर्यो सो हसके कहवे लग्यो राज अपनी इच्छानुसार हौं पाक करु तो दार आदी में बहुत खटायी हू देवू ॥२१॥ यह वांको वचन सुनके मंद हास्य करके हो मौन गहे रह्यो यह श्री राज को श्री मुख वाक्य है ॥२२॥ तासूं हे सुजान भक्तजन या संवाद सूं यह निश्चय करिये कि प्राणनाथ जी को शाकन में खटायी थोड़ी रुचे है ॥२३॥ श्री प्राणप्रिय जी षटरस के भोक्ता तो है परंतु आपको मधुर रस तो अत्यंत ही प्यारो है कृपानिधि श्री गोकुल के कामना सिद्धि कर्ता श्री राज भक्तजन प्रेम सो जो अर्पण करें हैं -- सो सब ही अत्यंत हर्ष सूं आरोगे हैं तामें हू दही छाछ आदि मधुर ही प्रभुन को सदा रुचे है -- घृत तो गाय को होय सुगंधि कि उज्वल कि काल तपायो होय सो बहुत रुचे है चावर श्वेत सूक्ष्म सुगंधी ही ऋतु के आपको रुचे है ॥२६॥ और चावर सुंदर होय तो रुचे है

आखें मूंगन कि दलिया होय तो आपको रुचे है मूंगन कि दलिया दाल नहीं रुचे है ॥२७॥ सूरण जिमीकंद आधो पक्व होय तो राज कूं रुचे है शाक बथुआ को, प्रियवर को प्रिय है बैंगन कोमल रुचे है वेंगन को भरता हू रुचे है वेंगन भात हू अत्यंत रुचे है ॥२८॥ मूंग की बड़ी हू राज को रुचे है, यह भक्तजन प्रेम सूं भरे मन सूं राज के लिये जो रुचे है सो सब सिद्ध करें हैं ॥२९॥ या प्रागनाथ जी को साठी के चामर नहीं रुचे है प्राणनाथ जी को सरसों को शाक हू अत्यंत नहीं रुचे है ॥३०॥ चोमासा में प्राणनाथ जी वेंगन नहीं आरोगे ॥३१॥ प्राणप्रभुन को बाल अवस्था में दूध अत्यंत प्यारो हतो ॥३२॥ श्री तात चरण श्री विट्ठलनाथ जी जा दिन सूं अंतर्ध्यान भये वा दिन सूं सेवक जनन को शिक्षा करत दूध सो रुचि को निवर्त कर लेते भये है तासूं जे सुजान भक्त है प्रायः वे अरुचिनी वस्तु आप को अर्पण नहीं करें हैं ॥३३॥ या प्राण वल्लभ को तांबुल बीड़ा बहुत ही प्रिय लगे है तासूं श्रेष्ठ भक्तवर प्रभुन को बीड़ा बहुत ही अर्पण करें हैं ॥३४॥ जल कि शुद्धि सूं सब वस्तु शुद्ध होय है तासूं भरवे वारे होयगे विनके घर में कि नदी तालाब वावली में अपरस में नहाय है नदी आदि में धोये उत्तम वस्त्र को पहेरें हैं -- तब औरन को परस न करत ही जलाशय में जाय है ॥३७॥ मार्ग में अस्पृश्य कोइ वस्तु को परस नहीं करें हैं ॥३८॥ चरणन में पनही धरें हैं ॥३९॥ अस्पृश्य वस्तु को परस होय जाय तो फिर न्हाय के फिर जल भरवे जाय है ॥४०॥ बड़ी भीड़ होय तो कलशा को अधे वस्त्र टाट सो लपेट के ले जाय है जैसे वाको कोइ न देखे वैसे करें हैं ॥४१॥ फिर नदी कि तालाब पर जायके वाके सुंदर स्थल में निर्जनता में शुद्ध जल को लेवे है ॥४२॥ या रीति सुं बावली में कि कुवा में कि जहाँ अशुद्ध जल नही ठहरें हैं वहां और और में जाय के निर्मल जल लेवे है ॥४३॥ तामें जल लेवे को कलश कि डोरी कि अथवा छन्ना कि अपनो वस्त्र हू अशुद्ध भूमि में नहीं धरें हैं ॥४४॥ या भूमि को सब रीत सों शुद्ध करके वा पर धरें हैं कि अथवा अपने घर सूं चौकी ले जाय है वा पर धरें हैं फिर वैसे करें हैं जेसे जल में कोइ अशुद्धि को संबंध नहीं होय ॥४५॥ दुकान के जल परसवारे शाकादि को सदा नहीं लेवे है दुकान सूं शाकादि कोरो शुद्ध होय तो लेवे है ॥४६॥ दूध धरिया दूध लेवे लिये जब जाय है तब अपने दूध लेवे के पात्र को वस्त्र सूं लपेट के ले जाय है जैसे

अशुद्ध वस्तु को परस न होय जाय यह संदेह वारे होय है वा दूध देवे वारे अहीर को अपने घर में लाये शुद्ध जल सूं दोनों हाथ अत्यंत धुवावे है फिर वा अहीर के हाथ कोरे कराय के यासूं दूध दुहवाय के अपने पात्र में वा दूध को ले जाय है ऐसे श्री गोकुल प्रभुन में प्रेम सूं स्वयं शुद्ध होयके सदा और सब वस्तु शुद्ध ही लेवे है ॥५०॥ घर में हू जाय के वाकूं शुद्ध ही स्थल में धरें हैं कि जैसे वामें अशुद्ध द्रष्टि को हू परस न होय वैसे ही करें हैं ॥५१॥ घर हू सगरो उज्वल लिप्यो शुद्ध कियो ही राखे है ॥५२॥ स्वयं हू सदा शुद्ध ही रहे हैं सदा श्रेष्ठ आचार परायण होय है कि सत्य के ही संबंधी होय है कि कपट सूं रहित ही होय है ॥५३॥ सगरे भगवद भक्तन में अभिमान गर्व नहीं करें हैं सदा दीनता सूं भरे रहै है कि सबन के अपराधन को सहन करें हैं सदा भगवद भजन में ही लगे रहे हैं या प्रभु की सेवा में ही सब रीत सो सावधान मन रहे हैं ॥५४॥ या प्रभु जी के भक्तन की सेवा में लगे रहे हैं कि व्यवहार करवे में हू भगवत्स्मरण विशेष ही करते रहे हैं कि सावधान हू रहे हैं लौकिको में आशक्त नहीं रहे हैं सब प्रकार सूं लौकिक जैसे ही प्रतीत होय है -- प्रभुन में सदा अलौकिक उज्वल निरंतर शुद्ध भाव को करत ही रहे हैं कि लौकिक भाववारे कि संगत सूं रहित होय है ॥५७॥ भगवद भक्त समूहन के पालन करवे में चित्तवारे होय है भगवद भक्त मंडली में ही स्थिति करवे में तत्पर रहे हैं ॥५८॥ इन भगवद भक्तन के गुणानुवाद के श्रवण के स्मरणादि में निरंतर आशक्त रहे हैं कि महद भक्तन कि कृपा को हू दिन रात्री वांछा करत रहे हैं ॥५९॥ अपने को तो तृण जैसे ही जाने है भक्तन के चरणरज कि चाहना वारे होय है ॥६०॥ जिनकी दृष्टि सदा लोकातीत ही रहै है लौकिक बडो हू होय वाकूं तो तृण जैसे ही नित्यमाने है ॥६१॥ सगरे इन्द्रीयन को जय कर रहे हैं सदा प्रभु लीला के विचार में ही सावधान हृदय रहे हैं सदा शुद्ध रहे हैं ॥६२॥ या प्रभु ने पहले किये कि अब हू किये सगरे उपकारन को बहुत प्रकार सूं तब तब स्मरण ही करते रहे हैं ॥६३॥ श्री प्राण प्रभु जी ने जो स्वधर्म में निष्ठा कि सेवा के अनेक प्रकार शिक्षा किये है कि धैर्य कि विवेक कि आचार कि अद्‌भुत अनन्यता शिक्षा करी है कि माहात्म्य कि रस कि वात्सल्य कि संयोग कि वियोग कि वैसे और हू जो जो कर कर अत्यंत शिक्षा किये है ॥६४॥ विनको तो श्री महाप्रभु जी

कि नित्यकृति जैसे ही बहुत प्रकार सूं ही विचार करते रहे हैं ।।६५।। अन्य संबंध के तो गंध लेश को हू विशेष सूं जिनने त्याग कर दियो है कि जे नित्य ही या रीति सूं ही भावना करत ही रहे हैं ।।६६।। कि कृपासिंधु श्री महाप्रभु जी अब जागे है अब शैया को विदा करें हैं, कि अब भक्तन को प्रभु जी नित्य दर्शन दान देवे है ।।६७।। कि अब राज भक्तन सूं तैलाभ्यंग करावे है कि अब सुंदरवरजी स्नान करें हैं कि ।।६७।। अब महाप्रभु जी श्री नाथ जी के मंदिर में पधारें हैं, अब प्रियवर जी श्री नाथ जी की मंगल आरती करें हैं ।।६९।। अब श्री गोकुल भगवान प्यारो श्री गिरिधारी जी को श्रृंगार धरावे है ।।७०।। या प्रकार सूं वे चतुर भक्त जन चित्त में निरंतर भावना करते रहे हैं ।।७२।। तथा प्राणनाथ के ऐसे चरित्रन के जे मनोहर प्रकार रस सूं प्रकाश भरी श्री गोकुल में पहले अनुभव किये है कि सुने है कि महदभक्तन कि कृपा सूं स्फुरण भये है विनको वहां वहां अनुकूल स्मरण करके सदैव वा श्री महाप्रभु जी को वैसे सेवा करें हैं ।।७२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले सप्तचत्वारिश स्तरंगः ।।४७।।

श्री श्री श्री

तरंग ।।४८।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ अष्टचत्वारीश स्तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **प्रविश्य मंदिर पूर्वम श्रीमद् गोकुल सन्मणेः**
गत्वा शैय्या समीपेस्य दंड्वत प्रणामत्वमे ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि श्रीमद् गोकुल के श्रेष्ठ रत्नरूप श्री महाप्रभु जी के मंदिर में प्रवेश करके पहले या प्रभुन कि शैय्या के पास जायके वाकूं दंड्वत प्रणाम करें हैं ।।१।। फिर सुंदर सोहनी (बुहारी) लेके सगरी मंदिर की वा भूमि पर लेपन करें हैं ।।२।। अथवा वस्त्र के टूक सूं जल लेकर सगरे मंदिर में गीलो वस्त्र फेरें हैं -- फिर सिंहासन के पास जायके वहां श्री महाप्रभु जी के मनोहर सिंहासन संबंधी बिछोना को लेके फिर आदर सूं भरे वे भक्तवर शैय्याघर में जायके स्वयं आप अथवा परिचारक

द्वारा वहां मार्जन करावे है कि लेपन करावे है फिर प्राणनाथ जी ने अब आरोग ही लियो होयगो यह विचार के राज को आचमन करावे है आपके प्रसादी को सराय के प्रसादि स्थान में धरें हैं -- वा स्थल में तैलाभ्यंग को सुंदर बिछोना बिछावे है वहां श्री अंग पोंछवे को वस्त्र धरें हैं मनोहर फूलेल धरें हैं कि सुंदर कांकसीं धरें हैं ॥२३॥ भूषण हु सजाय के याके पास धरें हैं उत्सव को दिन होय कि शनिवार होय तो कलको घिस्यो चंदन होय वामें जल थोरो मिलाय के मनोहर अभ्यंग सिद्ध कर धरे हैं शीतकाल होय तो याकूं सदा गरम सुहातो कर राखे है जल कूं समोय कर राखे है मनोहर स्नान कि चौकी इहां पधरावे है सुंदर थार में वाकूं धरें हैं याके ऊपर उछलित प्रेम सूं सुंदर वस्त्र विछावे है सब साज सजाय के फिर श्री महाप्रभु जी को अभ्यंग के आसन पर पधरावे है कि धीरे-धीरे मनोहर फुलेल सूं अभ्यंग करावे है ॥२८॥ फिर श्री प्राणप्रभुन को धीरे-धीरे उछलित हर्ष भरे वे भक्तवर स्नान की चौकी पर पधरावे है वहां सुंदर केसर मिले चंदन के रससो लेपन करके फिर जल सूं स्नान करावे है फिर भली भाँति सूं श्री अंगन को पोंछे है ॥३०॥ फिर मनोहर फुलेल सूं कछुक अभ्यंग करके सुंदर भूषणादि सूं श्रृंगार धरावे है ॥३१॥ जब भगवान महाप्रभु जी स्नान नहीं करें हैं तब तो सुख सो प्रभुन को अभ्यंग कराय के कोमल वस्त्र सूं श्री अंग पोंछ लेवे है ॥३२॥ पात्र में लाये जल में श्री राज के स्पर्श को करायके वे भक्तवर वाकूं चरणामृत करें हैं ॥३३॥ फिर सुंदर धोती पहिराय के सुंदर संगरे भूषण पहिरावे है कि कबहु गुंजामाला हू प्रेम पूर्वक पहिरावे है या रीति सूं या प्राणनाथ को बहुत प्रकार सूं शोभायमान करके फिर उपरना धरावे है ॥३५॥ शीतऋतु होय तो रूईदार नीमो कि डगली धरावे है कि अथवा अत्यंत शोभायमान पामरी धरावे है अथवा मनोहर दुपट्या धरावे है अथवा उत्तम चंदन समर्प के बाये ओर चोकी पर जलपान को पात्र झारी जी धरें हैं दक्षिण ओर पणहि की तष्टी श्री हस्तकमल खासा करवे कूं धरें हैं जल को पात्र करवा हू धरें हैं ॥३८॥ फिर श्रृंगार भोग धराय के सांकल दिवाय के श्री राजके आरोगवे कि भावना करत हर्ष सूं आप बाहिर निकसे है ॥३९॥ शय्याघर में आवे है वहां के सगरे वा वा कार्य को बड़े हर्ष सूं करें हैं फिर अब आरोग चुके है यो जानके प्राणप्रिय के मंदिर में आयके आचमन करावे है कि मीठे सुंदर मिसरी के टूकन सूं

भर्यो पात्र वस्त्र सूं ढांप के भाव भरे वे भक्तवर प्राणप्रिय के पास सिंहासन पर धरावे है ।।४२।। अब कृपा समूह सूं भरे वे भक्त श्री मंदिर के किवाड उघाड़ के प्रिय को दर्शन करावे है ।।४३।। भक्तवर स्वयं शैय्या मंदिर में जायके उछलित प्रेम सूं प्रिय जी की सेवा विछावे है ।।४४।। नीचे चरण पोंछवे को वस्त्र धरें हैं और हू जो उपयोगी सब भली भाँति सूं करके ।।४५।। फिर लौकिक कार्य कोई होय तो या प्रिय के मंदिर सूं बाहीर पधारें हैं अथवा प्रभुन के कार्य को करत वहां ही बैठे है वस्त्रादि समारें हैं कि स्त्रोत आदि पढ़े है ग्रंथन को विचारें हैं कि धीरे-धीरे गान करें हैं ।।४७।। अथवा प्राणनाथ के भक्त अपने सुजाती होय तो विनके संग प्राणनाथ की सरस मधुर वार्ता को उछलित हर्ष सो करें हैं ।।४८।। अथवा और भाग्यवानन ने करे मनोहर गान को सुने है ता पाछे अब तीसरे भोग राजभोग नाम बड़े भोग को नियत समय भयो है यह विचार के झारी को उठाय के बड़ो करें हैं फिर भरके श्री राज के आगे धरके श्री मंदिर के कींवाड को लगावे है फिर सिंहासन के आगे फिर प्रभुन के आगे डगला को बड़ो करें हैं कि शीत होय तो मनोहर पामरी तो उढ़ाय ही राखे है शीत न होय तो सुंदर धोती तो धरी ही है यासूं उछलित हर्ष होयके प्रथम कहे सगरे सिद्ध किये शाकादि सूं मिले भोजन को थार पात्रन के संग ही प्रभुन के आगे पधरावे है शीत यो तो अंगीठी पास राखे है गरमी होय तो पंखा पास राखे है ता पाछे आछी रीत सो श्री मंदिर के दोनों किवाड़ लगाय के वे भक्त श्रेष्ठ दूसरे द्वार सूं बाहिर आवे है प्राणनाथ जी के भोजन को प्रकार जैसे सुन्यो है कि अनुभव कियो है वैसे ध्यान करत ही वे सगरे ही बाहिर ठहरें हैं ।।५५।। कृपा सिंधु ईश्वरेश्वर प्राणनाथ जी तो वा सामग्री को अपने सुंदर मनोहर हसते श्री मुखारविंद में अंगीकार करें हैं ।।५६।। अनेक अपने भाग्यवारे भक्तन को साक्षात मधुर स्वरूप सो इहां भोजन को करत अनुभव हू करावे है ।।५७।। कि वा उछलित सुंदर प्रेमवारे वा भक्तन के मनोरथ जानके रसिकवरजी स्वयं उछलित प्रेम होयके अपने भक्त समाज के संग आरोगे हू है ।।५८।। श्री राजके आरोगवे को जितनो समय योग्य है वितने लो वे भाग्यभरे भक्तवर बाहिर बीड़ा तांबुल संवारें हैं कि कोउ और सेवा करत ठहरें हैं समय होयवे पर सगरे भोग को सराय के या राज को आचमन करावे है फिर बीड़ा आरोगावे है बरास हू यामें अर्पण करें हैं और

तांबुल बीड़ा सजाय के वा प्रिय के निकट धरावे है ॥६१॥ जलपान को करवा झारी जी फिर भरें हैं फिर प्राणप्रभु के श्री मंदिर के किवाड़ उघाड़े है अपने जन कि और हू सब प्रभुन को दर्शन करें हैं दंडवत प्रणाम करें हैं -- हाथ दोनों बाँध के प्रभुन के आगे रहे हैं ॥६३॥ ऐसे ऐक घड़ी इहां रहे के फिर किवाड़ मंगल करें हैं शैय्या के पास जायके मनोहर जलपान को पात्र झारी जी राखे है -- तांबुल बीड़ा हू धरें हैं तष्टि धरें हैं गरमी को दिन होय तो मनोहर पंखा हू धरें हैं या प्रकार सूं हृदय सो प्रभुन को पोढाय के वेग ही सांकल लगाय के बाहिर आयके प्राणनाथ की कथा सूं आधो मुहूर्त ठहर के कितनेक भक्तन के संग मिलके शुद्ध स्थल में या महाप्रभु जी के महाप्रसाद को अत्यंत उछलित प्रेम सो लेवे है कितनेक भक्त तो लौकिक व्यवहार को करवे लिये वहां सूं जाय है कितने तो भूमि सेज पर सोवे है घर वारे जे सगरे भाग्यवान है वे तो वा अपने गाम में जे भूखे भक्त होय विनको आदर पूर्वक बुलवाय के विनको भोजन लिवावे है कि परदेश सूं जो आये होय विनको प्रेम सो भोजन लिवावे है ॥६९॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले अष्टचत्वारिश स्तरंगः ॥४८॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥४९॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ एकोन पचासत्तम स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **भुक्ता प्रसाद मश्विलो स्तिष्टं तियदा भोक्तं विशतिपाक**
कुश्धेत दैनिकश्चित्प्रभो भक्तिः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि सगरे सब प्रसाद ले ठहरें हैं तब रसोयी करवे वारो प्रसाद लेवे लिये बैठे तब यदि कोई श्री महाप्रभुन को भक्त भूख्यो जाय है तब अपने लिये जो परोस्यो हतो सो अत्यंत सुजान सुंदरी बहुत मान पूर्वक प्रेम सूं वाकूं परोस देवे है ॥२॥ वा दिन में सो स्वयं लेवे नहीं है कि कछुक बिलंब कर प्राणनाथ को कछुक और प्रसाद बड़े यत्न सो लेवे है यह रीति तो मैंने बड़े गृहस्थी भक्तन की कही है और हू भक्तजन

अपनी शक्ति अनुसार यह सगरो कार्य करें हैं ।।४।। श्री गोकुल प्रभुन के भक्तन को बड़े भक्त तो मन कि वचन कि कृति सूं ही सेवा करें हैं सगरे लौकिक को हू सेवा उपयोगी सिद्धि में लगावे है अनोसर में प्राण प्रिय के श्रीमुख चंद्रमा को निरंतर स्मरण करें हैं श्री राजके लीला समय की सुरत करें हैं कोउ वस्त्र कि भूषण बहुत सुंदर अत्यंत दुर्ल्लभ देखे है बड़े मोलवारो हू होय तो वाकूं अवश्य ही लेके प्राणप्रभुन के अर्पण करवे कूं संग्रह कर राखे है -- समय पर या प्रभुन के निजधाम श्रीमद् गोकुल में पठावे है कोउ उत्तम मीठो सुंदर पकवान कि फल कि कछु और और हू अपने प्रभुनके अपने घर में विराजमान स्वरूप के लिये लेवे है तो श्रीमद् गोकुल में हू या प्रभुन के अर्थ हू लेवे है दिन के तीन प्रहर गुजरने पर उच्छलित हर्ष वारो भक्तवर विश्राम करे पीछे प्राणनाथ को भक्ति सूं उत्थापन करावे है वेग ही जलपान पात्र को ढलायके फिर जल सूं भरके प्रथम जैसे ही या प्रभु के आगे धरे है । सुन्दर मनोहर पान बीड़ा हू भोग धरे है ।।११।। संध्या समय के निकट आयवे पर भक्तवर हू फिर स्नान करे है अथवा विनमें कोऊ एक ही स्नान करे है विनकी जे घर की स्त्रीजन हैं वे तो प्राणनाथ की सेवा के अर्थ न्हावें हैं फिर रसोई को सिद्ध करके प्रिय को अर्पण करें हैं कितने भाग्यवारे हर्ष सों पूर्ण भक्तजन तो प्राणनाथ को प्रिय जो माठ आदि पकवान है सो वेग ही सिद्ध करके प्रभुन को अर्पण करके फिर शैय्या मंदिर में जायके फिर भक्ति सूं चातुरी सों ऋतु अनुसार वा शैय्या पर बिछायत करें हैं -- गरमी के समय में स्निग्ध कि सुन्दर गाढो वस्त्र बिछावें हैं कि शीत विशेष होय तो फिर दोय कि तीन तूल धरावें हैं शीत न होय तो गाढ़ वस्त्र को अथवा महीन वस्त्र को बिछावें हैं मस्तक और सुन्दरता की याकी निर्दोष सुन्दर पाय तकिया कि मनोहर निर्दोष गेंदुवा हू गोला दोय धरावें हैं श्री पलंग के ढांकवे को वस्त्र हू अत्यन्त मनोहर धरावें हैं जलपान पात्र धरवे को सुन्दर चौकी धरें हैं चरण वस्त्र धरें हैं वाके पास मनोहर तष्टि धरें हैं पात्र चूण के धरें हैं तनिया धरें हैं सुन्दर चादर धरें हैं छोटे रूयीदार नीमो धरें हैं अथवा उछलित प्रेम सूं बड़ो नीमो धरें हैं ।।२०।। बड़े प्रकाश करवे वारे दीपकन को हू रचके धरें हैं गरमी में खुले स्थान में जहां पवन सुंदर लगे है वहां पलंग बिछावे है श्रेष्ठ यह भक्तजन वर्षा में कि थोड़े शीत में पवन जहां ठंडो नहीं आवे

वहां बिछावे है ॥२२॥ या प्रकार सूं इहां को सगरो कार्य करके फिर श्री प्राणनाथ जी अब आरोग चुके होंगे ऐसे अवसर को जान के भोग सराय के आचमन कराय के फिर किवाड़ उघाड़े है भक्तजन सब आयके प्रेम सों प्राणनाथ जी को निरखे है -- कितने भाग्यवारे बैठे है कितने ठाड़े रहे हैं कितने मौन गहे हैं कितने गान कर रहे हैं कितने तो प्रियवर की वा वा वार्ता को कर रहे हैं ॥२५॥ सो कृपा सागर श्री प्राणनाथ जी या समय में अपने कृपा पात्रन के प्रति तीन कि चार घड़ी पर्यंत दर्शन देवे है -- यह प्राण प्रभु जी या अवसर के भीतर वा भक्तवरन ने सजाय के दीनी बीड़ी को अंगीकार करें हैं या रीति सूं रात्री जब छे कि सात घड़ी गुजर जाय है तब वे भक्तवर प्राणप्रिय को पोढ़ायवे लिये परस्पर कहे हैं फिर चौकी ऊपर प्रभुन को पधराय के ता पाछे उछलित भाववारे भक्तवर फिर शैय्या पर पधरावे है ॥२८॥ वा शैया जी के आगे चौकी को चरण पोंछवे के वस्त्र को धरके ऐक घड़ी लौ प्रभु को शैया पर विराजमान करके तामें पहले करके राखी पाग को उठाय के प्रथम जाने प्रकार सूं पाग बंधवावे है फिर तनिया पहिरवावे है चूना बरास सूं मिले बीड़ा को आरोगवाय के प्रेम सूं वा महाप्रभुन को पौढ़ावे है आपके बाये भाग में चौकी धरें हैं वाके ऊपर जलपान की झारी धरें हैं वैसे तांबुल बीड़ा धरें हैं पास फूलन की माला कि श्री मुख के पोंछवे के वस्त्र को धरें हैं कि नीचे मनोहर पणही की तष्टी धरें हैं नीचे चरण पोंछवे के वस्त्र को धरें हैं वहां ही छोटी चौकी हू धरें हैं कितने भाग्यवान ता श्री प्राणनाथ जी की मुख्य प्रिया श्री पार्वती बहू जी के हू श्रृंगार धरवे में जो वांछित छोटा लहेंगा अंगीया की भूषण कि मनोहर साड़ी कि काजर की पुड़िया कि बेंदी कि डिबिया कि उछलित उज्वल मनोहर उत्तम श्रेष्ठ भाव विशेष सूं पूर्ण हृदयवारे वे भक्तजन और और हू वांछित वस्तु इहां धरें हैं ॥३६॥ या रीति सूं प्रभुन को पोढ़ाय के वे सुजान कहू एक ओर जाली आदि में रोकके दीपक जागतो हू धरें हैं ता पाछे प्रभुन को दंडवत प्रणाम करके अपने भाव के अनुसार मनसूं वा वा वांछित मनोरथ की विज्ञापना करके किवाड़ मंगल करके वे वा मंदिर सूं बाहिर आवे है तासूं प्रायः पहले ही गाम वारे भक्त आयके कहू इहां बैठे है विनके संग मिलके यह हू आयके बैठे है ॥३९॥ तब घर वारे हू सगरे स्त्री कि पुरुष सगरे हू भक्त इहां आयके बैठे है कि जे व्यवहार करवे कूं

बाहिर कहू गये हते वे हू सब आयके अत्यंत उछल रहे प्रेमसूं बैठे है वहां श्री गोकुल प्रभु के उत्तम भक्तवर रोम हर्ष पूर्वक श्री गोकुलेश प्रभु की मधुर अनेक प्रकार की वार्ता कहे हैं वे सब भाग्यवारे भक्त सुने है -- अथवा श्री प्राणनाथ जी के श्री हस्तकमल सूं प्रगट कियो निर्दोष रस रूप अक्षरन सूं मिल्यो पत्र आवे है कि अथवा अधिकारी जी को पत्र आवे है कि अथवा प्रभुन के कृपा पात्र कोउ भक्तवर को पत्र आवे है तो बड़े आदर सूं लेवे है रोम हर्ष पूर्वक वांचे है बड़े उत्साह सूं वे सुजान भक्तवर बड़ो उछव करें हैं सुंदर मंगल गान करें हैं सुंदर नाचे है बाजा बजावे है मधुर जय जयकार समूह करें हैं ताल मृंदगादी को नाद बहुत होय है बड़े हर्ष सूं प्रेम सूं उछलित हर्ष सूं भेट समूह हू करें हैं ॥४५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले एकोनपंचास स्तरंगः ॥४९॥

तरंग ॥५०॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ पचासमुं स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **श्री गोकुल भगवद भक्तः प्राणाधीशास्य चोक**
कश्चित इतरस्या नगरा भक्तो वा सेवा को वैति ॥२॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि श्री गोकुल सों कि कोऊ और स्थान नगर सूं भगवान प्राणनाथ श्री राजको भक्त कि कोउ सेवक आवे है तब हू यह भक्तवर सगरे ही उछल रहे उत्साह सूं कि बड़े आदर हर्ष कि प्रेम विनती सूं भरे अत्यंत प्रसन्न मुख कमल वारे होयके वेग ही अत्यंत विलसे है प्राण प्रभु जी ने जो प्रसाद दिवायो हो सो लेके वे आये है कि तुलसी माला लावे है कि गुंजा माला हू लाये है कि चरणामृत ले आये है अथवा श्रीराज के श्री मुखारविंद की सुगंधी सो भर्यो अधरामृत संबंधी तांबुल बीड़ी ले आये है कि श्री यमुनाजी को जल ले आये हैं यथायोग्य बांट बांट के वे सगरे भक्तवर उछल रही रोमावली पूर्वक लेवे हैं ॥४॥ कि अत्यंत प्रसन्न होय है कि गावे है कि हसे है नाचे है तब चारो ओर दीपक बहुत जागे है ॥५॥ जामें अनेक प्रकार के लेवे लिवायवे के हर्ष सागर में भक्तगण निमग्न

होय रहे हैं -- ऐसो कोऊ अत्यंत मधुर शोभाभर्यो महाउछव होय है ॥६॥ नित्य तो गान भगवद वार्तादि को दोय घड़ी पर्यंत करके प्रियवर को प्रसाद वा भक्तन को बांट के देवे है कछुक लेवे है वा प्रसाद को ले रहे वा भक्तन को जो हर्ष सागर उछले है सो तो समूह कल्लोल कि आवर्त भमरन सो शोभायमान होवत अत्यंत ही गंभीर उछले है ॥८॥ तब सगरे भक्त अत्यंत प्रसन्न होय के अपने अपने घर में जाय है यह भक्तवर सो सोवे है तो स्वप्न में हू वा महाप्रभु जी को ही देखे है ॥९॥ फिर रात्री के शेष में फिर हू यह भक्तवर सुजान वेग उठके प्रथम कहे सगरे कार्य को वेग ही करें हैं ॥१०॥ श्रीमद् गोकुल में जायवे की इच्छा कि प्रियवर को श्री मुख चंद्रमा के निरखवे की इच्छा कि आपके वा वा कार्य समूहन की सूरत या भक्तन में सदैव ही रहे हैं कबहु नहीं छांडे है रोम हर्ष की प्राणनाथ जी के गुणन को अनुसंधान श्री राज के स्वरूप को अनुभव यह हू या भक्तन कों दिन रैन ही अत्यन्त ही बढ़े है ॥१२॥ और तो बड़ो हू होय कि सुंदर हू होय कि मधुर हू होय तो कबहु या भक्तन के चित्त को हू परस करवे में हू समर्थ नहीं होय शके है तो चित्त में निवास कैसे कर सकेगो ॥१३॥ तथा शास्त्र में जिनको वर्णन आवे है ऐसे जन्माष्टमी आदि दिनों में जे प्रभु या श्री गोकुलाधीश जी के जे उच्छव होय है कि श्री मागशिर की शुक्ल सप्तमी आदि में जे महोच्छव अत्यन्त प्रसिद्ध होय है कि अथवा श्रेष्ठ भक्त महदवरन के जे उच्छव हैं कि जे विनके चित्त के मधुर मनोरथ दिन है कि कोउ वा वा निमित्त को पायके अपने मन सूं प्रकट भये मनोरथ है विन सबन में ही यह भक्तवर उछलित प्रेम सूं सब कछु करें हैं ॥१६॥ विनमें बड़े मोलवारे वस्त्र कि भूषण अर्पण करें हैं कि अनेक प्रकार के मनोहर भोग सामग्री को हू अर्पण करें हैं नाना प्रकार के गान नृत्य हीचको करें हैं -- प्रभुन को जन्म उच्छव तो बड़े ही उत्साह सो सबन सो विशेष ही करें हैं ॥१९॥ इनके घर में अनेक प्रकार को महाप्रभुन के अर्थ मनोहर पाक होय है वामें जलेबी आदि तो अत्यंत मनोहर ही करें हैं वस्त्र हू नवीन मनोहर ही महाप्रभुन को अर्पण करें हैं कि भूषण अनेक प्रकार के बड़े मोलवारे अत्यंत सुंदर ही अर्पण करें हैं गादि तकिया हू निर्दोष बड़ो मोलवारो बड़ो सुंदर मनोहर सुंगधी फुलेल आवे है धूम रहित कृष्णागरू को सार चोवा आवे है श्रेष्ठ कुंकुम रंग सों रंगे धोती उपरेणा हू

करावें हैं मागशिर के कृष्णपक्ष की सप्तमी सों प्रारम्भ कर इनके घरन में गान हीच नाच अनेक प्रतिदिन बढ़तो ही उछले है अनेक प्रकार के बाजा गाजा ताल मृदंग के नाद होय है नगारा गोमुखा भेरी आदि के नाद बैंड बाजा के गर्जन इनके घरन में प्रभुन के अनेक प्रकार के प्रसाद को बढ़ रहे प्रेम सूं लेवे है यह पुरुष कि स्त्रीजन हू भक्ति प्रेम सूं महाप्रभु जी के भक्त पुरुष कि स्त्रीजनन को हू मनोहर अनेक प्रकार के वस्त्र कि मनोहर भूषण हू यथा योग्य ही पहिरावे है श्रीमद् गोकुल में जैसे श्री प्राणनाथ जी समोई गरम जल से स्नान करें हैं श्रीराज के श्री चरण पादुका जी आदि आपके स्वरूप सेव्य को हू वैसे ही पहले फुलेलन सूं अभ्यंग करें हैं फिर समोये सुहाते ताते जलसूं स्नान करावे है ॥२७॥ चंद्र वा कि पिछवायी हू बड़े मोल के वस्त्र की अत्यंत मनोहर ही बांधे है श्री प्राणनाथ जी को अनेक प्रकार के वस्त्र भूषणन सूं शोभायमान करें हैं सगरो सुगंधी द्रव्य अत्तरादि समर्पे है कि रोमवारे तोसपट्टु पामरी मखमलादि सुंदर जे वस्त्र है जिन पर सोना की मोहरे लगी है कि सोना रूपा जरी सूं भरे वैसे बड़े मोलवारे चादर जामा आदि अर्पण करें हैं बहुत प्रकार को भोग सामग्री अर्पण करके आरती हू करें हैं कि द्वारन पर निर्दोष तोरण माला कि केला के खंभ हु रोपे है सगरे स्त्री कि पुरुष भक्तजन सुंदर वस्त्र भूषणन को पहिर के इनके घरन में आवे है ॥३१॥ कुंकुम के रससूं बहुत प्रकार सूं सबन को सेवन होय है वामें विनको मस्तक में सुगंधी फूलेल डारें हैं ॥३२॥ सुगंधी फूल समूहन सूं करी फूलमाला विनके कंठ में पहिरावें हैं विनके मुखन में मिसरी के सुन्दर टूंक कि प्रसाद पकवान भरें हैं तांबूल बीड़ा लिवावे है कि बरास के मोटे-मोटे टूक देवे है कि सबन के मस्तकन में कुंकुम को तिलक लगावे है प्रेम सूं कंठ में कि कपोलन में भीतन में कि द्वारन में उत्साह सूं भरी विनकी स्त्रीजन कुंकुम लगावे है मंदिर में कुमकुम के थापा लगवावे है वे भक्तवर प्रीति सों गावे है नाचे है परस्पर कंठ लगावे है ॥३६॥ विनकी जे कमल मुखी सुंदरी है वे हू हर्ष सूं रोम हर्ष पूर्वक परस्पर गावे है नाचे है कंठ लगावे है उछल रहे प्रेम सूं श्री प्राणनाथ जी के ऊपर भूषण कि धन न्यौछावर करके बहुत वार ब्राह्मण बंदीजन कि मागधन को देवे है उछल रहे उत्साह सो भरे यह बहुत प्रकार सो वैसो दान करें हैं जैसे वे लेवेवारे संपूर्ण मनोरथ होयके उछलित

आनंद सूं भरे ही होवत-फिर कबहु कोऊ कू हू कछु नहीं मागे है फिर हू या महोच्छव के दर्शन करवे कि आशा करें हैं चारों ओर सूं जय जय जय जय जय जय जय ऐसो ही शब्द उछल उछल के विनके कान कि मन में अमृत के समुद्र को वरसावे है राजभोग के लिये जो निर्दोष भक्ष्य भोज्य कि पयपान योग्य कि चूसने योग्य कि चाखने योग्य जो जो सुंदर भोग सामग्री हर्ष सो बहुत सिद्ध कियो है सो या समय में बड़े ही उत्साह सो अनेक प्रकार के भोजन थार कटोरान सूं भर भरके उछलित हर्ष सो जलेबी हू प्राणनाथ को अर्पण करें हैं ॥४३॥ कृपासागर पुरुषोत्तमन के मुकुटमणि श्री गोकुलाधीश प्रभुन के आरोगवे पर वा प्रसाद को सराय के सुंदर आरती वारें हैं कि बरास के फांक सूं मिल्यो सुंदर मनोहर बीड़ा हू अर्पण करें हैं यह भक्तजन प्रेम सो बहुत प्रकार सों भेट करें हैं फिर या राज को वे भक्तवर विश्राम करावे है रसिकवर ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभु जी अपनी श्रीमद् गोकुल को अत्यंत शोभायमान कर रहे हैं तामें श्रीराज अपने जन्म उच्छवादि मधुर लीलान को अनेक प्रकार सों करें हैं वा प्रभुन की करी लीलान को भली भाँति सो जे स्मरण करें हैं विनको इतर अर्थन की स्मृति को लवलेश हू परस करवे में समर्थ नहीं होय सके है गान हीच नृत्य कीर्तनादि जब पूर्ण होय जाय है तब मुख्य भक्तराज श्री नारायण जी आदि के घर में प्रभुन के महाप्रसाद को भोजन करवे लिये उछल रहे अनिर्वचनीय भाव सूं भरे सगरे हू भक्तजन मनोहर धोती उपरना पहिर के आवे है -- श्रीमद् गोकुल में प्राणनाथ जी के मंदिर में जैसे भक्तन के भोजन पात्र पातर आदि में परोसवो होय है वैसे इहां हूं या भाग्यवानन के बड़े आनंद सूं उछल रहे अनुराग सूं तरंगवारे मन सूं मिले चतुर सगरी स्त्रीजन परोसे है ॥५२॥ वामें भक्तजनन को हर्ष समूह सो सुंदर अमृत समुद्र को विजय करवे वारो त्रिलोकी को पावन करवे वारो गान चारों ओर सों उछले है यह भक्तजन बड़े उत्साह कि आदर सो अनेक प्रकार के महाप्रसाद को लेकर उठके हस्त कमलादि को पखार के विनसो दिये सुंदर सुगंधी तांबुल बीड़ा को लेवे है वे भक्तवर वा भक्तन के शिरपर प्रसन्न होयके जाकी सुगंधी प्रसर रही है ऐसे अनेक प्रकार के मनोहर फुलेलन को डारें हैं सबन के कंठन में सुंदर अनेक प्रकार की फुलन की मालान को पहिरावे है या प्रकार सूं अपनी माधुरी सो बैकुंठन को हू तृण जैसे करत यह महोच्छव

सो शोभायमान विनको घर एक महिना पर्यंत कि वासु हू अधिकी शोभायमान होय है वैसे और भक्तन के घर में हू जगत मंगलरूप श्री गोकुलाधीश जी को मनोहर उछल रहे अनुपम आनंद वारो महोच्छव सगरे भक्तन के मनोरथ समुद्रन को पूरण करत बड़े हर्ष सो होय है ऐसे और हू उच्छव प्राणनाथ जी के मंदिर में जैसे होय वैसे बहुत प्रकार सूं उछलित प्रेमवारे वे या भक्तन के घर में हू होय है ।।५२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले पचासतम स्तरंगः ।।५०।।

श्री श्री श्री

तरंग ।।५१।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ इक्यावनमु स्तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **एव मियतावना ही लब्ध वतां पादुकाधस्य**
भक्तानां परमेशितुर वदंतत्सेवनस्य विधाम ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि या प्रकार सूं परमेश्वर या श्री प्राणनाथ जी के श्री पादुका जी आदि सेव्य स्वरूप के प्राप्त होय रहे भक्त जैसे सेवा करें हैं -- सो सेवा को प्रकार इतने सूं जगत में वर्णन कियो है ।।१।। अब प्रथम ही जाकूं विस्तार होय रहयो है -- ऐसे सगरे जगत के शुभ करवे वारे प्रभु के उत्थापन समय संबंधी चरित्रन के प्रकार को हू वर्णन करू हू ।।२।। प्रथम को श्री गोकुलदास नाम भीतरियादास है कि अब को जो ज्ञानी ऐसे प्रसिद्ध जगन्नाथ भीतरिया है सवन सूं पहले ही यह स्नान करके श्री नाथ जी के मंदिर में प्रवेश करें हैं जलघर को जो सेवक श्री गोविंददास है अथवा चतुर जो सोमजी जलघरिया है कि गोपालिया है सो हू प्रथम स्नान करके श्री नाथजी के मंदिर में जाय है ।।५।। सो ज्ञानी जगन्नाथ भीतरिया है सो तो मार्ग की रीति सो सोय रहे श्री नाथ जी को जगावे है ।।६।। या श्री नाथजी के सिंहासन पर जो जल सो भरी जलपान पात्र झारी है वाकूं ठलाय के फिर पान योग्य जल सूं भरके प्रथम जैसे ही सिंहासन पर धरें हैं ।।७।। प्रथम इहां धरे बीड़ान को इहां सूं उठाय के प्रसादिन में धरें हैं श्री

नाथ जी के कंठ में धरायी जो फूलन की माला है वाकूं हू बड़ो करके और स्थल में धरें हैं ता पाछे वेग ही शैय्या के निकट वारी झारी बीड़ा फूलमाला कि और और हू सब उठावे है प्रथम कहयो जलघरिया जब तीनवार शंखनाद करें हैं तब वेग ही किवाड़न को उघाड़े है प्राणनाथ जी के प्यारे श्रीनाथ जी के दर्शन सबजन करें हैं आधीघड़ी दर्शन होय है फिर सब दर्शन वारेन को बाहर निकार के किवाड देके सांकल देवे है वा श्री नाथ जी को भोग समर्पे है तामें सध सिद्ध किये सुंदर मनोहर बरास मिसरी इलायची मिले दूध के पेड़ा भोग धरें हैं शीतकाल होय तो श्रेष्ठ मिसरी धृत कि गेहूँ के चून सू सिद्ध किये सुंदर पकवान तथा फल फूल और हू भोग धरें हैं कि गरमी को समय होय तो बरास मिल्यो कि इलायची कारी मिरची के चूरण सो मिल्यो सुंदर शीतल मिसरी को पना तथा और हू शीतल सामग्री, मीठे पकवान कि वे वे फल कि सुंदर पक्के आंब कि मीठे ईख के खंड कि खरबुजा कि देशांतर को प्रसिद्ध अत्यंत मीठो नासपती की सेव द्राक्षा हरी कि सूखी कि जामिन फल मनोहर कि अंजीर कि अनार कि नारंगी कि फनस की फालसा कि फूट बोर पीलतूद कि टेंटी आमरा अमरूद कि मीठो नींबू -- बिरोजा की फदलीफल कि खीरा कि निर्दोष खजुर ऐसे अनेक फल भोग धरें हैं श्री प्राणनाथ जी तो कोइ दिनन में तो शंखनाद को सुनके ही श्री मुखारविंद में विराजमान बीरी को वेग ही तृष्टी में पधराय के आसन सो आप उठे है कि कोई दिनन में तो स्वतंत्र इच्छावारे श्री प्राणनाथ जी श्री नाथ जी के भोग सरवे पर पीछे आप उठे है कितने दिनन में तो यह श्री महाप्रभु जी अपने भक्तन को सुखदान करत ही अपने आसन पर ही बिराजमान ही होय है ॥२३॥ इन दिनन में भंडारी विश्नुदास जी आयके श्रेष्ठ फूलन कि माला श्री राज को देवे है श्री प्राणनाथ जी हू दोनों श्री हस्तकमलन को पसार के वाकूं लेवे की इच्छा करें हैं सो लेके क्षणेक दोनों नयनो पर धर राखे है कोउ समय में तो कृपा समुद्र श्री राजाधिराज तो अपने पास बैठ रहे कोइ बालक को एक माला दे देवे है सोहू वा माला को मस्तक में धरके या प्रभु को प्रणाम करके अत्यन्त उछल रही प्रसन्नता सूं ही वाकूं लेवें हैं फिर भंडरी जी अनेक प्रकार के बहुत फूल देवे है सो हू राजाधिराज लेवे है या मनोहर समय में सुंदर भक्तजन कि मृगलोचना सुंदरी हू उठके ठाड़े ठाड़े ही या श्री प्राणनाथ जी के शोभासागर

के तरंग समूहन को पान करें हैं ।।२६।। ता पाछे श्री प्राणनाथ जी अपने आसन पे उठके विराजे है उछलित कृपा सूं श्री मुखारविंद में विराजमान बीड़ी को उछल रहे भाग्यन सूं शोभायमान कोऊ सावधान भक्त के हाथ में देके वा आसन पर ही विराजे रहे हैं तब सगरे भक्त कि सगरी मृगलोचना सुंदरी हू जय जयकार के शब्द समूहन सो शोभायमान श्रीमुख चन्द्र वारे होवत टकटकी लगायके नैन कमलन सूं श्री राज के श्री अंग कमल संबंधी सौंदर्य रस के प्रवाहन को पान करें हैं सो श्री प्राणनाथ जी अहं पूर्वीक कि पहले हों कि पहले हों ऐसे उतावले अपने श्री अंगन सूं कि स्वरूप सूं वा सगरे भक्तन में रस सागरन की वर्षा को करत ही कोउ भाग्यनवारेन में श्रेष्ठ भक्त के संग मंद मुसकान सो शोभित श्रीमुख होवत मधुर वार्ता को करें हैं -- उछल रहे श्री अंग की शोभावारे श्री राज कोऊ भक्त सूं गूढ़ भाव भरी नकल टेक करें हैं कोउ समय में तो संस्कृत वाणी सूं उच्चार करत प्रभु जी उछलित मनोहर भाग्यवारे कि नम्रता सूं भली भांति सो नम्र अंगवारे कितनेक पंडितन को समाधान करें हैं विनके प्रति कृपा सागर जी सत्कार समूह पूर्वक वस्त्र की द्रव्यदान करके अत्यंत दूर वर्तमान विनके घरन में जायवे लिये विनको विदा करें हैं ।।३२।। कितनेक राजाश्रित राजसी जन आवे है कि कितने प्रतिष्ठित आवे है वैसे कितने तो म्लेछ राजेश्वर अकबर कि जहांगीर के सेवक आवे है वे आयके प्रणामादि करें हैं विनको हू गुण समूहन के सागर कि परम चतुरवर श्री महाप्रभु जी प्रसाद बीड़ा कि अपनो प्रसादी वस्त्रादि के दान सत्कार पूर्वक विदा करें हैं यह सुंदर वर कमलनयन श्री महाप्रभु जी कबहु आये माथुर ब्राह्मणन को हू प्रसाद देकर विदा करें हैं ।।३४।। मथुरा पंड्या नाम के अपने निर्दोष ज्योतिषी को कि त्रिपाठी जयंती नाम सो प्रसिद्ध ज्योतिषी को हू सुजानवर श्रीराज जी कोइ समय में कछु पूछवो होय तो सो पूछके प्रसाद देके विदा करें हैं -- वैसे व्यास सींह जी वैद्य को हू प्रसाद देके विदा करें हैं -- ऐसे श्री महाराजाधिराज श्री महाप्रभु जी महावन के चौधरीन को हू महाप्रसाद देके विदा करें हैं कृपासागर भगवान श्री राज जी प्रायः वावा भक्तन के संग वार्ता करें हैं सदैव भट्टन के संग कि अपने जाती वारेन के संग कि पंडित मधुसूदन भट्ट भाणेज के संग बड़े सुजान कृष्णराय जी भाणेज के संग वार्ता करें हैं कि गोवर्द्धन भट्ट के संग कि मामा के पुत्र गोपीकांत

भट्ट के संग कि मेरे संग वार्ता करें हैं कि विट्ठलभट्ट के संग की गोष्ठी शाल ऐसे प्रसिद्ध जगन्नाथ भट्ट के संग वार्ता करें हैं ॥४०॥ जाकूं श्री राज ने स्वयं योग्यतादान करी है वाके अनुसार सुदामा नाम ब्रह्मचारी ब्राह्मण के संग प्रायः आनंद सूं ही कौतुक नर्म नकल टेक बात करें हैं वाके ऊपर कमल नयन श्रीराज अत्यंत प्रसन्न होय है कि हंसे हू है ॥४२॥ मनोहर सुंदर सारंगी को लेकर के ध्यानदास जी वहां वहां वैसे भलि-भाँति सो बजावे है या ध्यानदास जी को भैया हू चतुरदासजी वा ध्यानदास के अनुकूल चलत ही सों सारंगी बजावे है तब अनेक प्रकार के तान उदय होय हैं तब गंभीर अपार महामाधुरी समूह सो प्राणनाथ जी को जाने प्रसन्न कर दियो है ऐसो रागरंग अत्यंत ही प्रसरें हैं वा समय को रागरंग अब हू जाग रहयो ही अत्यंत प्रसर रहयो है ॥४५॥ तब अनेक कविराजोने रचना किये कि चिद्रूप के मुखमर्दन कि तुलसी मालादि के रक्षारूप श्री महाप्रभु जी के यश के अनेक प्रकार के संस्कृत की भाषा के श्लोकादि प्रकट होय है कितने हरिदास बोहरा आदि तो भाषा दोहा छंद कवित्त सवैयादि पढ़े है क्षत्री जो मेहरा जाति के रायदास है कि ईश्वरदास है कि क्षत्री हरिदास है कि गाड़ीवान संतन नाम है कि और हू वे वे उछल रहे प्रेम सूं भाषा के छंदन को गावे है ऐसे पढ़ रहे विनको मनोहर मंदमुसकान वारे श्री मुखारविंद सो कृपासिंधु श्री प्राणनाथ जी अनुमोदन करें हैं कबहु यह श्री महाप्रभु जी अधिकारी जी को बुलाय के कबहु तो कछुक करवे योग्य कार्य प्रकट करें हैं कबहु गुप्तरीति सों हू कहे हैं ऐसे आधी घड़ी की वासू ही आधी कि आधी घड़ी इहां विराजमान होयके ऐसो विहार करें हैं ॥५२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले एकोनपंचासत्तम स्तरंगः ॥५१॥

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री

तरंग ॥५२॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ बावनमों स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ शीते तूल युतं परिहित भुवार्थ किं शु**
चारु नीमाख्यंब तवस्त्रे हू स्व कंचुक श्रीमान ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं,, कि ता पाछे शीतकाल होय तो पहिरे मनोहर रुईदार डगला को उतारके नीमा नाम वारे छोट कंचुक को श्रीराज पहिरे हैं ॥१॥ श्री मस्तक में चंचल अंचल वारे उपरना को चातुरी सों बांधके उच्छलित विलास सागर कमलनयन श्री प्राणनाथजी जनेऊ को दक्षिण कर्ण में लपेट के मंद हास्य पूर्वक कछुक कहत कहत प्रथम जैसे एकांत घर में पधारें हैं ॥३॥ शीतकाल न होय तो नीमा पहिरे हैं, कि केवल उपरना ही ओढ़के विलासपूर्वक पधारें हैं ॥४॥ या अवकाश में श्रीअंग सेवक सुजान खवासजी तो प्रथम कहे प्रकार सूं यथायोग्य वेगा वेगा तेल शय्या को तिवारी में, कि आंगण में, कि कहुं अंत भली प्रकार सो सजावे है तथा श्री चरण पखारवे में, कि कोगला आचमन आदि में जो योग्य जलपात्र पीतल के कलशादि हैं विनको सजावे है, कि पीढ़ा के पास महीन माटी जल सीकन के टूक यह धरे हैं फिर सावधानी सूं दोय बीड़ा सजावे है भक्तवर तो, कितने मिलके बैठे हैं या अवकाश में गुप्त रीति सों प्राणप्रिय की मधुर वा वा वार्ता को कहे है और, कितने भक्त तो पहले नयनन सों लिये जे श्रीराज के श्रीमुख चन्द्रमा सूं उछल रहे शोभा रूप अमृत के समुद्र हैं विनको अब चित्त रूप मुख सों पान करें हैं और, कितने भक्त तो जे सेवा लीनी है विनमें ही सावधान होय रहे हैं और, कितने तो प्रिय के गुणगान परायण हैं और, कितने तो विनके सुनवे में ही सावधान हृदय वारे हैं और, कितने तो वेगावेगी खिरक में जायके बांस के पात्रन सूं श्रेष्ठ गोबर कि उपला समूहन को लावें हैं, कितने श्रेष्ठ भाग्य भरे तो अंगीठी के श्रेष्ठ छोटे-छोटे काष्ट के टूंक समूह लावें हैं और, कितने तो कोला समूह लावें हैं और, कितने तो कुवा को जल कलशा भर-भर लावें हैं और, कितने धन्य भक्त तो श्री यमुना जल भर-भर लावें

हैं ।।१३।। श्री गोवर्द्धन सूं, कि और गाम सूं गाड़ा भर भर लायके नाव पर चढ़ायके इहां लाये जे गेहूं, कि चावर आदि अन्न है विनको, कितने भक्त बेटा बेटी बहू स्वजन संबंधी संग जाय जायके वा वा स्थान सूं अनेक प्रकार के पात्रन में भर भरके बड़े उत्साह सूं शिरन् में धर धरके बारंबार वाके भंडार में डारवे लिये ले आवें हैं -- ऐसे आय रहे, कि वेगा वेगी जाय रहे विन भक्तन को जो मनोहर दीर्घ हू मार्ग है सो अत्यन्त ही शोभायमान होय है विनके अमूल्य आभरण समूह, कि श्रीअंग, कि वस्त्रादिकन की शोभा सूं सो मार्ग हू चमकनो मनोहर होय जाय है, कि विनके कोंधनी मणी जटित नेपुर आदि सूं झनकार वारो होय जाय है विनके बरास कस्तूरी, कि फूलन की माला कि चोवा आदि सूं अत्यन्त सुगंधी होय जाय है ।।१८।। धोती की सेवा को अधिकारी जो माधवदास सुजान ब्राह्मण होय, कि अथवा कोउ और होय तो सो हू प्रतिदिन ही श्री प्राणनाथजी की धोती उपरना को, कि कोउ और हु वस्त्र होय तो वाकूं हू मोहना नाम धोबी के हाथ में श्रृंगार आरती के समय में धोयवे लिये देवे है ता पाछे सो माधवदासजी, कि कोउ और ब्राह्मण प्रसाद लेके ता पाछे वा वस्त्र पखारवे के घाट पर जायके स्नान करके सुन्दर धोये धोती उपरना वस्त्र सबन को गीलो ही लेके प्रभुन के मंदिर में लायके चतुराई सूं अटारी के ऊपर धूप में सुखावे है वहां वहां डारे है वे जब सूख जाय हैं ऐसे अंग पोंछवे के वस्त्र को, कि धोती उपरना को घड़ी करके उनकी थेली में धरके स्थान में धरे है फिर स्नान के अवसर में वा स्थान सूं लायके प्रभुन के पास धरी चौकी पर धर राखे है -- यह सेवा याकी है सो यामें ही सावधान होय रहे है ।।२५।। जो सोरोंदास है, कि जो सींहा जी है, कि वैसे और हू यह सब श्री प्राणनाथजी को तैलाभ्यंग करवे लिये वहां तैयार रहें हैं -- तिवारी में, कि आंगण में, कि कहुं और और ठौर में हू, कितनेक भक्त बैठे रहें हैं उच्छलित भाग्य वारे भक्तजन तो चणा हरेन की फली, कि (बूट) तथा कच्ची केरी, कि अदरख, कि टेंटी के फल, कि इमली इनको यथायोग्य सभार रहे हैं, कितने भक्त तो फूलों में, कि अनेक प्रकार की फूल मालान के करवे में तत्पर हैं या प्रकार सूं जे जे सेवा कही है, कि जे नहीं कही है वा वा सेवा में अबकी और और समय में हू सावधान रहे हैं यह सगरे भक्त सुन्दर नीमा जामा पहिर रहे हैं, कि अत्यन्त बड़े मोल वारी पागें

बांध रहे हैं सुन्दर उपरेना, कि जामा नीमा के सुन्दर श्रेष्ठ धोती, कि कमर पटका हू धर रहे हैं -- काश्मीर देश में सिद्ध भयी सुन्दर रोम वारे जामें सोना की मोहरें लगी हैं ऐसे अनेक रंग वारे मनोहर बड़े मोल वारे प्रकाश भरे पामरी की तोस पटु पहिर रहे हैं, कि रुईदार रेशमी नीमा डगला हू बड़े मोल वारे पहिरे हैं ॥३२॥ तथा अनेक प्रकार की बड़ी मणी मोती हीरादि सूं जटित सुन्दर चमकती मनोहर मुद्रिका पहिर रहे हैं यह सगरे सेवक दास उच्छलित अनुपम भावन सूं भरे हैं, कि बड़े भाग्यवान हैं सब सेवा में सावधान हैं, कि विनकी स्त्रीजन हू सब सेवा में परायण हैं सुन्दर बड़े मोल वारे रेशमी वस्त्र पहिरे हैं श्रीअंग सुन्दर हैं अपसरान को हू विजय करें हैं काजर सो जिनके नयन रंगीले हैं, कि सुन्दर फुलेलन सूं जिनके केश भरे लसें हैं ॥३५॥ श्रृगार रूप श्रेष्ठ रस की जे महालक्ष्मी हैं, कि लक्ष्मी को हू जे विजय करें हैं सुन्दर मनोहर छोटे लंहेगा जिनके मनोहर लसें हैं, कि डरे हरिण जैसे जिनके बड़े नयन हैं, कि उछल रहे वक्षो पर कमल कली सूं शोभा भरे निर्दोष बड़े मोल वारे अंगियान को जो धारें हैं, कि जे परम कोमल अंग वारी हैं, कि सगरे भूषणन को जे पहिरे हैं, कि वा भूषण संबंधी मणि समूहन के निर्मल शोभा समूहन सों जे लोकन को चित्रित कर रही है, कि कोंधनी, कि नेपुरन सों जे मार्ग को हू झनकार वारो करे है, कि जे प्रियतम प्राणवल्लभ के गुणगान रूप अमृत के समूहन सों कानों को हू शीतल कर रही है, कि जिनमें उत्साह सागर अत्यन्त बढ़ रहे हैं, कि प्रसन्न जिनके मुख हैं, कि उछल रहे रोम हर्ष समूह सूं जिनको श्रीअंग अलंकृत होय रह्यो हैं, कि चित्त बचन, कि स्वरूप सूं श्री प्राणनाथजी के छोटे मोटे सब कामन में उच्छलित हर्ष सूं सब ही लगे है के प्राणनाथ के स्वरूप रससागर में सदा जे अत्यन्त निमग्न रहें हैं, कि फूल, कि अन्न, कि काष्ट, कि गोबर, कि उपला समूह, कि कोयला, कि शीला, कि वैसे और और हू अनेक प्रकार के पात्रन सूं डलान सूं भर भरके दोनों हाथन सूं, कि शिर सूं उठाय उठायके बड़े आदर सूं प्रभुन के वा वा भंडारन में, कि ले जाय रहे जे भक्त हैं जे पुत्र स्त्री बेटी बहू दासादि सूं मिले हैं विनकीपंक्ति हू अत्यन्त मनोहर ही शोभायमान होय रही है अहो जे पंक्ति मनोहर वस्त्र, कि भूषणन सूं, कि प्रेंम के तरंग समूहन सों, कि उत्साह, कि माधुरीन सों हू, कि माहात्म्य, कि ऐश्वर्य, कि पवित्रता, कि चातुरीन सों श्रीमुख

चन्द्र मंडलों के उछल रहे हर्ष समूहन सों, कि हास्य, कि हर्ष, कि नकल टोकन सूं, कि सबन सूं पहले पहले चलवे के उत्साहन सूं गानन सूं बड़ी भाग्यवारी है, कि जाकूं सब जन वंदना करें हैं, कि पूजा करें हैं, कि सराहना करें हैं ऐसी सब सेवा परायण भक्तन की पंक्ति शोभायमान है ता पाछे भीतरियाजी श्रेष्ठ सेवक उठके मंदिर में जायके श्री गिरिधारीजी के आचमन करायके पहले धरे भोग को वेग ही सरावें हैं ॥४८॥ तांबूल बीड़ी अर्पण करें हैं, कि फूलन की माला नवीन पहिरावें हैं फिर वेगा, किवांड़ उघाड़ें हैं तब वेग ही सगरे भक्त श्रीनाथजी को दर्शन करें हैं गरमी के समय में श्रीनाथजी के आगे चिरपर्यन्त पंखा होय है दोय घड़ी पर्यंत श्रीनाथजी को दर्शन भक्ति सूं सब भक्तजन करें हैं ॥ भीतरिया हू सब नहायके आयके अपनी अपनी सेवा में सावधान होय जाय हैं ॥ श्री प्राणनाथजी नहायकें पधारें तब हमको अपने सब कार्यन में रंच हू विलंब न होय ऐसे हृदय में सब डर रहे हैं ॥५३॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले बावनमों स्तरंगः ॥५२॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥५३॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ त्रेपनमु स्तरंगः लिख्यते ॥

शलोक -- **भगवांस्तु शौच संदनान्निर्गम्य सविभ्रमंचतुः खंडयां**

उपविशातिपीहमनु सक्षाल्यते यांध्रपंकजे प्रावतुः ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि भगवान श्री गोकुलाधीशजी एकांत घर सूं बाहिर पधारके विलास पूर्वक चौखंडी में पीड़ा पर विराजमान होय है, कि प्रथम जैसे अपने चरणकमलन को पखारें हैं ॥१॥ प्राणप्रियजी प्रथम जैसे कोगला, कि आचमन हू करके तैलाभ्यंग, कि सेजा के निकट पधारें के छोटी धोती पहिरे हैं श्रीमुख कमल में बीड़ी को लेकर उठके ठाड़े होवत ही विलास समूह पूर्वक वेग जनेऊ को कमर में बांधके वा पीड़ा पर विराजमान होय हैं के वहां दंडवत प्रणाम करके नम्रता समूह सों शोभायमान

जो भक्त समूह हैं सो उत्कंठा सूं भर्यो होय के नयनन सूं या श्री प्राणनाथ के श्री मुखचंद्र सूं उछल रहे हैं अमृत के समुद्रन को पान करवे लिये श्रीराज के चारों ओर ही विराज रहे, कि उछल रहे उत्कंठा सूं परवश होय रहे मनोहर असंख्यात कमल लोचना सुन्दरीन के यूथ तो कछुक हर्ष सों वैसे वैसे उठके ठाड़े होवत ही प्राणनाथ के सुन्दर मंद हास्य सूं जटित विलास भरे कटाक्षपूर्वक वचनन को नयन रूप कानन सूं इच्छानुसार ही निःशंक होयके पान करें हैं अहो या प्राणनाथजी को अत्यन्त मधुर निवारण स्वरूप तो वा सुन्दरी यूथ के चित्त, कि नयन, कि सुखन को जल को बरसायवे वारो ही अत्यन्त कर देवे है, कि वे सब आनंद के आंसून को बरसावें हैं ॥८॥ क्षत्रियन में श्रेष्ठ जहां कहां मेहरा ऐसे प्रसिद्ध जो पुरुषोत्तमदास है, कि श्री पंचोली मालजी है, कि सो मैं कल्याणभट्टजी हू यह सब प्राणनाथजी के अत्यन्त निकट ही बैठे हैं और हू जे प्रसिद्ध राजसी जन हैं, कि जिनको श्री प्राणनाथजी के निकट बैठवे की योग्यता मिली है यह भाग्य भरे सब हम प्राणनाथजी के निकट बैठवे को प्राप्त होय हैं सिंहाभाई कि सोरोभाई, कि और हू जे अभ्यंग करवे में चतुर भक्त हैं वे भक्त वा प्रिय के तैलाभ्यंग को प्रथम कहे प्रकार सूं तब इहां वे राजसी भक्त, कि पुरुषोत्तमदासजी, कि पंचोली जी, कि हों कल्याणभट्टजी यह सबकी हों अत्यन्त प्यास भरे होयके श्रीराज के श्रीमुख चँद्रमा सूं उछल रहे मंद मुसकान भरे स्वादु दीर्घ वचनामृत प्रवाहन को प्रसर रहे कानन सूं पान करवे लिये या श्रीराज सों कछु पूछें हैं ॥२४॥ तब उछल रहे अतुल कृपा के सागर उदार चित्त वारे श्री प्राणप्रिय.जी विलास समूह पूर्वक जिनकी अतुल माधुरी, कि उत्कर्षता, कि गंभीरता केवल अनुभव सूं ही जानी जाय है ऐसे अनेक प्रकार के रसभाव हास, कि उपहास, कि परिहास नकल टोक सूं भरे ऐसे श्रीमद् भागवत के प्रसंग, कि और हू वे वे मनोहर सर्वोपर विराजमान वा वा प्रसंग रूप समुद्रन को हम सबन कूं पान करावें हैं ॥२७॥ ता पाछे अभ्यंग के होवत में ही श्री आपको सुजान सो खवासजी प्रथम जैसे ही दूसरो बीड़ा हू सजायके लावें हैं ॥२८॥ श्री प्राणनाथजी चर्वित पहले बीड़ी को लेवे लिये उछल रही नम्रता विशेष पूर्वक अनुराग समूह सों आयके निकट ठहर रहे कोई उच्छलित भाग्य वारे सेवक भक्त के सजाये अंजुली में वाकूं उच्छलित कृपा सों निरखके देवें हैं ॥२०॥ सो भाग्यवान तो

अपने प्रिय या महाप्रसादी बीड़ा को लेकर प्रभुन को दंडवत प्रणाम करके थोड़ो सो सरक के उठके ठाड़ो ही होवे है, कि बैठ जाय है या श्रीराज के श्रीमुख पूर्ण चंद्रमा सूं चारों ओर बरस रहे निर्मल अमृत को नयनकमल रूप अंजुली सूं पान करें हैं अपने पास बैठ रहे आदर पूर्वक अंजुली पसार के मांग रहे भक्तन के प्रति कछुक कछुक वासूं ले लेके देवें हैं वाकी सगरो तांबूल चर्वित अपने लिये राखें हैं उछल रहे अनुराग समूह सों वासूं लेके उछल रहे रोम हर्ष पूर्वक, कि आनंद के आंसू समूह पूर्वक अपने मुख में धरें हैं सो सुजान पाछे घर में जायके अपने सगे संबंधीन के प्रति, कि और हू संबंधीन के प्रति कछु कछु बांटके देवे है ता पाछे यह श्री प्राणनाथजी प्रथम जैसे उछल रहे विलास समूह पूर्वक खवासजी ने लाये समोये जल सूं प्रथम जैसे चातुरी सूं धर राखी स्नान की चौकी के ऊपर स्नान करें हैं स्नान करिके पास धरी दूसरी मनोहर चौकी के ऊपर धोती की सेवा परायण विष्णुदासजी ने, कि सुजान माधवदासजी ने धर राखी थैली को देखके वासूं विलासपूर्वक प्रियवरजी अंग वस्त्र को लेकर श्री अंगन को पोंछें हैं फिर विलास पूर्वक सुन्दर धोती को पहिरे हैं, कि उपरना को हू ओढ़े हैं ता पाछे पीढ़ा पर विराजमान होयके सुन्दर कुमकुम सों मिले चंदन सों श्री मस्तक भुजा, कि हृदय आदि अंगन में मनोहर ऊर्द्धपुण्ड्र तिलकन को करें हैं ।।३१।। तब खवासजी अपने मुंढ बंधाके अंचल में स्थित सुन्दर मणी, कि हीरा सूं प्रकाश भरी सोना की दोय मुद्रिका खोलके सो सुजान चौकी के ऊपर, कि जलपात्र के ऊपर वेग ही धरें हैं कबहू तो कोउ बड़भागी भक्तवर ने, कि कोई अधिक रसभाव सूं भरी मृगलोचना सुन्दरी ने सोना गुंजा कि मणि मोती आदि की माला, कि सोना की बड़े मोल की अद्‌भुत सुन्दर श्रीहस्त कमलन की दोय सांकल कि रत्न हीरा जटित सुन्दर पदक, कि कोऊ वैसो और ही आभरण सुन्दर समर्पण करे है वाकूं हू सो खवासजी इहां चौकी के ऊपर ही धरे है ।।३४।। प्रेम कृपा, कि गुणन के सागर श्री प्राणनाथजी मंद हास्य सूं मुसकान भरे वदन कमल सों शोभायमान होवत विलासपूर्वक रस सों या सबन को ही शोभायमान दक्षिण हस्त कमल सों अंगीकार करें हैं सो प्रियवर जी वा सगरे भूषणन को श्रीकंठ हृदय, कि अंगुली दोनोंन में वैसे वैसे और और हू अंगन में वा भूषणन को धारण करें हैं ।।३६।। सो भक्ति वारो भंडारी विष्णुदासजी, कि अथवा अत्यन्त

बड़भागी कसुभाई, कि कोऊ और भाग्यवान को सो जनादर्नदास ताते जल सूं भरी पीतल की कलशी को लेकर पहले आगे चले है तामें प्रभुन के पधारवे के मार्ग को रोक के जे प्रभुन के भक्त विराज रहे हैं जे प्राणनाथजी के श्रीमुख कमल संबंधी रसपान के लोभ भरे नयन वारे हैं ।। विनको वा मार्ग सूं मीठे वचनन सूं वेग ही कछुक सरकतो हू जाय है ।। तामें जे वाछल्य रस की चतुरता, कि मधुरता, कि सागर है, कि जे प्रियवर श्री चरणकमल को क्लेश न होय जाय या प्रकार के संदेह सूं अत्यन्त कायर हैं ऐसी जे भलीबाईजी, कि राजबाईजी हैं, कि वैसी और हू जे भाग्यवती सुन्दरी हैं सो सावधान नयन, कि मन वारी होयके पहले जायके दोनों हाथन सूं, कि आंचलन सूं, कि विशेष कहा कहें, कि पलकन सूं, कि नयनकमलन सूं करोड़न प्राणन सूं हू प्यारे या श्रीराज के मार्ग को भली भांति सूं संमार्जित करके, कि सुधारके ही राखें हैं ।।४३।। ता पाछे श्री प्राणनाथजी अपने भक्तजनन को आनंदित करत अपने पीढ़ा सूं उठें हैं तब सुन्दर वाछल्य भरे हृदय वारे भक्तन के मुख सों प्रभो सदा जीव जय जय ऐसो जो सुन्दर मंगलमय ध्वनि है सोहू उठे है, कि उदय होय है ।।४४।। तब सो श्री प्राणनाथजी निर्दोष मीठे मीठे मंद हास्य रूप अमृतन सूं, कि नयनकमल सूं उछल रहे कृपा समुद्र के तरंग समूहन सूं कमल लोचना सुन्दरीन को, कि भक्तन को हू सिंचन करत चले है ।।४९।। तब श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधार रहे या प्राणनाथजी के, कि भक्त समूह के, कि चंद्रमुखी समूह के प्रसर रहे अत्यन्त मनोहर पवित्रता की माधुरी विलास कांति सूं चतुरता सुन्दरता, कि रस मंद हास्य आदि सूं, कि हर्ष, कि वस्त्र आभूषणन की प्रभा समूहन सूं वा मार्ग रूप आकाश में स्वभाव सूं सुन्दर कोई इन्द्र धनुष ही उदय होय है ।।५१।। अहो मनोहर रस सुन्दरीन के एक समूह के हू विलास जाल में गिर रहे यह प्राणप्रभुजी एक चरण सूं और चरण धरवे में समर्थ होय सकेगो का ? किन्तु नहीं होय सकेगो परन्तु आगे आगे वारो जो सुन्दरीन को प्रिय समूह है सो अपने विलास रूप जाल में डारवे लिये बल सूं या प्राणनाथजी को यदि आकर्षण नहीं करे तो पहले जाल सूं एक चरण हू आगे नहीं चल सके परन्तु आगे जो चले है सो आगे वारे सुन्दरी समूह या प्रिय को खेंच लेवें हैं यह भाव है ।। अहो सो प्राणनाथजी कोऊ सुन्दरीन के आकाश को परस कर रहे तरंग समूह वारे रस सागर में निमग्न होयके फिर निकस सकेगो

का, किन्तु नहीं निकस सकेगो परन्तु और आगे वारी वे सुन्दरी यदि या प्रिय के चित्त रूप हस्तपाश को उत्कंठा रूप हाथन सूं पकर के बड़े विस्तार वारे वा रस सागर सूं आकर्षण नहीं करें, कि खेंचें नहीं तो वासूं निकरवे में कैसे समर्थ होय ॥५४॥ अहो या प्रिय को, कि वा कमल लोचना सुन्दरीन को आपस में जो नयनन को मिलनो रूप निमर्याद हर्ष सागर समूह प्रसरे है वाकी माधुरी को दूसरो जानवे में को समर्थ होय सके है अपितु कोई नहीं होय है अहो चल रहे गुणसागर श्री प्राणनाथजी अपने प्रेम कटाक्ष नाम वारे चिंतामणीन के समूहन सूं वा सुन्दरीन के जा जा अंग को उच्छलित आदर पूर्वक अलंकृत करें हैं ॥, कि जा अंग पर श्रीराज के प्रेम कटाक्ष लगे हैं सो सो अंग ही नाचे है, कि उछले है, कि प्रसन्न होय है, कि अत्यन्त गान करे है, कि उच्छव हू करे है, कि गर्व भर्यो हू होय है, कि मत्त होय जाय है, कि स्पष्ट कूदे है, कि अधिक हंसे है, कि आनंद के आंसून को बरसावे है, कि रोमहर्ष वारो होय है, कि अपने को धन्य हू माने है, कि सर्वोपर ही सो विराजमान होय है अहो को जानें सो चतुर अंग और हू का का करे है, कि कैसे कैसे करे है ॥५८॥ तब झर रहे करोड़न रस सागरन सू प्रकाशमान प्रिय के वा चरण कमलन को, कितने भक्त तो प्रणाम करें हैं और, कितने भक्त तो श्रीराज के उछल रहे उज्ज्वल सुगंधी वारे, कि चंद्रमंडल को हू तृण जैसे करवे वारे श्रीमुख कमल को ही निरखें हैं ॥५९॥ और, कितने भक्त तो श्रीराज के पीछे ठहरें हैं तासूं अपार, किरण भरे, कि उच्छलित अर्बन रस सागर वारे पीठ को ही निरखें हैं और, कितने भक्त तो श्रीराज के गति की शोभा समूह में और, कितने तो श्रीराज के मंदहास्य संबंधी श्रेष्ठ अमृत सागर में विहार करें हैं ॥६०॥ कितने भक्त तो भ्रुवों के विलासन को विचार करें हैं और, कितने तो धोती उपरना के चमत्कार को विचारें हैं और, कितने तो वा श्रीराज के अत्यन्त मनोहर ऊर्ध्वपुंड्र तिलक के ऊपर अपने ऊंचे सर्वस्व को हू अत्यन्त वार डारें हैं, कि या प्राणनाथजी के ही होयवे सूं बढ रही है शोभा जाकी अपनपो कोहू वार डारें हैं तथा वा प्रिय सूं वैसी वारवे योग्य और बड़ी वस्तु के न होयवे सूं अपने मन में अत्यन्त क्लेश को हू पावें हैं ॥६२॥ और, कितने भक्त तो कोई कारण सूं अपने घर में ही ठहरे हते वे भाग्य वारे बड़े यत्न सूं दौड़त ही आयके या प्रिय को पायके वेग ही मनोहर

याकी शोभा को नयनकमलन सूं पान करें हैं ॥६३॥, कितनी भाग्य सूं शोभा भरी सुन्दरी कृपा रस सागर श्री प्राणनाथजी स्नान करके श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधार रहे हैं यह सुनके श्रीराज के श्रीमुख चंद्रमा के निरखवे लिये उच्छलित उत्कंठा समूह सूं भरी, कि मार्ग में गिर रहे हैं विभूषण जिनके ऐसी वे रसिका मन जैसे अति दौड़े हैं, कितनीक सुन्दरी तो कोई कारण सूं विलंब हू कछु हू करके आयके पधार रहे हैं श्री प्राणवल्लभ को निरख के अपार, कि अनेक प्रकार के ऊंचे तरंग रंग वारे आनंद के सागर में विहार करें हैं, कि मग्न होय हैं, कि सुन्दर तरें है, कि अपने को कृतार्थ हू जानें हैं ॥६६॥, कितनी सुन्दरी तो कोई के संग कहूं कोई प्रकार सूं कछुक विलंब कर रहे मनोहर वर प्यारे को वेग ही पायके या प्रिय के मंदहास्य सों शोभायमान श्रीमुख चंद्रमा को दोनों नयनन सूं पान हू करके अपने विलंब करवे को निंदा करें हैं, कि प्राणनाथ कें पधारवे में वैसे उपकार करवे वारे वा प्राणनाथजी के विलंब करवे के कारण दोनों चरणन को नमन करें हैं, कि अत्यन्त स्तुति हू करें हैं ॥६८॥ ऐसे सुन्दर भाव विलास वारे श्री प्राणवल्लभजी जगमोहन नाम वारे घर को, कि भंडार को अतिक्रमण करके, कि विनसों आगे पधारके गली में भक्तजन ने लाये ताते जल सूं श्री चरण कमल को पखारके मनोहर जलघर में पधारके श्री गोवर्द्धन धारीजी के मंदिर में उदार लीला वारे यह प्रभुजी मृगलोचना के मन को जवर सूं हरत ही पधारें हैं ॥७०॥, कितने तो श्रीराज के मुखचंद्र को निरखें हैं और, कितने तो मनोहर श्री चरण कमलन को निरखें हैं और, कितने तो विशेष विलास भरे नयनन को नरखें हैं, कि और भक्त तो अमृत के समुद्र को विजय करवे वारी मंद हास्य की माधुरी को निरखें हैं और तो मनोहर भ्रुवों के विलासन को निरखें हैं और भक्त तो मुक्तामणी जटित कुंडलन की शोभा को देखें हैं और, कितने तो सुन्दर जूरा के चमत्कार समूह निरखें हैं और अधर की शोभा सागर समूह को निरखें हैं ॥७२॥ वैसे और तो कपोलन की जो श्रेष्ठ दर्पण सूं हू स्वच्छ सुन्दरता है वाकूं देखें हैं और भक्त तो मूंछन की श्यामता को देखें हैं वैसे और श्री श्रीकंठ संबंधी उछल रही, किरण मंडल को देखें हैं और तो स्तंभन की श्रेष्ठ शोभा को विजय करवे वारे भुजान को देखें हैं और तो मुक्तान के हार सूं शोभायमान हृदय स्थल को देखें हैं, कि और भक्त

तो कोमल महीन अद्‌भुत श्वेत धोती को देखें हैं और भक्त तो सुन्दर चंचल अंचल वारे उपरना को निरखें हैं तथा और भक्त तो अपमे अत्यन्त सुख रूप वा वा अंग को निरखें हैं ।।७४।। मनोहर जगमोहन नाम मंदिर में आगे, कि पीछे श्री गिरिधारीजी की अटारी पर, कि बारीन में, कि गलीन में सब रीति सूं प्रिय के दर्शन में सज्जित दोनों नयन जैसे होय वैसे ही मृगलोचना ठाड़ी हैं वैसे अपने भक्तजन हू ठाड़े हैं, कितने तो सिड़ीन में ठाड़े हैं ।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि श्री गोकुल के मंगल रूप श्री प्राणनाथजी ने उछल रहे प्रेम दया रस सागर पूर्वक जा भक्तन को अपने प्रथम कहे दर्शन दान सूं कृतार्थ, कियो है सबन के सदा ऊपर विराज रहे वा भाग्य भरेन के श्री चरणकमल संबंधी रज को जो महिमा सागर है जाको एक, किणका की शोभा हू तीनों लोकन के पावन करवे वारो है ऐसे वा रज की महिमा सागर को तरवे में बड़ो भगवदीय हू को समर्थ होय सके है ? अपितु कोई हू समर्थ नहीं है ।।७७।। अहो या प्रिय के ऐसे दर्शन रस सूं भरे भक्त के श्री चरण कमलन के पखारवे को जो जल रूप अमृत है सो पान, कियो हू भक्त समूहन को, कि चन्द्रमुखी समूह को जो श्रेष्ठता, कि उत्साह समूह को, कि पवित्रता, कि शोभा, कि शीतलता, कि हर्षन के परंपरा को, कि जिनके बड़े आकाश को परस करे है, कि जिनके मनोहर हजारन भ्रमर समूह हैं ऐसे रस सागरन को जो दान करे है विनके थोड़े से हू स्वरूप को, कि बड़े गुणन को हू, कि उज्ज्वल माधुरी को, कि महिमा को हू थोरो सो कहवे में समर्थ होय तो सो स्वयं हू कछुक कहे सके है और कहा कोउ कहे सके ? श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि प्राणनाथजी जब श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधारें हैं तब, कितने भक्तजन, कि मृगलोचना सुन्दरी या प्रिय के मनोहर श्रीमुख चन्द्रमा के अमृत के प्यासे होयके अटारी में, कि जलघरा में, कि जगमोहन में कि प्रसादी भंडार में बैठ जाय हैं और, कितने तो प्राणनाथजी के मंदिर में और, कितने तो मंदिर के द्वार में, कि, कितने तो गलीन में बैठ जाय हैं ।। और, कितने तो प्रभुन कूं कार्यन को हृदय में धरके अपने घर में वेग जाय हैं और, कितने तो वा प्रिय के श्रीमुख कमल संबंधी शोभा को पान करवे की इच्छा वारे होवत ही अपने घर सूं वेग ही फिर आवें हैं कबहु तो प्राणनाथजी सुन्दरवर ईश्वरेश्वर प्रभुजी श्रीनाथजी के उत्थापन भोग के होयवे

पर मंदिर में न्हाय के पधारें हैं तासूं अपने आगन पर सुख सों विलासपूर्वक विराजमान रहें हैं कबहु तो श्रीनाथजी के संध्या भोग आयवे पर पधारें हैं कबहु तो श्री प्राणप्रियजी अपने श्री अंग की शोभान सूं श्रीनाथजी को प्रकाश वारो करत संध्या भोग सूं पहले हू पधारें हैं ॥८५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले त्रेपनमुं स्तरंगः ॥५३॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥५४॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ चोपनमुं स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **यदा तुसंध्यादयमीश्वरः पुरै हे प्राणपतिर्विशत्यतः तदा तनीका द्विन्म गलात्मिका लीलाः किंमण्यस्य निपाययामि व ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि जब यह ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथजी संध्या समय के भोग सूं पहले ही स्नान करके या श्रीनाथजी के घर में प्रवेश करें हैं यासूं वा समय की या प्राणप्रिय की मंगल रूप लीला कछुक तुमको पान करावुं हूं सो तुम कान रूप अंजुलीन सों लेकर अत्यन्त प्रकाश भरी, कि अमृत सूं हू अधिक मधुर वा लीला रस को मन रूप मुखन सों पान करोगे परात्पर रस सागर भगवान श्री गोकुलाधीश जी उच्छलित विलासपूर्वक वा श्रीनाथजी के मंदिर में प्रवेश करके श्री गोवर्द्धन नाथजी को प्रणाम करें हैं याके श्री मुखारविन्द को क्षणेक देखें हैं ता पाछे या श्रीनाथजी के आभरणन सों भरे, कि सुन्दर जामे तनिया हू है ऐसे करंक, कि डब्बा को एक हाथ सों लेके दूसरे हस्त सूं वा कतरनी कूं हू लेके प्रसन्न मुखारविन्द सुन्दरवरजी हर्ष सूं डोल तिबारी में पधारके वा करंक संस्कार के स्थल पर अपने मनोहर आसन पर मनोहर विलास भरे ही विराजमान होय हैं वहां वस्त्रन के घिसवे योग्य शोभायमान बड़ो पीड़ा सदा रहे है ॥५॥ सुजान श्री प्राणप्रियजी या डब्बा को वा पीढा के पास कछुक भूषणन को वैसे वैसे समारे हैं ॥ तथा

श्रीनाथजी के रात्रि में उपयोगी तनिया को सुन्दर बड़ी कौड़ी सूं वैसे वैसे घिसायके भली भांति सूं सुन्दर समारें हैं ॥७॥ अथवा ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथजी इहां विराज रहे सुन्दर श्रीनाथजी के जामा आदि को समारे हैं, कि श्रीनाथजी कि स्वामिनीजी के पहिरवे योग्य साड़ी आदि को समारे हैं ॥८॥ अब सगरे भक्त अटारी में, कि अटारी के चौक में, कि अटारी के आगे छज्जा में ठहरके पलक रहित नयनन सूं या प्रिय के श्रीमुख कमल संबंधी अमृत को पान करें हैं ॥९॥ सुन्दर वांस की कोमल मनोहर सींकन सों रचना करी सघन चिक्क तिवारी के आगे द्वार पर शोभायमान रहे हैं कोऊ समय वा चिक्क द्वारा हू या प्रिय को दर्शन होय है ॥१०॥ कबहु यह चिक्क ऊंची ठहरे है तब प्रेम दया, कि रस को सागर श्री महाप्रभुजी अपने जनन को अमृत के हजारन समुद्र के पराक्रम को विजय करवे वारे अपने सुन्दर श्री मुखारविन्द के शोभा समूह को पान करायवे की इच्छा करत वा तिबारी के मध्य में मनुष्यन की दृष्टि को रोकवे लिये, कि वा भूषणादि समूह को रोकवे लिये मनोहर पलंगडी को धर राखें हैं विशेष कहां लों कहें सगरे शोभायमान पुरुषार्थ समूह को तृण जैसे करवे वारो, कि पवन मन सू अतीत, कि अपार माधुरी सूं शोभायमान (पुरुषार्थ समूह को तृण जैसे) की महा सुगंधी भर्यो मनोहर वस्तु जो या स्वरूप में विराजमान अद्‌भुत कछु अनिर्वचनीय रस नाम परम वस्तु है अत्यन्त विस्तार वारे वा रस में प्रवेश करायके वा भक्तन को, कि भक्त सुन्दरीन को हू निमर्याद रस ही पान करायवे लिये मनोहर रस भरे, कि सबन की मन की दृष्टि को सब प्रकार सूं आकर्षण करवे वारे अपने सगरे और अंगन को हू या पलंगडी सूं रोक राखें हैं या अवकाश में श्री गिरिधारीजी को जो सुजान भीतरिया है सो आयके गुणसागर श्री प्राणनाथजी को संध्या भोग के आयवे की समय सूचना करे है ॥ श्री प्राणनाथजी तो जा कार्य को कर रहे हैं वा कार्य को छांड के उच्छलित उतावल समूह सूं इहां सूं उठके उच्छलित विलासपूर्वक श्रीनाथजी के मंदिर को त्रिलोकी के मणी रूप अपने अत्यन्त सुन्दर स्वरूप सों शोभायमान करें हैं ॥ तब सो सुन्दरवर श्रीनाथजी के आगे धरे के सजाये मनोहर खिलोनान को उठायके भीतरिया की अंजुली में धरें हैं यह भीतरिया तो वेग सूं जलपान के पात्र झारीजी को उठायके वेग ही ढलावे है फिर वेग

ही पान योग्य जल सूं भरके श्रीराज के हस्तकमल में पधरावे है प्रसन्न पूर्ण चंद्रमा के विजय करवे वारे श्रीमुख वारे श्रीराज तो वाकूं लेकर आदरपूर्वक श्री गिरिधारीजी के सिंहासन में उच्छलित विलासपूर्वक वाके पात्र तष्टी में पधरावें हैं पीछे सिंहासन के आगे जो खंडपाट रहे हैं वाके शोभायमान ऊपर के आसन वस्त्र को उठावें हैं वा भीतरिया के हाथ में देवें हैं फिर सिंहासन के सुन्दर अद्भुत बिछोना के संकुचित करके वा सिंहासन पर ही धर राखें हैं ॥२१॥ ता पाछे ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी वा खंडपाट कों खेंचके वा सिंहासन के एक ओर धरें हैं अब श्री गिरिधारीजी को संध्या भोग आवे है तब स्वयं अपने सेवकन को आज्ञा करें हैं, कि या मंदिर सूं इन सबन को प्रस्तान करावो, कि बाहिर पठावो ऐसे भीतरिया के वचन सूं, कि जलघरिया सेवक के वचन सूं वे सेवक भक्त प्रभुन के मुखारविन्द में निमग्न होय रही दृष्टि को बड़े यत्न सूं खेंचके बड़े यत्न सूं बाहिर आवें हैं ॥ कितनीक हरिण लोचना प्राणनाथ के श्री मुखारविन्द के दर्शन सम्बन्धी वियोग को सहें नहीं हैं तासूं बाहिर जायवे लिये कही हू नहीं उठें हैं विनके प्रति मंद हास्य को छिपायके सो अनुराग भरे मन वारो श्री प्राणप्रियजी भ्रु भंग रूप अमृत सों भरे झूठे क्रोध को दिखावत वेग जावो ऐसे कहत निकारें हैं ॥२५॥ प्रिय को उच्छलित शोभा वारो झूठे क्रोध की माधुरी के तरंग वारो सुन्दर जो देखवो है, कि वेगा जावो ऐसे जो मंदहास्य भर्यो बचन है सो तो मिसरी सहित तातो ही दूध है सो प्राणनाथजी ने जब पान करायो तब वे सुन्दरी हू कछुक ठहरके उच्छलित विलास पूर्वक इहां सूं बाहिर चलें हैं तथा और हू कोई सुन्दरी ठाड़ी रहे है तब तो ऐसो जन का कोऊ नहीं है जो चिरपर्यंत ठहर रही इनको निकारे ऐसे जे प्रिय के वचन सूं उच्छलित अमृत के सागर हैं सो वा और सुन्दर भ्रु वारी सुन्दरीन की स्थिरता को, कि ठहरवे को दूर करें हैं फिर चारों ओर किंवाड़ सांकलों के लगायवे पर श्री प्राणनाथजी श्री गिरिधारीजी के सिंहासन के आगे एक पणघी को धरके वाके ऊपर बहुत पकवानन सूं मिले भोजन पात्र थार को धरें हैं फिर श्री गिरिधारीजी को सो अर्पण करके मंद हास्य सों सुन्दर वदन श्री प्राणनाथजी फिर विलास पूर्वक डोल तिवारी में पधारें हैं इहां विराज रहे हमारे प्रियवर के पास सुजान भीतरिया गोकुलदास की

ज्ञानी, कि सुजान भगवानदास रहें हैं प्राणनाथ के संग श्रीराज की इच्छानुसार कछु कार्य करें हैं, कि सुख सों वस्त्र लेकर माखी निवारण करें हैं ।।३१।। वामें गरमी के दिन होंय तो पंखा करें हैं प्रिय के संग वार्ता करें हैं, कि कछु और हू कार्य करें हैं प्राणप्रियजी तो श्री गोवर्धनवासी श्री गोवर्धनधारी श्रीजी के बड़े करंक पेटी, कि ड्ब्बा को वैसे वैसे समारें हैं इहां श्री राज की सहायता जब तब उच्छलित शोभा भर्यो बड़ो पुत्र श्री गोपालजी स्नान करके वेगा आयके करे है ।।३३।। बड़े करंक (ड्ब्बा) की मंजुषा कूं सभारनो न होय उच्छव दिन संबंधी कर्तव्य कार्य करवो होय तो यह श्री गोपालजी वामें हू सहायता करें हैं यदि विशेष कार्य न होय तब तो श्री गोपालजी न्हावें नहीं हैं केवल एक भाग्यवारेन में श्रेष्ठ सुजान भीतरिया ही श्री महाप्रभुजी के संग आवश्यक कार्य में सहायता करें हैं इहां के श्री प्राणप्रियजी श्रीनाथजी के पाग जामा आदि को उच्छलित आदर सूं सभारें हैं तथा श्रीनाथजी की दोनों स्वामिनीजी के हू शीत, कि उष्ण समय के योग्य सुन्दर साड़ी चोली आदि को सभारें हैं ।।३७।। जिनसूं दूसरे दिन इनको श्रृंगार धरें हैं ऐसे इनके निर्दोष सुन्दर भूषण हू सम्हारके धर राखें हैं प्राणप्रियजी वेगावेगी सभारे हैं रंच हू विलंब नहीं करें हैं ।।३८।। श्री गोकुल के ईश्वर श्री महाप्रभुजी श्रीनाथजी के शय्या के उपयोगी सब वस्त्रन को हू सम्हारें हैं ।। कौड़ी, कि शंखन सूं घिसावें हैं, कि कूटवे वारे छोटे दंडा सूं कूट के वैसे वैसे चातुरी सूं घड़ी करके राखें हैं यह श्री महाप्रभुजी या अवसर में कबहु जलपान की माधुरी को करें हैं ।।४०।। प्रसादी श्रेष्ठ जल सूं भर्यो पास एक बड़ो करवा रहे है वाके पास एक छोटी लोटी सुन्दर रहे है वाकूं दक्षिण हाथ सूं उठायके वा करवा में डुबायके वा करवा पर वाके मुख को ढांपवे वारो छन्ना रहे है सो वा लोटी को जल प्रियवरजी वा छन्ना पर ही डार देवें हैं, कि और लोटी में छन्ना सूं छान लेवें हैं तासूं वामें सु रज निवर्त होय जाय है फिर छन्ना को दूर करके वा लोटी सूं विलास पूर्वक जल को लेवें हैं ।। सो श्री प्राणनाथजी दर्शन करवे वारेन के नैनन में मनोहर रस सागरन को वरसावत जलपान करें हैं ।।४३।। कबहू फिर हू लेके वैसे पान करें हैं वाके वस्त्र सूं वाके मुख को ढांपके वा पत्रिका लोटी को याके पास ही धरें हैं ।। ईश्वरेश्वर प्रियजी और खासा जल

सूं श्री हस्तकमलन को पखारके गुणसागर प्रियजी फिर वाकी सगरे कार्यन को करें हैं रस सागर में विहार करवे वारेन के चक्रवर्ती यह अत्यन्त प्रियवरजी अपने प्यारे श्री गिरिधारीजी के प्रसादी जल को कबहू ही फेंकें नहीं हैं ॥४५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले चोपनमुं स्तरंगः ॥५४॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥५५॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ पंच-पचासमो स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अत्रांतरे निस्तुप भाव शलिनात स्मित जगमोहन नाम्नी मंदिरे महात्मनां गान परायणात्मनां भृरांसमाजः प्रचकास्ति मजुलः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि या अवसर में शुद्ध भाव सूं शोभा भरे, कि गान करवे वारे महात्मा भक्तजनन को मनोहर समाज अत्यन्त शोभायमान होय है ॥ गुणसागर प्रिय के जे और भक्त हैं वामें भली-भांति सों मधुर कीर्तन करें हैं और, कितने भक्त तो बारंबार उच्छलित रोम हर्ष के अंकुर वारे होयके प्राणप्रिय अनेक प्रकार के उपकारन को स्मरण करें हैं और, कितने भक्तवर हर्ष के आंसुन की वर्षा करत अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारी प्रियवरकी वार्ता को करें हैं, कितने भक्त तो श्री गिरिधारीजी के मंदिर के, किवाड़ जब खुलेंगे हम वेग ही भीतर जायके नयन सूं प्राणप्रिय के श्रीमुखचंद्रमा को पान करेंगे ऐसे विचार करें हैं ॥ १॥ मनोहर आरती के अवसर श्री प्राणप्रियजी पीछे श्रीमुख फेरके कटाक्ष रूप अमृतन सों हमको सिंचन करत हमारे में बढ रहे अपने वियोग अग्नि को वेग ही निवर्त करेंगे या रीति सूं, कितने उत्साह करत श्रीराज के चरण कमलन को ध्यान करत ही चिरपर्यंत ही इहां बैठे हैं ॥५॥ कितने भक्त तो घर में गये हैं वहां सूं वेगावेगी ही आयके इहां बैठ गये हैं ॥ आर्ती के समय में श्री प्राणनाथजी के मनोहर स्वरूप अमृत को पानकरवे लिये अत्यन्त ही उत्साह भरे हैं ॥६॥ घर में जिनको विलंब होय गयो है, कि प्रियवर के दर्शन के वियोग सूं जिनके मन में संदेह है,

ऐसी निरन्तर दौड़ रही सुन्दरीन के चरणन को शब्द तक प्रकट होय है ॥७॥ या मंदिर में प्राणप्रियजी के श्री मुख कमल के अमृत को पान करवे लिये आयके मिल रही मृगलोचना जे सुन्दरी हैं जे निरन्तर ही श्री राज के गुणन को गान कर रही हैं, कि जिनको हृदय केवल प्राणप्रिय में ही निमग्न होय रह्यो है, कि जिनको मन वा प्रियवर की सेवा में ही सावधान है, कि जे वा प्रिय के वचनामृत पान की लोभ भरी है, कि जे वा मनोहर प्रिय के मंद हास्य भरे अधर सूं उदय होय रहे अत्यन्त उछल रहे सौंदर्य सागर के प्रवाहन सूं अपने नयन कमलन में उछल रहे अत्यन्त ताप को शांत करवे की इच्छा कर रही है, कि जे वा प्रिय के दोनों भुजदंड, कि बड़ो विशाल हृदय के आलिंगन रूप सुख समुद्र समूहन सों जटित किये, अपने उरोज युगल को सुमेरु रूप करवे में चिर सों उत्साह भरी है ऐसी सुन्दरीन को जो समाज है जो विनके मुखन सूं पूर्ण चन्द्रमा समूह वारो है, कि केशन की शोभा समूह सूं जो सघन अंधकार भर्यो है, कि विनके कपोलन सूं जो सुन्दर दर्पण वारो है, कि विनके मनोहर नयन हरिणीन सूं कमल रूप है, कि दंतन की कांतिन सूं चांदनीमय है, कि प्रकाश भरे मंदहास्यन सूं जो सुधासिन्धु मय है, कि विनके अधरन सूं कोमल पल्लव समूहमय है, कि भ्रु की मधुर शोभान सूं जो लतामय है, कि विनके कुचन सूं जो पर्वत सुवर्णमय है, कि अत्यन्त चमक रहे हारन की कांति सूं जो गंगामय है, कि रोम पंक्तिन सूं जो श्री यमुनामय है, कि नितंब बिंबन सूं जो सुवर्ण के स्थलीमय है, कि उरन सों जो कदली स्तंभमय है, कि चरणन सूं शोभायमान कमल समूहमय है, कि ऐसो सो सुन्दरीन को समाज पवित्रता मधुरता, कि विलास तेज प्रेम आदर ऐश्वर्य चतुरता, कि सुन्दरता, कि जोबन रस सागर की शोभा, कि उत्साहन सूं सर्वोपर विराजमान होयके अत्यंत ही बढ़ रह्यो है ॥१६॥ ता पाछे प्राणप्रियजी वेगा श्रीनाथजी के मंदिर में पधारके -- श्रीनाथजी के आगे पहले धरे भोग को इहां सूं सरावें हैं ॥१६॥ प्रथम कहे प्रकार सूं वा श्रीनाथजी के आचमन आदि सगरो प्रकार करके फिर वेगा ही उछल रहे करुणा समुद्रन के समूह रूप प्रियवर भीतरया सूं, किवाड़ उघड़वावें हैं तब सगरे भक्त, कि मृगलोचना हू सगरी सगरे जन वेगा वेगी भीतर वा मंदिर में हौं पहले जावुं हों पहले जावुं या प्रकार की उतावल सूं प्रिय के श्रीमुख चंद्रमा की शोभा को पान करवे लिये प्रवेश करें

हैं ॥ सो, कितने तो अटारी में, कि छज्जा में, कि सीढ़ीन में, कि गली में, कि जलघर में, कि श्री बैठकजी में जे जे भक्त ठहेरे हैं वे सगरे ही या मंदिर में आयके मर्दन, कियो है उज्ज्वल अमृत की माधुरी समूह को अभिमान जाने ऐसे वा प्रिय के दर्शन को अत्यन्त करें हैं तब भीतरिया जी आर्ती के दीपन को जगायके सम्हारके श्री राजाधिराज के श्री हस्तकमल में अर्पण करे है तब उच्छलित नम्रता सूं प्रकाश पूर्वक वाने अर्पण करी वा आर्ती को श्री प्राणप्रियजी श्रीहस्त में अंगीकार करें हैं तब श्री मुख्य स्वामिनी श्री पार्वती बहूजी हू बहू बेटीन के संग ही इहां श्रीमुख की शोभा सूं अर्बन चन्द्रमा को विजय करवे वारे अपने प्राणप्रियजी को निरखवे लिये वेग ही आवें हैं वहां नम्रतापूर्वक श्री प्राणप्रियजी को प्रणाम करके उठके ठाड़ी ही रहें हैं, कि निमर्याद रस के सागरन को वर्षा करि रहे वा प्रिय के श्रीमुख कमल को अत्यन्त प्यासे नयन कमलन के युगल सूं पान करें हैं अद्‌भुत शोभा वारे कि काम समूह के अहंकार रूप पर्वत को हू निरन्तर कंपायमान करवे वारे श्री प्राणप्रियजी तो अपने प्रफुल्लित विलास रूप कमल समूह की उछल रही अत्यन्त मधुर सुगंधी की लहरीन सूं ॥२३॥ अपने जनन के नेत्र, कि नासिका को अत्यन्त सघन भरत ही अपने श्रीमुख चंद्रबिंब के मनोहर चांदनी के समुद्रन सूं, कि मनोहर मोती माणिक जड़े कुण्डलन की धूपन सूं, कि तापन सूं ॥२४॥ शोभायमान कांति वारे सुन्दर मनोहर जूरा सूं, कि नयनो की उच्छलित कांति वारे अत्यन्त चपलता सूं, कि काम के धनुष समूह की कांति को विजय करवे वारे भुवन के विलास रूप माधुरी समूहन सूं, कि सुन्दर दर्पणन की शोभा को खंड्न करवे वारे कपोलन के अत्यन्त उछल रहे परम शोभा रूप महा समुद्रन सूं, कि श्रेष्ठ ऊर्ध्वपुण्ड्र की सघन कांति तरंगन सूं, कि वा तिलक के भीतर शोभायमान होय रही स्वाभाविक श्याम उज्ज्वल रेखा सूं, कि सुन्दर पांचजन्य शंख की माधुरी को दूर करवे वारे, कि अमूल्य मनोहर तुलसी मणि माला जामें लसे है ऐसे अतुल शोभा भरे श्रीकंठ सूं, कि हृदय स्थल में विराजमान निर्मल हार के विलासन सूं, कि श्रेष्ठ बाजूबंध जिनमें लसे है ऐसे भुजान के कांति लहरीन सूं, कि श्रीहस्त की अंगुली सम्बन्धी माधुरी भरी मुद्रिका की शोभा सूं, कि उपरना, कि धोती सूं उछल रहे गंगा के समूहन सूं, कि ॥२८॥ सूक्ष्म जनेऊ के श्वेत भाव की मनोहरता समूहन सूं, कि श्रीअंग

की शोभा सूं प्रसर रही इलावृत की शोभा सूं, कि लाल छटान सूं, कि स्पष्ट प्रफुल्लित कमल के विजय करवे वारे श्री चरण पल्ल्व की कांति सूं, कि श्री चरण कमल सम्बन्धी नखचंद्रमा संबंधी चांदनी समूहन सूं कृपासिंधु रससागर श्री महाप्रभुजी रसात्मक अत्यन्त मनोहर उज्ज्वल पानक कि पना सिद्ध करके अखंडित अत्यन्त मनोहर अतुल अत्यन्त उच्छलित निर्दोष श्रेष्ठ भावन सूं रंगी मृगलोचना के सगरे नयन रूप नील कमलन सूं अलंकृत पूजित होवत ही श्री गिरिधारीजी के ऊपर स्वयं आर्ती वारे हैं ॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, कि अपने भक्तन के जीवन रूप निर्दोष सगरे गुणन सूं भक्त समूहन के मनोरथ सिद्ध करवे कूं कल्पवृक्ष रूप ईश्वरेश्वर या श्री महाप्रभुजी के विशाल हृदय रूप कपाट के, कि श्रीमुख कमल के, कि मनोहर भजदंडन युगल के मनोहर ऊर्ध्वपुण्ड्र के, कि उपरना धोती के अत्यन्त विस्तार वारे, कि आकाश को परस रहे चमत्कार समूह के मनोहर तरंग समूहन में नयन रूप भुजदंड के विलासन सूं अनेक प्रकारन सूं तरके जे भाग्यवान वा प्रियवर के अत्यन्त प्रकाश वारे मनोहर स्वरूप में ही सब प्रकार सूं विश्राम करें हैं ऐसे मनोहर शोभा वारे वा भाग्य वारेन को वचन सूं, कि हृदय सूं, कि शरीर सूं हू हम प्रपन्न होवें हैं विनकी शरण गहें हैं या समय में भगवान श्री प्राणनाथजी कृपा समूहन सूं एक वार, कि कबहु दोय वार हू, कि तीनवार हू सगरे भक्तन में, कि सगरी मृगलोचनान में हू अपने नयन कमलन के विलासन सूं अनेक प्रकार के चिन्तामणी के समूहन को, कि कल्पवृक्ष के श्रेष्ठ फलन को, कि अमृत के समूहन को, कि उच्छलित तरंग समूहन सूं पुष्ट शोभा वारे रस के समुद्रन को हू अपने गुप्त अभिप्राय को हू निरन्तर सुजान वरजी वर्षा करें हैं ॥३७॥ अहो या भक्तन के अंग, कि नयन, कि मन, कि सगरो स्वरूप ही जैसे तब हर्ष के आंसू समुद्रन को बरसावें है, कि नाचे है, कि गुप्त रीति सूं गावे है, कि रोम हर्ष वारो होय है, कि बड़े उच्छवन को करे है वैसे सुजान कहवे में को समर्थ होय शके अहो मृगलोचनान के अत्यन्त मनोहर, कि उत्साह भरे दृष्टिन सूं या श्री प्राणनाथ के अत्यन्त मनोहर, कि कृपा सूं तरंग वारे, कि रोम हर्ष वारे कटाक्ष मिले हैं अत्यन्त गाढ ही आलिंगित होयके अत्यन्त ही शोभायमान होय हैं यह श्री प्राणनाथजी ऐसे आर्ती करके भीतरिया के हाथ में पधरावें हैं उच्छलित विलास सूं प्रियवर जी अपने प्रिय श्री गिरिधारीजी

को प्रणाम हू करें हैं ता पाछे दोनों श्रीहस्त कमलन को पखारके पोंछके या श्रीनाथजी के आगे ही विराजमान होय हैं ॥४१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले पंचःपचासमो स्तरंगः ॥५५॥

श्री श्री श्री

तरंग ॥५६॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ षष्ठ-पचासमो स्तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **रूत्तौतु शीतैउद्रिधरां निजेगृहे मुख्ये सदा राजति हंत मंजुल निदा धमन्वेष विराजते स्फुटं त्रिदारिका यां प्रिय तोषि विभ्रमः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि शीतकाल होय तो श्री गिरिधारीजी अपने निज मंदिर में मनोहर प्रकार सूं सदा विराजमान होय हैं उष्णकाल होय तो प्राणप्रिय के प्रसन्न करवे वारे जो के विलास हैं ऐसो सो श्री गिरिधारीजी तिवारी में ही स्पष्ट विराजें हैं तब श्रीनाथजी को आंगण तप जाय है तासूं सुन्दर श्री महाप्रभुजी के सुन्दर अभिप्राय को जानके राज के कृपापात्र भक्तवर, कि चन्द्रमुखी सुन्दरी गण हू बहुत जल सूं वा आंगण को सगरो हू पखारें हैं, रतिवारी, कि सुन्दर खंभा सबे, कि अटारी के छज्जा, कि भीत हू सब पखारें हैं तब बारंबार पानी के कलशा भर भरके वेग लाय रहे वा भक्त सुन्दरीन को प्रेम हर्ष उत्कंठा, कि रस शोभा, कि बड़े उत्साह को समुद्र ही वहां बढ़ जाय है तब वैसे खंभा समूह को, कि वैसे आंगण की जो माधुरी है, कि शीतलता है सो कृपा रस सागर श्री प्राणनाथजी को हर्ष के समुद्रन में ही निमग्न करें हैं ॥ वा समय में प्रभुन के श्रीमुख चंद्रमा सों अत्यन्त उछल रहे माधुरी के विश्रामघर रूप की अमृत के समुद्र को तृण जैसे कर रहे कोउ अलौकिक प्रसाद हर्ष को मृगलोचना नैनन सों पान करें हैं ॥५॥ तब श्री प्राणनाथजी शीतकाल होय तो छोटे रुईदार नीमा को पहिरें हैं गरमी के समय में तो खुले श्री अंग ही विराजमान होय हैं कमर के उपरना कस लेवें हैं श्रीराज की कांति समूह के सागर समूह उछल रहे हैं श्रीमुख

चंद्रमा प्रफुल्लित होय है श्रीराज को अधर तो कल्पवृक्ष के श्रेष्ठ नवीन पल्लव को हू विजय करे है ।।७।। मंदहास्य के प्रवाह समूह सूं भक्त समूहन की रुचिका अपने में बढ़ाय रहे हैं शोभा भरे किरण समूह सूं, मनोहर भाल में कुंमकुम के ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक को प्रियवरजी धारण कर रहे हैं जा तिलक के चमत्कार में मृगलोचना को मन निमग्न होय के फिर कबहू नहीं निकस सके है वा तिलक के मध्य में स्वभाव सिद्ध सूक्ष्म एक निर्मल श्याम रेखा निरन्तर मधुर श्रृंगार रस की प्रकाश भरी धारा जैसे विराजमान है वा रेखा रूप कुंडी सूं खेंचके रस सागर रूप अपने स्वरूप में धारण कर रहे हैं ।।१०।। तथा जे प्राणनाथजी अपने नयन कमलन के विलास रूप अनेक प्रकार की प्रसरवे वारी सुगंधीन सूं मृगलोचना जनों के नयन रूप नासिकान को अत्यन्त प्रसन्न कर रहे हैं ।।१२।।, कि मनोहर शोभा भरे कान पल्लवों में सुन्दर मुक्ता मणी सूं मनोहर कुण्डल आपके लसें हैं सुन्दर मनोहर चिबुक की कांति समूहन सों सगरी सुन्दर भ्रु वारी सुन्दरीन के ताप को जो श्रीराज दूर कर रहे हैं, कि ।।१२।। श्रीराज के श्रीकंठ में शोभा भरी तुलसीजी की माला, कि सोना मुक्ता मणी हार के प्रकाशन सों वा मंदिर को विशेष सो और प्रकाश वारो कर रहे हैं, कि सगरे लोकन को हू जो सुन्दरवर जी प्रकाश वारो कर रहे हैं ।।१३।। तथा जो सुन्दरवरजी कटाक्ष विलासन सों कर्षण, किये कमल लोचना के मन रूप क्षेत्रन में कंठ में विराजमान गुंजा माला सूं श्रृंगार सार समुद्र के माधुरी तरंगन को वर्षा कर रहे हैं ।।१४।। तथा जो श्रीराज सुन्दर मनोहर पदकनी कांति सूं कुसुंभी रंग वारे होय रहे अपने हृदय स्थल सूं चंद्रमुखी गणन की उच्छलित रस भरी आलिंगन की इच्छा कूं जो बहुत प्रकार सूं बढ़ाय रह्यो है, कि या हृदय संबंधी आलिंगन में उच्छलित होय रहे अत्यन्त गंभीर, कि अपार, कि उच्छलित हजारन बड़े आवर्त, कि मनन सूं प्रकाश वारे, कि आकाश कूं परस रहे बड़े ऊंचे परार्द्धन कल्लोलन सूं शोभायमान ऐसे रस सागर में सगरी रस रूप कमल लोचना सुन्दरीन को निमग्न करके आश्चर्य पूर्वक सर्वोपर विराजमान जो कर रह्यो है, कि तथा जो सुन्दरवरजी सुन्दर मनोहर शोभा वारे घोटू पर्यंत लंबे भुजदंड युगलन सूं मृगलोचना सुन्दरीन के सगरे मन रूप गजराजन को अत्यन्त चंचल ही जो कर रह्यो है तथा अपने वा वा अंगन में द्वादश सूर्य जैसे उदय होय रहे सुन्दर कुंकुम के श्रेष्ठ

ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलकन सूं जो श्री प्रियजी सुन्दर नयन वारी सुन्दरीन के अपने वियोग संबंधी अंधकार निवर्त कर रह्यो है तथा स्निग्ध अत्यन्त कारे, कि उछल रहे श्री यमुनाजी के तरंग जैसे अपने वारन सूं जो कोई श्रृंगार सार रस के अत्यन्त उज्ज्वल धारा सूं अत्यन्त मनोहर है, कि श्रीकंठ के पीछे शोभायमान होय रही, कि श्रेष्ठ फुलेलन सूं उच्छलित शोभा भरी, कि जासूं रस के लाखन हजारन सागर वरस रहे हैं ऐसे जूरा सूं सगरी सुन्दर लोचना सुन्दरीन के ताप को जो निवर्त कर रह्यो है, कि तथा जो श्रीराज के उछल रहे सुन्दर मनोहर ऊंचे तरंग वारे तेज समूह सूं शोभा भरे, कि सुन्दरीन के मन के विश्राम कि हर्ष के घर रूप, कि पीपल के पत्ता रूप परम कोमल अपने उदर सों शोभायमान है, कि तथा अत्यन्त मनोहर कि अत्यन्त गंभीर सुन्दरता के सार सागर वारे नाभि कमल सूं, कि सुन्दर नितंब वारीन के चित्त रूप भौंरा समूह की प्यारी उज्ज्वल शोभा समूह की सुगंधी वारी ऐसी श्रेष्ठ धोती सूं, कि श्वेत निर्मल कांति वारे मनोहर शोभा भरे उपरना सूं जो प्रियवरजी मृगलोचनान के नयन पात्रन में सुन्दर अमृत सागरन को अत्यन्त परोस रह्यो है तथा सर्वोपर विराजमान या प्रियवर के स्वरूप को हौं प्रकाश वारो करत हू या प्रकार के अगाध हर्ष सागर में निमग्न होय रहे श्रृंगार रस सागर की उच्छलित होय रही जो रोमावली है वा अत्यन्त रोम पंक्ति रूप कुँलीश सूं, कि व्रज सूं रस रूप सुन्दर नयन वारी सुन्दरीन के ताप रूप बड़े पर्वत को तिल तिल जो प्रियजी काट रह्यो है तथा कदली स्तंभन की शोभा के अभिमान को हरवे वारे अतुल शोभा भरे उच्छलित दोनों घोटुन सूं रस सो रंगी चंद्रमुखी सुन्दरीन के उत्साह सागर को जो श्रीराज अत्यन्त बढाय रह्यो है तथा पल्लवन की शोभा को हू विजय करवे वारे, कि प्रेम अमृत की उत्पत्ति के क्षीर सागर रूप, कि भक्त समूहन के मस्तकन के छत्र रूप ऐसे अपने दोनों चरणकमलन सूं जो मृगलोचना सुन्दरीन के ताप को जराय रह्यो है, कि तथा अपने प्यारे श्री गिरिधारीजी के चित्त को यह आशय है, कि हे प्रिय श्री वल्लभ प्रभो सगरे भक्त समूह को, कि सगरे सुन्दर व्रज सुन्दरीन के समूह को, कि सगरे अवतार समूह को, कि चौदह लोकन को हू, कि सगरे वैकुंठ समूह को हू, कि मेरो हू, कि हम सबको हू श्री आप ऐसो आभरण है जो अमूल्य है, कि निरन्तर मनोहर है, कि स्वभाव सिद्ध अत्यन्त चमकती

शोभा समूह के करोड़न सागरन सूं भर्यो है, कि सदैव ही निर्मल है, कि सदैव बनायो है, कि उच्छलित हर्ष भर्यो है, कि सगरी इन्द्रिय कि अंग, कि प्राण, कि मन के हर्ष बढ़ायवे में निरन्तर कमर कस रह्यो है, कि सुमार हू नहीं है, कि छिन्न भिन्न हू नहीं होय सके है, कि जाकूं चोर हू नहीं हरें हैं ऐसो आभरण हम सबन के आप ही है या श्री गिरिधारीजी के अभिप्राय को अपने हृदय में सब प्रकार सूं ही, धारण करत ही ऐसे सो श्री प्राणनाथजी श्री गिरिधारीजी के अंगन कूं अपने श्रीहस्त स्पर्श रूप अमृतन सूं लेप करत, कि वा श्री गिरिधारीजी के अंग संबंधी अमृतन को दृष्टि सूं पान करत ही सो श्री गिरिधारीजी के आगे विराजमान होयके विलास पूर्वक वाके भूषणन को उतारें हैं बड़ो करें हैं वामें वा हर्ष मूर्ती प्राणनाथ को गाढ़ आलिंगन करवे लिये श्रीनाथजी के वे अंग हू स्वयं उघाड़े होय जाय हैं तामें दोय, कि तीन आभरण तो वा श्रीनाथजी में प्राप्त होय रही अपनी उच्छलित महाप्रेम सुधा वारी दृष्टि को पान करवे लिये वा भूषणन की उज्ज्वल अभिलाषा को विचारके श्रीराज ही स्वयं राखें हैं, कि दोय तीन भूषणन सूं कोई छाया होय है - श्रीराज की प्रेमामृत भरी दृष्टि हम पर आवे है यह भाव सूं राखें है यह भाव है ॥३४॥ तब श्रीनाथजी के श्रृंगार बड़े करवे के समय में यह श्री प्राणप्रिय जी अपने पांव के दोनों आगे वारे भागों में अपने रस सागर रूप को स्वरूप के सगरे भार को देके अपने एक घोंटू के अग्रभाग को ऊंचो करके उच्छलित उज्ज्वल कांति वारे दूसरे घोंटू से आगे बैठ रहे हैं अत्यन्त ही शोभायमान है उच्छलित उज्ज्वल भाव पूर्वक वा श्रीनाथजी के अनेक भूषणन को देख रहे हैं ॥३६॥ ऐसे अपने प्राणप्यारे के स्वरूप को निरखके हरिणलोचना सुन्दरी अपने संग प्राणप्यारे के वैसे रमण सम्बन्धी आसन की सुरत करें हैं ऐसे ही उत्थापन के अवसर में श्री महाप्रभुजी जब अपने आसन पर विराजें हैं तब कबहू कोउ बालक आवे है हर्ष सूं वाकूं श्रीकृष्ण के गो दोहन संबंधी माधुरी भरे श्री भागवत के श्लोक को हर्ष सो उच्छलित उज्ज्वल विलास पूर्वक पढ़ावें हैं तब सगरे भक्त, कि हरिण वाल लोचना सूं हरी हू सगरी प्राणनाथजी में चित्त लगायके और कामकाज को भूलके चित्र लिखी जैसे ठहर जाय हैं भक्तन के पती भगवान कृपासिंधु श्री प्राणनाथजी तो वा गोदोहन लीला को चातुरी सों वैसे वैसे अभिनय करत हैं श्रीनाथजी जैसे दोनों चरणन को ऊंचो करके

विनके आगे वारे भाग परस सगरे श्रीअंग के भार को देके बैठें हैं ॥४०॥ उपरना को उच्छलित छोगा वारो ही श्री मस्तक पे बांधके गाय के पांवन में बांधवे योग्य निर्योग फंदा डोरा के विलास सूं शोभायमान ही जनेऊ को श्री कंठ के पीठ में पारा जैसे डार के बड़े चतुरवर गाय दोहन की लीला करें हैं तामें हजारन करोड़न नितंबिनी के मुकुटमणीन सूं जाके चरण कमल सेवित होय रहे हैं, कि सगरे सौभाग्यन को जो निधि है, कि चंद्रमा की कमल समूहन के विजय करवे वारी जाके श्रीमुख की शोभा है ऐसी जो कृशांगी कोमल अंगन वारी जा श्री रत्नबाई ऐसो मंगल नाम वारी है जाको रूप, कि स्वभाव हू श्री प्राणनाथजी के हर्ष देवे वारो है ऐसो सो श्री रत्नजी ऐसी या गोदोहन लीला की माधुरी प्रिय की निमेष बिना ही निरखके श्री प्राणनाथजी ने जो अपने संग रमण संबंधी लीला करी हती वामें अपने को जो जो वैसो आसन भेद को आस्वाद करायो हतो सो वाको सगरो रस हू अनुभव सुरत में अनुसंधान करत भई है तब तो याके श्रीमुख चंद्रमा की शोभा अत्यन्त ही प्रफुल्लित होय गई, कि रोमावली हू निरन्तर, खिल गई है नयन कमल सूं हर्ष के आंसू समूह रूप मोतीन की पंक्ति सूं शोभायमान होय रह्यो श्रीकंठ हू गदगदता सूं जटित होय गयो है श्रीअंग में पसीना भर गयो है अनेक प्रकार के मनोहर स्तंभ हू वाकूं लिपट गये हैं रंग रूप हू बदल गयो है कोउ मनोहर रूप वारी मूर्छा को यह प्राप्त होय गई है यासूं यह कोमल अंग वारी श्रीरत्नजी जाके करोड़न आवर्त भमर लसे है, कि जाके कल्लोल समूह आकाश को परसे है ऐसे अपार अत्यन्त अगाध श्रृंगार रस सागर में ही निमग्न होय गई है तब वा वा समय में सुजान सखीजन ही याकी या महा रस दशा को देखके याकूं पकड़के बड़े यत्न सूं घर में ले जाय है यह सुन्दरी तो अत्यन्त ही विह्वल है प्रिय के संग संबंधी रमण के अवसान के स्वाद को अत्यन्त ही स्वाद कर रही है ॥४८॥ तामें वैसी वा दशा सूं बड़े यत्न सूं सघन समाधी सूं जैसे उठके सो कोमलांगी श्रीरत्नजी कमल लोचना सुन्दरी कछुक मुहूर्त के पीछे वामें बड़े महोच्छव को करे हैं जामें श्री प्राणनाथजी के मनोहर गुणगान करावें हैं प्रसाद बांटें हैं तथा वा श्री प्राणनाथजी के आरोगवे के योग्य मनोहर सुन्दर सुगंधी सूं मनोहर स्वाद, कि उज्ज्वल घृत मिसरी सूं सिद्ध, कियो पकवान हू सजायके एकांत में श्री प्राणनाथजी के निकट मंदहास्य सूं प्रफुल्लित श्रीमुख

चंद्रमा की शोभा भरी, कि प्रेम लाज हर्ष सूं भरे लोचन वारी यह श्रीरत्नजी प्रियवर के लिये ले जाय हैं तब सर्वज्ञ समूह हू जाके चरंणकमल संबंधी रज की पूजा करें हैं ऐसे सो प्राणनाथजी वा श्रीरत्नजी के उच्छलित भाव को जानके अंग अंग में उछल रहे करोड़न रस सागर, कि श्री प्राणनाथजी या सामग्रीको निरखके उछल रहे हर्ष के आंसू समूह पूर्वक प्रसन्न होयके वा सामग्री कूं श्रीराज आरोगते भये हैं, कि उच्छलित स्नेह कृपा समूह सों आर्द्र होयके अपने आरोगवे के शेष महाप्रसाद को या श्री रत्नाजी के प्रति प्रसन्न होय रहे हृदय सूं, कि श्रीमुख कमल सूं, कि नयन कमलन सूं, कि उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक अपने शोभायमान श्री हस्तकमलन सूं हू आप देते भये हैं वा कमल लोचना को देके स्वयं ही वाकूं आरोगावते भये हैं वैसे भाव समूह आर्द होय रही वाके मनोरथ समूह को हू पूरण करते भये हैं ।।५५।। पाछे यह चंपक को हू विजय करवे वारे जाके श्रीअंग हैं ऐसी सो चंद्रमुखी श्रीरत्नजी अपने घर में आयके प्राणनाथजी के सगरे भक्तन को, कि प्रिय की सगरी कमलमुखी सुन्दरीन को हू महाप्रसाद लिवावती भई हैं ।।५६।। तब तो या प्रकार सूं उच्छव को करके फिर कोउ काल में अपने सखी समाज में हर्ष समूह पूर्वक या प्रकार की वार्ता को हू करत भई हैं ।।५७।। ऐसे श्री प्रिय चक्रवर्ती प्राणनाथजी जब जब श्रीनाथजी के भूषणन को बड़ो करें हैं तब तब ही या श्री रत्नजी की तो ऐसी अवस्था होय जाय है जासूं वा सुरत समय संबंधी, कि या श्रृंगार बड़े करवे संबंधी विराजवे की अत्यन्त मधुर, कि अमृत धारा समूह के विजय करवे वारी जाकी शोभा है ऐसी एक समान ही रीति शोभायमान होय है तासूं तब तब वैसी अवस्था होय है यह भाव है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले षष्ठःपचासमो स्तरंगः ।।५६।।

श्री श्री श्री

तरंग ॥५७॥

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ सप्त-पचासमो स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **प्रासंगीकं कीर्तीत मंत देवं मयाय माधुर्य तरंग शोभिप्रकात मे वा पिबतमृताब्धि विजित्वरं श्रेष्ट पुत्रदयेन ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि अयि भक्ताः यह ऐसे मैंने प्रसंगोपात वर्णन, कियो है-- अब मधुरता के तरंगन सूं शोभा वारो, कि अमृत के सागर को विजय करवे वारो चालू प्रसंग को ही दोनों कानों सूं पान करिये ॥१॥ श्री प्राणनाथजी बाये श्रीहस्त कमल सूं विलास पूर्वक श्रीनाथजी को लेयके दक्षिण हाथ सूं याके आभरणन को उतारें हैं, कि मनोहर डब्बा में धरें हैं ॥२॥ सगरे अपने भक्तन के, कि वैसी मनोहर भक्ती के ज्ञान वारी सुन्दरीन के निरखत ही या श्रीनाथजी को सिंहासन पर बैठावे है ॥३॥ फिर प्रियवर प्राणनाथजी वा श्रीनाथजी की दोनों स्वामिनीजी के भूषणन को वैसे विलासपूर्वक उतारें हैं वे उतारके वस्त्रन को पहिरायके दोनों स्वामिनीजी को सिंहासन पर प्रथम जैसे बैठावें हैं ॥४॥ प्राणप्रियजी फिर वा भूषण के डब्बा को वाके स्थान पर ही वेग धरें हैं ता पाछे प्राणप्रभुजी श्रीनाथजी के पास आयके ठाड़े होवे हैं ॥५॥ गरमी को समय होय तो श्री प्राणप्रभुजी श्रीनाथजी के दूसरे सिंहासन को दोय सेवकन सों उठवायके तिवारी के मध्य वारे द्वार के आगे पूर्व मुख ही अटारी के छज्जा के नीचे धरवायके ॥६॥ यामें उज्ज्वल गाढ़ा वस्त्र बिछावें हैं वाके ऊपर तकिया सहित गादी धरें हैं ॥६॥ पहले जलन सूं पखारके शीतल, किये वा सिंहासन पर केवल श्रीनाथजी को बिठायके क्षण एक तो उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक प्रफुल्लित नयन कमलन सूं निरखके यह ग्वाल भोग को समय है ॥७॥ यासूं वा समय में जो जो चहिये है सो सो सगरो ही प्रिय चक्रवर्ती श्रीराज सजायके राखें हैं ॥८॥ गोप तो पहले जैसे दूध सों भरे मनोहर करवा को लायके आयके बाहर ठहरके महाराजा-धिराज ऐसे स्पष्ट कहें हैं तब प्राणप्रियजी आगे ठहरे सगरे भक्तन को, कि स्त्रीन को हू कहें हैं ॥ अब इहां सूं वेग जावो रे यह सुनके सगरे भक्तगण,

कि मृगलोचना हू, कि जे अटारी में ठहरे हैं, कि जे छज्जा में ठहरे हैं, कि जे आंगण में हू ठहरे हैं वे सगरे ही वेगा वेगी बाहिर जाय हैं तब प्राणप्रियजी तो वेग ही, किवाड़ लगवाय देवें हैं पहले आये खेम नाम ग्वाल, कि भीतर ठहरे भीतरिया के संग प्रथम जैसे श्री गिरिधारीजी के आगे ग्वाल भोग को धरें हैं शीतकाल होय तो वा निज मंदिर में ही श्री गिरिधारीजी को भोग धरावें हैं ।। वर्षा ऋतु में तो उच्छलित उज्ज्वल भाव भरे प्रभुजी तिवारी में ही भोग धरावें हैं श्री महाप्रभुजी की जो श्रीमुख्यस्वामिनी श्री पार्वती बहूजी हैं जो सगरी स्त्रीन में अत्यन्त धन्य हैं सो परम सुजान श्री बहूजी श्रीनाथजी के संध्या भोग समय में ही स्नान करके रसोई घर में प्रवेश करे है वहां उच्छलित प्रेम सूं जो शयन भोग में मनोहर योग्य सामग्री है सो अनेक प्रकार की वा सामग्री को सिद्ध करें हैं ।। प्रभुन की जो रोहिणी नाम बेटी है, कि जो गोपीदेवी नाम बहू है, कि जो दूसरी प्राणमती बहू है, कि नाती गोवर्धनेशजी की प्रसिद्ध जो लक्ष्मी नाम बहू है सो हू कबहु स्नान करके सामग्री सिद्ध करे है ।।१६।। जब श्री प्राणनाथ श्रीनाथजी को ग्वाल भोग समर्पण करके सरावे है यह जानके श्री पार्वती बहूजी श्रीनाथजी के वा श्रेष्ठ भोजन थार को सुन्दर सिद्ध, किये श्वेत भांति की मूंगन की दार, कि सुन्दर शाकन सूं यथायोग्य भरे हैं संधाना धरे है सुगंधी सद्य तपायो घी हू कटोरीन में धरे है श्री भगवान प्राणनाथजी श्रीनाथजी के आगे चौकी सजायके सुन्दर विलास सूं शोभायमान श्रीअंग वारे प्रियजी रसोई घर में पधारे हैं ।।१९।। वहां पधारके प्राणनाथजी वा भोजन थाल को विलास पूर्वक लेकर आयकें वा चौकी के ऊपर धरें हैं ।।२०।। फिर वा दोनों श्रीहस्त कमल को पखारके कमल सूं हू सुन्दर श्रीमुख वारे प्यारे संध्याविधि के आदर करवे को जलघर की गली में पधारे हैं इहां अत्यन्त शोभिते रत्न जटित पीढ़ा पर पूर्व मुख बैठके प्रथम जैसे सायं संध्या को विधि अनुसार आदर करें हैं ।। सब रीति सूं प्रातः संध्या समान करे है अब संकल्प में सायं संध्या उपासन करे है यह विशेष कहे है, कि आचमन करवे में अग्निश्वमति यह मंत्र पढ़े है तथा पश्चिम दिशा के सन्मुख अर्घदान करे है वरुणस्वदमं या मंत्र सों उपस्थान करे है -- दिशा के प्रणाम में प्रथम पश्चिम दिशा को प्रणाम करे है ।।२४।। ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथजी कबहु स्नान यह नहीं करे है तब हू संध्या को आदर तो अवश्य ही करे है तब जलघरा

में प्रवेश करके वहां बड़े तकिया वारे आसन पर शुद्ध लीला वारे प्रभुजी शयन आर्ती पर्यंत इहां विराजमान होय हैं फिर समय होयवे पर अपनी श्री बैठकजी में विराजे हैं शयन आर्ती पर्यंत यह प्रभुजी इहां विराजमान जब होय है तब श्रेष्ठ भक्तन के संग ही मेरे संग हू अनेक प्रकार की मधुर मनोहर वार्ता करे है, कि सुने हू है ।।२७।। सो इतनो इहां रहे, कि सो प्रकार कह्यो है पीछे हू कहेंगे ईश्वरेश्वर परावेश्वर श्री प्राणप्रभुजी या रीति सूं संध्यादि कर्म को आदर देकर श्रीनाथजी के मंदिर में प्रवेश करके उच्छलित विलास सागरन सूं भरे सुजान प्रभुजी संध्याभोग को सरावें हैं ।।२९।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोद भये एकादश कल्लोले सप्त पंचासत्तम स्तरंगः ।।५७।।

श्री श्री श्री

तरंग ।।५८।।

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ अष्ट-पचासतम स्तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **एकादशे त्वगादीषमिह सायावधि विनोदमये**

कल्लोले प्रथमे हंत तरंगे मुंजुले पूर्वम् ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, कि यह ११ श्री कल्लोजी है यामें प्रभुन की सायंकाल पर्यंत की लीला है यामें मनोहर पहले तरंग में पहले प्राणनाथजी को जागनो, कि गादी तकिया वारे आसन पर मधुर प्रकार सों विराजनो, कि भक्तन को दर्शन करनो, कि पुत्रादि को पढ़ायवो कह्यो है दूसरे तरंग में भक्तन को प्रियवर के स्वरूप में वैसे वैसे आशक्ति सूं प्रभुन को सुन्दर श्लोक नो पढ़नो, कि वैसी वे वे वार्ता, कि चंचल लोचना सुन्दरीन की वा समय की शोभा में मनोहर आशक्ति कही है ।। तीसरे तरंग में गरमी में प्रभुन की शय्या को उठानो आदि, कि भक्तन के संग प्रभुन की वार्ता, कि प्रभुन के पहिरवे योग्य वे वस्त्रादि, कि माला के भ्रमायवे की लीला, कि चंपक पत्रादि की लीला, कि केवड़े के पत्र की लीला, कि कचरी नाम श्रेष्ठ फल सूं लीला कही है, चौथे तरंग में तो मनोहर चर्वित बीड़ी को डारनो,

कि भक्तन में वाको लेनो, कि प्रभुन की जलपान की लीला, कि ढाक के पत्र संग लीला, कि बरास आदि को लेनो, कि तुलसी मालान को प्रसादी कर देनो रूपण सहिगल को तुलसी माला देनो, कि अनके भक्तन की महिमा प्रसिद्ध करवे वारो वा समय के प्रभु को वचनामृत हू सो कह्यो है वैसे मनोहर पंचम तरंग में तो प्रभुन को गुंजा माला सूं विहार, कि विनके मन भाये मनोहर खिलोना के देनो विनके कमर कोंधनी को चटकामनो, कि बालक समूह, कि वेदादि विद्या की परीक्षा हू करी है छट्ठे तरंग में कृपासिंधु को हरिणी के संग लीला कि बड़भागीन मेना नाम सूं प्रसिद्ध जो कोई सारिका है वा पर प्रभुन की कृपा कही है ।। सातमे तरंग में तो प्रभुन को नेवार पट्टी सों मनोहर लीला की विनोदी नाम सूं अनेक विनोद, कि वा सुदामा ब्रह्मचारी सूं विनोद कह्यो है ।। आठमे तरंग में तो प्रभुन की वृंदावनदास के संग सुन्दर गान की वार्ता, कि याके ताऊ चतुरबिहारी की सेवा वाको स्वरूप ही कह्यो है ।। नवमे तरंग में वा वा गुणीजन में प्रभुन की कृपा कही है फिर प्रियवर के प्रेम सूं दर्शन अर्थ निर्धन निःसाधन जनों की आगमन की विन पर प्रभुन की निमर्याद कृपा हू कही है ।। मनोहर दशमे तरंग में प्रभुन को कृपा-पत्र लिखनो, कि वाकूं ले जाने वारे को मनोहर प्रस्थान कह्यो है ।। ग्यारहवें तरंग में भक्तजन समूह को वा पत्र के दर्शन अर्थ अपने स्थान सूं आगे आवनो, कि प्रेमपूर्वक पत्र को लेनो, कि वाको वांचनो तात्पर्य समूह यह सब कह्यो है, कि बारहवें तरंग में वहां पत्र के दर्शन सों उच्छव, कि उच्छव के सहित घर में आवनो घर में बड़ो उच्छव करनो, कि प्रभुन के निकट विज्ञापना पत्र लिखनो, कि त्रीकमभाई को वृतांत, कि फिर वेग श्री गोकुल में आवनो हू कह्यो है ।। तेरहवें तरंग में बड़े भाव को भक्त समाज को पत्र कह्यो है ।। चोदहवें तरंग में वाको ही वर्णन, जो वृत्तांत भयो है वाको वर्णन है, कि फिर कमल लोचना सुन्दरीन ने जो प्रभुन के निकट रस लेख लिख्यो है सो कह्यो है ।। पन्द्रहवें तरंग में उच्छलित रस सागर सखी को लेख कह्यो है ।। सोलहवें तरंग में पत्र को जानो आदि, कि प्रभुन के निकट वा पत्र की प्राप्ति, कि हर्षादि, कि या पत्र के अर्पण करवे वारो, कि वा श्री गोकुलवासी भक्त को मनोहर स्वप्न, कि वा कमल लोचना को हू स्वप्न यह मैंने वर्णन, कियो है ।। सत्रहवें तरंग में प्राणनाथजी को बड़ी शोभा भर्यो थोड़े अक्षर वारो श्रृंगार सार के

स्व-रस सों मनोहर पत्र को लिखनो, कि वाको वैसो पठावनो, कि वा लेख ले जायवे वारे को भक्तन सूं मिलाप कह्यो है ॥ अठारहवें तरंग में मृगलोचना सुन्दरीन को वा पत्र के लेवे को प्रकार, कि बड़े ताप वारो वा सुन्दरीन को उत्साह, कि अपने कृपापात्रन में प्रिय को वचन, कि कृपापात्रन की विज्ञप्ति को वाक्य यह सब वर्णन, कियो है ॥ उन्नीसवें तरंग में वा कृपापात्रन के अपने विश्वास पात्र संगी भक्तन में वैसो लेख, कि प्रिय के मनोरथ सिद्धि अथवा प्रिय भक्तन को वैसो उद्यम समूह, कि वा श्री गोकुल यात्रा संबंधी गाढ़ उत्कंठा विशेष सूं मिल्यो मनोहर शोभायमान वचन यह सब कह्यो है ॥ तथा बीसवें तरंग में वा भक्तन को भाव भर्यो वचन वा उद्यमी भक्तन को विनकी स्त्रीन के घर में जानो वैसो उदास वा सुन्दरीन को निरखनो, कि प्राणनाथजी सूं शोभायमान होय रही श्रीमद् गोकुल में यात्रा के निश्चय के कहवे सों विन सुन्दरीन के उत्साह को बढ़ावनो, कि वा सुन्दरीन को उच्छलित उत्साह भर्यो वाक्य यह सब वर्णन, कियो है ॥ इक्कीसवें तरंग में वा भक्तन को सपरिवार ही श्रीमद् गोकुल लिये चलनो कह्यो है ॥ बावीसवें तरंग में प्राग वारे प्राणप्रभुजी के भक्तन सों रस सों मिलाप, कि विनके घर में स्थिति, कि भोजनादि, कि सुख सों भरी चलवे कि रीति, कि गान नृत्य होय प्रेम समूहादि वर्णन, कियो है ॥ तासूं आगे तेवीसमे तरंग में चंचल लोचना सुन्दरीन को भाव की बड़ी उत्कंठा वर्णन करी है तासूं आगे चोबीसमे तरंग में श्रीमद् गोकुल में शुभ प्रवेश, कि भक्तन सों मिलाप, कि प्राणप्रभुजी के श्रीमुख को निरखनो, कि यासूं वा भक्तन को, कि रस मृगलोचना सुन्दरीन को प्रिय ने जो समाधान, कियो है सो वर्णन, कियो है ॥ तासूं आगे पच्चीसवें तरंग में वा अपने भक्तन में प्रभुन की अपने रसोई घर में प्रसाद लेवे की आज्ञा, कि विन सबन को वा प्रसाद को लेनो, कि फिर वहां प्रभुन के आगे विनको भेटन को अर्पण करनो, कि विनके प्रति प्रभुन ने जो फल को दान, कियो है यह सब वर्णन, कियो है ॥ छब्बीसमे तरंग में दिन में एकांत में इनको प्राणनाथ के निकट जानो, कि प्राणनाथजी के संग नम्रता भरी सहचरी के संग रसविलास वर्णन, कियो है ॥ यासूं आगे सत्तावीसमे तरंग में सहचरी की विज्ञापना, कि प्राणनाथ के प्रिय वचन, कि सुन्दर नमित भ्रु वारी सुन्दरीन को वचन, कि अपनी सखी के प्रति, कि सखी को अपनी स्वामिनी को शिक्षा वचन यह सब वर्णन, किये

हैं ।। पीछे अट्ठावीसमे तरंग में रस सूं भरी वा सुन्दरीन की भेट को अर्पण करवे की माधुरी, कि प्रेम सों श्री प्राणनाथजी को विनको मनोहर अंगीकार यह सब वर्णन, कियो है ।। यासूं आगे उनत्तीसमे तरंग में सुन्दरीन ने प्राणनाथजी की आर्ती जैसे करी है सो विनमें विशेष भाव सूं आलिंगनादि को दान जो प्रिय ने, कियो है, कि अपनी सखी को जो वैसो विज्ञापना वचन है, कि वैसे श्री गिरिराज यात्रा को निश्चय, कि भक्त समूह को आवनो, कि या सुन्दरीन को रस सूं अपनी सखी के सहित पासे की वारी सूं जानो, कि अपनी सखी के संग विनको संवाद यह सब वर्णन, कियो है ।। कि तरंगराज तीसवे तरंग में प्रभुन को श्री गोवर्द्धन में पधारनो कह्यो है, कि यासूं आगे इकत्तीसवे तरंग में प्रिय को पर्वत पर पधारनो श्रीनाथजी की आर्ती करनी, कि फिर अपने घर पधारनो, कि वा सुन्दरीन को श्रृंगार धरानो, कि प्रिय के श्री मंदर में विनको अभिसार यह सब वर्णन, कियो है ।। बत्तीसवे तरंग में रस हर्ष घर में सखी को इन सुन्दरीन को अर्पण करनो, कि प्रिय को उत्साह भर्यो वचन, कि सखी की विज्ञापना, कि या सखी को प्रिय को भलीभांति सों प्रसन्न करनो, कि यामें प्रभुन की प्रसन्नता सूं या सखी को हू इहां ही ठैहरावनो, कि फिर जलघरा सूं वा सुन्दरी को प्रिय के निकट पधराय लावनो, कि प्रिय को परस्पर निरखनो, कि वा सुन्दरी को वामता रूपमान कि उलटी कृति रूप पर्वत सूं प्रिय ने जैसे उतार्यो है सो प्रयत्न समूह हू मैंने वर्णन, कियो है तासूं आगे तेतीसवे तरंग में वा सुन्दरी को, कि प्रिय को बीरी आरोगवे को हर्ष, कि प्रियान को प्रिय के श्रृंगार करवे की इच्छा को मंगल रूप कथन, कि प्राणनाथ को हू उत्तर वचन, कि वा सुन्दरीन को वचन फिर प्राणनाथ को वचन, कि वा सुन्दरीन को सखी के आगे मनोहर वचन, कि प्रिय को रसिक उत्कंठा सूं मिल्यो वचन, कि वा सुन्दरीन को वामता सूं मिल्यो वचन, कि प्राणपति के मुख कमल सों रस विशेष सूं मिल्यो वचन कहावनो, कि कमल लोचना, कि रसलीला, कि प्राणनाथजी की हू मधुर रस लीला, कि प्रियागणन ने संग लाये वस्त्र, कि आभरणन को अर्पण करनो अत्यन्त उत्साही प्राणनाथ को या सुन्दरीन के श्रृंगार धरायवे की प्रार्थना यह सब वर्णन, कियो है ।। यासूं आगे चोंतीसवे तरंग में वा सुन्दरीन में पुरुष वेष को धरनो, कि या सुन्दरीन ने जो प्राणनाथ में स्त्री वेश धरायो है, कि फिर सरस लीला यह सब वर्णन,

कियो है, कि वा जगमोहन में प्रिय के भक्त समूह को आवनो कि हरिण लोचना की उदासी विशेष, कि प्रिय द्वारा विनको धैर्य देकर विदा करनो, कि अत्यन्त उत्साही भक्त समूह के प्रति प्रिय को दर्शन दान, कि और सुन्दरीन के घर में प्रिय को पधारवो आदि यह सब कह्यो है ॥ यासूं आगे वारे पेंतीसवे तरंग में जे और सुन्दर मृगलोचना जे प्राणप्रिय के निकट पधारवे में असमर्थ हैं विनके विज्ञापना पत्र, कि विनके ऊपर प्रियवर की बड़ी कृपा, कि सरस फल को दान यह सब कह्यो है ॥ छत्तीसवे तरंग में प्रिय के अपने सेवक प्रति सेवा पत्र को दानादि तथा और भक्तन को प्रिय चक्रवर्ती के श्री चरण पादुका जी की सेवा को बड़ो मनोरथ को उद्यम यह सब कह्यो है ॥ तासूं आगे सेंतीसवे तरंग में प्रिय के आगे अधिकारीजी की विज्ञापना, कि प्रिय को वा विज्ञापना को अंगीकार, कि कृपासिंधो प्राणनाथ को अपने श्री पादुका युगल को दान, कि वा भक्तन को मनोहर उत्साह समूह पूर्वक महोत्सव, कि सेवा करनी यह सब कह्यो है ॥ यासूं आगे अड़तीसवे तरंग में श्री प्रिय के चरणचिह्ननन को दान, कि चरण वस्त्रजी आदि को दान, कि ध्यानदासजी को उज्ज्वल चरित्र, कि तासूं भक्त समूह को हर्ष यह सब कह्यो है ॥ आगे उनतालीसवे तरंग में कृपासिंधु प्रियवर श्रीराज के पादुकादि सेवा को पायके अपने देश में जायवे लिये श्री प्रिय के श्री चरणन में प्रणामादि, कि प्रियको धैर्य देवे की माधुरी यह सब वर्णन, कियो है ॥ यासूं आगे चालीसवे तरंग में चंचल लोचना को वियोग को दुःख प्राणपति की विज्ञापना, कि वाको अनुमोदन, कि प्राणनाथ को अपने कृपापात्रन में वैसे वैसे आज्ञा, कि सुन्दरीन को तांबूल दान, कि विनके प्रति जायवे लिये आज्ञा को देनो, कि विनको इहां सूं प्रस्थान यह सब वर्णन, कियो है ॥ यासूं आगे एकतालीसवे तरंग में घर प्रति चले या भक्तन को वियोग दुःख सूं भयो बड़ो दुःख की, कि भय की विचार की प्रभुन के आगे अधिकारी की विज्ञापना, कि प्राणनाथजी को याके धैर्य देवे वारो वैसो मनोहर अपने भक्तन के हर्ष देवे वारे वचन यह सब कह्यो है ॥ आगे वयालीसवे तरंग में प्राणनाथजी के प्यारे भक्तन को देश प्रति चलनो, कि मार्ग में सेव्य ले जाने को प्रकार, कि भय की प्राप्ती में में हू वाकी प्रभु सूं निवृत्ति, कि दामोदरदास, कि हरीभाई नाम सूं प्रसिद्ध भक्तराज को वृत्तांत, कि मार्ग में जाय रहे वैसे और हू, कितने भक्तन को

प्रिय ने करी चोरन सों रक्षा, कि श्रेष्ठ भक्तराजन के चक्रवर्ती हू जिनके चरणकमल संबंधी रज की सेवा करें हैं ऐसे श्री मोहन भाईजी को, कि श्रीराज के सदा निकटवासी सुन्दर सेवक विट्ठलदास को चोरन सूं रक्षा रूप वृत्तांत यह सब वर्णन, कियो है ।। आगे तेतालीसवे तरंग में मार्ग में प्रिय को अनुभव स्वप्नादि में होय तो तब प्रेम समूह सों सुन्दर महोत्सव करनो, कि सेव्य स्वरूप के दर्शन अर्थ उच्छलित हर्ष सूं वा भक्त के घर वारे भक्तन को आवनो, कि मार्ग में हू बड़ो महोत्सव, कि विनकी वहां सूं घर लाये गान वाद्य के हर्ष प्रसार पूर्वक चलनों वा सबन को पावन सूं चलनो सुन्दर बड़ो उत्साह, कि उच्छव श्री गोकुल प्राणनाथजी के सेव्य स्वरूप को आगे करके घर में मधुर प्रवेश यह सब वर्णन, कियो है ।। आगे के चोवालीसवे तरंग में उच्छलित हर्ष सूं सेव्य की सेवा, कि भक्तन को आदर, कि भक्तन के रस को बढ़नो, कि भजन को बुलावनो, कि अपने घर में विराजमान प्रिय के उच्छलित चरणारविन्द के आगे भेटान को धरनो, कि प्रिय के प्रसाद को लेनो, कि इनको बीरी दीनी यह सब कह्यो है ।। ता पाछे पेंतालीसवे तरंग में प्राणनाथजी के निर्धन दरिद्री जनन को सेव्य स्वरूप को पधरायके मार्ग में ले जाने को प्रकार कह्यो है तथा छयालीसवे तरंग में परम पुरुष श्रीराज ने दान करी श्री पादुकाजी आदि सेवा को प्रकार कहवे लिये मैंने प्रारम्भ, कियो है तामें श्रीराज को मंदिर कह्यो है ।। आगे सेंतालीसवे तरंग में रसोई के भेद की वैसे और और जल के भरवे में जो मनोहर प्रकार है, कि शाकादि, कि दूध आदि के लेवे को जो प्रकार है, कि भक्तन को जो स्वभावादि है, कि और हू कछु है सो वर्णन, कियो है ।। आगे अड़तालीसवे तरंग में व उगणपचासवे तरंग में प्रभुन के, कि भक्तन के पत्र आवें हैं वाके आदर को प्रकार, कि उच्छव हू वर्णन, कियो है आगे पचासवे तरंग में विनके घर में जन्म उच्छव निमित्त निरन्तर भक्ति भरे वा भक्तन के आयवे को आनंद उच्छलित उच्छव वा भक्तन को उच्छलित आदर यह मैंने कह्यो है ।। आगे इक्यावनवे तरंग में श्रीनाथजी के मंदिर को कार्य, कि भीतरिया आदि को प्रियवर के मन के अनुसार स्नान आदि, कि शंखनाद, कि जलघरिया को कार्य, कि, किवाड़ को उघाड़नो, कि वामें श्रीनाथजी के मुखारविंद को दर्शन, कि भोग, कि वाके उपयोगी वस्तु को प्रभुन को सेवक विष्णुदास, सेवक को श्रेष्ठ फूल मालान को लावनो, कि

प्रियवर को वा मालान को अंगीकार, कि आय रहे वा वा भक्त आदि की वार्ता, कि वा वा आये राजसी आदि को मनोहर विदा करनो, कि भट्टन के संग वार्ता, कि सुदामा नाम श्रेष्ठ ब्राहमण सूं नकल टेक, कि सुन्दर ध्यानदास को सुन्दर उदार सारंगी को बजायवो, कि सुन्दर श्लोकन को पढ़वो, कि अधिकारीजी में आज्ञा यह सब कहें हैं ॥ आगे बावनवे मनोहर तरंग में श्री प्राणनाथजी को एकांत घर में पधारनो तामें खवासजी को कार्य, कि भक्तन के वैसे प्रभु सेवा के कार्य, कि अन्नादि के लायवे को प्रकार, कि धोती आदि सेवा परायण भक्तन के कार्य समूह की या भक्तन को वेश आदि, कि इनको मृगलोचना सुन्दरीन को वेष श्रृंगार आदि, कि श्रेष्ठ सेवक भीतरिया को कार्य, कि श्रीनाथजी को दर्शन, कि जलघरीयान की तैयारी आदि यह सब वर्णन, किये हैं ॥ ता पाछे तिरेपनवे तरंग में प्रभुन को एकांत घर सूं बाहिर पधारनो आदि कि परम प्रिय की अभ्यंग लीला की परम पुरुष श्रीराज की स्नान आदि लीला कि श्रीनाथजी के मंदिर में पधारवे को प्रकार, कि भक्त समूह को प्रेम, कि प्राणनाथजी की विनमें कृपा, कि श्रेष्ठ भक्तन के वे कार्य यह सब कहे हैं ता पाछे चोपनवे तरंग में श्रीनाथजी के मंदिर में विराज रहे या श्रीराज के कार्य की मनोहर करंक संस्कार को प्रकार, कि श्रीनाथजी के सेवा की माधुरी, कि संध्या भोग को आवनो, कि भक्तन को बाहिर निकारनो, कि श्रीनाथजी के सेवा रस कार्यन की माधुरी, कि करंक संस्कार में बड़े पुत्र श्री गोपालजी की सहायता, कि श्री राज की प्रसादी जलपान की सुन्दरता यह सब वर्णन, कियो है ॥ यासूं आगे पचपनवे तरंग में श्रेष्ठ भक्तन के कार्य, कि कमल लोचना सुन्दरीन को मनोहर समाज, कि प्रभुन को संध्या भोग सरावनो, कि श्रीनाथजी की आर्ती यह सब वर्णन, कियो है ॥ यासूं आगे के छप्पनवे तरंग में गरमी में श्रीनाथजी के आंगण आदि को शीतल जल सों छिरकनो, कि श्रीनाथजी के श्रृंगार को बड़ो करनो भूषणन को उतारनो, कि वामें प्राणनाथजी को बैठवे को प्रकार, कि वामें प्रसिद्ध जो श्री रत्नाबाई है वाको उच्छलित रस को वृत्तांत यह सब वर्णन, कियो है ता पाछे सत्तावनवे तरंग में श्रीनाथजी के भूषणन को कछुक उतारनो, कि आंगण में सिंहासन को पधरावनो, कि मनोहर ग्वाल भोग कि फिर शयन भोग को सजानो, कि प्रियवर की संध्या की विधि, कि श्रीनाथजी के मंदिर सूं शयन भोग को सरावनो

यह सब वर्णन, कियो है ।। तासूं पाछे अठावनवे तरंग में संक्षेपसूं सगरे तरंगन को अर्थ कह्यो है अहो रस रसिक भक्तो प्रेम सूं शोभायमान चित्त में श्रीगोकुल प्रिय की प्राप्ति करवे वारे, कि मनोहर फल रूप, कि सबन को सगरे इष्ट देवे वारे, कि सबन के सगरे अनिष्टन के निवारण करवे वारे या सगरे श्री कल्लोलजी को धारण करत ही वैसे मनोहर फल रूप आगे जाको वर्णन आवे है ऐसे ग्यारहवे कल्लोलजी को उच्छलित आदर सों सुन्दर पान करिये ।।८७।।

इति श्रीमद् गोकुलाधीश रमणेश प्रसादतः कल्लोले भाषाख्यानं मर्यादिते ततः श्री रमणाधीशाः प्रभवः करुणालीयाः प्रसीदंतु सदास्वीये लोकनाथे माय स्वतः ।।१।।

इति श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधो सायावधि विनोदमये एकादश कल्लोले स्वप्रभूणां श्री रमणेशनां करुणायैव गोकुलिया लोकनाथानुदिते व्रजभाषायो अष्टपंचासत्तम् स्तरंग ।।५८।। समाप्तः

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो सायावधि विनोदमये एकादश कल्लोलौ लोकनाथेन व्रजभाषायां मुनदित समाप्तः ।। समर्पितः स्वप्रभु श्री रमणेश चरण कमलयोः प्रियता तेन सप्रियः सप्रिय इति दीन दीनस्य लोकनाथ स्यानंत शौम्यथना ।। इति ।।